७२०२७२७४२७२५२७२७२७२७२७२७ ॥ श्रीमन्निकुंज विहारिगो नमः॥



श्री

श्री १०८ श्री सरस माधुरी जी महाराज रचित—

श्री सरस सागर

प्रथम भाग

प्रकाशक-

परिदत राधेश्याम शम्मी

(सर्वे श्रधिकार रक्षित हैं)

मुद्रक-

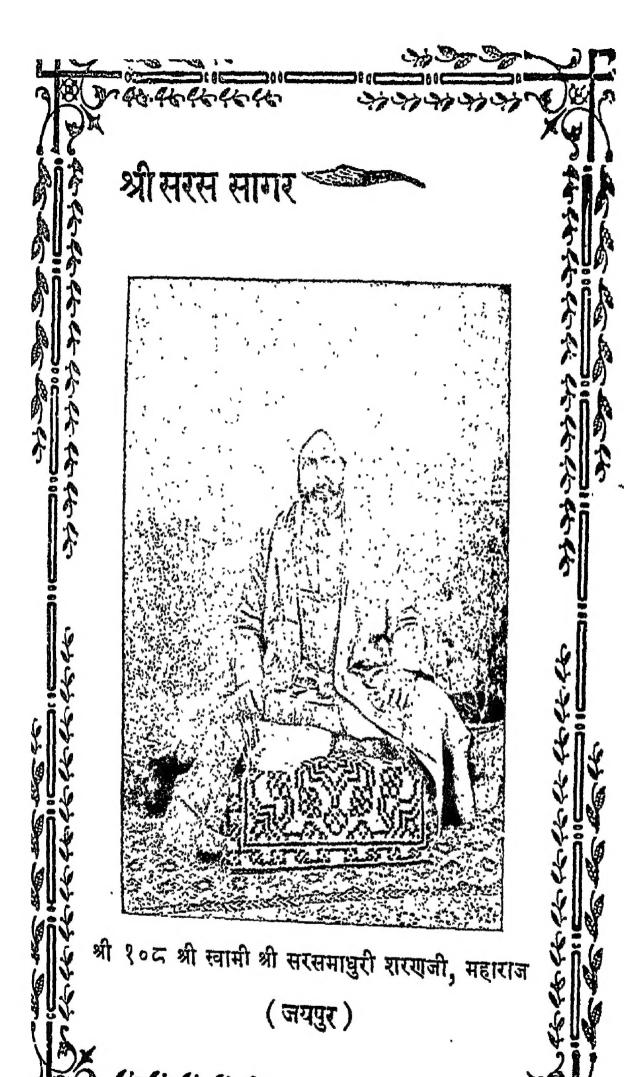
दी जयपुर प्रिटिंग वक्स चौड़ा रास्ता जयपुर ।

प्रथम वार । • ४००

सन् १६३६

es de la company de la company

मूल्य २)



॥ श्रीमन्निकुंजविहार्गेनमः।

स्रावश्यक निवेदन

परमप्रिय गुरु भाइयो तथा बहिनो।

लीजिये त्राज त्रापके ही कृपा वल से त्रापकी त्राज्ञा कार्य्य रूप में परिणित हुई त्रर्थात् श्री सरस सागर का प्रथम भाग जो गुरु महिमा, गुरु परम्परा, श्रीमत शुकाचार्य महाप्रभो तथा श्री श्याम चरण दासाचार्य्य के चितामृत, महिमा, म्तोत्र, वधाई, लीला इत्यादि का त्रापृवं भेडार है त्रापके त्रास्वादन तथा त्रानंद वर्धन के लिये तय्यार होकर त्राज परम मांङ्गलीक दिन श्रीमत वेद्व्यास जयंति तथा श्री गुरु पृरिण्मा के सुत्रवसर पर त्रापके भेट किया जाता है।

बधाई है! बभाई हैं!! बबाई है!!!

श्री वाणी जी को एकत्र कर मुद्रण कराने की सेवा आपने इस विनीत को सौपी।

यह विनीत इस "महान कार्य्य को भली भांति करने में श्रासमर्थ होता यदि निम्न लिखित महानुभाव इस विनीत का हाथ न वटाते श्रीर समय २ पर उत्साह न वढ़ाते।

१ श्री शुक सम्प्रदाय भूपण परम प्रेमी विद्वद्वर श्रीमान मास्टर साहिब गंगावखराजी गुप्ता वी. ए. श्रसिस्टेएड हैड मास्टर महाराजा हाई स्कूल जयपुर श्रापने प्रूफ संशोधन का कार्य्य वड़ी कुशलता से किया श्रौर समय समय पर श्रपनी बहुमूल्य सम्मिति प्रदान करते रहें। श्राप के निरीच्चण तथा देख रेख में सारा कार्य्य हुआ।

२ श्री गुरु सेवा परायण प्रेमी भाई श्री रामनारायणजी ठेकेदार। श्रापको श्री वाणी जी के मुद्रण की वड़ी भारी उत्कंठा थी श्रीर श्रापकी श्रार्थिक सहायता तथा दौड़ धूप श्रत्यन्त सराहनीय है। ३ श्रीहरि गुरु कृपा भाजन प्रेमी भाई श्री मोहनलालजी चौधरी। श्रापने ही विनीत को इस सेवा के लिये उत्साहित किया श्रीर श्रापके ही श्राप्रह तथा पुनः श्राप्रह से बाणीजी के संग्रह का काम श्रारम्भ हुआ जिसमें श्रापने पद पदांत एकत्र करने में श्री बाणीजी की भारी सेवा की।

४ श्री गुरु महाराज के परम लाडिले भक्त शिरोमिश श्रेमी भाई एम. वाइ. सनम । श्रापने श्री महाराज का जीवन चरित्र जो संकीर्तन पत्र के विशेषांक के लिये लिखा था उसको इस पुस्तक में संमिलित करने की सहर्प श्रामृति दी और समय २ पर सम्पादन तथा मुद्रण श्रोर विषय सूची तथ्यार करने के विषय में श्रपनी बहुमूल्य सम्मित प्रदान करते रहे।

१ प्रियवर चि० बाबू बालकृष्ण श्रीवास्तव । आपने प्रेस कापी तय्यार करने, प्रेस में जाकर छपाई के काम की देख रेख करने तथा अन्य आवश्यक कार्यों में बड़ी दौड़ धूप की । आपका परिश्रम अत्यन्त सराहनीय है ।

छोटी अवस्था में आपका ऐसा परिश्रम और दृढ़ता आपके अत्यन्त कृपा पात्र और होनहार होने की सूचना दे रहे हैं।

में उपरोक्त महानुभावों का विशेषकर आभारी हूँ और आपकी कृपा व सहायता के बल पर आशा करता हूँ कि श्री बाणीजी के और भाग भी इसही प्रकार समस्त सरस समाज के आनन्दार्थ यथा समय प्रकाशित हो सकेंगे।

में श्रीमान शृद्धेय विद्या भास्कर पिंडत श्री सूर्यनारायणजी शर्मा श्राचार्य प्राफेसर महाराजा कालेज जयपुर का श्रात्यन्त कृतज्ञ हूँ कि श्रापने इस प्रन्थ के प्रस्तावना लिखने में श्रपना बहुमूल्य समय देकर समस्त सरस समाज को श्रपना श्राजन्म श्राभारी बना लिया।

प्यारे भाइयो तथ वहिनो यह त्रापकी "सम्पति" त्रापके ही भेट है।
"वाणी श्री महाराज की श्री महाराज स्वरूप"। पठन कीजिये आनन्द
लीजिये और इस दीन के इस तुच्छ सेवा के बदले श्री गुरु महाराज की
चरण कमलों की रित की भिन्ना सप्रेम प्रदान कीजिये।

प्रेम का मिखारीः— जुगल माधुरी शरगा।



परम भक्त स्वर्गीय पं० शिवदयालजी वकील, जिनका कि उपनाम "सरस माधुरी" था, एक वड़े ही सरल, विनीत, मधुरभापी, दयालु और भावुक भक्त थे। त्राप श्रीशुक संप्रदाय के अनुयायी और श्री श्यामचरणदास जी के परम उपासक थे। आप न केवल भक्त ही थे वरन् आपकी कविता भी बड़ी ही सरस और भावपूर्ण होती थी। आपने श्री प्रेम मंजरी के अवतार श्री श्याम चरणदासजी की एहलौकिंक लीला का वर्णन बहुत ही मधुर श्रौर विविध भांति के छन्दों में किया है। आपने अपने निवास स्थान में ही एक महल में श्री शुकदेवजी तथा श्री चरणदासजी के चित्र विराजमान कर रखे थे श्रीर प्रतिवर्ष वैशाख कृष्णा श्रमावस्या को श्री शुकदेवजी का तथा भाद्रपद शुका तृतीया को श्री चरणदासजी का जन्मोत्सव मनाया करते थे। इन उत्सवों में प्रायः जयपुर के सभी भक्तजन पधारा करते थे श्रीर पूर्ण उत्साह तथा भक्ति भाव से भगवल्लीला का रसा स्वादन किया करते थे। इन्हीं उत्सवों के अवसरों-पर पं० शिवदयालुजी (सरस माधुरी जी) अपनी अनूठी और भावभरी कवितात्रों तथा राग रागनियों के गायन तथा लीलाभिनय के द्वारा उपस्थित प्रेमी भक्तों के हृदयों में आनन्दासृत का प्रवाह बहाया करते थे । लोग इतने तन्मय हो जाया करते थे कि कई बार तो सुधबुध बिसरजाने का सा श्रनुभव हुआ करताथा। इन उत्सवों में कई बार इन पंक्तियों के लेखक को भी संग्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। वास्तव में सचे भाव से किये हुए इन उत्सवों में अपूर्व ही आनन्द आया करता था।

पं शिवदयालुजी योग्य शिष्यों को मन्त्रोपदेश भी दिया करते थे श्रीर श्राप के शिष्यों में केवल श्रन्ध विश्वास वाले लोग ही न ये वरन प्रायः शिचित श्रीर विचारशील भद्र पुरुप थे । उदाहरणार्थ स्वर्गीय प्रोफेसर हरिनारायण्जी तोसनीवाल वी. ए. वर्तमान महाराजा कालेज के इंगलिश के प्रोफेसर मुन्शी गोविंदप्रसादजी श्री वास्तव वी. ए. मास्टर गंगावज्ञी वी. ए. श्रादि का उद्धेख किया जा सकता है।

श्रस्तु। स्व० पं० शिवद्यालुजी की रचनाएं, फुटकर रूप से इधर उधर लिखी थीं। परन्तु संग्रहरूप से उनको पढ़कर लाभ उठाने की सुविधा श्रभी तक न थी। श्रव वहें हुप की वात है कि उनके छपापात्र शिष्य परम भक्त, सदाचारी श्रीर साहित्य प्रेमी मुन्शी गोविंदप्रसादजी श्री वास्तव थी. ए. ने (प्रोफेसर महाराजाज् कालेज जयपुर) ने उन रचनाश्रों को कमवद्ध प्रकाशित करने का निश्चय किया है जिनका कि यह प्रथम भाग सुद्रित होकर श्राज गुरु पूर्णिमा के परम मांगलिक दिन में श्राप लोगों के कर कमलों में सुशोभित होने योग्य होगया है। इसको यदि प्रोफेसर साहव की श्रोर से इस श्रवसर पर अपने गुरु महाराज की सेवा में श्रद्धाञ्जली समर्पण करना कहा जाय तो कोई श्रत्युक्ति न होगी।

स्वर्गीय सरस माधुरीजी महाराज वकील होने के कारण उर्दू फारसी तो अच्छी जानते ही थे परन्तु हिंदी पर भी आपका अच्छा अधिकार था। इसका प्रमाण आपकी रचनाएँ ही हैं। उदाहरणार्थ इस संग्रह में से यहां दो रचनाएँ उद्धृत की जाती हैं।

गजल (उर्दू)

तुम्हारा नाम है रनजीत रनके जीत क्रामिल हो।
श्रगर करदो महर मुभ पर तो मुश्किल सब मेरी हल हो॥
तुम्हारा श्रासरा एक दीदे दिलवर का वसीला है।
मयस्सर हो श्रगर मुभको तो जलवा खास नाजिल हो॥
हो हासिल मुद्दश्रा दिलका जो कोई तुमसे हो वासिल।

श्रगर हो श्रापसे गाफ़िल वो गाफ़िल हरिसे गाफ़िल हो॥

मरहमत कर दिया हरि ने तुम्हें श्राचार्य का मनसब।

निगाहे महर हो जिस पर उसे फिर क्या न हासिल हो॥

यही है श्रारज मेरी रहे सर पर चरन साया।

शवाना रोज दिल मेरा हरी के जप में शागिल हो॥

सरापा जिस्म यह मेरा खताश्रों से भरा श्रजहद।

श्रगर करदो नजर रहमत सरस खिद्मत के काबिल हो॥

बरस गांठ पद (हिन्दी)

बरसगांठ रनजीत लाल की ऐसे ही नित श्रावो ।

पुर नारी हिल मिल के सारी रंग बधाई गावो ॥
नाच नाच जाना गति लेके लालन लाड लडावो ।

दरसन कर श्री मुरली सुत के श्रपने नैन सिरावो ॥
प्रेम सहित पलना में ललना लालन भमक सुलावो ।

किलकन्, हँसन निहार प्यार कर परमानँद प्रगटावो॥ श्रपनो तन, मन, धन श्रपन कर छिष लिख बिल बिल जावो। सरस माधुरी श्रानँद मंगल श्रमरलोक पद पावो॥

ये दो रचनायें केवल आदर्श के तौर पर यहां उद्धृत कर दी हैं परन्तु एसी २ और इससे भी वढ़ कर अनेक सरस रचनायें इस संग्रह में पाठकों को पढ़ने को मिलेंगी। इस संग्रह को प्रकाशित कर सरस माधुरीजी के शिष्यवर्गों ने तथा प्रोफेसर श्रीवास्तवजी ने गुरु भिक, सहृदय सतोप, सम्प्रदाय रहस्य प्रकाश और साहित्य सेवा के कार्य एक साथ ही किये हैं। स्वर्गीय पं० शिवदयालुजी मुक्त पर भी वड़ी छुपा रखा करते थे। उनकी निरम्रभिमानिता, सरस भापण, विनीत भाव श्रीर वत्सलता तत्काल चित्त को श्राकृष्ट कर लिया करती थी उनकी भोली भाली मूर्ति श्रव तक भी मेरी श्रांखों के सामने घूमती सी प्रतीत होती है। ऐसे महात्मा की रचनाश्रों का पुस्तकाकार में प्रकाशन देख मुक्ते वड़ा ही संतोप श्रीर हर्प हुआ है। में श्राशा करता हूं कि इस प्रन्थ का भक्त लोगों में वड़ा ही श्रादर होगा।

सरस माधुरी की रचना का, संग्रह यह श्रति पावन है। एक एक पद इसका सचमुच, भक्त हृदय हुलसावन है।।

लेखक:-

पं० सूर्यनारायण शर्मा श्राचार्य । प्रोफेसर, संस्कृत हिंदी महाराजा कालेज, जयपुर



श्री १०८ श्री सरस माधुरी शरण जी का चरितामृत लेखकः—

[श्री एम. वाई. सनम 11. S. B., F. T S., F. B. S., H. M, B., मुसलमान वैष्णव भक्त]

श्रापका शुभ नाम शिवद्यालु है। श्रापका जन्म स्थान मन्द्सीर (ग्वालियर) है। श्रापका प्राकट्य गौड़वंशीय ब्राह्मण कुल में हुश्रा। श्रापका जन्म श्रावण कु० ३० बुधवार सम्वत वि० १६१२ को हुआ। श्रापकी माता का नाम श्रीपारवती श्रीर श्रापके पिता का नाम पं० घासीराम था। श्रापके घर में सदा से श्री शुक (श्री चरणदासीय) सम्प्रदाय की कंठी तिलक की परम्परा चली श्राती थी। श्रापकी माता जी परम साधु सेवी थीं च्रौर संत महात्माच्नों में परम श्रद्धा रखती थीं । श्रौर श्री ठाकुर जी साक्षात्कार था । जब श्रापकी ५ वर्ष की ग्रवस्था थी तब ग्रापको से वहादुरपुर जो (अलवर से ४ कोस पर है) भेज दिया गया। वहां पर आपकी ननसाल थी श्रौर श्री शुक सम्प्रदाई (श्री चरगादासी) संत दराडोतीरामजी का स्थान श्रौर श्री विहारी जी का मन्दिर था। वहां श्रच्छे श्रच्छे संत पधारा करते थे श्रोर श्रानन्द से सत्संग हुश्रा करता था। श्राठ वर्ष की श्रवस्था से श्रापको साधु-सेवा श्रौर सत्संग का रंग चढ़ गया था। श्राप सन्तों की सेवा में जाया करते थे। उनके दर्शन श्रीर सेवा से श्रपने को कृतकृत्य समभते थे। माता जी से भोजन इत्यादि ले जाते श्रीर सन्तों को समर्पण कर देते थे। ग्रापने वहां पर हिन्दी उर्दू का वोध कर लिया था। माता जी ने श्राग्रह करके भ्रापका विवाह भी कर दिया था।

श्री ग्रह मिलन श्रीर दीचा की उत्कंठा।

श्रापको = वर्ष से १४ वर्ष तक श्री गुरुद्र्शन मिलन, श्रागागित श्रीर दीक्षा की परम उत्कग्ठा रही। श्री गुरु श्राग प्राप्ति के निमित्त श्राप बहुत घूमें श्रीर श्रनेक स्थानों में श्रापका देशाटन रहा। परन्तु सच्ची जिङ्गासा श्रीर हार्दिक उत्कग्ठा कभी निष्फल नहीं जाती। श्री गुरुदेव सदा श्रन्तर्यामी हैं। वह सक्वे शिष्य को विना श्रपनाये हुए नहीं रहते, कभी भी सक्वे गुरुदेव की कमी नहीं है। सक्वे जिङ्गासु श्रीर प्रेमी नहीं मिलते हैं। चूकि श्राप को सक्वी लगन थी इस लिये श्रापको श्री १०० श्री बलदेवदासजी महाराज मिले। इन महातमा का जन्म ब्राह्मण कुल में ब्रज-भूमि में हुआ था। इनके भाई की सगाई

होने वाली थी परंतु इन्होंने अपनी माता से कह दिया था कि छ महीने पीछे करना। इस ही वीच में उनका परमधाम गमन हो गया। इस चमत्कार से इनको शानोदय हो गया धौर यह विरक्त होकर एक जाट के लड़के के साथ साधु-मग्डली में मिल गये। साधु मग्डली के संग यह द्वारिका धाम पहुँचे श्रौर वहां श्री रणाकोड़ जी के दर्शन को गये। वहां पर राज भोग का समय था। राज भोग समर्पण कर दिया गया। अवसर पांकर यह वालक तो थे ही हरि मन्दिर में प्रवेश कर गये। वहां परम मोहनी रूप ५ वर्ष के वालक भगवान के दर्शन हुये कि भोग पा रहे थे। उस आनन्द को नेत्रों और हृद्य में भर लिया। भोग विसर्जन होने पर धाप भी वाहर निकल आये। रात्रि को स्वम हुआ कि दिल्ली नगर के पास लुकसर ग्राम है। वहां पर मेरा चरगादासीय सन्त परम भक्त ठाकुरदास है उनके शिष्य हो। इस स्वप्न के श्राधार पर साधु मग्डली सहित दिल्ली होते हुये लुकसर पहुँचे और श्री १०५ श्री ठाकुरदास जी के शिष्य हो गये और मन्त्र दीक्षा ली ग्रीर वैष्णाची वेप घारण किया। श्रापको भगवद् भोग समर्पेश करने का कार्य संाप। गया । श्रीर शान ध्यान श्रीर नवधा प्रेम भक्ति के लक्ष्माों का सब श्रनुसन्धान करा दिया गया। जव श्री १०५ श्री ठाकुरदास जी श्री गोलोक को पधार गये तो उनके स्थान पर श्राप महत्त वने । मगर श्रापने इस संसट में पड़ना पसन्द न किया श्रपने छोटे गुरुभाई को स्थान का काम सोंप कर आप स्वतंत्रता पूर्वक विचरने लगे। आप चारों धामों में भ्रमण किया करते थे और कभी कभी वहादुरपुर (ग्रालवर नगर से पांच कोस) के चरणदासीय सम्प्रदाय के स्थान श्री विहारी जी महाराज के मन्दिर में श्राप पधारा करते थे ऐसे ही किसी सुग्रवसर पर श्री सरस माधुरी जी ने श्री वलदेवदास जी महाराज से श्री चरगाशरगा प्राप्ति की प्रार्थना की और उन्होंने इनकी प्रार्थना को अंगीकृत करके सहर्ष और सप्रेम मंत्र दीक्षा दी श्रौर कराठी तिलक:प्रदान किया। श्रौर श्री शुक्रदेव (श्री स्थाम चरणदासीय) सम्प्रदाय के सिद्धान्त और सार्मिक घ्यान, अभ्यास, प्राणायाम श्रौर प्रेमलक्षणा भक्ति का स्वरूप वतला दिया। श्रौर प्रेम से छका दिया श्रौर रस वैराग उत्पन्न कर दिया। और रस सम्बन्धी निंकु ज्ञानाम 'श्री सरस माधुरी शरण" प्रदान किया। श्री विया मीतम को लीला श्रौर धाम श्रौर सेवां का श्रनुभव श्रौर साक्षात्कार श्राखों श्रौर हृद्य में भर दिया जिससे रसानन्द श्रीर प्रमानुभव श्रीर माधुर्य भाव से श्राप परिपूर्ण हो गये। इन सब लक्ष ग्री को

श्राप श्रपनी सरस वाणी श्रीर प्रेममयी कविता से भलकाते रहे। श्रापके एक एक पद से रसानुभव श्रीर प्रेमानन्द श्रीर ध्यान साक्षात्कार भलकता है। श्रापके पदों में प्राचीन रसिक महात्माश्रों श्रीर व्रज के प्रेमियों की प्रभादीख पड़ती है। नवीन खड़ी वोली की गज़ल, थियेटर की चाल श्रीर पुराने स्थाई रागों की भरमार श्रापके पदों में है। श्रापने श्री शुक्रदेव सम्प्रदाय सिद्धान्त चिन्द्रका" एक प्रमाणिक श्रीर सिद्धान्त की पुस्तक लिखी है। श्रापके पदों श्रीर इस लीलाश्रों का वहुत वड़ा संग्रह है। श्रापके परिश्रम श्रीर सम्मति से श्री शुक सम्प्रदाय की निम्नलिखित पुस्तके प्रकाशित हो चुकी हैं श्रीर मिल सकती हैं:—

- (१) श्री वेङ्करेश्वर प्रेस वस्वई से श्रीमद् श्यामाश्याम चरणदासाचार्य रचित श्री भक्तिसागर।
- (२) नवलिक्शोर प्रेस लखनऊ से (१) श्री भक्तिसागर, २ श्री स्वामी रामरूपजी रिचत 'मुक्तिमार्ग (३) श्री सहजोवाई रिचत 'सहज प्रकाश' (४) श्री रामरूप जी रिचत श्रीमद्चरगादास जी का पद्य चरितामृत 'श्री गुरुमक प्रकाश'।
- (३) ब्रापने श्रीकृष्ण प्रेमी भक्तों के नित्य पाठ के लिये (१) नित्य पाठ संग्रह संस्कृत, (२) नित्य पाठ संग्रह भाषा, प्रकाशित किये-जिसमें नित्य पाठ करने के योग्य पदों का श्रमुँठा संग्रह है।

'श्री सरस सागर' से निम्नलिखित भाग और संब्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

(१) श्री सरस चौरासी, (२) श्री सरस शतक, (३) श्री सरस माजा, (४) श्री सरस मृजन-मृजार सँग्रह, (६) श्री होजी वसन्त सँग्रह, ६) श्री सरस मृजा-विल, (७) श्री सरस निकुंज विजास, (६) श्री सरस श्रारती सँग्रह, (६) श्री मीरा जीजा, (१०) श्री श्राष्ट्रयाम (११) श्री गुरु महिमा श्रीर विनय के पद।

श्रापकी समय वागा के छपने का मबन्ध हो रहा है। उसका प्रथम भाग रिसक प्रमी भक्तों के हित प्रकाशित किया जाता है।

🎇 लोकिंक रहन सहन त्रीर त्राजीविका

श्रापने श्रपना जीवन निर्वाह वहादुरपुर की थानेदारी से किया। पीछे श्राप श्रावय को छोड़ कर जयपुर पधार श्राये थे और वहां पर श्रापने विकालत को लौकिक जिवन के निर्वाहके साधन का हेतु बना लिया था। श्राप श्रपने रस वैराग को इस रीति से श्राजन्म पालन करते रहे कि प्रवृत्ति श्रीर निवृति का प्रवाह थो गंगा

श्रीर श्री यमुना की मिली जुली घारा के समान दांख पहता था। श्रापको साधु सेवा का चसका बचपन से ही था। आप स्त्रयं तस्तुर लेकर बड़े प्रेम से रस गान किया करते थे और आपका कोकिला के समान मधुर कंठ था। बड़े प्रेम से धी युगल सरकार के सन्मुख ग्राप श्रपने पदों का कीर्तन करते थे। श्रापको पद कीर्तन करते हुए मन्द, १०-१० घंट हो जाते थे। आपके पदकीर्तन में प्रेमियों को प्रेम मुर्ज़ा आते और विह्नल होकर नृत्य करते आंखां से देखा है। रोमाञ्च और श्रथ्रपात तो सहज ही हो जाया करते थे। साजिन्दों के साथ तवला, सारंगी, हारमोनियम के साथ पदकीर्तन किया करते थे। प्रापकी पहली स्त्री स्नीर दो सःतान हरि शरण होगये। श्री गुरुदेव के स्राग्रह से स्रापने दृसरा त्रिवाह किया। लौकिक पथा और धर्म शास्त्र की मर्या।दा वे लिये आप लीकिक जीवन गृहस्थाअम के रूप से व्यतीत करते रहे। दूसरी धर्म पत्नी से आपके सुपुत्र श्री राधेश्याम शरता जी उत्पन्न हुए। ४४ वर्ष की श्रवस्था में दूसरी धर्म पत्नी का भी परलोक गमन होगया। आपकी संतित में से श्री राधेश्याम श्रगा जी विद्यमान हैं। वैषावी परम्परा और श्री ठाकुर सेवा ग्रीर मन्त्र दीक्षा का पद ग्रधिकार भी श्रापको मिला। श्रापकी सुशीलता श्रीर श्रतिथि श्रीर साधु सत्कार भी सराहनीय हैं, श्राप प्रेम की सूर्ति हैं।

थापका शुभ स्थान श्रीसरस कुञ्ज, दरीवा पान, जयपुर में विख्यात है। निकुअ को देख कर श्री वृन्दावन धाम का स्मरण होता है श्री शिया शितम (श्री राधाकृष्ण) हरि भंदिर में विराजमान हैं, दोनों ख्रोर श्री हुकदेव भगवान थ्रौर श्री श्यामचरणदास महाराज विराजमानहें।साझात् श्री गोलोक की ग्राभा की भलक पड़ती है। रासमंडल श्रष्ट सिख्यों के परिकर के चित्र से गोलोक सुशोभित हो रहा है। उत्सव पर श्री त्रिया-प्रीतम अपने परिकर सहित श्री सरस फुअमें श्रा विराजते हैं उसके सन्मुख श्री रास स्थल है। श्री हृणा सम्वन्धी सव उत्सव परमोत्साह के साथ मनाये जाते हैं। परन्तु जिस धूम धाम से दोनों श्री श्राचार्य जनम जयन्ति मनाये जाते हैं वह अपूर्व है। श्री मनमहाभारत के मोक्ष धर्म (भीष्म पर्व) के ३२४वीं अध्याय के अनुसार श्री वेद्यास के पुत्रेष्टी यह से श्रक्णी मधत करते समय श्रश्निकुग्ड से, किशोर रूप भी शुकदेव भगवान का तेजस्वी श्राविर्माव वैशाख कृषा श्रमावस्या सोमवार (सोमोती श्रमावस्या) को न्धा रस जन्मोत्सव को श्री महाराज ४५ वर्ष से वड़ समारोह से करते रहे हैं।

तक जन्म वधाई, पद्कीतन, जन्म लीला नाटक श्रीर रासलीला का

श्रानन्द रहता है। यज के प्रसिद्ध महात्मा श्रीर दूर दूर के प्रमी इकट्टे होते हैं। प्रेम श्रीर श्रानन्द की भरमार हो जाती है।

į

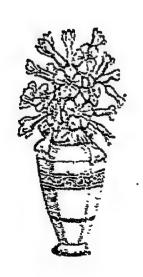
इस ही धूमधाम से भाइपद शुक्ला की तृतीया को श्री शुकदेव भगवान के नाद पुत्र शिष्य श्रीर श्री शुक सम्प्रदाय के प्रवर्तकाचार्य्य का जन्मोत्सव भी बहु समारोह से मनाया जाता है। इन दोनों उत्सवों पर परम अलौकिक रस और ष्रानन्द वरसता है। वज के रिसक महातमा और दूर दूर के प्रेमी रिसक सम्मिलित होते हैं। दोनों जन्म जयन्ति के दिन वड़ी विशाल वैणावों की भोजन पंक्ति होती है। उस रस को वही जानते हैं जिन्होंने इस रस श्रीर श्रानन्द का पान किया है। दास ने भी उस प्रानन्द का श्रास्त्वादन किया है। श्राप को प्राचीन महात्माश्रों श्रोर वज के रिलक महात्माश्रों की वागी श्रीर विश्रों के संब्रह की उत्कंठा थी। आपके पुस्तकालय में पांच सो जुः सो पुस्तकों का संब्रह है और इतना ही महात्माओं के चित्रों का संग्रह है। यह दरीनीय संग्रह है। ग्रापने भी महाप्रभु श्रीगौरांग श्रौर श्री निम्वार्क भगवान श्रीर श्रीहितहरीवंश के जन्मोत्सवीं पर स्वरचित जन्मवधाई के पदीं की भेट की हैं। आप व्रजधाम में अधिक वास किया करते थे। व्रजकेरसिक महात्मा भ्राप से भली भांति परिचित है भ्रोर थे। इस ही प्रकार आप श्रीकृणाप्रेम भक्तिका प्रचार करते रहे। पद कीर्तन श्रीर रस भावना की गंगा श्रीर यमना वहादीं। सहस्रों जीवीं को श्री कृपा सम्मुखंकर दिया। श्री सरल परिकर का विस्तार होने लगा। जव श्रापने समका कि श्रव इस लोकिक लीला को समाप्त करें तो संकेत से प्रापने गोलोक गमन की सचना देदी । ग्रापने जीवन के ७१ वर्ष में विया शीतम का नाम रमर्शा करते हुए श्रीर ध्यान में मग्न नेत्र ख़ुले हुए ७ वजे सायंकाल को आपने पयान किया। आपके गोलोक गमन की तिथि शनिवार मार्गशीर्प शु० १४ सम्वत् १६-३ तद्तुसार १-दिसम्बर १६२६ है आपके वियोग ने श्री सरसपरिवार को परम दुखित करदिया। श्रापका श्रन्त्येष्ठी संस्कार वहे धूम धाम से हुआ आपकी अर्थी पर शयन के, भ्रीर चिता भ्रारोहित विग्रह के चित्र लिये गये थे। श्रापके शवविग्रह के साथ सहस्रों मनुष्य थे। प्रापका विग्रह तेजस्वी प्रिश्न में प्रन्तर्धान होगया।

श्री गुरु-भक्त शिरोमिशा भगवानदासजी दास को भागव के स्थान पर श्रातवर में १६११ में जब श्राप विराजमान थे उस समय प्रथम दर्शन का श्रावकाश मिला था। जब से ही श्री चरशा कमल हृदय में विराजमान कर लिये थे और ज्वि नेत्रों में भरती थी। आप से विनयपूर्वक प्रार्थना करने पर आपने मंत्र प्रदान किया और अपनी पद शरणा में ले लिया। ११ दिसम्बर १६११ का महा महलीक दिन था यह दिन आजन्म नहीं भृतंगा। श्री १०० श्री सतगुरु की असीम द्या कृपालुता और वात्सल्यता का कहां तक गुणानुवाद करूं कि मुक्त जैसे नीच और पतित को शरएय वनाकर दीनवन्धु और पिततपावन नाम को सार्थक कर दिया।

श्रापके ही परिश्रम श्रौर उद्योग से श्री दीनानाथ जी मक की रास मंडली जयपुर में स्थापित हुई श्रीमान स्वर्गीय जयपुर नरेश श्रौर श्री किशन नरेश श्रापका बड़ा श्रादर किया करते थे श्राप उत्सर्वों के श्रवसर पर प्राय: किशनगढ़ भी जाया करते थे। श्रापके परिवार में श्रव्हे र महानुभाव कथा कीर्तन, सन्त सेवा, भजन भावना का श्रानन्द ले रहे। हैं श्रौर श्रग्य जीवों को इतार्थ कर रहे हैं।

श्रापके शिष्य वर्ग हर जाति श्रौर फिरके में पाये जाते हैं कुछ उन में से विरक्त होकर वानेधारी सन्त हैं जो श्रधिकतर श्री वृन्दावन वास करते हैं।

श्री रूप माधुरी जी आपके परम रूपा पात्र शिष्य श्री वृन्दावन के स्थान धारी महात्माओं में से हैं। आप वाल ब्रह्मचारी हैं। आपने श्री गोपाल मन्त्र के महिनों दूध पान करके कई अनुष्ठान किये हैं और कर रहे हैं। आप श्री सरस कुंज जुगलघाट श्री वृन्दावन में निवास करते हैं। आपके सतसंग से अनेक स्त्री पुरुषों को परम लाभ हो रहा है। आपकी स्वरचित ग्रंथ भी प्रकाशित हो चुके हैं।



॥ श्रीः ॥



॥गुरु महिमा॥

वर्ष ।	म्बर अथम पाक्त	पृष्ठ नम्बर
ş	श्रमरभये सतगुरु के उपदेश	१ ४
ર	श्ररज खुनो थी सतगुरु द्याल	ន
. ३	श्रार्ता श्री गुरु की करिये	*0
ક	प्रार्ता श्री गुरुदेव तुम्हारी	स्थ
¥	्डठ प्रभात श्री सतगुरु सुमिरो मन मेरे	¥
*	क्या तारीफ करूँ सतगुरु की	Sk
છ	कर मन प्रारती सतगुर की	২ %
=	कहा कहूँ गुरु कृपा की वात	२ १
3	गये गुरुदेव परम निज धाम	٠ \$٦
१०	गये मोहि झांड़ श्रकेले धाम	५ २
६१	गुरुदेव गुसेंया वेंया गहां जी मोरी श्राय के	२२
१२	गुरुद्व दयाल द्या करिये	ઇ૭
१३	गुरून की मूरति मंगल करनी	२ ३
१४	गुरून की सुन्दर स्ररत प्यारी	
१५	चरन कमल गुरुदेव नमामी	ও
१६	जगत में है गुरु हरि घ्रवतार	१०
१७	जव गुरु छपा दृष्टि कर हेरं	ध
Į II	जय गुरुदेव दयानिधि देवा	ę
\$\$	जय जय गुरुदेव हमारे	३ ७
२ ०	जय जय श्री सतगुरु महाराज	४८

ল	म्बर प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नम्बर
२१	जाग परी में गुरु की जगाई	४२
२२	जीवन मुक भये जो प्रानी	8.8
२३	जो जन शरन गुरुन की आवे	=
રષ્ઠ	द्या कर सतगुरु दरस दिखायो	२८
₹ķ	दियो श्री गुरु ने यह निज शान	३७
२हं	धनि धनि श्री सतगुरु सुखदाई	રદ્
२७	धनि सतगुरु वलदेव हमारे	२२
२=	नमो जय जय श्री सतगुरु देव	* =
२ ६	नमो नमो गुरुदेव चरन को	U
३०	नमो नमो गुरुदेव गुसांई	G
38	नीका म्हाने लागो हो जी गुरुदेव	१२
३२	प्यारे नॅदलाल से मिलादो गुरू"	३६
33	परितय पर धन से डहँ "दोहा	२
३४	पुन्य पूरव ले सतगुरु पाये	38
३४	पूर्ण प्रेम मयं मुनिवरं *** स्होक	Ą
38	प्रेम का प्याला सतगुरु प्याया	१्द
शृष्ट	वनाई वनी गुरून की यात	१६
३=	वित्तहारी जाऊँ प्यारे गुरू की """	38
38	विलहारी मेरे मुरशद् की दम्पति इश्क लगाया है	SX
४०	विगड़ी मेरी बनादो वन्दे नवाज़ मुरशद	38
ક્ર	वेदों गुरुपद पद्म जहाज़	5
धर	भजो मन गुरु गोविंद् पद् भाई	१०
४३	भरोसो श्री सतगुरु को भारी	२१
88	मन व् ले सतगुरु को सरना	२३
४४	मिले हमें श्री गुरु ग्रानँद रासी	१ ४
४६	मुक्ते मिले मुरशद कामिलं """	देव
ઇક	में वारी जाऊँ श्री गुरु की	8=
8=	मोको सतगुरु ने समसायो	श्च

न	स्बर ं	प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नम्बर
86.	मोहि भरो	तो श्री गुरु ही को	Ę
ķο	मंगल नि	वे श्रानंद निधि " " दोहा	.8
ķę	रटो मन न	ाम दिन रैंन	११
पूर	रसिक शिर	ोमिं गुरू हमारे	३०
£¥.	लाभ नर	हि गुरु मोहि दीनो	ધર
४४	शरन गुरुदे	व लई मेरा जन्म मरन दुख नासा	38
ሂሂ .	शरपा हम	पेसे गुरुकी पाई	२४
५६	श्री गुरु श्रा	मर लोक से भ्राये	80
१७	" गुरु ग्रा	वेनासी सुखरासी	४०
ጷጜ	ग ग के	गुन गावे जुगल के मन भावे	३०
32	,, ,, चर	या कमल सिर नाऊँ	₹€
ξo	,, ,, चर	या शरण जव श्राया	२०
\$\$,, ,, पद	पंकज पद पावन	રક
६२	, ,, श्रा	याागत प्रति पाल · · · · ·	88
£3	॥ ॥ सर	। विधि पूरन काम	8
ई४	" " हुये	सहाई फाग लीला दरसाई	इ२
ξķ	11 11 M	यम उधार पतित पावन सरकार	१४
ÉÉ	" " पेर	ी रूपा कीजे	१२
थ३	" गोविंद	गुह वनि श्राये	११
Ę́¤	,, चलदेव	गुरु चलिहार	१७
६६	" मत सत	गुंह परम सुजान	ક ર્દ
ও০	" सत गुर	ह महाराज हमारे सभी सुधारे काज	. ४३
७१	" सतगुर	ह मोपे कुपा करो	४३
99 .	" सतगुरु	स्वामी वलदेवा	당
93	" सतगुरु	ने कृपा करके सुमिरन सार वताया है	So
હ્ય	,, स्त्रामी	वलदेवदास प्रभु गुरु सुखदाई	88
88	सखी री ज	मि हैं मेरे भाग शरण सतगुरु की लई	, šo
७६-	सतगुरु ग्रज	ार ग्रमरपुर दीनो	१४

नः	वर प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नम्यर
७७	सतगुरु देव दयानिधि श्राये	₹8.
৩5	सतगुरु ने निज शान दियो	२६
30	सतगुरु मौज महल की दीनी	२७
=0	सतगुरु श्याम सनम दरशाया	· २२.
द १	साधो सतगुर वहा वलदेव सेरा	₹४
5 7	हमतो श्री गुरुदेव मनार्च	₹ y
=3	हम तो श्री गुरु हिं कर मान	¥ የ
द्र	हमारी श्रव सव विधि यनि आई	स्द
ج <u>لا</u>	हमारे गुरु द्ग्पति रसिक श्रनन्य	२०
नद	हमारे गुरु परम छपा की खान	. 🕏
E /9	हमारे गुरु परम ह्या के रूप	ន
ፕ ፔ	हमारे गुरु रसिक शिरोमणि राय	१६
5€	हमारे गुरु रसिक शिरोमिशा स्वामी	33".
60	हमारे स्वामी सतगुरु दीन द्याल	
\$3	हमारे गुरु संतन के सिरताज	१६
६३	हरि मिलने का मारग प्यारे गुरु विन हाथ न आवेगा	ध३
63	होरी खेलत सरस सतगुरु के संग	. 78
	॥ गुरु परम्परा॥	
	थ्रौर किसी से काज न मेरो ""	६१
V.	र जय जय च्यवन ऋषि भृगु नंदन	yĚ
,	३ जय श्री शोभन भक्त भूप वर	ጷቘ
	४ नमो परम गुरु प्राग्रा प्यारे	žŁ
	४ नमो परम गुरु श्री ठाकुर दासा	′ ኢ=
	६ परम गुरु टाक्कर दास हमारे	्हें २
	७ महर्षि भृगुजी की चलिहारी	
	- मेरी श्ररज परम गुरुदेवा	ξo
	६ श्री ठाकुर दास द्याल परम गुरु	ξo

न्	म्बर मथम पंक्ति	पृष्ठ नम्बर
ξο .	,श्री नारद वीणा धर स्वामी	kk
११	े,, मत वेद व्यास सिर ना ऊँ	ጷጷ
१२	" स्वामी राम रूप सुखदाई	ጷጜ
१३	हमारे राम रूपा तुम परमं	80
	॥ श्री वेद व्यास भगवान ॥	
Ę	चिरजीवो पराशर लाल	७१
ર	जय जय श्री वेद्व्यासं जक्तं गुरु गाइये	ईंद्
Ą	नवल बधाइयां हो पराशर ऋषि दरवार	थ३
8	पराशर घर श्री हरि प्रगटाये	ও৪
¥	पराशर पूर्व पुन्य प्रगटाये	७४
\$	पराशर यह प्रसाद मैं पाऊँ	ঙ
9	प्रगट भये वेद्व्यास भगवान	५२
5	प्रगटे श्री वेद न्यास धन्य दिन श्रकीरी	৩=
3	वधाई वेद्द्यास सुखदानी	७७
१०	बोलो बोलो रसिक मम प्रान	७१
११	वंदों पद भी मत वेदव्यास	ড ৰ্ছ
१२	रंगीली वजत वधाई माई	৩৩
१३	व्यास पूर्शिमा शुभ दिन ग्राज	ও
१४	शादियां भली वे खुश वित्तया भली वे	ĘĘ
१४	श्री मत वेदव्यास "" दोहा	£x
१६	,, रंगा मम स्वामिनी " " दोहा	७२
१७	सखी वेदव्यास प्रगटाये हैं -	ଓ=
१्द	सुमरों श्री वेदव्यास जगत गुरु छपाला	७१
	श्री शुकदेवजी महाराज बधाई तथा वि	वेनय
ş	ं श्रजी हांजी सुमरूँ श्री शुकंदेव दयाल श्री वेदन्यास के लाल	१६६
	्र _{पान कीचे वरण द्या कर शक मित प्यारेजी}	१८७

न्र	वर् प्रथम पाक्त	पृष्ठ मन्यर
A.	भरत गुकदेवजी मेरी जुगल को कव सुनावोग	3,0€
R	ब्रष्ट अली मान प्यारी हिल मिल सव आवोरी	२८१
k	श्राई हो तुम कहां से कह दींजे भेद सारा	== 70
46	श्राचारज रूप प्रीतम को श्रमी प्यारी यनाऊँ मैं	२् २२
G	ब्राचारज रूप श्याम ब्रह्त शोभा श्राम	२२४
=	श्राचारज श्री शुकदेव हमा ^{रे}	१६०
3	आबारज सिरमार जगत गुरु थी शुकदेव द्याल हमारे	१६३
ξo	श्राचारज सिरमोर जगत गुरु ,, गुरुदेव व्यास के लाला	?= k
₹ ₹	श्राज उमा हो हेली हिल मिल श्री शुक्रमुनी दरशन करस्यां	१सई
१२	श्राज वधावरा माई श्राज वधावरा	१३३
१३	श्राज भला दिन धन्य वरी प्रगट हुये शुकंदेव हरी	१४३
१४	आज में शुक्त मुनी द्रशन पाया मेरा मन आनेंद्र माहि समार	या १२०
१४	श्राज समाज महा मन भायो	\$3
१ ६	श्राज समाज सुहावन माई	€3
१७	श्राये श्राचारज को रूप धार	23
ξ=	भागे हैं वनते सखी सुखलाल	इ७३
१६	श्रारती कर शुक्र चरन श्रली की	र्ध्य
२०	श्रारती करिये मुनीवर की श्री शुक इवि उर घर की	२१२
२१	श्रारती करो राधावर की श्री वंशीधर की	२१७
२२	श्राव शुक्त सखी तोंहि लड़ाऊँ	5=3
२३	3,110, 4131 (1)	१ =६
२४		१४८
२५	ऋषि पराशर कुल को ढ़ाड़ी शुक्रमुनि जन्म सुनत हरपायो	१४४
સ્ક	ए व्यास नंदन शुक मुनी मुस्ताक दीदारे तुत्रम	२०४
₹1	भो जी रं म्हारा शुक्त मुनी प्यारा नीका म्हाने लागो हो मुनि	राज १२६
₹=		रे०ई
26	मार्थ देखा शुर्मराज का का का हर्न	१ २ =
30	करन द्रशन तुमरे हम आहे सुनो विनय तम सखदाह	262

न्	न्बर प्रथम पक्ति	षृष्ट नम्बर
31	करणा देवी तुम सुनो वचन मेरे विय कान लगाई	. 220
32	कृपा सिंधु श्री व्यास सुवन वर	१=४.
33	गाऊँश्री शुकाचार्य ध्याऊँ श्री शुकाचार्य	१=०
3 8	गावोरी मंगल वधाई आली जन्म का दिन शुक्रमुनी का	१३७
Ř	गंगा है नाम मेरा गऊ लोक से मैं ग्राई	२२८
३६	घोर अँधेरे में परे जिय जानके आतम ज्ञान	U \$
३७	चल देखो ग्राज सजनी शुकदेव रूप श्राला	२०७
३५	चलो वेदव्यास दरवार शुक्रमुनि प्रगटे वहां	१३६
3,6	जगमें भगवत की भक्ती को प्रगटा दिया शुक्सुनि प्यारे ने	१६३
80	जन्म लियो शुकदेव महामुनि	33
8\$	जन्मे हैं व्यास के घर वनके मुनिहरि प्यारे	१३०
धर	जन्म वधाई वाजे क्र	१२४
83	जन्मोत्सव मंगल दिन आली अति उत्तम मन भायोरी	११४
८४	जय जय श्रारति जुगल लाल की	२७७
SK	जय जय जुगल रस खान अितगन पान कृपा निधान है	२७७
४६	जय जय बोलो शुकदेश दयाल नचो देदे करताल	२१०
દુક	जय जय शुकदेव मुनि व्यास के घर श्रवतारे	१३१
४८	जय जय शुकमुनी मन हरन	१६०
38	जय जय शुक सखी सुहावन	१४६
ķo	-जय जय शुक सहचरी सलौनी गुन रासी	१५४
४१	जय जय ग्रुक स्वामिनी निकुंज की निवासिनी	१५३
४२	जय जय श्री दंपति प्यारे	200
ķ₹	जय जय श्री व्यास सुवन शुक मुनि मतवारे	१८६
४४	जय जय श्री शुक चरण उपासी	१६४
38	जय जय श्री ग्रुकदेव कृणा ग्रवतार हो	१७४
_k&	जयित जय जयित शुक्र स्वामिनी नागरी	२०३
५७	जयित जयित शुक सखी सरस श्रभिरामनी	१५०
k 5	जय शुकदेव व्यास के नैदन	१७२
% &	जय सुक सखी जुगलं की प्यारी	२०२

नम्बर	प्रथम पंक्ति	एष्ट नम्बर
६० जय शुक र	तखी स्वामनी मोरी	२०३
६१ जागे भाग	हमारे हेली	६२
६२ जित देखु	सुख रूप मई है	१६६
६३ जिन्होंने अ	ी शुक तत्व पिञ्जाना	166
६४ जुगल की	भांकी श्रति कमनी	२७५
६४ जुगल के	श्रंग छाई श्रलसान	રફર્
६६ ंजो जन मु	निराज चरन भी शरन भाव कर श्रावंगे	. વર₹
६७ जो जन स	ुक मुनि ध्यान धरें	१६७
६ जो जन ध	ी शुक के गुन गावे	2,53
६६ जो शुकदे	व नाम लौ लावे	१६३
७० जो शुक	मुनि नाहिं प्रगटातो	१७२
७१ ढाढन नां	चे रंग भरी	१४ई
७२ तुमतो वे	रव्यास के लाल शुक्रदेव मुनी मतवाले	?=9
७३ तुमसी त	प्रम शुक्र सखि श्रलवेली	ঽ৹ঽ
७४ तेज पुन्ड	मं विराजे शुकदेव	१ न है
७, तेरी सुंद	र इवि सुखदाई शुक मुनि ननन माहि वसाई	१५७
७६ तेरो सुन	दर प्रयाम सरूप शुकमुनि मन को मोहन हार	१ ३८
७ अथारा श	याम वरन पर वारी शुक्तमुनि दासी दू में थारी	१६४
sa दर्शन दे	हु कराय व्यास जू द्शेन देहु कराय	२३७
७६ दिन ग्र	ाज महा मन भावन है जन्मोत्सव परम खुहावन है	२३६
५० देख स	खी शुकदेव महामुनि भूतल प्रगटायोरी	१२४
८१ देर से	दरे दौलत पै सदा देते हैं	. २१२
=२ धन धन	न जो जन निष्कामी	१६५
५३ धन्य वि	वस श्राज श्याम मृतल में जावंगे	२२३
५४ ्घन्य वै	पाख मांस मावस तिथि	
⁼ ५ नमो न	मो शुक मुनि सुख रासी	. १६६
र्द नांचे र	गावे सुरनारी सकुमारी सब वारी वारी जाव	२०८
	नवेली मिल सारी बजावो गावो दे दे कर तारी	રુકર

· न	म्बर : प्रथम पंक्ति	,	पृष्ट नम्बर
4 5	नाम शुक मुनि सर्वसधन पायो		१६७
58	निरखो निरखो इवि मुनिराज की री	•	२०१
£0	नैनों में शुक मुनीश्वर मेरे समा रहा है		288
4१	प्यारा प्यारा हमारा शुक्र मुनि वेदव्यास	नंद्ना	૨ ૦૪
६२	प्यारी प्यारी शुक सखी मनकी है भावनी	हों	२८३
६३	प्यारे श्री शुकदेव दयाल मुक्ते निस्तारना	रे	१८८
£ 8	परम द्याल व्यास के नंदन श्री शुकदेव	सुद्रष्ट हमारे	१८२
13	परम शुचि श्री शुक मुनि को नाम		१६६
हंद	प्रगट जो न होते शुकदेव		£4
६७	प्रगटत ही वन को रमें	दोहा	२०१
ŧ 5	प्रगट भये थ्राज महा मुनिराज	•	११३
33	प्रगट हुआ है परम मनोहर जगत का जी	वन यह व्यास लाला	१३७
१००	प्रगटे प्रयोनिज नहिं श्राये गर्भ मकार		88
go g	अगटे श्री शुकदेव लला पूरन पुरुषोत्तम र	उ कला .	१०४
१०ः	र प्रगटे हैं श्री शुकदेव वाजे हैं रंग वधाइय	i	१२७
१०	१ प्रगटोरी " शुक मुनिवर प्यारो		११३
१०	३ प्रथम करू श्री शुक मुनि वंदन		र=६
१०	र प्रभू व्यास नंदन जक्त वंदन द्या दृष्टि उर	: श्रारिये	539
१०	हैं प्रात समय श्री व्यास सुत्रन को नाम प्रेम	म युत रसना लीजे	१८१
801	९ विय प्रेम मंजरी ग्रावरी	1	र्मम
१०	< प्रिय प्रेम मंजरी प्यारी		२६०
१०	६ प्रीत रीति जाही सों करिये जिन श्री शुक्	ह मुनि को पहिचानो	१≒१
38	० वधाइयां हो श्री वेदव्यास के द्रवार		ĘE
. ११	१ वजत वधायो श हेली वेद व्यास के		१०२
११	२ वधाई वाज रही प्रगटे शुकदेव द्याल		११=
.88	३ वधाई वाजे रंग भरी श्री वेद व्यास के व	इरवार	१४=
११	४ वधाई लागे ब्राज प्यारी	•	११६
११	४ वधाई वेद व्यास घर वाजे ⁻		़ १२०

नम्बर	प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नम्बर
११६ विनती	मेरी सुनो तुम श्री मान शुक मुनिश्वर	200
	रुनो यांके श्याम चिहारी	२६१
	न्यास सुकुमार	235
	मुनी के चरन	? 89
	भाव कर शुकदेव	१८२
१२१ भज मन	श्री सुकदेव दयाल	१६४
	राधेगोविंद् हरी	२४०
१२३ भलावे १	याज वाजे है रंग वधाइयां	Sec.
१२४ भरोसो	श्री शुक्रमुनि को भारी	१७२
१२४ मम प्रीत	म श्याम सुजान सुनो कहूँ बात प्रत्यक्ष तुम्हें समभ	साई २२१
१२६ महा प्रभु	र्थ श्रुकदेव उदार	१=३
१२७ महा प्रभ	पु श्री शुक्तदेव द्याल	१०२
१२८ महा मुर्ग	ने तुमको शीश नवाँ अ	03}
१२६ मांगने	वाले चलो मांगो दुश्रा श्राज की रात	ं १३०
१३० मिल न	चो श्रप्सरा नार लखो शुकदेव कुमार	२३ ६
१३१ मुवारिव	ह त्राज का दिन प्रगट शुकमुनि हुये आई	રેક્ષ્ય
१३२ मुनिराज	त ग्राज प्रगटाये री	११०
१३३ मेरे शुक	ह मुनि प्यारे व्यास दुलारे मो मन में ग्राति भावत	हो १६८
_	ो वचन श्रीतम सुजान करो जगके जीवन कल्यान	२२२
	ती वधाई ब्राज शुक्तमुनि प्यारे की	११ह
	नज घर को ढाढी जान	. ૨૪૬
	ाचोरी हेली हिल मिल श्राय के	४०४
	मेह सखी वरसेगो	६३
	कुंज श्री शुक्रमुनि प्रगटायो	१६३
	नी रंगीली सरकार	२६६
-	रँग विलसो रंग भरी रैन	२१३
	रो सुखी रहो जजमान	१४६
रदर लचा म	हि शुक सखी अपनाय	१४५

न	म्बर : प्रथम पंक्ति '	पृष्ठ नंम्बर
{ 88	ले सन्यास चले शुकदेव जु देख के ब्यास विरह उपजायो	8
	व्यास ग्राथम में मुनी शुकदेव वन से ग्राये हैं	२७२
	न्यास जु के पगटे सुत सुखदाई	` १४=
१४७	व्यास ज्रु तुम सम श्रौर न धन्न	₹05
१ 85	व्यास जू तुम सम धन्य न श्रोर	१४४
	व्यास जु मानो वचन हमारे	63
१५०	व्यास जू सुकृत कौन सो कीना	१४४
१ % १ .	व्यास तिहारे वंश को दोहा	२०४
	व्यास तेरो चिरजीवो शुक्रदेव	840
	व्यास नेरो सुखी रहो शुकलाल	840
	विघ्न विनाशन श्री शुक्रदेवा	₹0€
	वेदच्यास के कुंवर कृपा निधि श्री शुक्र मुनि प्यारे	२१३
३५\$	वेदव्यास के कुंवर शुक मुनि तिनके शरन जो त्रावे	१७१
१४७	वेदव्यास के दुलारे प्यारे शुक्र मुनी सिरताज	१४४
१४८	वेदव्यास के वारे श्री शुक मुनि मतवारे री	१२३
348	वेदव्यास के वधेया क्राय रही रे	१३६
१६०	वेदव्यास को देवोरी वधाई	१२२
१इं१	वेद्व्यास भगवान ग्रापको देन बधाई ग्रायो है	२३६
१६२	वेद्व्यास भगवान श्राप को पुत्र वधाई देने श्राई	२३०
१६३	वेद्व्यास लाला वाला द्रस तो दिखाय जा	२११
१६ं४	प्याम तन सत चित घन व्यास के नंदन प्यारे	१३३
१६४	शादियां भलीचे खुश वित्तयां भलीचे	303
	शुकदेव सुवन ठाड़े रहो	ર્દ્રદ
	शुक्रमुनि श्रमरलोक से श्राये	१६२
1 65	शुक मुनि का जन्मोत्सव मन को लुभा रहा है	१३४
	शुक मुनि को नेन निहारो री	२४८
	शुक मुनि देखे विन रहचो न जाय	१६०
१७१	,, मनि देव दयानिधि आये	१२७

i

नम्बर	मथम पंक्ति	ष्ट्रप्ट नस्पर्
१७२ शुक मुन	ने प्रगटाये सो हमारे मन भाये	r.e.A
१७३ शुक मुन	न मुरत की बलिहारी	ર ફર્ફ.
	ने राज जन्म दिन का यह जलसा भारी	१६१
१७४ शुक मुनि	तराज शरमा तेरी भ्रायो	१५३
	ने श्याम सलीनारी	. १७७
	नं सरकार हमारे प्यारे नयनीं के तारे	१२=
	की मुरत रस खान री	२३८
•	की सुरतिया प्यारी घनी	न६३
	इटी का उत्सव श्रति श्रानंदकारी "	् २६ १
१८१ , मनी	तुमरी शर्गा गही ज्	१वेद
१८२ " मुनी	महा प्रभु वेद्व्यास नंदना	१७ १.
१५३ , मनी	महा प्रभु स्वयम् त्राप स्याम हैं	. રષ્ટ
१८४ , मनी	महा प्रभु हो कृषा के अनुहार	१४२
१८५ , सर्व	स्वामिनी कृपा करुणा करो	- २४१
१५६ , सबी	सुंदर सलौनी प्रानी से व प्यारी है	. २०४
१५७ , लाल	हमारा प्यारारी नेनो का तारा	. २५२
१८८ श्रम वैषार	व मांस मावस तिथि श्री शुक्र मुनि प्रगटार	ર છરૂ
१५६ श्री कवा :	इत्य नियास्य देश आ शुक्र मुनि प्रगटार	में हैं १११
रेह० श्री कता।	कहत निरधारा प्रेमी जन हमको प्यारा	२४०
१६१ श्री भागनः	श्याम सुन्दर रसिकों का प्रान प्यारा त सार जिन पायो	रईप्ट
१६२ श्री मत गुः	ह बहरेन	ં ફેળ્યુ
१६३ श्री सत वेह	दोहा इ व्यास के नंदन श्री शुक देवन गायो	₹ १
१६४ श्री मत श	र पाल के नद्न श्रा शुक देवन गायो कदेष मुनि वार बार कहिरे	. १८१
१६५ श्री मत श्र	मरेव शरण श्रतुलित सुख पाने	१५०
१६६ श्री मत शह	हमुनि द्याल श्याग रूप अति रसाल	ं १५३
१६७ श्री मन्नारा	यगा की अधि के	१५४1
१६८ श्री मत वेट	व्यास तुम सम धन्य न ग्रान	: 83
१६६ श्री महाराज	त शरण चित श्रायो	÷
		२०६

नम्बर	प्रथम पाक्ति	पृष्ठ नम्बर
२०० श्री रा	धिका वर श्याम श्रति श्रभिरामयुग सरकार हो	· २१८
२०१ ,, वेट	ख्यास द्रवार बधाई वाजे श्राज भली	१४७
२०२ ,, शु	क चरण शरणा जो श्रावे	१४७
२०३ " शु	कदेव दयाल से दूसरे	33
२०४ ,, श्रु	कदेव तत्व जिन जांन्यों	. १७४
२० ४ ,, शु	हदेव तुमसे तुमहीं स्वामी	· १७३
२०६ ,, शुक्	हिंव रटे रसना कोटि कर्टें भव संकट भारी	२०५
२०७ ,, शुक्	देव रसिक सिरमीर	१७३
२०८ ,, शुक्	देव सर्ग परमाने	१६ं६
२०६ ,, शुक	देव सहाय करो जु	१६२
२१० ,, शुक	देव सहाय करें जन की जो हरं भव की सव वाधा	२०७
२११ ,, शुक	देव सुरए हमार	१७०
२१२ ,, शुक	देव सुजस जग हायो	१६५
२१३ " शुक	मुनि श्रव जिन जन तरसावो जी	१६४
२१४ " शुक	मुख ग्रमृत जो चाखे	433
२१४ ,, शुक	मुनी मन में भाये हुये हैं	. २५७
२१६ ,, शुक	स्वयं कृषा सुखरासी	860
२१७ ,, शुक	मुनी मिलने की श्रारज् है	१६१
२१८ ,, शुक	मुनि महाराज तुम्हारी करूँ आरती बारंबारी	, 185
२१६ " शुक	मुनि महाराज प्रगट भये निरखन चालो री	. १२३
२२० ,, शुक	रुणा स्वयं थ्रवतार	७३
२ २१ ,, "	मुनि का प्रगटाना मुवारिक हो	१३२
२ २२ " "	मुनि की छवि लखि लीजे	२०६
२२३ " "	सखी सलौनी तो पर वारी री	२=४
ર ર૪ " .,	सखी नाम सुखदाई	१४४
	सखी की विलहार	१४४
२२६ ,, ,,	सखी भजे सुख पावे	१५६
२२७ ,, ,,	सखी परम सुखदायक	१४७
२ २५ ,, ,,	देव व्यास के नंदन श्राचारज प्रगटाये हैं	. ११४

नम्बर	प्रथम पंक्ति		पृष्ठ नम्बर
२२६ श्री शुक्त स	खी श्रारती करिये		२ ५२
	लौने सखी री मन भाये		335
२३१, , सु	नि राज वर श्राचारज श्रवतार	दोहा	१८८
२३२ ,, ,, वे	द व्यास नंदन गुन गाईये		१६६
२३३ ,, ,, च	रण शरण जो त्रावे		१६४
२३४ सखी री	ञ्राज की धन्य घरी		१५३
२३४ सखी री	श्राज दिवस पुनीत		५३
	धन्य दिन है श्राज		१२६
२३७ सखी स	व ब्रावो वजावो गावो वधाई म्हारे १	याज भली	१४२
३३८ सब उत्स	व है इटी शुक मुनि नाम	दोहा	१३,६
२३१ सवते श्री	। शुक मुनि नाम सलीनो		१म३
२४० सलोनो व	लागे शुक मुनि प्यारो री		१ई७
२४१ सलौने इ	युक्त वेद व्यास लाला		33%
२४२ सर्वस ध	न शुकदेव हमारे		१७१
२४३ सुन सर्व	ी शुक मुनि की इसी		१३६
२४४ सुनो तुम	। सकल श्रप्सरा नारी वात तुम्हारी	हम जानं सारी	. ર્ફફ
२४१ सुनो वच	वन श्री वेद व्यास जू तुम घर श्री हां	रे श्राये हैं	ર્ફે૦
२४६ सुनो विक	नय युगल सरकार		२७६
२४७ सुहाई स	खी दुंदर श्राज वधाई		१२१
२४= स्वयम् १	थी कृष्ण शुक मुनि हो त्राचार ज जग	कहाये हैं	१४६
२४६ स्वामिनी	श्री शुक सखी युग श्रंगज श्रवतार	हो	२८६
२४० स्वामिनी	र्थी शुक सखी हमारी		२०३
२५१ हमतो सु	ख में मगन रहत हैं		१६६
२५२ हम शरन	तो गहचो शुक चरन को		१७३
२४३ हमारे ब्र	ाज बधाई भारी		. १४७
२५४ हमारे म	र्इ महा महोत्सव श्रायो		६२
२४४ हुये प्रगट	र श्री शुक मुनि वधाई है वधाई है		१४१
	न श्री व्यास तिहारी		१४६
ेर्४७ हे कुन्गा	चन्द्र हाराज करुणा सिंधु अधमन उ	इर्न	र्१६

Ť	ाम्बर पृष्ठनम्बर प्रथम पंक्ति	षृष्ट नस्बर्
25	न हो जी हो म्हारा शुक्त मुनि प्यारा व्यास दुलारा	484
₹;	६ है शुक सकल सुखन को सार	१७०
11	श्री श्याम चरणदास त्राचार्य म	हिमा वधाई ॥
۶	धाति पुनीत दिन घाज को जन्मोत्सव रनजीत —	दोहा ३७३
ર	घ्रहो मेर प्रागदास जिजमान तिहारो ढाढी ग्राया	348
3	ध्रभी हां रनजीता जागे	પ્ર થક
B	माचारज प्रवतार हो चरनदास हमारा	૪૪૪
¥	ष्राज स्याम मुरलीधर घर में गीर रूप धर ब्राये हैं	३६३
\$	ष्राज सलोनी कुंजो रानी लालन जायो है	300
v	श्राज डार्रे में मंगज द्वायी	३७१
5	द्याज महाराज भक्तराज प्रगटाये हैं	३६६
3	म्राज म्हारे रंग री हो यथाई महलां झाई हुजी	इ४१
ξo	प्रनोग्ने दास चरनी फी प्रनोखी यह वधाई है	305
११	धाये हैं उमंग जन्म मुनके रनर्जात लाल	इंस्ड
દ્	श्राये हैं श्रनेक गुनी देश परदेशन से बाई है वधाई	३५८
13	ग्रारती फर श्यामचरनदास की	870
is	ष्रालरो श्याम चरनदास चरन को	४२१
Ęş	इष्ट्रियाम चरनदास हमारे	४२३
ţś	उत्सव ह्रटी थ्राज मुखदारे	800
१७	श्रोजी महारा रनजीता प्यारा नीका महाने लागी	850
ţ	पया मनाहर मृरनी रनजीत की मन की हरन	४ ३ २
33	करत प्रारती सव पुरवासी	४ई७
२०	कलेऊ करत थी रनजीत	४८८
२१	कवणा निधान गुन कान श्यामचरनदास ग्ररज मेरी	४१०
२२	करुणा निधि रूपा सिंधु चरनदास स्वामी	४ १६
२३	कुंजो मेया करन लगी श्रृंगार	४७७
₹ 8	कुंजो नंदन भरुगा रासी	ं ५ २५

7	इबर	प्रथम पक्ति	પૃષ્ઠ ન	+45
२५	कुंजो नंदन वरस गाँ	ाँठ दिन हिल मिल सजनी ग्रान	वोरी 🥣	. કુઇક
	गई निज धाम चरन			. ଝୁର୍ଚ୍ଚ
	गये निज धाम हम	· ·		४४१.
_	-	न कुंजो के नंदन प्यारे		४३४
	_	में जो जन ग्राये धाय —	दोहा	३१२
		द् पंक्रज उर धारे री		४१२
		पुरु विहारी विहारन पद भजो		५२४ .
		- वितहारी राखो लाज महाराज	हमारी	४२७
३३	चरनदास स्वामी व	लिहारी		४ ४ई
	चरन के दासा पूरी		,	aké
ąy	चरगा की दासी की	शरगा गही जवसे जो लही		348
३६	13 19 29	" चरन उपासन सार को		888
३७	19 19 19	,, सदा सुख रासी	•	348
३५	चरन की दासी गई	निज धाम		860
38	क्टी उत्सव का सुंद	र दिन ललन रनजीत का श्रात	जी	४७१
So	छ्टी के दिन सकल	नारी कहें हिल मिल वचन स	ारी .	४७१
८१	जन्मे हैं जगत गुरु	निजीत लाल		इप्तर
४२	जन्मत श्री रंनजीत	कुमार के द्वारे वंदनवार वंधाई	t ,	३४३
. ४३	जन्म रनजीत उत्सव	न की खुशी जयपुर में छाई है		३७४
ક્ષક	जन्म महोत्सव मुरल	ी सुत में रचना रुचिर वनाई		३७ई
88	जनम रनजीत का प	ाना मुवारिक हो मुवारिक हो		- ३१६
84	जय जय श्री महारा	ज श्याम चरनदास जी		335
દક	जय जय श्री श्याम	चरनदास च्यवन कुल मंडना		४०१
४८	जय जय नमो श्याम	चरनदासा	•	808
38	जय जय रनजीत कुँ	वर कुंजो के नंदन प्यारे		888.
		ज जगत गुरु चरनदास प्यारे		. ४४१
	जय जय श्री चरनद्		•	
1,43	जय जय श्याम चर	न, की दासी		. սեՍ .

नम्बर प्रध	ाम पंक्ति	ष्ट नम्बर
५३ जय जय प्रेम मंजरी	श्रविचल प्रम मया कर दीजे	४४६
४४ जय जयित श्री जगर	त गुरु रनजीत प्रान प्यार	४२७
kk जयति श्याम चरनद्	स निहारे नाम की	૪૰૪
५६ जागे श्याम चरनदास	न संतन प्रतिपाला	४७४
५७ जुग जुग जीवो कुँवर	रनजीत	४६८
४८ ज्ञगल जन्म से सी ग्	तो शुभ मंगल दिन श्राज	३३ ४
kt जुगन जान की प्राग्र	वहाभा भेम मंजरी प्यारी	३७६
६० भूलो प्यारे पलना र्थ	रन जीता	३्८०
६१ उहरे नगर के महियां	वधेयां वाज रही रे	र्थः
६२ डहरे नगर में देखों थे	त्सी वहार छाई	३७८
६३ डहरे जन्मे हैं महाराज	। जगत गुरु भ्राचारज भ्रवतार	४४६
६४ उहरे में ग्राज देखो शं	ोभा ग्रपार सजनी	३६३
沒 उहरे में वधाई माई ह	ाय रही	864
६६ डहरे वर प्राप्त में सुभ	ोर भृगुवंशिन की	३६४
६७ ढाढन नाचे रंग भरी	नांचे नांचे रे प्रागदास द्रवार	३६६
६= तिहारो कुंजो छुग छुग	ा जीचो लाल	४७२
६१ तुम्हारा नाम है रन र्ज	ोत रनके जीत कामिल हो	धद१
७० तुम सुनो चरन के दा	ता प्यारे भुरती धर के वाले	८ ११
७१ तुमरी सुंदर सरत प्या	री रनजीत लला विलहारी	358
७२ तुमहो जन्म सुघारन ह	हार महाप्रभु चरनदास सरकार	६४०
७३ तुम तो ग्याम चरन के	दास रनजीत कहाने वाले	४६१
७४ दूर खेलन जिन जाहु र	तलारे	४७५
७५ दे माता मोकूँ हर जप	माला	३७१
७१ देखो डहरे में छाई वहा	र जगत गुरु जनमे यहां	इन्ड्
७७ देर हम से दरे दौलत	पे सदा देते हैं	४३४
७ = धन धन ख्राज की है ह	ारी	३६२
७६ धन्य घरी दिन ग्राज ग्र	ाली मिल मंगल मोद वधाई गावें	383
५० नाचत वार मुखी द्रवा	ए में गावत संगल गीत महाई	३४३

. (द्)

=१ निरखोरी नवेली सारी जन्मोन्सव की शोभा भारी	४४६
मर नगर इहरे में हाय रही प्यारी वथाई चरनदास की	335
=३ प्यारा प्यारा हमारा रनजीता नयनों का तारा	ટકર
= १ प्यारा लला प्यारा प्यारा लला श्री कुंजो का वारा लला	373
= ४ प्रगट भये श्री श्याम श्रवनि में जग जीवन उद्घारन	३७४
= प्रगट भई प्रेम मंजरी हेली	४४७
=७ प्रगट भई सखी प्रेम मंजरी संत सभी ब्रहुरागे री	४४७
== प्रगटे ऋणा कला रनजीत मुरलीधर के गेहरी	३७६
दः प्रगटे हें श्री रनकीत लला परिषृरण श्री कृष्ण कला	કેફ્ટ
६० प्रभो पतित पावन दुख नशावन जयित श्याम चरनदास हो	४०६
६१ प्यारे श्यामचरन के दास द्रश दिखवावना रे	ध र्४
१२ प्यारे स्याम चरन के दास हमें हित कर अपनावी जी	ध्इड
६३ प्रेम मई घाम ग्रमर लोक जहां खास है	ñř:
१४ प्रेम मंतरी अवतरी स्मंडल में आय दोहा	ઇ ક્ર
६५ प्रेम मंजरी दम्पति प्यारी स्वामिनि हो प्रिय ग्राप हमारी	ನಿಕ್ಕ
८६ प्रेम मंजरी वर्षु घरवो नाम श्याम चरनदास	ध२३
६७ परम धाम परात्पर में श्री दस्पति राजत हैं सुखदाई	ર્ધર
६= पत्तना श्री रनजीता मृत्रे	==0
६६ पलना श्री रनजीता भृजत पुरकी नार मुलाय रही	३्द०
१०० पलना भूज रह्यो _. श्री-रनजीत कुमार	₹8=
१०१ प्रागदास द्वारे वाजे नौवत्या भर्ती वे	ફેટ્રેફ
१०२ प्रात समय श्री रनजीता को कुंजो मात जगार्चे	કહક
१०३ प्रातिह सेया तें उंड श्री रनजीता लाल दोहा	इ७इ
रे०४ पालने कुलें सर्खा री श्राज मुरलीनंद् हैं	१७३
१०५ पावस ऋतु माहि मादो मल सबे	, 58 {
१०६ पुत्र तेरो राजी रहो जिजमान	ଌଽ୕ୢୢ
रे॰७ वजत वधाईयां होर्मुरली दास के द्रवार	≩≖ડ્ર
र०= ववाई रनजीता की गाऊँ	366
loe वधाई वाजे माई कुंजो रानी ललना जायो छुन्द्र सुखदाई	३४८
११० वधाई वाल रही श्री मुरलीधर द्रवार	340

रित्यधार्विम मंजरी प्यारी की	દપ્રક
११२ घरस गांठ रनजीत जाल की ऐसे ही नित ग्राची	४६=
११३ पुरलीधर द्रायाये हो	8\$8
११४ विनती मेरी सुनो तुम रनजीत सुरली नैव्न	४३६
६१५ भगवत धर्म प्रचार हिन चरणदास प्रगट भये	४२४
११६ भक्तराज महाराज हमारे	દષ્ટદં
१६० भज मन इयाम चरनित दाल	४१३
११ - भयो घर मुरलं।धर ष्रावतार	इहंध
११६ भरोसी तेरी भारी रनजीत कुमार	४३१
१०० भला ये प्राज याजे हैं रंग यथाईयां	३५५
१२२ भादों मास सुद्ध तिथि त्रितिया मंगत दिन मन भावन	ইও৮
१२२ मादी शाहा भीज निथि शुभ दिन मगलवार दोहा	३ंदर
१२३ भादों सुदी तीज सुख रास प्रगटे थी प्रयाग चरनदास	इड७
६२४ मार्गय वंश प्रशंस प्रभाषार हिज कुल शोना धाम री	362
१२४ भृगु भ्रुपि वंश सी प्रशंस हर्च विश्व	५४०
१२६ भृगु कुल च्यवन वंश भृतल पर श्री शोभन प्रगटवे भये	४२४
१५७ में तो थांका जाचक झां जी गज	३४४
१२८ महाराजा तेरे भांड भवन में श्राये	3 60
१२६ महा प्रभु प्रयामचरन के दास	६१३
१३० महल ने ब्रेम मंजरी पाई	४४३
१३६ मास भादो मन भावन श्रायो	ક્રફ્
१३२ मांगने चाले चलो मांगो दुया खाज की रात	हरे
१३३ मुरलीधर प्रजिर थीच मांची द्धि कीच	३४६
१३४ मुरलीघर घर यजत यधाई	रुष्ट
६३५ मुरलीधर घर प्रानंद मार्ड	<i>₹७</i> ०
१३६ मुरली नंदन हम दिंग प्राची	४७८
१३७ मुरलीधर द्वारं खाल याजत है वधाईयां	३५६
१३० मेरे चरनवास मन माने	४१७
१३१ मेरे चित में वसे स्थाम चरनदास	્
१४० गेर रनजीता प्यारे मुरलीधर वारे मो मन में अति भावत हो	४४६

न्स्व	र प्रथम पक्ति	पृष्ठ नम्यर
१४१	मेरे श्री श्याम चरनदास ग्रास तेरी	888
१४२	मंगल भ्रारती करो रनजीता	ઝ ૭ર્દ
१४३	मंगल मय थ्राज दिवस श्रतिही मन भायो	३७१
१४४	मंगल मुरत मुरली नंदन	ક દ્દં ૭
	यही है मेरे मनमें दढ विश्वसा	४३०
१४६	रखें इप्टरनजीतलाल को रिसक अनन्य कहावें	३७६
	रनजीता की जन्म वधाई नारि नवेली गार्वे	30%
१४५	रनजीता जनम की वधाई भली मन भाई भली सुखदाई भली	३७६
388	रनजीत जगत गुरु कृपा कर श्रमरापुर से जग श्राये हैं	४२४
१४०	रनजीता प्यारा दरश तुम्हारा मन भावना	ઝર દ
१४१	रनजीतजी द्रश दो छवि के दिखाने वाले	४३४
१४२	रनजीता प्यारा कुंजो का लाला	880
१५३	रस रंग वधाई झाय रही सुकुमारी सखी मिल गाय रही	342
१५४	राय में तुमरे घर को श्रायो	રૂપ્ટર
3 kk	रँगीली म्हारे श्राज की घरियां	् ३४४
₹XĘ	रँगीली वधाई श्राज वाजे	३४६
१५७	रँगीली वधाईयां वाजे री श्री मुरलीधर द्रवार	३६७
१४८	रोशन है नाम विश्व में रनजीत तुम्हारा मनजीत तुम्हारा	४३३
१४६	ववन भूवो पवना सुकुमार	३८१
	ललन रनजीता प्यारो री श्री मुरलीधर वारो	४११
१६१	ललन रनजीता पलना भूलें	४७३ ं
	लालन रनजीता का पलना क्या सजा निरखो अली	३१७
	न्यास पुत्र शुकदेव कुमार दर्शन दीने	ं ४२३
	विनय कर जोर करू सुनलो रनजीत कुमार	४ १६
	विनय मोरी सुनो प्रयासचरन दास जी	४१ ६
	श्याम चरन ही दास श्री शुक्तदेव के शिष्य ध्याइये	३१म
	श्याम चरन दास श्राचारज खास मुकुट मिण हो सरताज हमा	रें ३३२
१६ =	भ भ भ भ भ जनमतीज याज है	·· ३४६

[4]

नम्बर	प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नम्बर
१६६ श्याम चरा	ादास प्रभु प्यारे हमार तुम चरनन की ध्याना	४०७
tuo "	नाम प्रातिह उठ गाऊँ	४१७
101	सदा संतन सुखदाई	४१=
१७२ ,,	खास निरखो निज नयनते	***
१७३ ,,	को निहार रूप नैननर्स	." ક શ્
१७४ ,,	नाम नित प्रति जप भाई	४ २२
₹ ७ ₽ ,,	श्रपनाश्रो रुपा कर	४२ ६
१७६ ,,	के दास महा प्रभु चरगा शरगा लई तेरी रे	४ २८
169 .,	के दास चरण की शरण गहो सब भाई रे	४३ =
१७५ ,,	धाम पधारे	८४०
808 ,,	दासी जय कहिये	८४४
१ 50 ,,	दासी विल जाऊँ	KKK
१८१ ,,	दासी सुख रासी	\$ 1
ξ α ξ "	हो श्राचारज श्रवतार	४ ६३
१८३ शरमा तुम्हा	रे श्री महाराज	8{२
१=४ शादियां स	तौनी ग्रानम्द की भली वे	260
१=५ शादियां सुर	ली हम भांड देव श्राये श्रजी वाह बाह है	3=6
रेन्दं श्रीकृषा स्व	ायं कला प्रगटे कलि काल	₹स० .
१८९ श्री चरनदा	स प्यारेजी शरन परी तुम्हारेजी	ક શ્ક
१८९ श्री प्रागदार	स दरवार वधाई बाज रही	३७२
१८६ ,, मत रनड	तितलाल मुरलीधर नंदना	880
	नीतलाज उठत नित्य प्रातकाल	४७
•	र दरवार वधाई वाजे रङ्ग भरी	<i>७</i> ४ <i>६</i>
	र जु के नांचे नांचे ढाढी प्रेम चढाय	386
	रसिक चुड़ामणि रंग महल से श्राये हैं	४१४
	पुत सुधि मो लीजे	ध २ ५
	सरकार गुरु रनजीता	इन्ध
१६६ "रनजीत		४२४
रह ७ , रनजाता	हरि के मीता श्रमरलोक से श्राये हैं	४४६

नस्वर	प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नम्बर
१६२ ,, स्याम च	रण के दास हमारे आचारज हो खास	૪૪૪ .
१६६ " शुक्र मुनि	न के शिष्य वर श्याम चरण ही दास दोहा	
२०० श्री शुक्र मुर्ग	ने के परम शिष्य श्याम चरनदास गुन गाइये	४२२
२०१ श्री स्वामित	ती श्रभिरामनी यृथेश्वरी सुकुमारी है	 છ <i>્ર</i>
२०२ श्री सत गुर	ह वलदेव प्रभु वदीं वारवार (दोहा)	•
२१३ श्री सतगुर		350
२०३ स्त्रामिनी हा	विजय प्रमु चरणन शीश नवाय (दोहा पारी अमरलोक से पधारी है) २६७
२०४ सखी री श्री	श्यामचरनदास परम गुरु प्यारो लागे हैं	884
२०६ सखी री मुर	लीधर घर जड़रो	देशक
२०७ ,, ,, सव	मिल आवो गावो वधाई म्हारे रंग भरी	३६२
२०५ " याज वर	याई आतंद त्यो	३ईं⊂
२०६ , री श्याम	चरन के दास प्रगटे आनंद मंगल रास	364
२१० " सुन इहरे	मंगलचार	រុំនុំនុំ
२११ सव सुख कर	त श्याम चरनदासी	₹ - ७
२१२ सलोनी कुंजो	रानी ने भी	. 254
२१३ सुन आये सं	ने मिल संत शिरोमणि	. इंद्
र १४ सुकृत सफल	प्रामी शास करते	ंस्थर
र्दर सुना वितय ह	THE COLUMN THE PROPERTY OF THE	'३म३
		810
2 .011 1940	भग जल रू	. ४२०
	. O CALLEL Designed Calledon Comments	858
THE THEY	AT THE RESERVE TO SERVE TO SER	३ =३
१९० हिल मिल संत	र महेत गगर र	४२२
		8£8
२१२ हूं तो धांकी ह	विन हूं जी राज	385
रर३ होवें तुम्हारे घ	ए में मया कुंजो नित नित शादियां	3x5
	एउन् य	ं ४७२
र गावोरी आली हि	पुरनारी पाठ ल मिल ब्राज वधाई	AAE
,		४६२

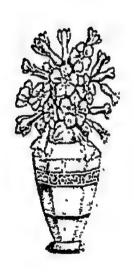
नम्यर	मथम पाक्त ः	पृष्ठ नम्बर
२ चलो हिल मिल दर्शन	काज जनम रनजीत लियो	४६०
३ जनम लाल रनजीत सुन	। सब डहरे की नार	34%
४ जुगन लाल की लाडली	। श्रतिही जीवन प्रान (दोहा)	3%%
४ दरशन हमें कराय कुंजो	मेया दरणन हमें कराय	• ५६३
६ नाचोरी नारी मिल सार	ती वजवो गावाँ देदे कर तारी	५ ६ २
७ पुर नारी हिल मिल के	सारी मुरली धर घर आई हैं	ķĘo
< वधाई छाई उहरे में हुआ	ा कुंजो के लाला है	४६४
६ रनजीतलला लागे प्यार	ा री नैनों का,ई तारा	.
१० लीजे माताजी कुंजो ह	ाधाई री	४६१
११ श्री कुंजो सुन्दर सुत	जायो	५६३
१२ श्री श्राचारज श्रवतार	प्रभु (दोहा)	५ ६६
श्री प्रेम	मंजरी श्रवतार लीला ।	820
१ ग्रंशकला अवतार धरू	इं मं	8==
२ जुगत लाडते भूत न	जाना	865
३ जय कुँज विहारिन श्र	ीराभ्रे	४-३
४ सुनहु विनय मेरी राष्	वावर	980
४ स्वामिनी हमारी०		883
६ शोभन भक्त कहूँ गुगा	गार्द	8=8
श्री शुर	क मुनि श्यामचण्दासाचार्य	मे
प्रथ	म मिलन लीला।	888
१ कहन लगे यचन न्या	स के नन्दन	५०२
२ ज़ुरे गांव के नर श्रीर		808
३ प्रागा प्यारे रँजीत कु।		398
४ प्यारे रँजीता तुम मेरे		५१३
१ वट वृक्ष समीप सकत		ķoķ

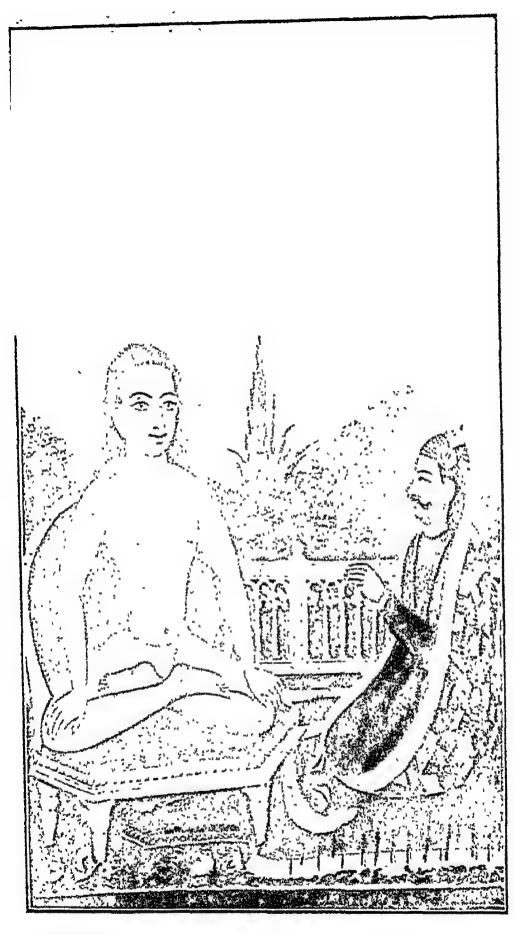
[#]

नस्वर	प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नम्बर
ई रावेश्याम स्याम स्या	मा यही रटे जावो	કેકેશ
७ लड़के कहन लगे यों		४०४
= श्री रँजीत द्याल वा	लगोपाल	५०१
२ हिल मिल चलोरे स	खा ०	, 605,
१० हिल मिल के सखा	सव श्रावरे	५०५
र्	गुमद्रशन लीला।	30%
रै इपाचन्द्र कमल नय	ान ै	ें ३१७
२ जय गौर स्याम स्वर	ह्रप .	592
३ टुक द्फान दे हरि प	यारे	् ५ १२
४ तुम विन केसे जीक		पृर्व
५ फरज़न्द् नन्द् जुका	• .	५ ६=
है रास में रंग ब्राज व	ग रसे	5 हेर
७ राघे झ्याम झ्यामा	स्याम श्राप को ०	५१७
= लाल लाडिली में ह	त्रखे	४२२
६ सखी आवी हमारे	पास ॰	*18
१० हमारी सुध राखिर	रो •	*50
श्री	राम सखीजी की लीला।	. ५२३
१ घरत सुनो श्री गुर	ह चितलाई	१३३
२ श्रहो नवललाल ०		५३६
३ कलि कीर्तन के ना	हि ० .	५२७
४ जय जय राघा स	रस ॰	५२५
प्राण के प्यारे हो।	नाय हमारे	४२८
ई परम ग्रानन्द् का		४३७
७ प्रिय सेवह सत्गु		५२६
< वृत्तराज विहारी व	श्राह्ये	प्रदेश
६ मम प्राग्त २ ०	-	पृ २ई

नम्बर	प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नम्बर
१० मिलोजी श्रान	रस खान ०	५३१
११ यह यालक भेट करूँ ॰		५२६
रे२ राधे रानी रँगी	ली सरकार ०	, k ? å
१३ रस मँजरी हमा	ारी ०	,
रे४ रस मंजरी प्या		
१४ राम सखी तुम		५२ ८
१६ सुनो चिनती मे		138 138
१७ सुनो राम सर्खा सुखदानी		. 435
	9	४३६
	फुटकर पद्	
१ श्राचारज भूतल	न प्रगट (दोहा)	*8 €
२ कहो मन श्री शुक मुनि ०		५ ४३
३ जय श्री शुकदेव चर्या शरगाम		४४७
४ जय शुक सर्खा प्रयामाचर्या दासी		५६२
अय शुक सखी	० (मांसा)	६५३
६ं जय जय श्री शुख सखी (दोहा)		Exx
७ नमो नमो जय	श्री शुकदेव	४४१
८ नमो शुक श्याम	। चर्गा के दास	አ ሄ६
६ नमो नमो जय	शुक श्रलि प्यारी	ዾ ሧቘ
१० प्रगटे हैं सखी	श्री शुक्देव	KAR
११ प्रगट शुक सुनी	सयानी	***
१२ महा भाव रस		५४३
१३ महा प्रभु शुक		<i>880</i>
१४ मोहे शुक स्वा		¥ጷፂ
१५ मो मन जुगल		ሂጷዕ
१६ मेरी मन भाव		ሂሂፂ
१७ रावरो मोहि भ		४४२
१= ससी सुन लग		४४४

नम्बर प्रथम पंक्ति		पृष्ठ नम्बर	
१६ शुक मुनि चरण दास	वित्तहारी	188	
२० प्रयाम चरगा दासी उ	तय कहिये	४४६	
२१ श्री मत शुक्त मुनी के	रहे	પ્રષ્ટર	
२२ भी शुक मुनि मंगल	करन (दोहा)	888	
२३ श्री शुक मुनि मोको	निज कर जानो	<i>ઇપ્ર</i> સ	
२४ श्री शुक मुनि करो न	त्ररगा की चेरी	<i>७</i> ४४	
२४ श्री शुक मुनि के परा	म शिष (सेवैया)	388	





श्रीशुकदेव मुनि श्रीश्यामचरणदासजी ~__________________श्रीश्यामचरणदासजी

🛮 श्री राधा सरस विहारिगो नमः 💩

॥ श्री सरस सागर॥

॥ श्री ग्रह महिमा ॥

॥ दोहा ॥

मझल निधि त्रानंद निधि, रिद्धि सिद्धि सुख साज।

श्री ग्रह चरण सरोज रज, सब विधि पूरण काज ॥ १ ॥

ग्रह पद पद्म हिय धरें, मन बच कम कर नेह।

ताहि कळू दुरलभ नहीं, दंपित करत सनेह ॥ २ ॥

श्री ग्रह चरण सरोज रज, हग श्रंजन करि देख।

विलसन बिहरन विधिन वर, नव निकुंज सुख पेख ॥ ३ ॥

श्री ग्रह पद्म पराग सों, जितो बढे श्रनुराग।

मन मधुकर तितनो लहें, सुख सौरभ को भाग॥ ४ ॥

भरम बासना त्याग मन, मधुष परम सुख लेह।

श्री ग्रह चरण सरोज रज, पल पल बढे सनेह ॥ ६ ॥

सरस माधुरी रस सदा, पीवो रिसक सुजान।

करहु निरंतर नेह ग्रत, ग्रह पद पंकज ध्यान॥ ७ ॥

॥ श्री गुरु महिमा ॥

परितय, परधन तें डरूँ, करूँ भक्ति निसकाम। सरस माधुरी को यही, दीजे गुरु गुन धाम ॥ १ ॥ श्रास भरोसो श्रापको, बनो रहै दिन रैन। हीय बढे विश्वास यह, श्री सतगुरु सुख दैन ॥ २ ॥ द्या, ज्ञमा श्ररु दीनता, करो दास को दान। कपट कुटिलता मेटदो, श्री गुरु कृपा निधान ॥ ३ ॥ श्री द्म्पति के नामको, सुसरूँ दिन श्रक रैन। रिसकन के सत्संग बिन, चित में परे न चैन ॥ ४ ॥ दुर्शन दुम्पति करन की, रहे चटपटी चित्त। चाह चौगुनी उर बढ़े, सेव चरण की नित्ता प्रा श्री सतगुरु पद् में बसत, पुष्कर श्रीर प्रयाग। तीरथ तन पातक हरें, गुरु पद दें अनुराग ॥ ६ ॥ गंगोदक तें है अधिक, गुरु चरणोदक जान। पाप हरें निर्मल करें, रीम मिलें भगवान॥ ७ ॥ श्री गुरु चरणन की करें, सब ही तीरथ सेव। कृपा करें जापर हरी, सो समभे यह भेव॥ ८॥ ध्यान मूल गुरु मूर्ति है, गुरु पद पूजा मूल। मंत्र मूल गुरु के वचन, मुक्ति कृपा श्रनुकूल ॥ ६ ॥ श्रद्धा धर विश्वास कर, सतगुरु पद पर प्रीतः। सरस माधुरी हरिमिलें, धाम बसें जगजीत॥ १॥

हरि के नाम सहस्र सम, श्री ग्रुक को इक नाम। समभें ज्ञानी गुरुमुखी, जाप करें निशि याम ॥ ११ ॥ श्री गुरु के इक नाम सम, नहीं सहस्र हरिनाम। पारस सम कंचन नहीं, समभ अर्थ अभिराम ॥ १२ ॥ गंगा नहावे एक वेर, निदया वेर हजार तुले न गुरु के नाम सम, हरि को नाम विचार ॥१३॥ श्री सतगुरु के ध्यान सम, तुले श्रीर नहिंध्यान। श्री हरि मूरत ध्यान तें, श्री गुरु ध्यान प्रधान ॥१४॥ श्री गुरु मूर्ति रोम प्रति, रमें राधिका रथाम। नाम रूप लीला श्रमित, श्रीर श्रनेकन धाम ॥१४॥:: नाम रूप धन के धनी, सतगुरु साहूकार। शिष्यन को बांटें सदा, भर भगडार श्रपार ॥१६॥ 🚐 सरस माधुरी गुरुन के, गुगा को श्रन्त न पार। गगापति शेष महेश श्रुति, गिनत गिनत गये हार ॥१७॥



पूर्णी प्रेम मयं मुनिवरं प्रत्यत्त सर्वेश्वरम्, चंदन भाल विराजितं श्रीयुतं पीतांबरैः शोभितं। तुलसी माल विभूषितं सुरुचिरं सिंहासने संस्थितम्, शिष्यानां वरदं प्रसन्न वदनं श्री सद्गुरुं नौम्यहम्॥१॥ वन्दे गुरुं जगद्वन्द्यं वेद वेदान्त पारगम्। मायातीतं महात्मानं परमानन्द कारणम्॥२॥

॥ राग कल्याण ॥

श्री ग्रह सव विधि पूरन काम ॥ चार पदारथ देत द्यानिधि दानी दंपति नाम ॥ १ ॥ रिसकन को दें प्रेस सुधारस निज वृन्दावन धाम। सरसमाधुरी कृपा गुरून की दरसें श्यामा श्याम॥ २ ॥

॥ पद् शग काकी॥

श्री सतगुरु स्वामी वलदेवा॥

परम पूज्य प्रणातारत भंजन, दंपित सुख संपित के देवा। रंग महल निज धाम निवासी, रस रासी जानत रस भेवा। सरस माधुरी जोर दोऊ कर, जाचत जुगल चरण की सेवा।

॥ राग खमाच ॥

हमारे गुरु परम कृपा के रूप ॥

लियो बसाय चरण छाया में, लगे न श्रव जग धूप ॥ १ ॥ दम्पति ध्यान दियो श्रवलंवन, काढी भव तम धूप ॥ २ ॥ सरस माधुरी के निज, स्वामीश्री वलदेव श्रनूप ॥ ३ ॥

॥ राग काफी ॥

श्ररज सुनो श्री सतग्रह दयाल । श्रीबलदेव कृष्ण के भैया, शरणागत जन के प्रतिपाल ॥ मूरत गौर माधुरी तुमरी, सुन्दर मुख श्ररु नैन विसाल। पीत वसन् धारण कर राखे, श्रीतिलक सस्तक गल माल॥ सुन्दर वाहु दोऊ तिन ऊपर, श्रंकित छाप मनोहर जाल। हस्त कमल दोऊ श्रांत श्रद्भुत्, मोसिर ऊपर धरो कृपाल॥ चरन जुगल श्रति श्रद्भुत् कमलवत, सो मेरे जीवन धन माल। ध्यान करूं तिनको हित चित दे, दूर करन जम भय श्रद्ध काल॥ तिन परताप परम पद पायो, दरसन लगे लाडलीलाल। प्रेम भक्ति दीनी कृपा करि, सब विधि मोकों कियो निहाल॥ वल देवा गुरुवल श्रपनो कर, जगत सिंधु सों मोहि निकाल। सरस माधुरी शरण राखिये, जान श्रापनो बाल गोपाल॥

॥ राग भैरवी ॥

उठ प्रभात श्री सतग्रह सुमरो मन मेरे।

मंगल सब भांति होंहिं सफल काज तेरे॥

श्रष्ट सिद्धि नवों निद्धि चरनन के नेरे।

भुक्ति मुक्ति मन बांछित चहिये सो लेरे॥

नवधा श्रह प्रेम परा-शुभ ग्रन सब चेरे।

त्रिविध ताप कटे पाप श्रमरपुर बसेरे॥

श्रपनो तन मन धन, सबश्री ग्रह को देरे।

सरस माधुरी उमंग, कृपा हिष्ट हेरे॥

॥ राग भैरवी ॥

मोहि भरोसो श्री गुरु ही को।

सबिविध ग्ररू सहायक जनके, भयनिहं सोकों पाव रती को ॥
साचात श्री हिर ग्ररू राजे, सब संदेह गयो है जीको ।
हढ विश्वास: भयो मन मेरे, पायो श्रवसर श्रित ही नीको ॥
सरवस धन ग्रुरुदेव द्यानिधि, श्रीर जगतसब लागतफीको ।
सरस माधुरी समस्थ खामी, वेग मिलावे प्यारी पीको ॥

॥ राग कल्यागा॥

हसारे गुरु परम कृपा की खान।

श्रपने चरण शरण में लीयो, दीयो नाम निज दान ॥ १ ॥ जनम सरण के वंधन काटे, दे कुठार दृढ़ ज्ञान। सरस माधुरी सार वतायो, श्री द्म्पित को ध्यान ॥ २ ॥

॥ राग काफी ॥

हमारे खासी सतगुरु दीनद्याल।

श्रभय हस्त मस्तक सम राखो, दीनो भव दुख टाल ॥१॥ महा मन्त्र निज कान सुनायो, कीनो सोहि निहाल। सरस माधुरी ध्यान बतायो, श्री राधा नँदलाल॥२॥

ा। राग कालंगड़ा, मैरवी, बिलावल, पीलू ॥

नमो नमो गुरु देव चरन को।

काटन करम फंद दुख दारून, नवका है भव सिन्धु तरन को ॥ दरशन करत कामना पूरन, कलिमल संकट कोट हरन को । जो जन चरण शरण चल आये, धन तिनके पितुमात वरन को ॥ सरवोपर गुरू देव गुसाई, राधा रमन मिलात नरन को ॥ सरस माधुरी शरणागत के, मेटत है जग जन्म मरन को ॥

॥ राग कालंगड़ा ॥

चरण कमल गुर देव नमामी।

दीन मलीन हीन सवही विध, श्रायो शरण तुम्हारी स्वामी ॥
महा पतित पामर पर निंदक, मोह लोभ वस कोधी कामी।
श्राधम उधारन विरद संभारो, पार उतारो श्रन्तर जामी ॥
पतितन पावन करन कपा निधि, मैं पापी सबहिन में नामी।
श्रव तो नाथ निवाहें वनि है, सरस माधुरी हरिपुर धामीं॥

॥ राग विलावल ॥

नमो नमो गुरु देव गुसाईं।

चरण सरोज जुगल रज पावन, परसत मिटत विकार मन मांही॥ निरमल होय वासना नासत, प्रेम प्रकाश प्रगट भलकाई। दरसत सहज दयानिधि दम्पति, संपति सर्वोपर सुखदाई॥ होत निहाल निहारत छिन में, तन मन मोट विनोद वढाई। सरस माधुरी केलि कुंज की, नैनन निरखत रहत सदाई॥

॥ राग कल्यारा॥

वंदो गुरु पद पद्म जहाज।

दृढ विश्वास धार जो बैठे, पूरन हो सब काज ॥ पहोंचे जाय परम पद मांही, जहां द्रुपति रस राज। सरसमाधुरी सुखनित विलसे, हिल भिल सखी समाज॥

॥ राग संसोटी ॥

जो जन सरन ग्रुस्त की श्रावै।

गत मत पलट जात ताही छिन काग हंस हो जावे॥
सत संगत शुनि मान सरोवर तहां तुरत चल जावे।
तजै श्रमच श्रकर्म कर्म शुभ मोती चुग चुग खावे॥
पांचों प्रेत परे चरनन में मन इंद्री पलटावे।
नौधा मिक करे निर्सिंबासर गोविंद के गुग गावे॥
गुरु मुख होय तजे मन मुखता तब प्रभु के मन भावे।
यााविधि जो रहनी विन श्रावैताही श्याम श्रपनावे॥
परालब्ध फल भोग भली विधि संचै मूल नसावे।
कृयमान नित करे कीरतन हिर श्रिप हुलसावे॥

सहज होय निशकर्म भर्म तज, संशय शोक मिटावे। चिता चाह विसार वासना, सुख संतोष समावे॥ निर्भय हो भगवंत भरोसे, तृष्णा सकल नशावे। हढ विश्वास श्रास ईश्वर की, प्रेम प्रीत लो लावे॥ कांपत काल कृष्ण भक्तन सों माया सीस नवावे। सरस माधुरी श्याम राधिका, कृपा गुरुन सों पावे॥

॥ पद्राग अलैया ठुमरी ॥

जय गुरुदेव द्यानिधि देवा, श्री बलदेव नाम बलिहारी। दियो कृपा कर रस निकुंज को, त्रिबिधि ताप तनकी सब टारी॥ भयो सुदृढ़ विश्वास भरोसो, श्रवश्य मिलेंगे श्रीतम प्यारी। सरस माधुरी ध्यान गुरुन को, है सब ही बिधि मंगलकारी॥

॥ श्री गुरु वंदना पद ध्यान वर्गान ॥

गुरून की सुंदर सूरत प्यारी।

गौर बरन शोभा मन लोभा, पीत बसन तन धारी।।
श्रीमुख शरदचंद छिबिनिदित, त्रिबिधि ताप जग हारी।
मस्तक श्री तिलक राजत है, भृकुटी श्रित सुखकारी॥
जुगल ध्यान नेना रंग राते, छाई प्रेम खुमारी।
मन्द हसन मनको मोहत है, चमकत चोंप उजारी॥

हस्त कमल माला तुलसी की, रसना नाम उचारी। चरन कमल कोमल श्रित श्रद्भुत, प्रेम भक्ति दातारी॥ सरगागत संस्ति दुखं टारन कहा पुरुष कहा नारी। सरस माधुरी मङ्गल मूरित निश दिन नयन निहारी॥

॥श्री गुरु गोविन्द महिमापद ॥

भजो मन गुरु गोविंद पद भाई।

श्रीगुरू सम नहीं हित् जक्त में, सुनो सकल चितलाई ॥ जीवत रक्ता करें जीव की, कर्म कलेश नशाई । सुख सों रहे गहे गुरु मत को, दुख द्रिद्र नशजाई ॥ गुरु मुखियनकी गति मति पलटे, उज्ज्वल बुद्धि श्रधिकाई । जैची पद्वी पाय परम श्रति, धनधन लोक कहाई ॥ गुरु को ध्यान परम पद दाता, साखि पुरानन गाई । सरस माधुरी जुगल कृपा कर, लेवे कराठ लगाई ॥

॥ राग ठुमरी॥

जगत में हैं गुरु हरि श्रवतार।

गुरु तें श्रिधिक न श्रीर पदारथ, श्रागम कहत पुकार ॥ गोविंद ही गुरु रूप प्रगट हो, श्राये नर तन धार । श्राति कृपाल करुगा की मूरति, जीव करत भव पार ॥ जिन जिनशरण चरण ग्रह लीनी, कहा पुरुष कहा नार । प्रेम भक्ति कर भये कृतारथ, मिले युगल सरकार ॥ हाजिर रहे हुक्म में ग्रह के, अक्ति मुक्ति फल चार । श्रष्ट सिद्धि नवनिधि खड़ी नित, सेवत ग्रह दरवार ॥ तारन तरन हरन दुख संश्वित, श्रीग्रह परम उदार । सरस माधुरी ध्यान ग्रह्म को, जीवन प्रान श्रधार ॥

॥ पद् ॥

रटो मन्नाम गुरू दिन रैन।

ध्यान घरो हिय ग्रह मूरित की, जो चाहो चित चैन ॥
सेवा करो भाव भक्ति सीं, सुनो बचन सुख दैन ।
करो दरश श्री ग्रह खामी को, सफल करो निज नैन ॥
सुरतह काम धेनु चिन्तामिश, ग्रह सम तनक तुलैन ।
ग्रह दाता विज्ञान ज्ञान के, श्रेम भिक्त के ऐन ॥
जीवन मुक्त होय जग माही, दम्पित मिले सुखेन ।
सरस माधुरी कटे कमी सब, मिटें मोह मद मैन ॥

॥ पदराग जिला भंभोटी ॥

श्री गोविंद ग्रुरु बनिश्राये, ज्ञान दृष्टि सेजाने । गोबिंद हूते श्रिधिकी महिमा, ग्रुरु की वेद बखाने ॥ सरस माधुरी कोई ग्रुरु मुखी, ग्रुप्त भेद पहिचाने ॥

॥ श्रभिलाष विनयपद ॥

श्री गुरू ऐसी कृपा कीने॥

जासों द्रवें जगतपित जनपर, सो शुभ लच्चा दीजे ॥ सत्य प्रेम प्रगटे घट मांही, कपट कुटिलता छीजे । मिले सयाकर जुगल बिहारी, नयन रूप रस पीजे ॥ मन मेरो अनुराग रंग में, नित्य निरंतर भीजे । सरस माधुरी की यह विनती, सहस्र कान सुन लीजे ॥

॥ राग मांढ ॥

नीका म्हाने लागो छो जी गुरु देव।

श्रजी थांकी श्रधम उधारन टेव ॥

बिल विल जावां मांकी ऊपर, करांजी मलीविधि सेव। निस दिन निरखां मन में हरषां, यो म्हाने वर देव॥ गुण श्रपार नहीं वरन सकां म्हे, थे छो श्रगम श्रभेव। सरस माधुरी विनय हमारी, यह सरवन सुनलेव॥

॥ पद ॥(राग रसिया,तमाशे की चाल तथा सोरठ)

सतगुरु श्याम सनम द्रसाया।

जलवा जग में रोशन जिसका, भीतर बाहर छाया॥

निरगुन सरगुन सिफ़्त है उसकी, वेद नेति कहि गाया । सव से ग्रप्त भेद है जिसका, श्रद्भुत जिसकी माया॥ वली श्रौलियां श्रादिक सारे, खोजत खोज हिराया । पीर पैराम्बर पच पच हारे, कोई ग्रहमुख ने पाया॥ मोमिन मुनी मोन गह बैठे, ज्ञान ध्यान बिसराया । इरक्त प्रेम से पैयत प्यारा, सो सबने छिटकाया॥ परमतत्व पुरुशोत्तम प्यारा, परसे पर कहलाया । परम धाम में वसत सदा शो, संतन के मन भाया॥ श्रर्शवरीं पे श्रासनं उसका, नूर जहूर सुहाया। महल महारोशन सांई का, जग मग जोत सवाया॥ सुलतानुल श्रजकार श्रनाहद, बाजा बजत सुनाया । सुन कर धुन मदहोश भया मन, सुख के सिन्धु समाया ॥ वाग़ वहार चार सू सुन्दर चमन श्रज्ब लखाया। चौसठ खंभ भवन मन भावन, द्मक चमक चमकाया ॥ हूर परी पैकर से श्राला, सखी समाज सवाया। साज बीन मिरदंग राग धुन, रंग रास सरसाया॥ सिंहासन सुबहानी जिस पर, जलवागर हरि राया। मोहन की मन हरन स्वामिनी, नैन निरखं हुलसाया॥ मुरशद हुवे महरबां जिस पर, जिस जा सो पोंहचाया । रहे हुजूर हमेशा खुश दिल, खादिम क़द्म कहाया॥ दोज्ञस्त जन्नत त्याग बखेड़े, जहां जाय घर छाया। सरस माधुरी बांके बिहारी, हँस कर कगठ लगाया॥

श्री गुरू श्रथम उधार पतित पावन सरकार ॥
शरणागत प्रतिपाल द्यानिधि करदें भव के पार ।
लिये मैं निज उरधार ॥
सेवा किये मिलत सब ही सुख भक्ति मुक्ति फल चार ।
भरें पूरण भगडार ॥
जोग जज्ञ तीरथ बृत संजम जप तप नेम श्रचार ।
दिये चरणान पर वार ॥

मरस्म माधरी प्रयाम राधिका मिलि हैं भजा प्रमार ।

सरसमाधुरी श्याम राधिका मिलि हैं भुजा पसार।

॥ पद राग दुसरी॥

मिले हमें श्री गुरुश्रानँद रासी ॥
जुगल लगन में नित्त निरन्तर, दम्पति करत खवासी।
रुचि लिख सेवा करत कृपा,निधि श्रुतु लित प्रीति प्रकासी॥
मो पर मया करी निज जन गन, दरसाया रसरासी।
सरस माधुरी रिसक शिरोमणि, श्रमरलोक के बासी॥

॥ पद ठुमरी ॥ श्रमर भये सतग्रह के उपदेश।

संशय शोक रोग मानस को रह्यो नहीं लवलेश ॥ ...

जुगल भजन भरपूर भरो उर दियो सहचरी भेश। महल भावना मगन कियो मन छको दरस आवेश॥ लीला लिलत निहार रैन दिन एक तैं एक विशेष। सरस माधुरी रस मतवारो प्रमुदित रहूँ हमेश॥

॥ पद् ॥

सतगुरु श्रजर श्रमर पुर दीनों।

संशय शोक मिटाये सारे, कियो प्रेम रंग भीनों ॥ विषे विकार छुड़ाये छिन में, भय भ्रम सब हर लीनों। परमानँद वे कियो प्रफुछित, मिटे ताप श्रब तीनों॥ जीवन मुक्त महा सुख विलस्तं, रहं ध्यान लव लीनों। सरस माधुरी श्रमृत पीयो, उपजो नेह नवीनों॥

॥ पद् ॥

हमतो श्री गुरुदेव मनावें।

गुरु ते श्रधिक न और पदारथ, परगट वेद पुरान बतावें ॥
गुरु के चरण कमल को तज के, श्रौरन को निहं सीस नवावें ।
भक्ति भक्त भगवन्त श्रङ्ग गुरु, इनहीं के गुनगन नित गावें ॥
शरणागत रक्तक जन पालक, यहीं भरोसो मन में लावें ।
सदा सहाय करें सेवक की सङ्घट, कोट कलेश मिटावें ॥

कृपा समुद्र लखे श्री सतगुरु, श्राश्रित जन की श्रास पुरावें। गुरु मूरित को ध्यान धरत ही, गौर श्याम हिय दौरे श्रावें॥ निसि दिन नाम रटे मुख गुरू को, तनमन में श्रित ही पुलकावें। सरस माधुरी परम धाम में टहल महल दम्पित की पावें॥

॥ पद् राग श्याम कल्यागा॥

बनाई बनी गुरून की बात।

विलस्ं सम्पति दम्पति सजनी, मगन रहं दिन रात ॥ जा धन को तरसत सुर मुनि जन, ब्रह्मादिक ललचात । सो किरपा कर दीनो स्वामी, हरष न हृद्य समात ॥ परमानन्द रह्यो परि पूरन, रोम रोम सब गात । जुगल नाम श्रमृत सों मीठो, पीवत नाहिं श्रघात ॥ सरस माधुरी छिब हग छाई, सो सुख कह्यो न जात ॥

॥ गजल ताल क़ीवाली ॥

गुरु श्याम सनम से मिलादो मुभे , जरा दरशन उनका करादो मुभे ॥ वाँसुरी वाला वो नंद का लाला। दिखा भांकी उसकी जिलादो मुभे ॥ वांके विहारी ने सुक्तको विसारी।
कहीं उसका पता तो बता दो सुके॥
जादू भरी सी हैं आँखें पिया की।
अदा उसकी अनोखी लखा दो मुके॥
चंद सा मुख है मनोहर उसका।
अजी मंद हँसन में फंसादो सुके॥
गोल कपोल अलक घुंघरारी।
गिरधारी के गरवे लगादो मुके॥
सरस यह माधुरी श्राण तुम्हारी।
विहारी के रंग में रचादो मुके॥

॥ राग सोरठ ॥

श्री वलदेव ग्रह वालिहार॥

जयित जै मुख बोल निश दिन देहु तन मन वार।
जान निवल धुवल कृपा कर कियो प्रभू उद्धार॥
दूबते संसार सागर लियो आप निकार।
दे जुगल की भिक्त प्रेमा कर दियो मतवार॥
लगन लागी प्रीति जागी लख जुगल सरकार।
सरस माधुरि छकी छिव में देख के दीदार॥

श्रेम का प्याला सतग्रह प्याया।

पीवत ही तन मन मगनाया रोम रोम रस छाया।।
दरक्षी जोरी जुगल माधुरी दरशन कर हुलसाया।
गद गद कंठ नयन जल धारा सुख के सिंधु समाया।।
जाको जस चारों वेदन में नेति नेति कर गाया।
सो प्रतच पुरशोत्तम प्यारा साचात् दरसाया।।
रहूँ सदा आनँद में माता भय अरु भर्म गंवाया।
भई प्रतीत प्रिया प्रीतम की चित चंचल घर आया।।
संशय सोग रोग सब नाशे नाम रूप लोलाया।
सरस माधुरी सकल विकल तज परमानँद पद पाया॥

॥ पद् ॥

नमो जैजै श्री सत गुरु देव।

गुरु ब्रह्मा गुरू विष्णु सदा शिव वेद कहत यह भेव ॥ गुरु ही गणपति जान शारदा सुर सब ही लखि लेव। सरस माधुरी सार ज्ञान यह गुरु पद पंकज सेव॥

हमारे गुरु रसिक शिरोमणि स्वामी।

रिसक राधिका श्याम नाम के नेही अति निष्कामी ॥ ध्यान परायन गुन गन गायन अमर लोक निज धामी । सरस माधुरी प्रेम परा के मारग के अनुगामी॥

॥ पद् ॥

हमारे गुरु संतन के सरताज।

सेवत श्यामा श्याम सलोने मंडन रासिक समाज॥ धामग्रह नाम रूप लीला बिन ग्रोर न कोई काज। ग्रमरलोक ग्रानंद भवन में ग्रविचल रहे विराज॥ शरगागत पालक जन रचक भगवत धर्म जहाज। सरस माधुरी रस में माते जय जय जय महाराज॥

॥ पद् ॥

हमारे ग्रुह रिसक शिरोमािग राय। दंपित संपित में मन दीने सेवत प्रीति लगाय॥ जुगल ध्यान ग़लतान रैन दिन श्रोर कङ्क न सुहाय। रंग महल में रहत निरंतर गुन गावत हुलसाय॥ उज्जवल रस श्रानंद श्रलोकिक रोम रोम रह्यो छ।य। सरस माधुरी श्ररण चरण की निरख रूप बालिजाय॥

हमारे गुरु दंपति रसिक अनन्य।

जुगल लाडली लालन के बिन मानत नाही अन्य ॥ रस निधान गलतान प्रेम में अतुलित गुन सौजन्य। सरस साधुरी ऐसे गुरु की शरण भये जे धन्य॥

॥ पद् ॥

श्री गुरु चरणशरण जब आया।

अभय हस्त मम मस्तक धरके कृपा करी अपनाया।
संस्कार कर पंच महा प्रमु वैज्याव धर्म दृढाया।
श्रारणागित षट् विधि सममाई सुनकर मन मगनाया।
स्वसरूप अरु पर सरूप का भेद मोहि द्रसाया।
ईश जीव माया तीनों का तत्व अनूप लखाया।
सेवक सेव्य भाव दे स्वामी अति विश्वास बढाया।
सेवा दई मानसी सुंदर सहचिर रूप बनाया।
श्री बुन्दाबन रंग महल में अविचल बास बसाया।
सरस माधुरी द्रम्पति छिव में अति ही मोहि छकाया॥

भरोसो श्री सतगुरु को भारी।
दीन दयाल दया के सागर शरणागत भय हारी॥
जुगल मंत्र को जाप बतायो सेव मानसी प्यारी।
इष्ट बताये प्रेम प्रीत कर राधा सरस बिहारी॥
रसकी रीत प्रगट कर भाखी सो दढ कर उरधारी।
लगन लगाय लाडली लालन करी रूप मतवारी॥
दरस कराये करणा करके श्री दंपति सुलकारी।
सरस माधुरी शरण चरण की जोरी जुगल निहारी॥

॥ पद् ॥

कहा कहूं गुरु क्रपा की बात।

निश दिन रहूं प्रेम रंग राची परम प्रफुब्लित गात॥ नाम धाम लीला स्वरूप तज मन कहुँ श्रंत न जात।

छिन छिन छिब द्रस्तत दंपाति की प्रगट कहत सकुचात॥ सोवत जागत जुगल बिहारी नैनन में भलकात। सरस माधुरी रस बिन सजनी और न कछू सुहात॥

॥ राग पीलू वस्वा ॥

सतगुरु देव द्यानिधि आये।

भक्ति प्रकाशन प्यारी प्रीतम जगमांही कर प्रीत पठाये॥

रिसकन के हित रस निकुंज को करुगा कर अपने संग लाये। तारन तरन हरन दुख दारुन पापी अनिगन पार लगाये॥ शरन चरगा की लीनी जिन ने निश्चय जुगल विहारी पाये। सरस साधुरी अधम अनेकन परस धाम मांही पहुँचाये॥

॥ पद्राग कालंगड़ा ।

धानि सत गुरु बलदेव हमारे।

करुणा कृपा दृष्टि सोपे किर द्रसाये विनन्नान पियारे॥ रदत रहों रसना सो निश्चित राधेश्याम नाम इक सारे। सरस माधुरी रस विहार सुख निरस्वूँ नित ही संग तुम्हारे॥

॥ पद चाल नाटक में ॥

गुरु देव गुसैयां वैयां गहोजी मेरी आयके।

यह संसार समुद्र अगम है, नैया पड़ी यामे जायके। जावे ना डुवायके॥१॥

काम कोध कछ मच्छन धेरी रहे है प्राग् घबराय के। इन्हों से लो वचाय के॥ २॥

मन मल्लाह महा मतवारो जाने नहीं ये चलाय के। रही भैं डरपाय के ॥ ३॥

कृपा पवन संचारो स्वामी दीजिये पार लगाय के। कहूं मैं सिर नाय के॥ १॥ श्रारण जान वेगी सुधि लीजे दीजे जी नहीं बिसराय के। दया हिये लाय के ॥ ५ ॥

जुगल बिहारी प्रीतम प्यारी दीजिये द्रगन दिखाय के। सेऊँ मैं सुख पाय के ॥ ६ ॥

सरस माधुरी शुक परिकर में लीजिये धाम वसाय के। रहूं मैं गुन गाय के॥ ७॥

॥ पद् ॥

गुरुन की मूरति मंगल करनी।

ध्यान किये किलमल सब नाशें त्रिविधि ताप तन हरनी।।
चरण रेणु चितामणि जैसी चिंतत फल अनुसरनी।
चार पदारथ प्रेम भिक्नदा सब विधि पोषन भरनी।।
गुरु मुखियन की संपति येही पल छिन नाहिं विसरनी।
किरपन के धन ज्यों नित निरखें गिन २ चौकस धरनी।।
महिमा गुरू अधिक गोविंद तें बेद प्रगट कहि बरनी।
सरस माधुरी निज दासन को भवसागर हित तरनी।।

॥ राग कल्यागा व वरवा ॥

मन तू ले सतगुरु को सरना।

चरण चारू चिंतामणि जिनके सव विधि मंगल करना ॥ संसय सोक सकल दुख नांसे सिटै जनम अरु मरना। अमर होय अमरा पद पावे नहीं काल से डरना॥ गोविंद को गुरुदेव भिलावें वेदन में यह वरना। प्रेम भक्ति कर कल सल धोवे होवे तारन तरना॥ गुरु गुरु रहें कहें सब संकट पल छिन नहीं बिसरना। सरस साधुरी गुरु सूरित को ध्यान हिये नित धरना॥

॥ राग कल्यागा भंभोटी ॥

श्री गुरु पद् पंकज रज पावन।

अंजन कर त्राति प्रेम प्रीतसों हग दुख दोष नशावन ॥ दिव्यहिष्ट हो दरसत तिहि छिन कुंज केलि मन भावन । लग्स साधुरी मिलें मयाकर श्यामा श्याम सुहावन ॥

॥ पद् ॥

श्रा हम ऐसे गुरु की पाई।

जिन मन जीत कियो बस अपने चिंता चाह मिटाई।
पांचो इन्द्रिन के रस तज के प्रभु सों लगन लगाई।
काम क्रोध अरु लोभ मोह मद ममता मार भजाई॥
तीनों गुगा तज भजे जुगल वर प्रेम भक्ति लो लाई।
गद गद कराठ नयन जल धारा हारे पद सुरात समाई॥
सदा रहत गलतान ध्यान में देह दसा बिसराई।
सरस माधुरी नाम दान दे लियो मोहि अपनाई॥

॥ श्रारती श्री सत गुरुदेव राग श्रासावरी॥ कर मन श्रारती श्री सतगुरु की। मिटे ताप तिराबिध जग जुर की॥

धरे ध्यान सत गुरु मूरित को मिले मोज ताहि अमरापुर की। जन्म मरन चौरासी के दुख नरक अगन नाश सब धुर की॥ अजर अमर हो आनन्द पावे करे टहल नित परमेसुर की। श्री बलदेवदास चरगान में सरस प्रगाम जेल दोऊ कर की॥

॥ दूसरा पद राग आसावरी सारंग ॥

मारती श्री गुरू देव तुम्हारी, करत नसे भव बाधा सारी। चरण शरण जो तुम्हरी श्रायो, त्रिबिधि ताप तिनकी तुम टारी॥ बिमुख जीव हिर सनमुख कीने, जन्म मरन दुख दिये निवारी। मंत्र राज निज दान दियो प्रभु, इष्ट बताये कुंज बिहारी॥ दई महल की टहल मानसी, कीनो उज्ज्वल रस श्रधकारी। परा परम पद दियो दया निधि, शरणागत वत्सल सुखकारी॥ विषयानद बिष सम दरसायो, ब्रह्मानन्द निरस श्राति भारी। परमानन्द प्रेम पद पायो, माहिमा गावत रसना हारी॥ श्री स्वामी बलदेवदास प्रभु, गुन श्रनन्त नहिं सकूं उचारी। सरस माधुरी दोऊ कर जोरत, नमो नमो जय जय बलिहारी॥

॥ पद राग खमाच ॥

श्री गुरु चरण कमल सिर नाऊँ। तिनके ध्यान ज्ञान गुण प्रगटत, रस लीला पद सरसवनाऊँ॥ सुनत गुनत गावत मन भावत, परम परा पद निश्चय पाऊँ। सरस माधुरी शरण कृपा वल, बुज लीला दम्पति गुण गाऊँ॥

॥ राग सोरठा ॥

हमारी श्रव सब विधि वन श्राई।

नित्त निकुंज महल की सेवा, श्री गुरू देव वताई॥

निज सम्बन्ध भावना भीने, करे सरस सिवकाई॥

छके रहें छवि जुगल माधुरी, सुख बरनो निहं जाई॥

श्री गुकसखी चरण की दासी, परिकर मांहि मिलाई।

श्री जान प्रान सम पोषत, रंग रली दरसाई॥

श्री बल देवी सखी स्वामिनी, तिनके चरण सहाई॥

सरस माधुरी शरण गहे की, सब विधि बात बनाई॥

॥ राग सोरठा ॥

धनि धनि श्री सतगुरुसुखदाई। धनि यह जन्म सुफल भयो मेरो, चरण शरण में पाई॥

तीन लोक तिरगुन के ऊपर, तेज पुंज छिब छाई । विन रिव सिस श्रद्भुत उजास जहां, जग भग जोति सुहाई॥ श्रनहद् नाद् जहां घन गरजें, श्रमृत भरी लगाई। वरसे हीरा मानिक मोती, मोज महा दरसाई॥ परम सुन्न के पार परम पद, काल जहां नहिं जाई । शिव ब्रह्मादिक को जो दुरलभ, ऐसी ठोर दिखाई॥ सत चेतन श्रानन्द श्रमरपुर, मोहि तहां पहुँचाई । विन संजम साधन विन करनी, लीला कुंज लखाई॥ चारों मुक्त जहां कर जोरे, रूप निरख ललचाई। रास विलास हुलास निरन्तर, नित ज्ञानन्द वधाई॥ कुंज विहारन लालविहारी, नयन सेन समभाई। वचन श्रगोचर यह सुख सजनी, श्यामा दियो जनाई॥ छाय रह्यो रस रोम रोम में, नेनन अलक्यो चाई। गूंगे को सुपनों ज्यों सजनी, मुख सूं सकूं न गाई॥ . प्रनिगनं सखी सहचरी सनमुख, करे जुगल सिवकाई । फूल रह्यो फूलन सों श्री वन, ऋतु वसन्त मन भाई॥ दृढ़ विश्वास भयो मन सेरे, लई मोहि श्रपनाई। सरसं माधुरी विरद भरोसे, श्री बलदेव सहाई॥

॥ राग सोहनी ॥

सत गुरु मोज महल की दीनी। सुरत निरत को खेल सिखायो; मन इन्द्री बस कीनी॥ उज्ज्वल रस सब रस को सागर, बुध गागर भर लीनी। चार पदारथ चाह सिटाई, भई जुगल श्राधीनी॥ श्री शुकसखी चरण की दासी, देखी जित रंग भीनी। तिनके संग रंग रस लूटूं, निरखूं केल नवीनी॥ नित श्रानन्द श्रमरपुर मांही, दुविधा दुरमित छीनी। श्री बलदेव गुरू करुणा निधि, सरस शरण निज लीनी॥

॥ राग सोहनी ॥

मोकों सतगुरु ने समभायो ॥

मन को मोर मोह माया से, प्रभु के ध्यान लगायो। इंद्री बिषयभोग विष त्यागे, श्रमृत प्रेम पिवायो॥ दई महल की टहल मानसी, नित्त निकुंज बसायो। हाजिर रहं हजूर जुगल के, रूप निरख मगनायो॥ तिरगुन तज चौथो पद परसो, जन्म मरन बिसरायो। निरभय भयो गयो दुख दारुन, सुख के सिंधु समायो॥ श्री बलदेव भेव निज दीनो, वेद नेति जो गायो। सरस माधुरी रंग रसीलो, नैनन मांही छायो॥

॥ राग रसिया ॥

द्या कर सतगुरु दरस दिखाये। श्रमर लोक श्रमिराम धाम में जित जा दरशन पाये॥ श्राति प्रसन्न श्रानन्द मगन मन, पीत बसन छिबछाये।

माला तिलक मनोहर वाना, मंद मंद मुसकाये।
संतन के जहां ठाठ भागवत, पाठ करत दरसाये।
तिन्हें निरख नयनन जल धारा, प्रेम प्रवाह बहाये॥
करुगा निधि श्रधमन उद्धारन, दृढ विश्वास बढाये।
सरस माधुरी के मन मांही, निश दिन रहत समाये॥

ा। राग ऋासावरी॥

सतगुरु ने निज ज्ञान दियों, वो विमुख जनों से कहना क्यारे। हीरा नाम हरी धन पाया, फिर कोड़ी कर गहना क्यारे।। परमानंद सरस रस पीया, और विषय में बहना क्यारे। ध्यान धरा प्यारी प्रीतम का, श्रीर किसी का चहना क्यारे।। लाभ हुश्रा जब प्रेम भक्ति का, ज्ञान जोग में लहना क्यारे। सरस माधुरी छिब में श्रटके, जगके खटके सहना क्यारे।।

॥ होरी का पद राग सोरठ॥

hi

होरी खेलत सरस सत ग्रर के संग। जहां बरस रह्यो श्रानद को रंग॥ ज्ञान ध्यान की केशर घोरी पिचकारी छूटत उमंग। भाव: भवन में खेलन लागी छिरके पिय प्यारी के अंग॥ बुध विवेक डफ ढोलक वाजै, प्रेम प्रीत की वीगा चंग। पांच पचीसों गावन लागी, मारि कियो मन को मृदंग॥ सुरत निरतसखीनांचन लागी, गुनातीत गति ताधिलक्ष। साया काल सूरछा खाई, कायर हो भाग्यो श्रनंग॥ श्रमर नगर में धूम भई हं उलट, वह जहां जमुना गंगना जीवन मुक्त मिल्यो फल फगुवा, सरसमाधुरी जीता जंग॥

॥ श्री गुरु महिमा की मांभ ॥

रसिक शिरोमिशा गुरू हमारे, तिन रस रीत सिखाई।
दे संबंध नाम सेवा सुख, कुंज केलि दरसाई॥
निरखे मोज महल के मांही, करें जुगल सिवकाई।
सरस माधुरी शरश कृपाबल, महा परम निध पाई॥१॥
जब गुरु कृपा दृष्टि कर हेरें, वस्तु हिये में दरसे।
भाविक भजन भाव सुख विलसे, जक्त जीव सब तरसे॥
भूले देह गेह सुध सबही, तब दंपित पद परसे।
सरस मधुरी श्रगम श्रगोचर, मोज महारस सरसे॥ २॥

॥ होरी काफी॥

श्री ग्रह के ग्रम गावे, जुंगल के जो मन भावे ॥ न हरि ग्रह एक समभ कर सज्जन, निस दिन लगन लगावे। सेवे चरण कमल श्रद्धा कर, श्रहंकार छिटकावे। दीनता चित्त में लावे॥१॥

धन्य भाग श्रपने कर जाने, नित नव भाव बढावे।

रहे सदा गलतान ध्यान में, प्रेम पदारथ पावे।

प्रिया पिय कराठ लगावे॥ २॥

प्रीत रीत युत करे महोत्सव, सर्वस भेट चढावे।

श्राज्ञा भंग करे निह कबही, कर जोरे शिरनावे।

सकल सुख सम्पति पावे॥ ३॥

गुरु के बचन वेद कर समभे, निश्चय निज उर लावे। प्रानन से प्यारे गुरु जाने, श्रमरलोक को जावे। जहां से बहुर न श्रावे॥ ४॥

जीवन मुक्त होय जग जीवे, धन धन लोक कहावे। सरस माधुरी रंग महल बस, हिय मांही हुलसावे। निरख छिब बलिबलि जावे॥ ४॥

॥ राग भैरवी ॥

बिगड़ी मेरी बनादो बन्देनवाज मुरशद । घनश्याम से मिलादो,बन्देनवाज मुरशद ॥ १ ॥

, . y.

उलफ़तका जास भरदो, श्रलमस्त सुभको करदो। बेंखुद मुक्ते बनादो, वन्देनवाज मुरशद ॥ २ ॥ निश दिन लगन लगादो,दिल की कली खिलादो। द्रम्पति दरस करादो बन्देनवाज मुरशद् ॥ ३॥ 📆 पजमुदी हो रहा हूं, सुध बुध को खो रहा हूं। सोता हूं तुम जगादो, बन्येनवाज मुरशद ॥ ४ ॥ सिजदा में कर रहा हूं, श्रोर ध्यान धर रहा हूं। सरसे कद्म लगादो, वन्द्रेनवाज मुरशद् ॥ ५ ॥ प्यारा वो नंदलाला, सब जक्त का उजाला। जलवा जरा दिखादो, बन्देनवाज सुरशद् ॥ ६ ॥ तिशंना तड़फ रहा हूं, दस गम के अर रहा हूं। शीरीनी लव चखादो, वन्देनवाज सुरशद ॥ ७ ॥ तेरी ही शरण में हूं, तेरे ही चरण में हूं। दासी सरस वनादो, बन्डेनवाज सुरशद् ॥ दं ॥

॥ होरी राग काफी॥

श्री ग्रह हुवे सहाई, फाग लीला द्रसाई॥१॥ सुरत सहागन श्रति वढ़ भागन श्रनुभव से समभाई। दे गागर श्रनुराग रंग की श्रपने संग लगाई। ते सखी मोहि मिलाई।॥२॥ सुखमन कुंजगली श्रित सीधी, सोइनिजराह बताई। चली चाव सों सहज जहां में, बात भली बनि श्राई। महां मन में मगनाई॥ ३॥

परम प्रकाश उजास श्रनूपम, तेज पुंज छवि छाई। ताके पार अमरपुर पिय को, जहां मोहि पहुंचाई। निरख मन मोद बढ़ाई॥ ४॥

ऋतु वसन्त जहां रहत निरन्तर, लिलत लता सुखदाई।
फूले फूल श्रनेक रंग के, फूली श्रंग न माई।
देख निज हगन लुभाई॥ ५॥

नाना कुंज पुंज रसकी जहां वसत सखी समुदाई। वीच वन्यो रँग महल मनोहर, राजत जुगल जहांई। वाजत अनहद अधिकाई॥ ६॥

मच रह्यो खेल मंजु मन्दिर मं, श्रवीर गुलाल उड़ाई। चलत प्रेम पिचकारी चहुं दिसि, केशर रंग भराई। भीजत हरखाई॥ ७॥

श्री शुक सखी श्याम चरन्दासी, मिली हिये लिपटाई। सरस माधुरी सतगुरु के संग, श्रद्भुत मौज मनाई। हुलस यह होरी गाई॥ ८॥

॥ श्री सतगुरु महिमां को पद राग कड़ खा।

साधो सतगुरु ब्रह्म बलदेव मेरा।

अवतरे जक्त में संत वपुधार के, दास पदवी लई जग उजेरा ॥ १ ॥

चादि अविगति सही सेस होकर वही,

धरन धर सीस ब्रह्मा उसारा।

दूसरी देहधरि चीर सागर विषे,

त्रापही विष्णु पौढ़े पियारा ॥ २ ॥

घटत जब धर्म और बहत अपराध तब,

जुगल वपुधार के प्रगट होई।

राम अवतार में लच्मगा होय पुन,

कृष्ण अवतार बलदेव सोई॥३॥

असर निज लोक में नित्त लीला करे,

संग श्री राधिका श्यामनामी।

सखी बहुतक लिये प्रेम रस को पिये,

ब्रह्म बलदेव गुरुदेव स्वामी ॥ ४॥

बहाबल शाक्ते और प्रकृति मायावही,

अविल ब्रह्मांड आधार जानों।

त्रिगुगा मय जीव में चेतना तासुकी,

साचीरूप बलदेव मानों ॥ ॥॥

ऐक सों बहुत निज होंन इच्छाकरी, ब्रह्म से पुरुष माया उपाई। होय महतत्व श्रोंकार तिरगुन रचे, विष्णु विधि शंभु सृष्टि रचाई॥६॥

बिरंच पैदा करे विष्णु पोषे भरे, शंभु संहार करता कहावें। ब्रह्म बलदेव बहु भांत लीला करें, श्रापने मांहि श्रापही समावें॥ ७॥

सिचेदानंद बलदेव गुरुदेव हरि, अचल निज रूप बहुरूप सोई। प्रलय उत्पत्ति संसार की ता विषे, लहर दरियाव ज्यों लीन होई॥ ५॥

वार श्रोर पारसों रहित वलदेव गुरु, श्रगमश्रीर निगम निहं भेद जानें। रहे ठाडे सोऊ हाथ जोरें दोऊ, नेति नेति कह बखानें॥ ६॥

बहुत साधू सती अमित जोगी जती, ब्रह्म बलदेव घर ध्यान ध्यावें। रैन दिन खोजना करें बहु कष्ट कर, बिना सत भाव नहि पार पावें॥१०॥ रूप वलदेव गुरू दूरसों दूर बहु, निकट सों निकट अति पास कहिये। दृष्टिकर दिञ्च देखे जभी भावसों, तभी ततकाल अति सुगम लहिये॥११॥

भक्ति के भाव विन चित्तके चाव विन, किये वहु जतन नहीं नैन दरसें। गुरु मुखी संत गुनवंत विरक्षे कोई, सोई वलदेव गुरु जाय परसें॥१२॥

तत्व वेत्ता सुनी परम ज्ञानी गुनी,
जतन श्रीर जुकत कर बहु थकावें।
भर्म कर दूर भरपूर देखें सदा,
समभ की सेन से नजर श्रावें ॥१३॥

गुप्त और प्रगट वलदेव व्यापक कला, विना वलदेव नाहें और दूजा। दुसों दिस गुरू वलदेव पूरन प्रभू, ज्ञान कर ध्यान धर करूँ पूजा॥१९॥

मन विषे धार परतीत निश्चे कोई, ब्रह्म वलदेव गुरुदेव गावें। जन्म और मरन की सहज फांसी कटे, परम पद नाम निजधाम जावें १९४॥ मिले परब्रह्म में रहें आनन्द में,
लीन हो भाव दूजा नसावें।
काल जम फांस में फेर आवे नहीं,
मुक्ति सायुज्य वलदेव पावें॥१६॥

ब्रह्म वलदेव गुरु भेव कहां लो कहूं,
रहूं सिर नाय तिनके चरन में।
दास शिवदयाल निज जान जन आपनों,
करो सोहि लीन आपने वरन में॥१७॥

॥ स्तुति पद् ॥ जय जय जय ग्रस्देव हमारे।

श्री चलदेव द्याल कृपा निधि परमारथ हित नर वपुधारे॥
गीर वरन सन हरन करन सुख मृदु मुसकन नैना रतनारे।
श्री तिलक तुलसी गल माला पीत वसन सुन्दर तन धारे॥
लिये उवार जगत जल निधि ते मोसे अधम अनेक उबारे।
श्रिविधि तापसंताप मिटावन सरस माधुरी चरण तुम्हारे॥

। राग श्याम कल्यागा ।। दियो श्री ग्रुरु ने यह निज ज्ञान । ताहि समभ संश्य सब नाशे अपनी परी पिछान ॥१॥ तीनों तन अरु तीन अवस्था ये माया कृत मान।
तू चेतनतुरिया किशोर नित यह निश्चय मन जान॥२॥
तीन लोक से प्रथक अमायक सो तेरो अस्थान।
प्रीतम तेरो सरस विहारी ताही से रित ठान॥३॥
नाम रूप लीला चिन्तन कर धाम धार दृढ़ ध्यान।
रास बिलास निहार निरन्तर करहु प्रेम रस पान॥४॥
यही जोग संजम जप तप व्रत त्याग विराग विधान।
सरस माधुरी छवि दंपित में रिहये नित गलतान॥४॥

॥ गजल ॥

सुक्ते सुरशद मिले कामिल जिन्हों की सिफ़्त आला है।
सरापा नूर की सूरत बदन सांचे में ढाला है।।१॥
भनोहर चांद सा चहरा तिलक मस्तक पे है धारन।
सजा सर पर जरद साफ़ा गले तुलसी की माला है।।२॥
मधुर मुसकान है मुख की रसीली नैंन की चितवन।
नजर भरके जिसे देखा उसी पे जादू डाला है।।३॥
सुहावन पीत अँग गाती, हृद्य पर हार फूलों के।
बंधा है किट पे पीतास्वर, अजब ढँग का निराला है।।॥।
लगा के पद्म आसन को, बिराजे आप बाधम्बर।
करों में ले सुमरनी को, रटे राधे गुपाला है।।॥।

चरण कोमल कमल जैसे, जिन्हों का ध्यान है मन में।
है सरवस धन यही मेरे, जनम अरु मरन टाला है ॥६॥
खिला कर सीत परसादी, किया पालन दया करके।
सरस बलदेव सतग्रह ने, पिलाया प्रेम प्याला है॥७॥

। गजल ॥

प्यारे नंदलाल से मिलादो ग्रुरु मुभो उसकी जुदाई गवरा नहीं। दिखलादो जराञ्जजी हाय मरा देखा मैंने वो प्रानों का प्यारा नहीं॥ बांकी भांकी विहारी की दिलमें बसी,

अदा ऐसी नहीं मैंने देखी कहीं। चुभी नजर कटारी कलेजे मेरे, थमे आखों से अश्कों की धारा नहीं॥

किया कार्या का कार्या का अनुवास का कार्या किया कार्या के के केंद्र काद्याम

फिरी सारे जहां में में ढूंड सनम,

पता उसका कहीं ना मिला है मुभे। महबूव मोहन मेरे मन में बसा,

अब जाता वो मुक्तसे विसारा नहीं ॥

मुख मंद हसन है वो जादू भरी,

श्रोर नैनों की सैनों से बीधी खरी।

हाय हाय हरी ने यह कैसी करी,

मुक्ते जख़भी किया और मारा नहीं॥

ऐसे जीने से अबतो है मरना भला,

नहिं मुक्तसे मेरा दिलदार मिला।

करा दर्श सनम सुभो दीजे जिला; जाता द्दी जिगर का सहारा नहीं॥ कीजे जीसे तरस करा दीजे दरस,

रही सरस तुम्हारे चरण को परस। दिखा उसकी ऋदा करो दिल को हरश,

सिवा आपके और है चारा नहीं॥

॥ पद ॥

ः श्री सतगुरू ने कृपा करके सुभिरन सार बताया है। जाके जपे जगत प्राति पालक परमातम द्रसाया है ॥ १ ॥ ।तिरदेवा तरसे दरशन को जहां न जावत माया है। तिरगुन पार परम पद प्रभु को जहां मोहि पहुंचाया है॥ २॥ ... महल मानसी सेवा देकर दम्पति रूप लखाया है। गौर श्याम छित्र छटा छबीली ताके मध्य छकाया है॥ ३॥ रहूं जहां लवलीन रैन दिन मन मेरा मगनाया है। जो सुख अगम जोग जप तप से गुरू ऋपा से पाया है ॥ ४ ॥ अमित जुगन का बिछड़ा अपना प्यारा मुक्ते मिलाया है। सरस माधुरी रस का आनन्द नैनों में भलकाया है॥ ४॥ ॥ चाद्र भीनी रामभीनी, इसकी धुन में पद् ॥ श्री गुरु अविनाशी सुख रासी जिनकी चार मुक्ति हैं दासी। अड़सठ तीरथ हैं चरगान में जग से सहज उदासी। अति अनन्य रिसकाधिराज हैं अमर लोक के बासी॥ १॥

रिद्धि सिधि नव निद्धि द्वार पर परी रहें अनयासी।
निस कामी निजधामी स्वामी राधाकृष्ण उपासी।।
रहें हुजूर महल में हरदम दंपति करत खवासी।
मरजीदान श्याम श्यामा के परमानंद बिलासी॥
चौरासी जमदंड काल की काट देत हैं फांसी।
अजर अमर करदें दासन को प्रेमानंद प्रकासी॥
तारन तरन अधम उधारन नित्य निकुंज निवासी।
सरस माधुरी श्राण चरण की निशादिन।हिये हुलासी॥

॥ पद् ॥

पुग्य पूरवले सतगुरु पाये।

जिनकी शरण अभय भये जग में जुगललाल गुन गाये।।

हंढ कर गही भिक्क अनपायिन मन निश्चल थिरथाये।

भटकत नहीं भरम में कब ही गुरु गोविंद रिभाये॥

वेद शास्त्र को सार सर्व पर समक हिये हुलसाये।

हिर धन लेकर धनी भये हम दुख दारिव्र नसाये॥

भरम भटकना सारी छूटी हिर छिब लाखि मगनाये।

अनुभव होत अभित लीला गुन सुख के सिंधु समाये॥

रैन दिवस सोवत अरु जागत तन मन में पुलकाये।

सरस माधुरी मगन भावना चरणदास कहलाये॥

॥ पद् ॥

लाभ नर देह ग्रह मोहि दीनो।

मंत्र सुनाय मिटाय कर्म गति कीवा हंसा कीनो ॥१॥ दह विश्वास दियो करुणा कर भर्म तिमिर सब छीनो । जुगल साधुरी छकन छकाकर कियो मोहि रंग भीनो ॥२॥ मौज महल मानसी मगन सन सदा रहे लव लीनो । लोक भोग फीको सोहि लागे परम तत्व तव चीनो ॥३॥ रटना लगी नाम की निश दिन उपजो नेह नवीनो । सरस साधुरी तुरिया पद पा मिटे ताप अब तीनों ॥१॥

॥ पद् राग श्याम कल्यासा ॥

जान परी में गुरु की जगाई भरम नींद में उमर गुमाई।
ज्ञान भान जब उदय भयो तब ज्ञातम परमातम सुध पाई॥
सुरत निरत ज्ञा मिली सुहागिन तिनसों में मिलके बतराई।
ध्यान मानसी धार प्यार कर कुंज ।पिया की में पहुंचाई॥
कंचन जटित मनोहर मान्दिर सिंहासन की छवि ज्ञाति छाई।
गार सांवरी संदर जोरी नैंनन सों मोहि दई दिखाई॥
दंपति छि में छकी सखीरी परमानन्द हिथे प्रगटाई।
रास रंग कीत्हल लखके हिथे मांहि ज्ञाति ही हरषाई॥
श्री शुक सखी स्थाम चरण दासी खास खवासी में दरसाई।
सरस माधुरी पाय परम सुख निज सेवा कर मन मगनाई॥

॥ तमाशे की चाल में पद्॥

श्री सत ग्रह महारज हमारे सभी सुधारे काज ॥ जबसे शरण चरण की लीनी गये सकल दुख भाज । रहूं मानसी ध्यान मगन मन हिल मिल रिसक समाज ॥ दीन जनन के दुख के भंजन भक्तन के सिरताज । शरणागत प्रति पालक हो तुम सदा ग़रीबनवाज ॥ पिततन पावन करन द्यानिधि प्रगटे धर्म जहाज । सरस माधुरी कहत जोर कर सब विधि तुम को लाज ॥

॥ राग भैरवी ॥

श्री सतग्रह मोपे कृपा करो।
प्रभु प्रेम भक्ति मेरे हिये में भरो।
दीजे श्रचल वास कृन्दवन त्रिविधि ताप भव वेग हरो॥
मन में बसे बिहारी विहारन यह बिनती मम हृदय धरो।
सरस माधुरी सूरति तुमरी नैनन तैं नहि नेक टरो॥

॥ राग परभाती ॥

हरि मिलने का भारग प्यारे ग्रह बिन हाथ न श्रावेगा। चाहे जितनी कर चतुराई रीता ही रह जावेगा॥ पूरव पश्चिम दिल्ला उत्तर फिर फिर उमर वितावेगा।

गुरु की कृपा होथ तब गोविंद घर बैठ ही पावेगा॥

पोथी थोथी बिन गुरु गम के पढ़ पढ़ मग़ज सकावेगा।

बीजक बांचे मिले न साथा सदी सेंद बतावेगा॥

बिन गुरु ज्ञान भानु के प्रगटे कबहु न तिमिर नसावेगा।

सरसमाधुरी सोज सहल की सतगुरु सहज दिखावेगा॥

॥ राग परभाती॥

जीवन मुक्त भये जो प्रानी जिन पाथा ग्रह ज्ञाना है।
रार्क रहें गोविंद ग्रन मांही किया प्रेम रस पाना है॥
सतग्रह ने निज मंत्र सुनायों सो सांचा कर माना है।
तिलक भाल तुलसी गल माला सुन्दर पहिना वाना है॥
मगन मानसी सेवा में नित सोई अधिक सयाना है।
सरस माधुरी रंग महल तज अन्त कहूं नहिं जाना है॥

॥ मांस ॥

श्री स्वामी बलदेवदास प्रभु मेरे गुरु सुखदाई। लियो उबार जगत जल निधि तें करके कृपा महाई॥ बरण शरण श्रपनी ले मोकों रस रहस्य सममाई। सरस माधुरी सेव सानसी श्यामा श्याम बताई॥

॥ मांक ॥

जब गुरु कृपा हिष्ट कर हेरें वस्तु हिये में दरसे। भावक भजन भाव सुख बिलसे जक्त जीव सब तरसे॥ भूले देह गेह सुध सब ही तब दंपति पद परसे। सरस माधुरी श्रगम श्रगोचर मौज महा मन सरसे॥

॥ मांस ॥

बिलहारी मेरे मुरशद की दम्पित इश्क लगाया है। माया से मन को सुरभाके श्रलक सनम उरकाया है॥ मृत्यु लोक के बासी जिय को श्रमरलोक पहुंचाया है। सरस माधुरी सेवा देके छिब में खूब छकाया है॥

॥ मांभ ॥

क्या तारीफ करूँ सतग्रह की इतनी श्रक्तल न मेरी। हाथ जोर सिरनाय निरन्तर रहूं चरण की चेरी॥ जय जय जय बिलहार बोल मुख कहूं शरण प्रभु तेरी। सरस माधुरी सनम मिलाया नेंक करी नहिं देरी॥

॥ रसिया की चाल में ॥

श्री गुरु शरगागत प्रत पाल कृपा कर काटे माया जाल। श्री गुरु मन्त्र सुनायो स्वासी संशय दीनें टाल। ध्यान मानसी मगन कियो मन ऐसे दीन द्याल॥ सुरत शब्द साधन विधि सारी समक्षाई प्रतपाल।

श्रजपा जाप जुगत वतलाई जप जी भयो निहाल॥

जाग्रति स्वम सुशुप्ति श्रवस्था समक्षाई तत्काल।

तुरियापद्पहुंचायप्रेम सो पल पल करत सँभाल॥

सहजानंद समाधि सिखाई ऐसे बुद्धि विशाल।

सर्व मई सारे द्रशाये जुगल लाडलीलाल॥

जीवन मुक्त कियो कृपा कर जग दुख दीने टाल।

सरस माधुरी मेट दिये सब जन्म मरण जंजाल॥

॥ रसिया॥

श्री मत सतग्रह परम सुजान बिनय यह सुनिये कृपा निधान।

दंपति संपित सुख राशी हेवो दया कर दान।
नौधा भक्ति बनें निशवासर धक्ष निरन्तर ध्यान॥
प्रेमा भक्ति मिले परिपूरन परा प्रगट हो ग्रान।
पुलकत तन मन नैन नेह जल भलके परम प्रधान॥
रिसकन को कक्ष संग रंग सों गाउँ ग्रण गन गान।
सूलूँ हेह गेह सुधि सारी रहें न श्रनुसंधान॥
दर्शे जुगल दसह दिश मोकों करत संद मुसकान।
बसे छबीली छिव हिय मेरे श्रिति शोशा की खान॥

मन इन्द्री स्थिर चित करके करूँ रूप रस पान। मतवारो हो मगन रहूँ नित मेरे जीवन प्रान॥ मैं चित जाऊँ चरण कमल पर करो विरद की कान। सरस माधुरी शरण श्रापकी दवो दीन जन जान॥

॥ श्यास कल्यारा।।

गुरुदेव द्याल द्या करिये।

श्रमरलोक से श्राप पंधारे हस्त कमल मम सिर धरिये।। श्री हरिनाम दान दे स्वासी जन्म मरन दुख को हरिये। प्रेमा भक्ति पदारथ देके परिकर में मोकों बरिये॥ लगन लाडली श्रक्त लालन हिय माहि मेरे भरिये। सरस माधुरी टहल महल दे नयनन सों नांहीं टरिये॥

॥ श्याम कल्यारा॥

श्री गुरु ग्रमरलोक से ग्राये।

प्रेम भक्ति प्यारी श्रीतम की जीवन को देने लाये॥ पतित जनन के पार करन को जग में श्यामा श्याम पठाये। जिन जिन शरण चरण की लीनी जुगल बिहारी जिन्हें मिलाये॥ जीवन मुक्त किये जीवन को दंपति दासन दास बनाये। सरस साधुरी वसे धाम में जुगल लाडिलीलाल लड़ाये॥

॥ तमाशे की चाल जंगला धुन ॥

जे जे श्री सतग्रह महाराज हमारे सभी सुधारे काज।
जब से शरण चरण की लीनी गय सकल दुख भाज।
रहूँ मानसी ध्यान मगन मन हिल मिल रिसक समाज॥
दीन जनन के दुख के भंजन भक्तन के सिरताज।
शरणागत प्रतपालक हो तुम सदा गरीवनवाज॥
पतितन पावन करन द्यानिधि प्रगट धर्म जहाज।
सरस साधुरी कहत जोर कर सब विधि तुसको लाज ॥जे०

॥ शब्द ॥

में वारी जाऊँ श्री गुरु की जिन दियों है दान निज नाम।

चरण शरण में ले मोहि स्वाभी किये सब पूरन काम।

पिय प्यारी छिन हिये निहारी भूलो तन धन धाम।

भई भावना सिद्ध सहज ही निरुखे श्यामा श्याम।

सहज समाध सुरित जहां लागी पायो मन विश्राम।

नित नव लीला नवल कुंज में होत रहत निशियाम।

हरष निरुख हृद्य हुलसत है पाई भूली ठांम।

भिल मिल ज्योति उद्योत श्रन्पम अनिगन महल मुकाम।

सरस माधुरी सत चित् श्रानंद श्रद्भुत श्रित श्रिभराम।

॥ शब्द ॥

बिलहारी जाऊँ प्यारे गुरु की जिन कियो है भर्म भय दूर॥

सुरत समेट एक घर कीनी पहुँची जुगल हुजूर।

रंग महल में जाय बसी जहां भिज मिल भिल मिल नूर॥

दस प्रकार के न्यारे न्यारे बाजें अनहद तूर।

अनरलोक में आनंद अति ही मन भयो चकना चूर॥

रास विलास होत जहां नित ही मेरी जीवन मूर।

सखी समाज सकल सेवा में राग रंग भर पूर॥

स्वयं प्रकाश उजास अनूपम नहीं चन्द निहं सूर।

सरस माधुरी गुरू शरण बिन भटकत डोलें कूर॥

॥ शब्द ॥

शरण गुरुदेव लई मेरा जन्म भरण दुख नासा।

सुरत स्वांस मिल एक भये जब सोहं शब्द प्रकासा।
रोम रोम श्रानँद रस छायो पायो ब्रह्म विलासा॥
भृकुटी में दीपाविल देखी तारागन बहु भासा।
जागी ज्योति महल त्रिकुटी में जाको श्रधिक उजासा॥
गरजै गगन दामिनी दमके हो रह्यो श्रधिक तमासा।

नूर घटा में मोती वरसें षट ऋतु वारह मांसा॥

इडा पिंगला और सुषमनां तिरवेणी वहे स्वासा।
तेज पुंज के पार श्रमर पुर जाय किया जहां वासा॥
नूर फूल नाना विधि फूले ऋतु वसंत रहे खासा।
महक रही मकरन्द माधुरी रंग महल के पासा॥
नूर रह्यो भरपूर चहुँ दिशि नूर धरणि श्राकासा।
स्वामी नूर नूर के सेवक निरखत हुयो है हुलासा॥
नूरिह सखी समाज सुहावन होत नूर नित रासा।
सरस माधुरी मौज मगन मन भयो श्रचल विश्वासा॥

॥ शब्द ॥

सखीरी जागे हैं मेरे भाग शरण सतग्रह की लई।
दियो दान निज नाम श्याम को दुरमित बिसर गई।
रहूं सदा ग़लतान ध्यान में हो गई प्रेम मई॥
लीला रास बिलास गगन में दरसी नई नई।
नवल लाडिलीलाल निहारे छबि हिय मांहि छई॥
श्राठों पहर रहूँ मतवारी निरख रूप रिमई।
सरस माधुरी सम्पति दम्पति श्री ग्रहदेव दई॥

॥ श्रारती ॥

श्रारती श्री गुरु की करिये निज छवि उर धरिये॥

श्रमरलोक से श्राप पधारे पतित उधारन नर तन धारे। शरण त्राये जोई जन तारे जन्म मरण हरिये॥ श्रभय हस्त मस्तक पर धारो कृपा दृष्टि कर मोहि निहारो। श्रधम् उधारन विरद् तुम्हारो, निज जन श्रनुसरिये ॥ श्रष्ट जाम सेवा चित थारूँ, रसना द्रम्पति नाम उचारूँ। जुगलचंद की नख शिख शोभा, [नयनन में भरिये॥ ध्यान मानसी में प्रभु त्रावो, दरशन त्रपने नाथ करावो। श्रव विलम्ब निहं नेंक लगावो, मेरी श्रोर ढरिये॥ जुगल बिहारीलाल मिलावो, श्रपने सँग प्रिया पिय लावो। अब स्वामी मोहे मत तरसावो, टारे नहिं टरिये॥ भाव रूप में सुरति रमावो, निज बृन्दाबन बास बसावो। टहल महल मोसों करवावो, परिकर में बरिये॥ श्री बलदेव द्या श्रब कीजे, प्रेम भक्ति में यह मन भीजे। सरस माधुरी की सुधि लीजे, जग से निसतरिये॥

॥ राग जिला भभोटी ॥

हमतो श्री गुरु हरि कर मानें।

श्री गोविंद गुरू बनि श्राये ज्ञान दृष्टि सों जानें ॥ गोविंद हूँ तें श्रिधकी महिमाँ गुरु की वेद बखानें। सरस माधुरी कोई गुरु मुखी गुप्त रीति पहिचानें।

॥ राग गारा ॥

गये गुरुदेव परम निज धाम।

कर जीवन कल्यागा कृपा निधि निरमोही निश्काम ॥
साड़ सुदी नौमी दिन मङ्गल चढ़े दिवस युग जाम ।
उन्नीस्से श्रष्टावन पावन संवत् विक्रम नाम ॥
माया काल रहित चौथे पद जित श्री श्यामाँ श्याम ।
मिले जाय श्री शुक परिकर में श्रमरलोक निज ठाँम ॥
ऋतु बसंत संतत सुखदाई तहां शीत निहं घाँम ।
रंग महल निज टहल करें नित लखें केलि श्रभिराम ॥
चरगादासि के चरगा शरगा नित ठाकुर श्रिल गुगा शाम ।
प्रागा समान जान नित पोषत सरस माधुरी बाम ॥

॥ उमरी ॥

गये मोहि छाँड़ श्रकेले धाम।

ता दिनसों तन मन दुख दूनों तलफित हों निशिजाम ॥
कोंन सुनें मेरी मन बितयां हे ग्रुरु पूरन काम ।
करे सहाय कोंन प्रभु तुम बिन रहूं कलेजो थाम ॥
फिरूँ बिलखती विरह बाबरी जपूँ तुम्हारो नाम ।
सरस माधुरी की सुधि लीजे श्री सतग्ररु गुगा ग्राम ॥



•

॥ पद् ॥

श्री नारद वीगाधर स्वामी।

प्रेम भक्ति मूरित तन पुलकित विद्यागान शिरोमिश नामी॥ नाचत बांध घूँघरू पायन दंपित रीभ रहत श्रनुगामी। सरस माधुरी नाद खाद खर देहु करों तुम चरण नमामी॥

॥ पद् ॥

श्री मत बेद्व्यास सिर नाऊँ।

हाथ जोरि बहु विधि निहोरि के निज मस्तक तुम पद परसाऊँ॥ देहु श्रसीस दया कर मोकों श्री दंपति के ग्रगा गगा गाऊँ। सरस माधुरी कृपा कीजिये संतत श्रेम भिवत बर पाऊँ॥

॥ पद् ॥

महर्षि भृगुजी की बलिहारी।

वरुग यज्ञ में ब्रह्मा जू से प्रगट भये प्रभू श्रानन्दकारी।।
श्रिक्ष कुंड तें उत्पति तिनकी जग में महिमां भारी।
रची संहिता श्रिषक श्रन्यम त्रिकालज्ञ सुखकारी।।
सुर नर मुनि जन जस गावत हैं शोभा श्रपरंपारी।
सरस माधुरी श्याम राधिका प्रेम भिकत दातारी॥

॥ पद् ॥

जय जय च्यवन ऋषी भृगु नंदन।

मात पुलोमा प्राणा पियारे संत जनन के चित चंदन॥

श्री राजा सर्यात सुकन्या तापित प्रभु आनंद के कंदन।
अश्वित कुमारन भाग यज्ञ में पायो तुम वल पाप निकंदन॥

इसर कुल के परगट करता आगम महिमाँ कहत सुछंदन।
सरस माधुरी चरण कमल रज करत जोर दोऊ कर बंदन॥

॥ राग कालंगड़ा, श्यामकल्यासा ॥

जय श्री शोभन भक्न भुपवर ।

च्यवन वंश अवतंश प्रभाकर रासिक शिरोमणि जक्त उजागर॥
सहचरी भाव माँहि नित भीनें निशि दिन सेव मानसी तत्पर।
प्रगट मिले श्री कुंज विहारी लिये लगाय हितसों अपने गर॥
दियो वरदान मुद्ति मन है प्रभु लेंहु अंश अवतार तुमह घर।
अष्टम पीडी में प्रगटाऊँ आऊँ मैं ही संत रूप घर॥
भृगुच्छिष वंश प्रशंसित करिहों हिर हों किलेके मल निश्चय कर।
श्री शुकदेव संप्रदा थापों प्रेम भिक्त लहें जग नारी नर॥
यों किह अंतर ध्यान भये हिर मूंदे नयन ध्यान घर निरभर।
सप्त दिवस में त्याग देह कों जाय मिले दंपित की परिकर॥

सरस माधुरीकी यह विनती सहस कान दे सुनिये द्याकर। कुंज महल की टहल जुगल पद दीजिये जान अपनी अनुचर॥

॥ गजल ॥

हमारे रामरूपा तुम परम प्राणों से प्यारे हो। सरापा प्रेम की सूरित सेरे नैंनों के तारे हो॥

तुम्हारा नाम ग्रुरु भक्ता जगत में जाबजा रोशन । गुरू भाक्ने को करके तुस हुये मशहूर सारे हो॥ वसे हो दिल में तुम मेरे बसाया मुक्तको निज दिल में। नहीं मैं तुम से न्यारा हूं नहीं तुम मुक्तसे न्यारे हो ॥ रमे हो मुक्तमें तुम हरदम, रमाया मुक्तको तन मन में। तुम्हारे हम हमारे तुम, नहीं जाते विसारे हो॥ किया तुमने मुभे वश में, फँसाया इश्क के रस में। मोहब्बत में गया फँस मैं, मेरे जीवन अधारे हो ॥ गले मेरे से लग जावो, लगावो मुभको सीने से। रसिक तुम माधुरी रस के, मेरे दिलबर दुलारे हो॥ चलें अब खास खिलवत में,करें रस रंग की बतियाँ। बिपट हँस हँस लगें छातियाँ, बहुत दिन में निहारे हो॥ हो तुम महबूब लासानी, नहीं है शक शुभा इस में।

सरस शुक मृनि चरण दासा के शिष्य तुम जग उजारे हो।।।। श्री रामरूप गुरु भक्कानंद जी धाम यात्रा पद ॥

श्री स्वामी रामरूप सुखदाई।

चरणदास श्राचारज के शिष्य शोभा कही न जाई॥

ग्रुरु भक्की में परम परायन लीने तिन्हें रिभाई।

श्री गुरु भिक्क प्रकाश नाम शुभ पुस्तक श्राप वनाई॥

गुरु भक्कानंद नाम दूसरो गुरु दीनो हरपाई।

किये दिवान प्राण सम प्यारे शोभा सव जग छाई॥
देश देश रामत कर अनागन दीने जीव चिताई।

प्रेम परा भक्की दंपति की दशों दिशा फैलाई॥

श्रठारह सौ सेंतालीस संवत विक्रम कहे सुनाई।

ग्रेठ सुदी बारस को तन तज धाम गये रासिकन के राई॥

शुक्र परिकर में रहत प्रेम सों पदवी सहचरी पाई।

सरस माधुरी जुगल विहारी सेवत प्रीति लगाई॥

॥ श्री परम गुरुदेव प्रार्थना बंदना के पद ॥ ॥ राग कालंगड़ा ॥ नमो परम गुरु श्री ठाकुर दासा ।

समद्रशी शीतल उदार चित प्रेम भक्ति पूरन परकासा॥ सुरत निरत निज ध्यान धारना जुगल चरण की करत उपासा। लाल लाडिली मगन भावना सेवा अष्टकाल सुख रासा॥ परम धाम निज लोक अमरपुर तहां निरंतर करत निवासा । दुलरावत जुग जोरी किशोरी निरखत नैंनन जुगल विलासा ॥ श्री शुकदेव संप्रदा नीकी चरणदास द्वारा अति खासा । तिनके बावन शिष्य बड़भागी श्रीस्वामी रामरूप रस रासा ॥ रामकृपाल दास तिन ही के बिहारीदास मेटन भव त्रासा । तिनके शिष्य आपहो ग्रुरु मुख जीवन की मेटी जम फांसा ॥ श्री वलदेवदास ग्रुरु मेरे तिन कृपा यह भेद सुभासा । सरस माधुरी जान अपनो राखो जुगल चरण के पासा ॥

॥ राग कालंगड़ा ॥

ş! _[

नमो परम ग्रुरु प्रागा प्यारे।

श्री ठाकुरदास नाम श्रात श्रद्भुत श्रमरलोक से श्राप पधारे॥ हिर श्राज्ञा श्रनुकूल प्रगट भये जग के जीव बहुत निस्तारे। कृष्णा नाम निज दान दियो नित श्रगनित कुल जग के उद्धारे॥ स्वास स्वास प्रति नाम निरंतर पान कियो श्रमृत निरधारे। नौधा में श्राति निपुण श्रमूपम पूरन प्रेम भक्ति में भारे॥ नुरियातीत परम वैरागी ध्यान धारना लच्चण सारे। ज्ञानी ग्रनी शिरोमणि सब के निशि दिन शीलशृंगार सिंगारे॥ उनतीसों लच्चण परिपूरन परम वैष्णव जग उजियारे। लगन लगाई पिय प्यारी सों छके दरश रस नित मतवारे॥

काम अरु कोध मोह मद मत्सर लोभ आदि शत्रु हाने डारे। पांच पचीसों अरु तीनों गुग सकल जीत मंगल विस्तारे॥ श्री बलदेव दास गुरु मेरे तिनके तुम नैनन के तारे। सरस माधुरी शरग तिहारी तुन जीवन धन प्राग हमारे॥

॥ राग भेरवी ॥

श्री ठाकुरदास द्याल परम ग्रह रहे तुम्हारो निश दिन ध्यान ।
गोर वरन मन हरन मनोहर सिर टोपी फेंटा जु सुहान ॥
तिलक शिल मिली ज्योत भाल पर दिस अधिक शोभा की खान।
नैन विशाल माल गल तुलसी मंद मधुर मुख की मुसकान ॥
तेज प्रताप परम परिपूरन मुख शोभा शरिदंदु समान ।
मेटन पाप तापत्रय जन के करन सकल विधि सुख कल्यान ॥
द्वादस तिलक सकल श्रंग शोभित पीत दुकूल सो दिस महान ।
श्रासा ले पद्मासन बैठे सुरत धरी त्रिकुटी अस्थान ॥
वागंबर आसन पर राजत कंज सरिस जुग पद पहिचान ।
मम गुरुदेवन देव परम ग्रह शिवदयाल बलदेव के प्रान ॥

॥ राग आसावरी॥

मेरी अरज परम गुरुदेवा दीन होयकर तुम्हें सुनाऊँ। ध्यान देहु मोहि जुगल चरणको निशादिन पिय प्यारी गुन गाऊँ॥

संत रिसक हिर भक्कन के नित निकट निरंतर बासों पाऊँ। सेवा अष्ट जाम अति नीकी हरष करूं आनंद बढाऊँ॥ रहूं समीप सदा प्रिया पिय की निजकर दंपति श्रंग सजाऊँ। हाजिर रहूं हुजूर महल में नैंनन निरख हिये हुलसाऊँ ॥ श्री शुक सखी चरण की दासी तिनके नित ही संग रहाऊँ। सेवा सुख संपात सर्वोपर पाय ताहि रंग रली मनाऊँ॥ जन्म अनेक गये या सुख बिन यह दुख तुम बिन काहे सुनाऊँ। अबके बांह गहो प्रभु मेरी हा हा खाय चरण सिर नाऊँ॥ श्री ठाकुरदास द्याल द्याकर तुमरो दासन दास कहाऊँ। बलदेवा को जान उबारो भव सागर में बहुर न आऊँ॥ सरस माधुरी शरण रावरी निशि दिन तुमरी क्रपा मनाऊँ। प्रिरकर जुगल बसाय विरद् लाखि बारंबार चरण बलि जाऊँ॥

॥ राग आसावरी ॥

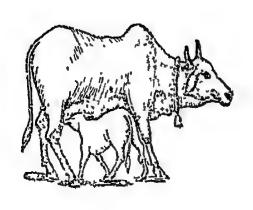
श्रीर किसी सें काज न मेरो श्रास परम ग्रह तेरी है। विरद तिहारो श्रधम उधारन काहि लगाई देरी है। श्रामित पतित तुम पार किये प्रभु अबके बिरियाँ मेरी है। भूले नांहि बनेगी स्वामी तुमरे हाथ-नवेरी है॥ भवसागर दियाव श्रगम तहां नाव जरजरी मेरी है। भर्म भँवर के बीच परी है पांचों मच्छन घेरी है।

बल्ली ज्ञान कृपा चंयू ले आव विनय कर टेरी है। पार लगा हरिपुर पहुंचावो यह अवसर नहीं फेरी है॥ श्री ठाकुरदास उपास चरण वलदेव दया सों हेरी है। सरस साधुरी अधम जनन की तुमही व्याधि नंबरी है॥

॥ घाम यात्रा पद ॥

परम गुरु ठाकुरदास हमारे।

ज्ञान ध्यान दंपित परिपूरन निज जन के रखवारे॥
संत महंत मुकटमिण स्वामी शील शृंगार सिंगारे।
मगन मानसी सेवा में नित रहे जगत से न्यारे॥
सुन्दर रूप अनूप सुहावन रिसकन के हग तारे।
तन मन बचन सकल सुखदाई जीव अनेकन तारे॥
उन्नीस से अरु तीस संवत्सर आश्वान कृष्णा पच्च लाखि प्यारे।
बारस तिथि को निज तन तज के अमरलोक को आप पधारे॥
सेवें सुरुचि श्याम श्यामा को सहचरि रूप अनूपम धारे।
सरस माधुरी छिव पिय प्यारी निराखि नैन सर्वस निज वारे॥



श्री मतवेद्व्यास भगवान महिमा तथा जन्म बधाई।

عهمهم مهر المهر ال

॥ दोहा ॥

श्री मत वेदव्यास जू कृष्णकला श्रवतार । ऋषी पराशर पुत्र हैं प्रगटे श्रवनि मभार॥ धन्य मातु शुभ लक्तगी सत्यवती गुगा धाम । भये तनय तिन कूख ते श्राति सरूप तन श्याम ॥ शुभ दिन है सिख ब्राज को पून्यों परम पुनीत। मास श्रषाढ सुहावनो शुक्ल पन्न रस रीत ॥ धर्म सनातन वैष्ण्य ताहि प्रचारन काज्। श्राचारज है श्रवतरे ऋषि मुनि जन सिरताज॥ भुवन चतुर्दश लोकत्रय घर घर मङ्गल चार । गुणि गँधर्व गावन लगे नचत श्रप्सरा नार ॥ बीन मृदंग बजावहीं सारंगीरु सितार। मधुर मधुर मुहचंग धुनि मन की मोहन हार ॥ वरषत श्रमृत मेघ जल नहनी परत फुहार। लता पता तरु बेलि बन भूमि भई हरियार ॥ बोलत विविधि विहंग वर शुक पिक सारस जोर। पारावत श्ररु हंस वर नचत विपिन में मोर ॥ फूलन फूल्यो बन सबे गुंजत मधुकर चूंद । त्रिविधि पवन पावन बहत छई सरसं मकरंद ॥

ऋषी पराशर श्राश्रम शोभा को निहं पार । कदलि थंभ रोपे सुभग स्वस्तिक रचे संवार ॥

ध्वज पताक तोरन सजे, बांधी बंदन माल । बजे दुन्दुभी भेरि शुचि, सहनाई सुर ताल ॥ श्रमित यूथ ऋषि मगडली, श्राय गई तिंह काल। वेद ऋचा बोलत सबहिं, मानो बाल मराल॥ भीर भई श्रति भवन में, गह मह मङ्गलचार । बंदीजन विरदावली, बोलत विविधि प्रकार॥ मागध सूत सुहावनी, कीरत कुल करतृति बोलत वर वंशावली, प्रगटत विमल विभृति॥ चौक चारु पूरे रुचिर, सरस श्रजिर के बीच। केसर चन्दन की सखी, भई सलौनी कीच॥ श्रतर तरातर सब किये, छिरके नीर गुलाब । पान मिठाई ऋतु सुफल, बटत चौगुनी चाव॥ ऋषि पत्नी श्राई सकल, लेकर कंचन थाल । मंगल दृष्यादिक धरे, गावत गीत रसाल ॥ सरस आधुरी लाल को, वदन इन्दु लिख नैन। जन्म बधाई विविधि वर, गाई श्रानँद देन॥

॥ अन्द्र॥

जय जय श्री वेदव्यास जक्त ग्रह गाइये ॥

मदन मनोहर रूप निरख हुलसाइये॥

ऋषी पराशर सुवन को लाड़ लडाइये॥

सत्यवती के कुँवर की विलि विलि जाइये॥

जाइये बिल कुँवर की पुनि प्रेम में पुलकाइये॥ गोद में ले मोद सों मन मुदित दिन दुलराइये॥ प्रेम भक्ति के प्रदाता चरण शीश नवाइये॥ सरस रस की माधुरी सेवा महल की पाइये॥

॥ बंधांई चाल भूमका ॥

नवल बधाइयां हो , पराशर ऋषी के दरबार । गावें ऋषि नारियां हो, नाचें चतुर दे कर तार ॥ हुआ सुत परम सुन्दर हो, सलोना श्याम तन सुकुमार। सत्यवती मातु ले गोदी, पिवावत दुग्ध कर बहु प्यार ॥

॥ भूमका॥

प्यार कर मन मगनावें, पालने भमक भुलावें। डोर गहि देवें भोटा, सहज लखि लालन छोटा॥

॥ अंतरा ॥

लखेलालन छगन छोटा, खिलावें ख्याल विविधि प्रकार। करें कल केलि मिल कामिन, उतारें नोन राई वार॥ नवें कमला सी कर अरमट, बजें पायल पगन अनकार। बधाई गीत मिल गावें, मनोहर मुदित मङ्गलचार॥

॥ भमका॥

मनोहर मंगल गावें, सकल मिल लाल रिभावें। वसन भूषन तन साजें, नारि सुरलखि मन लाजें॥

॥ अंतरा ॥

लजाई नार सुरपुर की, निरिष्व के केलि मंगल साज। नगारा भांभ सहनाई, रहे हैं वाजने बहु वाज॥ घटा नभ में भली छाई, रह्यो रस मेघ सुन्दर गाज॥ परम श्रुचि मोद की घड़ियां, सलोनो सोहनो दिन श्राज॥

॥ भूमका ॥

गाज सुन सुंदर त्राली, छटा छिव देख निराली। बुलबुलें बहु विधि बोलें, परस्पर करत कलोलें॥

॥ श्रंतरा ॥

कलोलें बुलबुलें भारी, रमोला लाल लित श्रपार। बरन बहु रंग हैं तिनके, फुदक बैठत तस्न की डार॥ चमन चारों तरफ प्यारा, परम श्रानंद बाग बहार। समय सोहन निरख भामिन, चली श्राई ऋषिन की नार॥

॥ भूमका॥

ऋषिन की नारीं श्राई, दूध दिध कीच मचाई। छिरक रहि केशर चंदन, करें कर जोर सुबंदन॥

॥ अंतरा ॥

करें कर जोर के बंदन, हमें किलकें करें कौतूल। विमानन बैठ सुर नभ में, करें जैजैति सब सुख मूल ॥

कल्प तरु फूल बरसावें, रहे हैं देह की सुधि भूल। मगन त्रानँद मन मांही, विधाता जान निज त्रमुकूल॥

॥ भूमका॥

जान श्रनुकूल विधाता, सकल श्रानँद रस माता। त्रिविधि मारुत सुखदाई, पंपैया टेर लगाई॥ ॥ श्रंतरा॥

लगाई टेर चातक ने भई सब भूमि हरियारी। घटा छाई चहुं दिशि में लता लहकत ललित प्यारी॥ खिले हैं फूल नाना विधि विहंगम बोल सुखकारी। भ्रमर रहे गुंज मदमाते मनो अनहद की गति धारी॥

॥ भूमका॥

श्रनाहद बाजे बाजें, श्रली सुन्दर सज साजें। थाल कंचन कर लाई, विविधि विधि पान मिठाई॥ भुगुलिया टोपी भाई, करा कंचन ले श्राई। धरे ले भेट लालन के संजोयो दीप चौमुख थार। करी ले श्रारती हिलमिल लुटाये विपुल मोती वार॥ श्रशीसंसकल मिल सुंदर खसो निहं नहात तनको बार। बढो प्रतिदिनकला शशि ज्यों कहें बिधना सों गोद पसार॥ सरस की माधुरी दासी श्रसीसत मुदित बारंबार। बजत बधाईयां हो पराशर ऋषी के दरबार॥

॥ भाँड बधाई ॥ शादियां भली वे खुशविष्तियां भली वे । श्रावो गुनीजन गावो रस रंग की रली वे॥ शादियां सुरंगी सुनों भांडदेव श्राये श्रजी वाह वा है। नक्ल नोंक भोंक के ख़जाने भर लाये श्रजी वाह वा है॥ निरख के समाज महा मन में मगनाये श्रजी वाह वा है। वाजे बीना मृदंग डफ ढोलक मुहचंग श्रजी वाह वा है॥ रहे मोद मन रांचे सुखानँद में नांचे त्रजी वाह वा है। लखें लाल मुख राजी भये प्रसन्न समाजी श्रजी वाह वा है।। कहें पराशर लाल जीवो जुग जुग खुशहाल श्रजी वाह वा है। माता सत्यवती रानी जीवो लाल सुखदानी श्रजी वाह वा है॥ श्री मतव्यासभगवान प्रगटे श्राचारज श्रान श्रजीवाह वा है। करें वेद के विभाग लहें संत अनुराग अजी वाह वा है॥ कथें भारत सुजान सुनें साधू सुखदान श्रजी वाह वा है। रचें भागवत पुरान करें जीव प्रेम पान श्रजी वाह वा है।। जीव श्रनंत उधारें काज भक्तों के सारें श्रजी वाह वा है। लेवें वेद्व्यासनाम मिलें ताहि श्यामा श्याम श्रजी वाह वा है॥ पावें कुंज में विश्राम बसें बृन्दावन धाम श्रजी वाह वा है। धन्य है श्रासाढ मास तिथि पूनों सुख रास श्रजी वाह वा है॥ फूले फिरें भक्त वृंद, भयो मन में श्रानँद श्रजी वाह वा है। नाँचे गावें मगनावें, नाना भाव ले वतलावें श्रजी वाह वा है ॥ छिरके दही दूध हर्द भये तनके वस्तर जर्द श्रजी वाह वा है। हास्य रस को उपजावें तन मन में पुलकावें श्रजी वाह वा है।। देवें श्रापस में ढेल,रपटें परें करें केल, श्रजी वाह वा है। वस्त्र भूषण लुटावें,कोई लेवे को धावें, श्रजी वाह वा है। कोइ कोइ सों छिनावें, श्रम धका मचावें,श्रजी वाह वा है। भयो श्रानँद श्रपार, लहैं शेष नहीं पार, श्रजी वाह वा है। श्रषी पराशर जान,कियो सबको सनमान, श्रजी वाह वा है। दिये हीरा मोती दान,रथ बाजी गज जान श्रजी वाह वा है। दिये भूषन वस्त्र श्रन्न,किये सर्व को प्रसन्न, श्रजी वाह वा है। सरस माधुरी श्रपनाई,निल्य धाम में बसाई, श्रजी वाह वा है। महा मन में मगनाई, यह भाँड बधाई गाई,श्रजी वाह वा है।

॥ ऋाशीर्वाद को पद ॥

चिरजीवो पराशर लाल । श्रसीसत ऋषि मुनि वाल ॥ संस्वती सुत सदा रहो खुश नहात खसो नहिं बाल ॥ चंद्रकला ज्यों बढों रैंन दिन रिसकन के प्रतिपाल ॥ करो प्रकाश वैष्णाव मारग मगन रहो सब काल ॥ सुलभ करो सेवा को मारग कुंजन केलि रसाल ॥ रिसक जनन को श्रान मिलावो सहज लाडिली लाल ॥ सरस माधुरी शरण चरण की नाचत देकर ताल ॥

॥ पद् ॥ -

बोलो बोलो रसिक मम प्रान । व्यास जय जय भगवान ॥

नांच गाय हुलसाय चाय चित ले ले सुंदर तान ।
श्री कृष्ण श्राचारज वपु धर श्रवनि श्रवतरे श्रान ॥
करें विभाग चार वेदन को भारत रचें सुजान ॥
गावें परम संहिता सुंदर श्री भागवत पुरान ॥
नवधा प्रेमा परा रसमयी भक्ति करें प्रभु दान ॥
चौरासी जम दंड विसर जिय पावें पद निरवान ॥
विषयानंद त्याग जिय जग के करें प्रेम रस पान ॥
गहो शरण सुत सत्यवती की जो चाहत कल्यान ॥
सब धर्मन शिरसौर यही पथ निश्चय लीजे मान ॥
मिलें लाडिली लाल मया कर दें निज दर्शन श्रान ॥
सरस माधुरी बसे महल में छवि दंपति गलतान ॥

श्री निकुंज महल भाव संबंधी बधाईयों के अनुक्रम में बोलवे के दोहा ॥

श्री रंगा मम स्वामिनी, रंग महल में वास। रहत निकट दंपति सदा, रंग रस करत प्रकास।। रंग रहस्य वहु विधि जहां, होत रहत सब काल। ताकी निज श्रिधकारनी, श्री रंगा नव वाल।। रंग उमंग श्रमंग नित, रंग महल में होत। ते सब ही ताही समय, रंगा करत उदोत॥

रंग रली कुंजन भली, अली करत अनुराग।
श्री रंगा के संग सों, सहचिर लहत सुहाग॥
सोई प्रगटी करके कृपा, वेद्व्यास वपु धार।
आचारज है अवतरी, आई अविन मकार॥
वरनें लीला रस मई, नित्य निकुंज विहार।
परम हंस रच संहिता, निस्तारें संसार॥
जय जय जय कर जोरि के, ध्यान हृद्य निज धार।
सरस माधुरी पद कमल, बंदत बारंबार॥

॥ पद् ॥

प्रगट भये वेद्व्यास भगवान ।

साढ सुदी पूरिंगामा शुभ दिन सुंदर सुख की खान ॥
परम पूज्य श्री ऋषी पराश्रर दीने बहु विधि दान ।
कंचन रलादिक विप्रन दे कियो विविधि सनमान ॥
सत्यवती माता भन आनंद सो निह होत बखान ।
जिनकी कूँखि अवतरे खाभी कृष्णाकला प्रभु आन ॥
गावन लगे बधाई गंधव नचत अप्सरा जान ।
सुर नर मुनि जन मन हरषाने उत्सव कियो महान ॥
करें विभाग चार वेदन को भारत रचें सुजान ।
गावें परम संहिता सुंदर श्री भागवत पुरान ॥
भगवत धर्म करन स्थापन आये कृपा निधान ।
आचारज शिरमौर जगत गुरु तिन सम और न आन ॥

दीजे प्रेम भक्ति दंपति की निज जन अपनो जान । सरस साधुरी रंग महल की सेवा जीवन प्रान॥

॥ पद् ॥

पराशर घर श्री हिर प्रगटाये।
भगवत धर्म सनातन थापन आचारज है आये।।
पद्धित प्रचुर जगत ग्रुरु जिनकी सकल लोक यश छाये।
वेद्व्यास भगवान विदित प्रभु संतन के मन भाये।।
को अस जग मितमंद अधम नर जाहि न लगत सुहाये।
सरस माधुरी रिसक मुकटमारी जन्म कर्म ग्रुग गाये॥

॥ पद् ॥

पराशर पूर्व पुन्य प्रगटायो ।
जिनके यह जगदीश ईश हरि व्यास पुत्र है आयो ॥
सत्यवती शुभ लच्चिन भैया जिनके सुत उपजायो ।
गोद मोद भर ले लालन को प्रीति सहित पय प्यायो ॥
स्वयं विष्णु है व्यास अवतरे सुयश सकल जग छायो ।
ग्रीन गंधर्व अप्सरा हिल मिल सबन समाज रचायो ॥
विविधि भांति उत्सव शुभ कीनों सरस सोहिलो गायो ।
थिर चर सकल लोक आनंद भय मंगल मोद मनायो ॥
भये प्रफुञ्जित भूतल वासी प्रेमानंद बढायो ।
मास अषाढ परम पावन शुचि नेह मेह बरसायो ॥

सागर नदी तड़ाग बाग वन लागत परम सुहायो। ऋषि मुनि मुदित महान भये मन मनहु पर्म धन पायो॥ हरष बधाई ऋलियन गाई भयो सकल मन भायो। सरस माधुरी के हिय माही परमानंद समायो॥

॥ राग भैरवी ॥

व्यास पूर्णिमा शुभ दिन आज।

ग्रह को पूजत सकल वैष्णव हिलमिल करत समाज॥

हेतु यही सर्वज्ञ जगत ग्रह प्रगट दिवस सुख साज।

है पायन कर भाव भक्ति ग्रुत करत धर्म शुचि काज॥

सिद्धि होत सब मन बांछित फल कलिमल जावत भाज।

श्रहुभव उदय होय लीला रस श्री दंपित सिरताज॥

ग्रह यश गान करो हरषत हिय विविधि बजावो बाज।

सरस माधुरी मुखसों बोलो जय जय ग्रह महाराज॥

॥ राग ऋासावरी ॥

पराशर यह प्रसाद में पाऊँ।

तुमरे सुवन व्यास लालन के जन्म कर्म गुगा गाऊँ ॥
रहों सदा ग़लतान ध्यान में दासन दास कहाऊँ ।
वागीमय अमृत तव सुत को पी निज हिय हरषाऊँ ॥
निरखों छवि नव अंग मनोहर अपने नैंन छकाऊँ ।
सरस माधुरी पद पंकज तज अंत कहूं नहि जाऊँ ॥

॥ राग सोरठ ॥

वंदों पद श्री सत वेदव्यास । नित भजों साव कर हिय हुलास ॥

कितम मेटन को ज्ञान भान, कियो प्रगट लियो अवतार आन। मुनिराज महा प्रभो करुणा रास ॥१॥

निज मातु बचन लीने समान, उत्पन्न किये त्रिय पुत्र जान । कियो भरत खंड उद्धार खास ॥२॥

किल मंद बुद्धि जीवन निहार, किये वेद भाग वहु विधि प्रकार। ज्यों जीव तरें भव विन प्रयास ॥३॥

कियो धर्म निरूपण विविधि रीत, नाना पुराण गाथा पुनीत। हरि कथा अभित गाये विलास ॥४॥

दिये वेद विरोधी मत जनाय, रचि सूत्र वाद मत दियो मिटाय। कियो अन्य अंधतम मत को नास ॥५॥

जिनके प्रभाव अर्जुन सुमान, मधि स्वर्ग लई विद्यास्त्र जान । कौरव सेना कीनी विनास ॥६॥

किये दिव्य नेत्र संजय को दान, वृत्तान्त युद्ध तिन लियो जान। करी पूरमा प्रभु धृतराष्ट्र आस ॥७॥

धृतराष्ट्र मृतक सुत दिये दिखाय, सन मोह महा तिनको मिटाय। गांधारी दुख कियो नास ॥=॥

गुण गण समुद्र महिमा अपार, कहै सरस माधुरी किहि प्रकार। करि कृपा करो चरणन को दास ॥६॥

॥ राग ठुमरी ॥

बधाई वेद्व्यास सुखदानी।
श्री रंगा शुभ नाम धाम में प्रगटी भूतल आनी॥
प्रेम रंग सरसात महल में बोलत अमृत बानी।
उपजत प्रेम रंग दंपित को सो सेवा मनःमानी॥
जुगल रंग की मूरित जानो दंपित की हित दानी।
करन कृतारथ जीव जक्त के यह इच्छा जिय ठानी॥
रंग महल रंग वृष्टि करन को आई परम स्यानी।
नाम धाम लीला सरूप गुन सरसेगो हम जानी॥
परसो चरण चारु नैनन सो वार पियो आलि पानी।
सरस माधुरी रूप रास लिख बिनही मोल बिकानी॥

॥ बधाई ॥

रंगीली बजत बधाई माई।

श्री रंगा स्वामिनि श्राभिरामिन प्रगट भई है आई॥ करो सोहिलो हिल मिल सजनी आनंद हिय हरषाई। साज बजावो नाचो गावो नाना भाव बताई॥ फूल वृष्टि करिये मुद्र भरिये बाँटो पान मिठाई। जय जय बोल बलैयां ले ले निरखो नैंन अघाई॥ मृद्धि पराश्वर पुन्य उदय भयो वेद्व्यास सुत पाई। सत्यवती माता मन प्रमुद्धित पय प्यावत पुलकाई॥

सुर समूह सब बैठ विमानन रहे गगन में छाई। फूल कल्पतर भर भर भोरी निज कर भरी लगाई॥ जक्त गुरु जग जीव उबारन आये जन सुखदाई। सरस माधुरी भुवन चतुर्दश सुजस भयो आधिकाई॥

॥ पद् ॥

सखी वेद्व्यास प्रगटाये हैं।

मर्षी पराशर मन मगनाये मंगल साज सजाये हैं। सत्यवती माता हिये हरषी जिनके सुत कहलाये हैं। कुल नारी हिल मिल के सारी गाये गीत वधाये हैं। स्वर्ग माहिं सुर बैठ विमानन नभ मांहीं आ छाये हैं। भेरि इंद्भी वाद्य बजाये फूल फूल वरसाये हैं। जान जन्म दिन सकल जकत गुरु सुनि जन जुर कर आये हैं। जय जय धानि दशहों दिशि छाई भये सबन मन भाये हैं। भयो समाज सर्व भूमंडल परमानंद छकाये हैं। सरस माधुरी है पायन के दर्शन कर हरषाये हैं।

॥ पद् ॥

प्रगटे श्री वेदव्यास धन्य दिन श्रां री। नीको श्राषाढ मास पूनों तिथि सुख की रास। सत्यवती हिय हुलास कामना फलीरी॥ पुन्य पुंज मुनि प्रधान पराशर सुलेहु मान। बिप्रन गो दान दई दुग्ध की भलीरी॥ सदन द्वार नवल नार स्वास्तक विरचे सँवार।
छिरके चंदन खचार डगर अरु गलीरी॥
युवात यूथ मिल अपार मंगल भर द्रव्यथार।
करके श्रृंगार गात सोहिलो चलीरी॥
निरावि नेन भई निहाल ललन रूप फँसी जाल।
सरस माधुरी सुबाल भाग की बलीरी॥

॥ पद् ॥

सुमरों श्री वेद्व्यास जगत गुरू कृपाला।
शुक मुनि महाराज राज संतन प्रतिपाला॥
श्राचारज संप्रदाय श्याम चरणदास खास।
शिष्य स्वामी रामरूप करत जन निहाला॥
राम ही कृपाल की कृपा को नित चाहत हूं।
बिहारीदास दंपति को दें मिलाय हाला॥
परम गुरु गुन समुद्र स्वामी श्री ठाकुरदास।
रहत जुगल पास होत निरखि छिन निहाला॥
श्री मत बलदेव दास तिनके चरणन की श्रास।
जपत सरस माधुरी तिन नाम की नित माला॥



444444444

श्री शुकाचार्य जन्मोत्सव, बधाई तथा विनय पद।

॥ श्री राधा,सरस विहारियो नमः॥

॥ दोहा ॥

वेदव्यास के प्रगट भये, जा विधि शुक्र मुनि श्रान। ताको कारन मुख्य जो, सो श्रव करूँ वखान॥ ॥ चौपाई॥

सतयुग त्रेता गयो विताई। द्वापर युग लीला कहुँ गाई॥ श्री मत वेद्व्यास भगवाना । जिनको सुयश नहीं जग छाना ॥ चार विभाग वेद के कीने । और सूत्र सुन्दर रच दीने ॥ श्री मत भारत यंथ बनायो। पंचम वेद नाम जिहिं पायो॥ भेद वरण आश्रम के गाये। निवर्त प्रवर्त मारग समभाये॥ मुक्ति सुमारग कियो बखान। कियो सकल जग को कल्यान॥ परम हंस संहिता बनाई। नाम भागवत परम सुहाई॥ महा पुरान कहावत सोई। सर्वस धन वैष्णवन को जोई।। ऐसे वेद्व्यास सुखदाई । पुत्र कामना मन में श्राई ॥ सुमेरु शिखर पर जाय विराजे। हेत पुत्र तप साज सुसाजे॥ कठिन उयतप्रवृत यह लीना । पंवन श्रहार मात्र ही कीना ॥ धरा समान धीर्यता जामें। जल ज्यों निर्मलता होय तामें॥ तेज श्रिप्त सम दिस जासु में। व्यापक ग्रन सम पवन तासु में॥ वृहद् व्योम के सम गुन चहिये। ताकी आदि श्रंत नहिं लहिये॥ विष्णु समान सतोग्रण धारी। रूपवान सम कृष्ण बिहारी॥ ऐसे सुत प्रगटन के काजा। इह वृत नेम तपस्या साजा॥

॥ दोहा ॥

तप आरंभ कीनो जहां, तहां शिवा त्रिपुरारि। पार्षद निज गन संग ले, विराजत हैं तिहिवार॥ राज ऋषी श्ररु ब्रह्म ऋषी, जान सुथल शिरमीर। भजन भावना करन हित, रहत एक ही ठोर॥

॥ चौपाई ॥

यम श्ररु वरुगा इन्द्र को जानों। वायु कुवेर श्राग्नि पहिचानों।।
श्रष्ट वस् सूरज श्ररु चंदा। पृथ्वी सिहत सुसप्त समंदा।।
पर्वत सकल मनुज तन धारे। ग्रुन गँधर्व श्रप्सरा सारे॥
नारद मुनि चौरासी सिद्धा। श्राठों सिद्धि नवों सब निद्धा॥
सबिह धन धन कहने लागे। तप दृढ देख व्यास श्रनुरागे॥
तेज तपस्या जटा जु चसके। जों जाज्वल्य श्रिश्नितिम द्मके॥

॥ दोहा ॥

पीत पुष्प माला पहर, लिलत गौरजा कन्त।
मनु संध्या फूली सरस, सधि शशि शोभावन्त॥
बेख उन्न तप व्यास प्रभु, शिव त्रित भये कृपाल।
सनमुख ठाडे होय के, बोले बचन रसाल॥

॥ चौपाई ॥

जैसा सुत मांगा सोई दीना। सकल मनोरथ पूरन कीना॥

रहें भजन हरि में लवलीना। प्रेम परा भक्ती रंग भीना॥ रिसकाचारज सतगुरु स्वामी । महा प्रभू उर श्रन्तरयामी ॥ श्री कृष्ण लीला गुण सागर। वरनें श्री भागवत उजागर॥ ् वृज भक्तन की महिमा गावें। हरि सेवा मारग प्रगटावें॥ नौधा प्रेमा परा सुभक्ति। परानुरक्ति कहैं कर जुक्ति॥ नाम धाम लीला श्ररु रूप। चतुर उपासन कहै श्रनूप॥ वृज निकुंज लीला सुख सार । गावें दंपति नित्य विहार ॥ उज्ज्वल रस रसिकन दें दान । देवी जीव उधारें श्रान ॥ पतितन पावन श्रधम उधारन । जीव श्रनंत जक्त के तारन ॥ - खयम् कृष्ण पुरुषोत्तम रूप । प्रगटें भूतल परम श्रनूप ॥ वासुदेव व्यापक भगवाना । सोई श्रवतरे तुम्हारे श्राना ॥ श्रिय कुग्र वेदी में श्रान । प्रगटें प्यारे श्याम सुजान ॥ श्रक्षि कुमार यज्ञ श्रवतार । जिनको रूप श्रलौकिक सार ॥ जिनके रूपरु नाम अनंत । सोई आप प्रगटे भगवंत ॥ दृढ कर थापें भगवत धर्म। मूल उखारें सकल अधर्म॥ पुष्ट परत्व प्रचारन हार। वेदन महिमां सकें उचार॥ शान्त दास्य वात्सल्य सरूप। श्रीर सल्यरस परम श्रनूप॥ सव रस को राजा शृंगार। सो वरने कर कृपा श्रपार॥ ऐसो भगवत धर्म बखानें। जाको सर्व वैष्णव मानें॥ धर्म श्रनन्य दढ़ावें सार । हिर सन्मुख जिय होंहि श्रपार ॥

॥ दोहा ॥

महादेव के सुन वचन, व्यास लहां। श्रानंद । रोंम रोंम फुछित अये, प्रगट्या परमानंद ॥ तप पूरन लख श्रापनों, सफल मनोरथ जान । उठ श्रानंदयुत हर्ष हिय, श्राश्रम पहुँचे श्रान ॥ मगन महा श्रानंद में, करें हरी गुन गान । परो प्रेम में पुलक तन, धरें मानसी ध्यान ॥

॥ चौपाई ॥

रहें व्यास निज श्राश्रम जाई। सोमवती मावस तिथि श्राई॥ श्रम वेशाख मास पहिचानों। सोमवार सुन्दर दिन जानों॥ डेढ़ पहर दिन जब ही श्राया। होस करन सन उत्सव छाया॥ श्रिष्ठ होत्र वेदी रच तासें। समिध सुहावन राखी जामें॥ श्रीर सोंज घृत श्रादि घनेरी। वेदव्यास ले वेठ नेरी॥

॥ दोहा ॥

श्रानी मथने ही लगे, श्रग्नी प्रगटन काज। नाम घृताची श्रप्सरा, लखी गगन महाराज॥ रूप श्रन्पम्य जासुको, लखो व्यास निज नेन। मोहित है व्याकुल भये, तन मन उपज्यो मेन॥

॥ चौपाई ॥

लखा श्रप्तरा मन में जब हीं। शुकी रूप धारा उन तब हीं॥

नेंन कटाच्न काम के बानां। लगे व्यास मन विकल महानां॥ वीर्य निकस वेदी के मांहीं। गिरा अग्नि प्रगटी वहि ठांही॥

॥ दोहा ॥

वेदी ही के मध्य में, प्रगटे श्रिश्च स्वरूप।
मूर्ति श्री शुकदेव मुनि, नख सिख व्यासहिरूप॥
किशोर श्रवस्था है गये, तुरतिह ले श्रवतार।
श्रिति सुन्दर तन सांवरे, मानहु कृष्ण मुरार॥

॥ चौपाई ॥

दिव्य देह अनुपम अविकारी। ज्योति रूप सुंदर सुखकारी॥
चंद बदन शोभा सु अपारी। शिर केशाविल वृंघर वारी॥
नीलोत्पल दल श्याम सरूपा। नव योवन अंग अंग अनूपा॥
कुटिल अलक मुख कमल विराजे। मनु अलि अविल मनोहर राजे
भाल विशाल तिलक गोरोचन। शृकुटी कुटिल कमल दल लोचन
अवण सुहावन उन्नत नासा। विवाधर सुख मंद सुहासा॥
कंबु कंठ श्रीवा अति प्यारी। वन्नस्थल की शोभा भारी॥
उदर अनूपम त्रिवली राजें। नाभि गहिर किट केहिर लाजें॥
सुज अजानु अनूप सुढारी। पृथु नितंब जंघा छवि भारी॥
पिंडली गोल गुल्फ अति सोहन। रती मदन के मनको मोहन॥
चरण चारु पंकज सम राजें। सूर्य समान तेज तनु भाजें॥
पद्मासन सिंहासन राजें। सूर्य समान तेज तनु भाजें॥

॥ दोहा ॥

सुमेरु तरहटी शुभ जहां, तहां प्रगटे मुनिराज। वेद्व्यास श्राश्रम वहां, परम रम्य सुख साज॥

॥ चौपाई ॥

शुभ सुंदर पद्मी तिहि वारी। महा मनोहर मंगलकारी॥ शुक मुनिदरशन हित चल श्राये। चहूं श्रोर श्राकर मँडराये॥ तोता हरियल हँसहि जानों। सारस श्ररु पिक को पहिचानों॥ नीलकंठ श्ररु मोर महाई। नांचन लगे पंख फैलाई॥ पारावत बहु रंग सुहाई। बोलनं में मन लेंहि चुराई॥ बुलबुल बिबिधि तरुन में बोलें। अ। पस में मिल करत कलोलें॥ हरित विपिन बेली अधिकाई। लता पता तरु अति छविछाई॥ ऋतु बसंत सम शोभा पाई। फूल रही नाना फुलवाई॥ गुंजत भ्रमर मत्त मगनाई। त्रिविधि समीर वहत सुखदाई॥ भरत जहां जल के बहु भरना। मिष्ट महा मुनिजन मनहरना॥ जान सुअवसर जन्म ऋषिगन। भये दरश कर परम मुदित मन॥ जगमग चौमुख दीप जुराई। कनक थाल धर मन मगनाई॥ श्रंग श्रंग शुक मुनि पर वारी। जय जय जय बोले बलिहारी॥ पुनि न्योद्घावर मिण्गन कीने। करि दंडवत परम सुखलीने॥ स्तुति हिल मिल हर्ष उचारी। पुष्पांजलि अपीं सु अपारी।।

॥ दोहा ॥

श्री गंगा शुक सुनि जनम, सुन कर हिय हुलसाय। वेद्व्यास भगवान को, दुई बधाई श्राय॥ रूप चतुर्भुज सोहनो, गौर वरन मनहार। नख सिख सज शृंगार वर, छिब को अंत न पार ॥ ंगंगाजल भारी लई, मुनि श्रसनान कराय। सेवा कर करकमल सों, चंदन तिलक लगाय॥ कमल पुष्पमाला गले, मुदित दई पहिराय। विनय करी बहु प्रीति कर, हिय में श्रति हर्षीय ॥ लिख लोचन छबि सुदितहै, यतिश्य भई प्रसन्न। नयनन छायो प्रेम जल, कहि जय जय धन धन्न ॥ पवन देवता स्वर्ग सें, कल्पवृत्त के फूल। वरसाये वहु रङ्ग के, श्रति सुगंधि श्रनुकूल ॥ दंड कमंडल श्रति सुघर, मृगञ्जाला मनहार। नभ से श्राईं मुनि निकट, मन रंजन तिहि बार॥

॥ चौपाई ॥

राजा इंद्र स्वर्ग तें श्राये। दरशन कर मन मोद बढ़ाये॥ श्रस्तुति कर हिय में हरषाये। कर दंडवत परम सुख पाये॥ दिव्य वस्त्र श्रपने संग लाये। प्रेम पुलक तन भेट चढ़ाये॥ यूथ श्रप्तरा श्राय सुभागी। बहु विधि नाचन गावन लागी॥

वाद्य ताल सुर सकल सुहाये। लय श्ररु ताल मिलाय वजाये॥ गुन गावन गंधर्वहु श्राये । भेरि दुन्दुभी शंख वजाये ॥ श्री शङ्कर श्रक्ष गिरजा रानी। समय सुमंगलमई पिछानी॥ जन्मोत्सव कीनो त्रारंभा । रोपे नाना कदली थंभा ॥ श्राश्रम द्वारन वंदन माला।वांधी वहु विधि हरित विशाला॥ धुजा पताका श्रमित सजाये । सोतिन के शुभ चौक पुराये ॥ द्वारन सरस साथिये सोहन । सुंदर रचे सकल मन मोहन ॥ घृत दीपक वहु दिये जुराई। श्रष्ट गंध की धूप कराई॥ छिरके अश्रम केसर चंदन । अतर अनेकन भांति सुगंधन॥ मंडप जरी चंदोवा ताने। निरख नयन हरिजन हरपाने॥ फ़रश गर्लाचा दिये विछाई। बैठ ऋषि मुनि बृंद लुभाई॥ फ़्ल माल चहुँ दिशि लटकाई। महक महांन तहां प्रगटाई॥ मागद स्त भाट वंदी जन। करें प्रशंसा व्यास पुलक तन ॥ वंशावित कुल कीरित गावें। सुन मन वेदव्यास मगनावें॥ पाट पटंवर हीरा मोर्ता । मिन मानिक वहु जगमग जोर्ता॥ भूषण वसन विविधि रंग नाना। दिये सवन को कर सनमाना॥ मन इच्छा पूरन सव कीनी। हरष त्रशीस सवन मिल दीनी॥ वद्व्यास प्रभु तुमरो लाला। चिर्जावो संतन प्रतपाला॥ ऋषि सुनि भृसुर त्रादि जुर जन। लख उत्सव त्राति भये मुद्ति मन चंद्न तिलक ललाट लगाई। पुष्पमाल सव गल पहराई॥ अतर श्रंग सब दिये लगाई। बांटे मेवा पान मिठाई॥

वंशावली श्री शुकदेवजी महाराज की ॥ दोहा ॥

श्री मतगुरु वलदेव प्रभु, तिन पट् उर धर ध्यान। श्री शुक सुनि वंशावली, निज मुख करों वखान ॥ सुनो रिक्त हरिभक्त सव, प्रेमी जन गुनवंत। चरणदास श्राचार्य पथ, श्राश्रित संत महंत ॥ श्री मन्नारायण प्रभो, लच्मी पति भगवान। तिनकी नाभी तें भयो, कमल प्रगट पहिचान॥ तासु कमल तें जानिय, उपजे ब्रह्मा जान। करता सब संसार के, तिन सम और न आन ॥ श्री वशिष्ट तिनके तनय, जानत सव संसार। श्री रघुनंदन के गुरू, महिमा को नहिं पार ॥ शक्ति ऋषी तिनके सुवन, निपुन वेद व्युत्पन्न। तपोनिधी ज्ञाता बड़े, सद्युग गन सम्पन्न ॥ तिनके पुत्र पुनीत श्रति, ऋषी पराशर जान। धर्म सनातन प्रवर्त कर, रचिता विष्णु पुरान ॥ जिनके वेद्व्यास जू, हरि करुणा अवतार। करता भारत भागवत, वेद विभाग उदार॥ श्री शुकदेव महामुनी, स्वयं कृष्ण भगवान। आचारज है त्रवतरे, वेदव्यास घर आन॥ धर्म भागवत विस्तरन, प्रगटे हिर मुनि रूप।
परम हंस चूड़ामणी, श्रद्धुत श्रधिक श्रन्ए॥
करन परायन परीचित, गावं कृष्ण चरित्र।
प्रेम परा विस्तार प्रभु, करि हं जक्त पवित्र॥
सुने गुने गायन करे, शुक वंशाविल कोई।
भक्ति स्वतंत्रा को लहे, दंपति वल्लम होई॥
श्री मत भारत भागवत, तिनके मत श्रनुसार।
सरस माधुरी ने कही, वंशाविल उच्चार॥

॥ पद् ॥

जागे भाग हमारे हेली।

शुभवेसाख मास मावस तिथि प्रगटेंगी शुक अलि अलवेली। गावो उमँग वधाई हँसि हँसि हिल मिल के सब सखी सहेली। पावोगी सब प्रेम पदारथ पराभक्ति सुंदर मन मेली॥ दंपति आप कृपा कर पठई प्रगट करन कुंजन किल केली। सरस माधुरी श्री वन वीथिन छावेगी आनँद की बेली॥

॥ पद्॥

हमारे माई महा महोत्सव श्रायो। श्री बृंदाबन कुंज निकुंजन हिल मिल अलिन सोहिलो गायो॥ प्रगट होन दिन व्यास सुवन को निपट निकंट नियरायो। लता पता तरु डार पात में परमानंद प्रगट है छायो॥ जो सुख अगम जोग जप तप में कुपा साध्य प्रगट द्रसायो। परिकर निकर प्राप्त शुभ अवसर श्री श्यामां अहश्याम दिखायो है है सुलभ महल को मारग यथा भाव जाके मन भायो। सरस माधुरी रहसी डोलत तन मन नैन मोद सरसायो॥

॥ पद् ॥

रस को मेह सखी बरसेगो।

प्रगटेंगे श्री शुक मुनि स्वामी रस निकुंज हिय में सरसेगो।। रिसक समूह रहस रंग भीने तिनको आति आनंद दरसेगो। सरस माधुरी के मस्तक सों व्यास सुवन युग पद परसेगो॥

॥ पद् ॥

ञ्राज समाज महा मन भायो।

श्री शुकदेव जनम उत्सव को घर घर मंगल मोद बधायो॥ शुभ वैशाख मास मन मोहन कुंज निकुंज पुंज रस छायो। रिसकाचारज प्रगट होन को समय सुहावन श्रित नियरायो॥ फूले फिरें रिसक रंग भीने रंकन मनो महाधन पायो। सरस माधुरी रस बरसेगो रोम रोम श्रानंद उमगायो॥

॥ पद् ॥

श्राज समाज सुहावन माई। श्री शुकरिक मुकट माग्रि प्रगटन समय सुभग श्रात ही नियराई हिल मिल के सुर पत्नी अनिगन मंगल मोद वधाई गाई। फिरत उमाही व्यास भवन में बांटत हैं हँस पान मिठाई॥ केसर चंदन लेपन करिके फूलमाल सबहुन पहिराई। सरस माधुरी मगन भई मन संत सभा लखि।हिय हुलसाई॥

॥ काविस ॥

श्री मन्नारायण की नाभि तें कमल भयो कमल तें प्रगटेश्री ब्रह्मा महाराज हैं॥ ब्रह्मा के श्री विश्रष्ट पुत्र त्राति पुनीत भये तिनके भये शाकि ऋषी धर्म के जहाज हैं॥ शक्ती के सुवन श्री पराशर जानिये जू तिनके तनय वेद व्यास परायन पर काज हैं॥ वेद्व्यास जू के स्वयं कृष्ण शुकदेव मुनि प्रगटे सरस माधुरी सो रिसकन सिरताज हैं॥

॥ कवित्त ॥

धन्य वैसाख मास मावस तिथि सुख की राशि धन्य सोमवार वार खरनर मुनि जान्यो है ॥ प्रगट भये स्वयं कृष्ण मुनि को सरूप धार वेदव्यास के कुमार ऋषिन कह बखान्यो है ॥ वयस है किशोर चित्त चोर रासिक चूड़ामाणि मुनिन माँभ महामुनि संतन पिछान्यो है ॥ कहें सरस माधुरी सुग्रंग श्याम सुख को धाम शुकाचार्य सर्व पूज्य मेरो सन मान्यो है ॥

॥ कवित्त ॥

प्रगटे अयोनिज निह आये गर्भ माता के होम आग्ने कुंड द्वार दरश दिखायों है ॥ जन्मत जिन जीत लई माया बिन ही प्रयास स्वयं हुइच्छा मय रूप दरशायों है ॥ थिर चर सुर नर मुनीस मुदित भये दरशन कर परम तेज तरुण सम त्रिभुवन में छायों है ॥ कहैं सरस माधुरी शुकदेव प्रताप सेती सुख ही सुख छायो दुख जक्त को नसायों है।

॥ कवित्त ॥

प्रगट जो न होते शुकृदेव आय भूतल में कीन श्री कृष्ण जु के ग्रन गन गावतो ॥ प्रेम परा भक्ती महारानी की मिहमां को सर्वोत्तम भाव जक्त मांहि को जनावतो ॥ गोपिन के प्रेम की प्रसंशा सब विश्व मांहि ऐसो और कीन हो सो सबन को सुनावतो । कहें सरस माधुरी रहस्य केलि कुंज ललित बिना मुनि राज नहीं जीव कोऊ पावतो॥

॥ सबैया ॥

आये आचारज रूप को धार के श्री शुक संकट कोटि हरेंगे। तज्ञक सर्प को त्रास मिटाय के राजा परीचित मुक्ति करेंगे॥ श्री भागोत सुनाय महामुनि जक्त में भिक्त भंडार भरेंगे। सर्स कहे काले काल कराल में गोपद ज्यों भव सिंधु तरेंगे॥

॥ सबैया ॥

जन्म लियो शुकदेव महामानि श्री गंगा श्राभिशेष करायो। इन्द्र ले वस्त्र श्रमूल्य श्रलोकिक दंड कमंडल भेट चढ़ायो॥ नारद नाचत बीन बजाय के गंधर्व राग सलोनो सुनायो। निर्तत उरबसी श्रादि श्रनेकन सर्स सुहावनो रंग जमायो॥

॥ सवैया ॥

श्री शुकदेव दयाल से दूसरे देखे सुने नहिं और मुनी हैं। त्यागी विरागी तपस्वी अनेकन जोगी जपी बहु ज्ञानी गुनी हैं॥ माया ठगे सब की मित को सुनिराज बचे यश गावें दुनी हैं। याही ते सर्स भये भव में महिमा बहु भांति कवीन भनी हैं॥

॥ दोहा ॥

बन गवने शुकदेव मुनि पीछे वेद्व्यास । वृत्तन मिल बोले बचन कियो मोह को नास ॥

॥ सवैया ॥

ले सन्यास चले शुकदेव जु देख के व्यास विरह उपजायो।
हे मम पुत्र पुकार पुकार के हेत जनाय लडाय बुलायो॥
कानन वृत्त प्रवेश कियो अरु उत्तर दे संदेह मिटायो।
ऐसे मुनी को प्रणाम करूँ कहे सर्स तिहूं पुर में यश छायो॥

॥ दोहा ॥

. घोर अँधेरे में परे, जग के जीव पिछान। अध्यातम दीपक मुनी, कियो प्रकाश पुरान॥

॥ सवैया ॥

घोर अंधेरे परे जिय जानिके आतम ज्ञान को दीप जरायो। सार श्रुतीन को तत्व प्रकाश पुरान अनूप भागोत सुनायो॥ हैं गुरुदेव समस्त सुनीन के तीनहुं लोकन में यश छायो। सरस कहै कर जोर श्री शुकदेव के मैं श्राणागित आयो॥

॥ दोहा ॥

श्री शुक पद सु प्रणाम मम,स्वयम् कृष्ण अवतार । सकलाचारज पूज्य प्रभु, मंत्र प्रचारन हार ॥

॥ सबैया ॥

श्री शुक कृष्ण स्वयम् अवतार अनूपम रूप अलोकिक धारो। सर्वाचार्य सु पूज्य महा प्रभु मंत्र सुराज प्रचारन हारो॥ ब्रह्म सरूप मुनीन में भूप सनातन भगवत धर्म उचारो। सरस कहे कर जोर निहोर के व्यास लला को प्रणाम हमारो॥

॥ पद सोरठ॥

्ठयास जू मानों वचन हमारो । प्रगट भयो तुमरे पुरुषोत्तम पतित उधारन हारो ॥ कित मल हरन करन जग पावन श्राचारज वर्षधारो।

भगवत धर्म प्रचारन कारन संत रूप श्रवतारो॥

श्याम वरन शोभा को सागर शुक मुनि जक्त उजारो।

पूरन ब्रह्म विश्व में व्यापक सो भयो पुत्र तुम्हारो॥

रिसक शिरोमणि मदन मनोहर भक्तन को रखवारो।

सरस माधुरी सूरत लालन जीवन प्रान श्राधारो॥

॥ पद राग भूमका ॥

बजत बधाईयां हो श्री वेद्व्यास के द्रवार।
हुत्रा सुत सोहना हो सलोना कृष्ण के त्रनुहार॥
त्राई ऋषि नारियां हो गावत गीत मंगलचार।
जुरे सब लोग मगन हो गुनी सब गावें दे दे तार॥

॥ भूमका ॥

गुनी दे ताली नांचें, रंग श्रानँद के रांचें। कहैं शुक लाला जीवो, दूध श्रमृत ज्यों पीवो॥ खुशी हो घूमर घूमें, लला की टूंडी चूमें। मगन हो मंगल गावें, दान बहु विधि सों पावें॥

॥ श्रंतरा ॥

पावें पट दान मोती वे जावें मन फूलते घर मांहि।

पहिर भूषण वसन सुंदर भमकते अंग अंग सुहाहि ॥ परस्पर प्रेम सों सब ही करें किल केलि मृद मुसिकांहि। धन धन त्राज का दिन वे दानी कोऊ तुम सम नांहि॥

॥ भूमका॥

व्यास ने दान मँगाया, सुकंचन भड़ बरसाया। सुभागी माता तूरी, करी मन इच्छा पूरी॥ पराशर कुल उजियाला, प्रकट भये शुक्र मुनि लाला। सांवरो सुंदर वाला, निरख छवि भये निहाला॥

॥ श्रंतरा ॥

श्राई भागीरथी गंगा, नहवाये शुक मुनी हरषाय। पवन ने कल्प वृत्तन के, दिये हैं फूल बहु बरषाय॥ स्वर्ग से श्रप्सरा श्राई, लगी नृतन श्रधिक हुलसाय। सकल गंधर्व जुर श्राये, लगे गावन सुजस सुख पाय॥

॥ भूमका॥

वीन ले नारद श्राये, नृत्य कर मन मगनाये। द्वंदभी देव बजाये, संख ध्वनि वाद्य सुहाये॥ इन्द्र ले वस्तर श्राये, मुनी के भेट चढ़ाये। अमरगन ऋषी सुधाये, स्तुती कर मगनाये॥

॥ अंतरा ॥

मगन हो त्रारती कीनीं, जगाई जोति जगमगथार।

हरष मन मोद कर सबने उतारी सुभग श्रंगन वार ॥ कहं जय जय सकल सुरमुनि समर्पत भेट किह विलहार। दई परदज्ञाणा हिल भिल करी दंडवत वारंवार॥

॥ भूमका ॥

करे शुक मुनि के दुरशन, लगे चरनन को परसन। लगी पुष्पांजलि वरषन, भई सबके हिय हरषन॥ निरख छवि नांहि श्रघादें, विनय बहु भांति सुनावें। रिसक कर प्रेम रिभावें, सुफल मन वांछित पावें॥

॥ श्रंतरा ॥

कियो उत्सव जनम शुकको,हरष सन पारवर्ता त्रिपुरार। सगन त्रानँद सन में हो, वैधाई सहल वंदनवार ॥ सनोहर रूप कर दरशन, भये सन सुदित नयन निहार। सरस माधुरी सूरति लई, शुक देव उर में धार ॥

॥ पढ ॥

सखी उदमादियां हो, वधाई देत मन खुश हाल। हुत्रा सुत सोहना हो, सलोना व्यास के शुकलाल॥ विपिन में शादियां वे,करो ऋषि ज़ादिया कुल रीत। वारों नोन राई वे, गावो सब मिलके मँगल गीत॥

॥ भूसका ॥

सखी सब मंगल गावें, गुनी जन चोहल मचावें।

बजावें ढोलक भांभे, मजो सों पहिंदू मांभे ॥ सुनावें तान श्रद्धती, सुभागी माते स्पूर्तीलें लला केदरश करावो, हमारे नैन सिरावो॥

॥ अंतरा ॥

लला की बलाईयां वे, परो खारे समंदर जाय। करो दिन रैन खुशियां वे, खिलावो कुंवर कंठ लगाय॥ रहो दिन रैन राजी वे, लड़ावो नित प्रति शुक लाल। यही बिनती हमारी वे, खसो नहाते नहीं कोई बाल॥

॥ भूमका॥

लला के दरश करावो, खुशी का खत दिलवावो। खुलाये खास खजाने, लुटाये माल श्रमाने॥ दान ले भये सुचीते, गुनी जन हुये नचीते। हरष हँस हँस के नांचे, प्रेम के रंग में रांचे॥

॥ श्रंतरा ॥

बजे घर व्यास नौबत बे, घुरें नम मेघ सरस निशान। छये सुर गगन मांही हो, करें कल लाल गुन गन गान॥ तुम्हारे भाग पूरन हो, नहीं जग में है तुम सम श्रान। सुनावें सोहिले तुमको, सुनो श्री व्यासजी भगवान॥

॥ भूमका॥ अन्ति । १३,५-०० स्वयम् श्री कृष्ण पधारे, संत को कृष्ण सुधारे। . श्रीन ते प्रगदे प्यारे, यही हैं इंडू हमारे॥

रिसक श्राचारज जानों, ऋषा के सिंधु पिछानों। इन्हे ईश्वर कर मानों, विनय कर जोर बखानों॥

॥ अंतरा ॥

करो कर जोर विनती वे, घरो हृदय मं इनको ध्यान। तरो संसार सागर सें, सुनो श्रमृत वचन निजकान॥ मिलो श्रवसर भलो सजनी,नहीं है धन्य तुस सम श्रान। जलको निज नेंन भांकी को, छकाओ श्रपने तन मन प्रान॥

॥ भूमका ॥

दरस कर ध्यान लगावो, निरिष्व छवि बलि बलि जावो। इन्हों के ग्रन गन गावो, विनय कर इन्हें रिक्षावो॥ परम पद निश्चय पावो, जगत में फिर निहं श्रावो। हरष श्रानंद मनावो, सहल की सेवा पावो॥

॥ अंतरा ॥

पावो सेवा महल की हो, जहां नित होत रास विलास। रहो नित संग दंपति के, उमँग श्रानँद हिये हुलास॥ करो नित केलि कुँजन में, मधुर श्री राधिका के पास। सरस छवि माधुरी निरखो, लहो वृन्दाविपिन नितवास॥

॥ बधाई हेली ॥

बजत बधायो री हेली वेद्व्यास के। श्रीत मन भायो री हेली श्रानंद रास के॥

रास श्रानंद की मिली वैसाख मांस सुहावनो । ऋतु बसंत पुनीत श्रिति ही कृष्ण पद्म मन भावनो ॥ तिथि श्रमावस्या श्रनूप सोम दिन सुंद्र महा। डेढ़ पहर चढ़े दिवस प्रगटे प्रभो श्रति सुख लहा ॥ जुर मिल श्रावोरी हेली हिय हुलसाईये। मंगल गावोरी हेली मन मगनाईये॥ मगनाइये करके महोत्सव मोतिन चौक पुराईये। कलश कंचन चारु कद्ली थंभ सरस सजाइये॥ रचो सुंदर साथिये शुभ बंदन माल बँधाईये। जन्म-दिन श्री शुकाचारज प्रेम अंग पुलकाईये॥ नव निकुंज उज्ज्वल रस मूरति वपु धरचो। सुंदर श्यामल गात निहारत मन हरचो॥ मन हरचो श्री सुख सखी रंग महल ते श्राई श्रली। प्रेम कर दुंपति पठाई होंहिगी श्रब रंग रली॥ रिसक जन मन में मगन भये श्रास बेली शुभ फली। सरस रस त्रानंद उल्ह्यो हिय कमल कलिका खिली।। जोरी गोरी श्यामल लाड़ लड़ाय है। लीला गुन गन जुगल सुजस सुचि गाय हैं॥ गाय हैं भागोत रस पुनि पंच जग प्रगटाय हैं। शांत दास्य वात्सल्य सख्य शृंगार भावक पाय हैं॥

परा भक्ति प्रभाव पूरन सिंधु को उमगाय हैं।
सर्व पर्ह माधुर्य रस सरिता श्रन्प वहाय हैं॥
नृत करोरी हेली हिल मिल श्राय के।
भाव वतावोरी हेली साज वजाय के॥
बजाय के बीना मृद्गन ताल सुरन मिलायके।
गाय जनमोत्सव बधाई मृदित रीभ रिभायके॥
सरस माधुरी छवि छटा लिख लेहु नयन छकायके।
चूकिये निहं दाव सजनी शुभ सुश्रवसर पायके॥

॥ हेली ॥

मंगल गावोरी हेली हिल मिल श्राय के।

देहु बधायो री हेली श्रवन सुनाय के॥

सुनाय देवहु वेद्व्यासिह। यह वधाई शुभ मली।

प्रगट भये शुक मुनि महा प्रभु खास दंपित की श्रली।

सुख सखी प्रिय नाम जिनको धाम में हित कर चली।

कुंज केलि दृढाय हैं दुलराय हैं लालन लली॥

सुख सरसावोरी हेली चित में चौगुनो।

भाग्य सराहोरी हेली सब मिल श्रापनो॥

श्रापनो बड़ भाग्य मानो शरण शुक मुनि की रहो।

गह श्रनन्य श्रवंड दृढ ब्रत जयित जय मुख सों कहो॥

मंजु महल निकुंज में सिवकाइ दंपित की चहो।

राखिये विश्वास उर दृढ फल सुमन वांछित लहो॥।

महिमा गात्रोरी हेली शुक मुनिं राज की। बलि बलि जावोरी हेली श्रलि सिरताज की॥ श्रली जन सिरताज श्राज सुसमय धन्य सुहावनी। कुंज सुख की बेलि फूली फली मन की भावनी॥ श्याम सुंद्र रूप रस निधि मृति मन ललचावनी। रति मद्न मद् मर्दनी नित नैन हृद्य बसावनी॥ सोहिलो गावोरी हेली उमँग बढाय के। चौक पुरावोरी हेली सुकर बनाय के।। सुकर मोतिन चौक पूरो साथिये द्वारन धरो। करो मिलि द्धि केलि कादो खेल रसके विस्तरो॥ रिसक जन छतियन लिपट श्रानँद के रस में ढरो। परम प्रेमानंद पूरन श्रघट निज हिय घट भरो॥ हिय हुलसावो री हेली दरशन पाय के। तन पुलकावो री हेली सुख सरसाय के ॥ सरसाय के सुख सकल विधि सों रीभ देह बधाइयां। गोद मेवा सों भरो वांटो री पान मिठाइयां॥ सरस माधुरी फूल वृष्टि करो हिय हरषाइयां। श्रतर अंग लगाय श्रलियन करो मन की भाइयां॥

॥ बधाई ॥

प्रगटे श्री शुकदेव लला, पूरन पुरुषोत्तम सुकला। रूप श्राचारज धार लला, हरि हैं भूतल, भार लला॥

नव निकुंज से त्राये लला, श्यामा श्यास पठाये लला। महा प्रभु मन हरन लला, सुंद्र र्यामल वरन लला॥ वंश पराशर भान लला, वेद व्यास के प्रान लला। मातु सुभागी सुवन लला, मंगल चौदह भुवन लला॥ जन्म श्रयोनिज लियो लला, सब जग को सुख दियो लला। वेदी श्रगनी मध्य लला, उपजे समरथ सद्य लला॥ श्री सुख सहचरी खास लला,रंग महल में वास लला। जुगल विहारी पठाई लला, नव निकुंज रस लाई लला॥ गिरि सुमेर अति सुथल लला, जल भरना भरें अमल लला। लता ललित तरु छाई लला, फूली फली सुहाई लला॥ त्रिविधि समीर सुहाई लला, ऋतु वसंत सरसाई लला। गुंजत मात मृग लला, सुन मन होंहि उसंग लला ॥ बोले विविधि विहंग लला, नाना विधि वहु रंग लला। सारस हंस चकार लला, नाचत वन में मोर लला॥ षोडश वर्ष किशोर लला, श्याम वरन चित चोर लला। श्री मुखचंद प्रकाश बला, निरख होत दुख नाश बला॥ ् घुंघरारे शिर वार लला, अंग अंग सुकुमार लला। सुन्द्रभाल विशाल लला, श्री तिलक छवि जाल लला॥ नासा श्रवन सुढार लला, श्रति श्रद्धुत मनुहार लला। 🗀 प्यारं कित कपोल लला,द्रपन स दोउ गोल लला॥

अधर बिंव अनमोल लला, मंद हँसन मृदु बोल लला। चिबुक चारु मन बसन लला, हीर पंक्ति से दशन लला॥ कंबु कंठ सुख सार लला, श्रीवा छवि सु अपार लला। वन्रस्थल सु उतंग लला, किट सूच्रम सुठि जंघलला॥ चरण चारु सम कंज लला, लाल वरण मृदु मंजु लला। नख शिख सोहन छवी लला, रासिकन के मन फवी लला॥ सत चित आनंद रूप लला, रसिकाचारज भूप लला। तन दुति परम प्रकाश लला, निरख मदन मद नाश लला॥ गंगा दरश दिखाये लला, गंगोदक अन्ह्वाये लला। इन्द्र भूप चिल आये लला,वस्त्र सुद्विय चढ़ाये लला॥ श्री नारद्जी चालि आये लला, प्रमुदित नाचे गाये लला। स्वर्ग अप्सरा आई लला, नृत्तत भाव बताई लला।। ग्रिन गंधर्व अपार लला, कीनो सुयश उचार लला। गौरी और त्रिपुरारी लला, उत्सव कियो अपार लला॥ रचे साथिये द्वार लला, बाँधी बँदनवार लला। धुज पताक रंगदार लला, सजे महल आगार लला॥ सुर समूह चिल आये लला, फूल फूल बरवाये लला। ऋषि माने जुरे अपार लला, जय जय कहत पुकार लला ॥ जग मग वाती बार लला, धर कंचन के थार लला। श्री अगन पर वार ललां, आराति रहे उतार लला ॥ अगर और अष्ट गंध लला, उठत धूप सकरंद लला। पीत पुष्प की माल लला, दई प्रभु गल डाल लला॥

अस्तुति करें अनंत लला, हिल भिल संत महंत लला। अष्ट अंग परनाम लला, करें चरण अभिराम लला॥ श्री भागोत मुख गावें लला, परी जित नृपहि सुनावें लला। तज्ञक त्रास मिटावें लला, परम सुधाम पठावें लला॥

श्री शुक ध्यान लगावें लला, भव वंधन छुट जावें लला। अमरलोक पद पावें लला, भूतल वहुर न आवें लला॥

श्री शुक यश मुख गावें लला,पराभक्ति पद पावें लला। श्री शुक शरगों श्रावें लला,तिन्हें दंपति अपनावें लला।

श्री शुक रटन लगावें लजा, युग वर दरश दिखावें लला। परिकर मांहि मिलावें लला, सहचरी रूप पावें लला॥

दिन प्रति युगल लड़ानें लला, सेवा कर हुलसानें लला। छिन युग मांहि छकानें लला, पलपल में पुलकानें लला॥

नित नव रास ।विलास लला, देखें वहे हुलास लला। सरस माधुरी दासि लला, रहे त्रिया पिय पास लला॥

॥ भाँड बधाई ॥

भला वे त्राज बाजे छे रंग वधाईयाँ सुन साखि वे शुभिद् न आइयाँ भाग भले श्री वेद्व्यास के प्रगटे सुत सुख दाइयाँ ॥ ग्रानि गंधर्व गाय ग्रन बहु विधि लेले तान सवाइयाँ ॥ श्री नारद ले वीन वजाबत ले सुरताल भिलाइयाँ ॥ नाचत नारि अप्सरा अनागिन नाना गित उपजाइयाँ ॥ श्री गंगा आय चावलों लालन हरष नहवाइयाँ।।
इन्द्र आय लिरनाय चरण में वस्त्र सुभेट चढाइयाँ॥
वैठ विमान गगन सुर छाये पुष्प रहे वरसाइयाँ॥
मागध सूत भाट बंदी जन वंशावली सुनाइयाँ॥
जाचक सकल अजाचक हुये लेले दान अवाइयाँ॥
स्तुति करत ऋषीश्वर सबही चरन कमल चित लाइयाँ॥
सरस माधुरी महा महोत्सव मन वांछित फल पाइयाँ॥

॥ भाँड बधाई ॥

शादियाँ भली वे खुशविकयाँ भली वे । आवो गुनी जन गावो मेरे रंग की रली वे ॥

शादियां सुरंगी सुनो भाँडदेव आये अजी वाह वा है।
नकल नोंक भोंक के खजाने भरलाये आजी वाह वा है।
गावते बजावते रिभावते सुहाये आजी वाह वा है।
मांगते महाराज व्यास कुंवर के बधाये आजी वाह वा है।
बोलते आसीस शुकलाल चिरजीवो आजी वाह वा है।
रहो खुशहाल सब काल व्यासलाल आजी वाह वा है।
रहो खुशहाल सब काल व्यासलाल आजी वाह वा है।
येख मुख चंद हुआ मन में आनंद अजी वाह वा है।
गये दुख दंद लाखि आनंद के कंद आजी वाह वा है।
हदी जदी दही दूध रंगे आवि राज अजी वाह वा है।

वैठे हैं भट चह संतन के ठह अजी वाह वा है। वेद धुनि गान वजें नभ में निशान अजी वाह वा है॥ वर्षते सुर फूल यह घड़ी सुख मूल अजी वाह वा है। फूले भक्त आज गये पाप पुंज भाज अजी वाह वा है॥ धर्म को प्रकाश वढे पुन्य पुंज रास अजी वाह वा है। प्रेमा भक्ति को प्रचार करे जीव उद्घार अजी वाह वा है।। खाने आवाद होवे दौलत ईजाद अजी वाह वा है। हुआ दिल शाद पूरी सन की सुराद अजी वाह वा है॥ संत अवतार धार आये कृष्ण आप अजी वाह वा है। इनको जपै जाप मिटे संखति ताप अजी वाह वा है॥ गावें भागवत पुरान करें जीव प्रेम पान अजी वाह वा है। सरस माधुरी विलास नित कुंज में निवास अजी वाह वा है। मिले बृंदावन वास प्रिया प्रीतम के पास अजी वाह वा है॥

॥ पद राग वहार ॥

मुनि राज आज प्रगटाये री।

श्री शुकदेव श्याम सुन्दर वर श्रमरलोक तें श्राये री॥ जग जीवन उद्धारन कारन दंपति श्राप पठाये री। वेदव्यास भगवान जगत ग्रह तिनके कुँवर कहाये री॥ केसर चंदन भवन लिपाये मोतिन चौक पुराये री। बांधी बंदनवार द्वार पर स्वास्तिक शुभग रचाये री।।
जन्म सुनत सबही ऋषि मुनिजन हिल मिल हित सरसाये री।
करन लगे वेद ध्वनि बहु बिधि हिय में हर्ष बढाये री।।
ब्रह्मानंद मगन नर नारी थिरचर चित हुलसाये री।
परमानंद प्रेम पद दाता तिनके दरशन पाये री।।
ग्रुनि गंधर्व अप्सरा अनिगन सुर पुर तज कर धाये री।
साज बाज ले संग रंग सों नाच गाय मगनाये री।।
जुगल निकुंज रहस रस दाता तिनको आन रिकाये री।
बैठ विमान अमर गगा अनिगन फूल फूल बरसाये री।।
जय जय धुनि दसहों दिशि छाई छिव लिख हगन छकाये री।
सरस माधुरी रस निकुंज को रिसकन के हित लाये री॥।

॥ बधाई राग परभाती, भैरवी व सोरठ ॥

तर्ज (राधे प्यारी मान दुलारी सिखयां सारी आती हैं।)

शुभ वैशाख मास मावस तिथि श्री शुक मुनि प्रगटाये हैं।
साचात श्री कृष्ण कृपा कर वेद्व्यास ग्रह आये हैं॥

भये अयोनिज आग्ने कुंड तें सुन्दर श्याम सुहाये हैं।

वयस किशोर तेज सम सूर्ज आमित अनंग लजाये हैं॥

गिरि सुमेर की सुभग तरैटी नाना वृत्त सुहाये हैं। लता पता बेली वह फैली हरित सघन तह छाये हैं॥ ऋतु बसंत बन फूलन फूलो लोचन लिख ललचाये हैं। त्रिविधि समीर बहत सुखदाई करना जल कर लाये हैं॥ कोकिल कीर कपोत कलापी कोमल शब्द सुनाये हैं। सारस इंस चकोर चहुं दिश आय आय दुरशाये हैं॥ निर्मल नीर सरोवर शोभिन तिन में कमज खिलाये हैं। गुंजत फिरत भृंग सद्माते थिर चर मन मगनाये हैं॥ श्री गंगा गंगाजल कारी लेकर मुनी नहवाये हैं। सुर पति दिव्य वस्त्र ले आये।हित कर भेट चढ़ ये हैं॥ नृत्य करत नारद मुनि आये वीगा सरस वजाये हैं। नाचन लगी नारि अप्सरा गंधर्व संगल गाये हैं॥ ऋषि मुनि जोगी और तपस्वी दरशन कर हुलसाये हैं। करी आरती आति आनंद सों अस्तुति कर हरष ये हैं॥ मांम भालरी भेरि शंख ध्विन करके हिये सिहाये हैं। समय सुअवसर जान देव गन गगन पुष्प वर्षाये हैं॥ बैिंड विमान रहे लिख उत्सव सुरपुर सुरत मुलाये हैं। करत प्रणाम प्रेम सूँ सब मिल सुख के सिंधु समाये हैं॥ गिरि के शिखर महल निज माहीं गिरजा शिव पुलकाये हैं। करी बधाई धूम धाम सुं मंगल साज सजाये हैं॥

बंदनवार बँधाई द्वारन भोतिन चौक पुराये हैं। श्रतर श्ररगजा केसर चंदन चहुँ दिश को छिरकाये हैं॥ जय जय ध्वनि दसहों दिश छाई भये सकल मन भाये हैं। सरस माधुरी दरश परस कर मन वांछित फल पाये हैं॥

॥ पद् राग भंभोटी ॥

प्रगट भये त्राज महा मुनि राज।

परम हंस चूड़ामिश स्वामी रिसकन के सिरताज ॥

जुगल माधुरी रस मतवारे मंडन संत समाज।

भक्तन के सरवस जीवन धन पूरन कीने काज ॥

परम द्याल द्या के सागर भगवत धर्म जहाज।

भव सागर से पार करन को त्राये श्री महाराज ॥

नव किशोर चित चोर छ्वीले रस मूरित सुख साज।

सरस माधुरी कहत जोर कर सब विधि तुमको लाज॥

॥पद्राग सारंग, भैरवी, कालंगड़ा, कहरवा व काफी॥ प्रगट्यो री शुक मुनि वर प्यारो।

श्याम सुँदर सोहन मन मोहनश्रीमत वेद्व्यास को वारो ॥ वयस किशोर कमल दल लोचन दुख मोचन दीनन रखवारो। ब्रह्म रूप सत्चित श्रानँद घन नृपति परीचित तारन हारो ॥ निगम कल्पतर को फल श्रद्धत श्री भागोत परम रस भारों। ताको जस विस्तारन कारन मिह मंडल में श्रा श्रवतारो ॥ निज मुख कथन करन प्रेमामृत देवी जनन करन निस्तारो। करुणा सागर रिसक उजागर गावत जस जाको जग सारो ॥ श्राचारज है कारज सारे सुफल फलो सखी भाग हमारो । सरस माधुरी जोर दोऊकर नैनन निरिख ध्यान हिये धारो॥

॥ बधाई राग देव गंधार ॥

श्री शुकदेव व्यास के नंदन आचारज प्रगटाये हैं। जुगुल विहारी नव निकुंज सें भूतल तिन्हें पठाये हैं॥

बृन्दावन निज रंग महल में सिख वपु सुन्दर पाये हैं।

श्रष्ट नाम श्रोर श्रष्ट सेव और श्रष्ट शृंगार धराये हैं ॥ कुंज मंगला नाम सुख सखी श्ररुण वस्त्र 'तन छाये हैं ।

संवा गान सुवश दोउन को रस वस युगल रिकाये हैं॥ कुंज शृंगार मध्य सुखदा जू पीत वस्त्र पहिराये हैं।

बीन वजावन संवा करके श्री दंपति दुलराये हैं॥ श्रवहादिन सिख फूल कुंज में चंदन वसन वनाये हैं।

व्यजन करन सेवा सुखल्टत इकटक नयन लगाये हैं॥ कुंज प्रमोद नृत्य की सेवा हाव भाव दरसाये हैं।

वस्त्रं मलागीरी तन धारें संव सिख्यंन मन भाये हैं॥

कुंज हिंडोल नाम कलबैना वस्तर हरे सुहाये हैं। सेवा गान मलार राग धुनि लै सुरताल मिलाये हैं॥ श्रानंद नाम कुंज श्रानंदा नीलाम्बर भमकाये हैं। गीत विवाह विनोद गाय के प्रीतम प्रिया लडाये हैं॥ सेवा कुंज चंपइ बागा तन में श्रति छवि पाये हैं। रस पुंजा है नाम रास में लिलत मृदंग बजाये हैं॥ प्रेम प्रकाश निकुंज मंजु में वसन गुलाब सजाये हैं। प्रेम प्रभा शुभ नाम मदन उद्दीपन कस सरसाये हैं॥ सयन कुंज में वसन विचित्रित प्रमुदा नाम कहाये हैं। रचा कुंज श्रधिकार सेव जित करके मन मगनाये हैं॥ गुप्त प्रगट लीला श्रिधकारिनि प्रेम रंग वरसाये हैं। उज्ज्वल रस श्राराधक श्रनुदिन वरनत वेद थकाये हैं।। सोई मुनिराज महा प्रभु प्यारे दर्शन श्रान दिखाये हैं। सरसमाधुरी भाग्य मान धनि चरण कमल उरध्याये हैं॥

॥ राग परज तथा पंजाबी धुन में ॥
जन्मोत्सव मंगल दिन त्राली त्रति उत्तम मन भायो री।
श्री मत वेद्व्यास जगत गुरू सुत शुक मुनि प्रगटायो री॥
गगन वरन सन हरन करन सुख त्राचारज है त्रायो री।
स्वयं प्रकाश सिच्चदानंद घन तेज तहण सम छायो री॥

त्रिभुवन को तम दूर करन करुगा सागर उपजायो री। रिसक कंज दरशन कर फूले लिख लोचन सुख पायो री॥ मुनिजन जुरे महोत्सव कारन हिल भिल लाल लड़ायों री। ग्रुनि गंधर्व अप्सरा आदिक नृत्य गान सरसायो री॥ ऋषि पत्नी रचि धरे साथिये मोतिन चौक पुराया री। ध्वजा पताका तोरन रोपे सुंदर साज सजायो री॥ बंदनवार द्वार प्रति बांधी सुरुचि सोहिलो गायो री। कुल की रीति प्रीति युत कीनी सुख समुद्र उमगायो री॥ पशु पत्ती संरवर श्ररु तरुवर वन उपवन सुख छायो री। विधि शिव शेव शारदा सुरएति सुर समूह चिल श्रायो री॥ मागध सूत भाट बंदीजन सुंदर विरद सुनायो री। जय जय बोल विविधि भांतिन सों वचनामृत वरषायो री॥ कोऊ कहै यह श्री शुक त्राली मुनिवर रूप वनायो री। रस पद्धति के प्रगट करन हित दंपति इन्हें पठायो री॥ कोउ कहै यह निकुंज को सूवा मनुज होय दरशायो री। ग्रप्त निकुंज केलि रस रसिया रसिकन के हित लायो री॥ कोउ कहै कीर प्रिया बेसर को लागत परम सुहायो री। मोहन मानो मुनि बन श्रायो सो हमरे मन भायो री॥ कोउ कहै श्राप कृष्ण करुणा कर संत रूप दुरशायो री। करन परायन नृपति परीचित दश्शन श्रान दिखायो री॥

कोउ कहै महा पुरान भागवत प्रगट करन को धायो री। सुन गुन लहै निकुंज महल सुख कलि जियहेत जनायो री॥ कोउ कहै वेद्व्यास तप को फल सान्तात दुरशायो री। गुरु मुनियन को सहा सुनीश्वर निश्चे नयन लखायो री॥ कोउ कहै यह शृंगार सूर्ति हैं श्याम तेज तन पायो री। रिसकन जीवन प्रान परम धन छवि लिखि हिये बसायो री॥ कोउ कहें गोर श्याम रंग रेनी उज्ज्वल रस उमगायो री। सोइ प्रगटो भूतल भागन बस प्रेम चंद्र सलकायो री॥ कोउ कहै स्वसुख दृज बनितन को नरवर ठाठ बनायो री। कोउ कहै तत्सुख नव निकुंज को यों सुख नाम धरायो री॥ कोउ कहै कुंज सभा को मंडन सोइ या मनुज कहायो री। श्री हरि धर्म ध्वजा श्रस्थापन इन दृढ नेम धरायो री॥ कोउ कहै निगम कल्पतरु तोता दंपति रस फल खायो री। सोइ फल श्री भागवत तोर धर पटक संत त्रप्तायो री॥ कोउ कहै युगल लाल सैया सुख उमँग चल्यो श्रतुरायो री। नव निकुंज से निकस रूप धर भावक हृदय समायो री॥ कोउ कहै भाजन युग विहार रस श्रति उज्ज्वल सु भरायो री। भक्त श्रनन्य रसिक चसकन को हिय संपुट भर लायो री॥ रूप श्रमित धर रसिक जनन को युग युग मांहि छकायो री। किल मल हरन करन पावन जग त्रय विधि ताप नसायो री॥

भक्ति विराग जोग तप संयम हिर मारग मुख गायो री। किये कुतारथ जीत्र जगत गुरु श्रविचल धाम बसायो री॥ शरगागति जन रक्तक स्त्रामी वेद पार निहं पायो री। नित्य बिहारी नाम धाम लीला सरूप ली लायो री॥ सर्व पूज्य सर्वेश्वर सद्गुरु हृद्य ध्यान धर ध्यायो री। सरस माधुरी महा प्रभु मन निशि दिन भोर समायो री॥

॥ बधाई चाल रसिया ॥

बधाई बाज रही प्रगटे शुकदेव द्याल। स्वयं कृष्णा श्राचारज बनके,

श्ररी के श्राये रिसकन के प्रतिपाल ॥ श्यामवरन मनहरन महाप्रगु,

श्ररीके नखिश्व मूरत मदन गोपाल ॥ निरखोरी नैनन भर हेली,

श्रा के नाचो गाबो दे करताल ॥ श्रा मुनी मन में हरषाने,

श्ररी के छवि को लिख के हुए निहाल ॥ जो जन शुक मुनि के गुन गावें,

श्रारी के तिनपे दंपति हवें कृपाल ॥ ध्यान धरे शुक मुनि हिरद्य जो,

श्ररी के जिनको मिलें लाडिली लाल ॥ श्री बन्दावन कुंज बसें नित, श्ररी के निरखें रास विलास रसाल ॥ सरसमाधुरी संव सखी वपु, त्रारी के पहुँचे रङ्ग महल तत्काल॥

॥ पदः राग कहरवा ॥

मेने सुनी वधाई श्राज, शुक मुनि प्यारेकी ॥ स्वयं कृज्ण श्रवतार धार कर,

त्राये रिसकन काज व्यास दुलारे की॥ शोडप वर्ष श्याम सुंदर तन,

मुनियन के सिरताज जग उज्यारे की॥

श्री भागीत भान प्रगट कर,

सारे सबके काज श्रधम उधारे की॥

जग जीवन उद्धारन कारन,

श्राये हैं महाराज जन निस्तारे की॥

सरस माधुरीरूप नयन लखि,

जय जय कहो सब गाज गुरू हमारे की ॥

॥ पद् ॥

वधाई लागे श्राज प्यारी।

प्रगटे त्राय श्याम सुन्दर घन शुक्र मुनि को वपु धारी॥ शुभ वैसाख मास मावस तिथि त्रिति ही त्रानंद कारी। सोमवार को पहर चढ़े दिन दुरश दिये शुभकारी॥ कियो समाज सकल ऋषि मुनि मिल वेद ध्वनि उच्चारी।

श्राय श्रप्सरा निरतन लागी श्रानंद भयो श्रपारी॥
देव इंदभी हरष वजाये जय जय किह विलहारी।
संतन के मन मोंद भयो है गावत दे दे तारी॥
रिसकाचारज श्राय श्रवतरे प्रेम दान दातारी।
सरस माधुरी रस निकुंज को सांगत गोद पसारी॥
॥ पद राग पीलू वरवा॥

वधाई वेद व्यास घर वाजे।

श्राय श्रवतरे श्री पुरुषोत्तम रूप संत को साजे।।
स्वर्ग मांहि हरषाने सुर सब संगल साज समाजे।

वरसत सुमन समूह सबै मिल घन ज्यों नौत्रत गाजे।।
पोहमी भई प्रफुछित सगरी दुख दरिद्र दुर भाजे।
सुकृत उदय भये अक्तन के पूरे सब मन काजे।।
सुन्दरता लखि शुक सुनिवर की कोट काम रित लाजे।
सरस माधुरी के सरबस धन रिसकन के सिरताजे।।

॥ पद राग काफी व आसावरी॥

श्राज में श्रुकमुनि द्रशन पाया। मेरा मन श्रानँद माहि समाया जाका जस बहु भांति वेदने नेति नेति कह गाया। सो पुरुषोत्तम संत रूप धर वेद्व्यास घर श्राया॥ पांच तत्व त्रिगुण सं न्यारे परम तत्व की काया।
श्रिप्त होत्र उत्पति हूथे माता ने निहं जाया॥
जाकी ज्योति जगत में जगमग सब ही विश्व समाया।
सचर श्रचर के अंतरयामी जिन बस कीनी माया॥
काल कमी गुन श्राज्ञाकारी त्रिदेवा सिर नाया।
श्रुषि मुनि देव दरश को तरसें सो मेरे मन भाया॥

ऋषि मुनि देव दरश को तरसें सो मेरे मन भाया॥ सरस माधुरी कहत जोर कर सुन त्रिभुवन के राया। देओ महल दंपति पद सेवा करो श्रापनी दाया॥

॥ पद्राग खम्माच व दुमरी॥

(गोपालजी ने कृपा करी महाराजा) (नाथ कैसे गज को फंद हुड़ायो की चाल में) सुहाई सखी सुंदर श्राज चधाई।

वेद व्यास को सुकृत सफल भयो शुक्र मुनि प्रगटे श्राई ॥
कियो सकल ऋषि नार सोहिलो हिल मिल मंगल गाई ।
गगन विमान बैठ सुर सब ही फूलन को बरसाई ॥
स्वर्ग लोक तें रंभा श्राई नाचत भाव बताई ।
भये प्रफुछित भूतल बासी हरष न हृद्य समाई ॥
संत श्रनंत सकल जुर मिलके करत महोत्सव माई ।
रिसक करत जय जय ध्विन सुख सों हिये हेत सरसाई ॥
भिक्त करत जय जय ध्विन सुख सों हिये हेत सरसाई ॥
भिक्त करत जय जय ध्विन सुख सों हिये हेत सरसाई ॥
भिक्त करत जय जय ध्विन सुख सों हिये हेत सरसाई ॥
भिक्त करत जय जय ध्विन सुख सों हिये हेत सरसाई ॥
भिक्त करत जय जय ध्विन सुख सों हिये हेत सरसाई ॥

प्रेम परा पद को जो मारग सविहन देंह जनाई। सरस माधुरी कुंज महल में निज जन दें पहुँचाई॥

॥ वधाई राग सोरठ ॥

वेद व्यास को देवोरी वधाई। धन धन रानी मात सुआगी तुमरे कुँवर भयो सुखदाई।। श्याम वरन मन हरण रँगीलो रिसक शिरोमणि प्रगटे प्राई। शोभा सदन मदन मन मोहन मनो मनोहर कुँवर कन्हाई ॥ श्रानन इंदु श्रनूप प्रकाशत मृदु मुसिकन श्रमृत वरपाई। शीतल किये हृद्य संतन के वचनामृत प्या तृषा मिटाई॥ दशों दिशा में सुख सरसानो दुख निर्धूल भयो समुदाई। उद्य कियो भागोत दिवाकर सोवत दीनो जक्त जगाई ॥ चारों मुक्ति फिरं संग चेरी रिधि सिधि निरखन को ललचाई। सुर नर मुनि दरशन को तरसें ऐसी निधि भागन सों पाई॥ चार पदारथ वसें चरण में ध्यान किये श्रघ जांहि नसाई। होत पवित्र परस सब तीरथ पद एंकज महिमां श्रिधकाई।। भक्त कल्पतर करुणा सागर वेद विमल जिनको जस गाई। संत रूप श्रवतार धार प्रभू पतित जनन की करी सहाई॥ जय जय वानी वोल ग्रमर गन वैठ विमान रहे नभ छाई। सुखमा सद्न वद्न लिख शुक मुनि सरस माधुरी विल विल जाई

॥ वधाई राग सोरठ ॥

वेद व्यास के बारे श्री शुक सुनि मतवारे री।

कृष्ण कृपा कर संत रूप घर घरनि पधारे री॥

वनस किशोर श्याम तन सुंदर रूप उजारे री।

छके प्रेम रस में निश दिन नेना रतनारे री॥

महा पुरान भागवत श्रमृत सुख उचारे री।

तज्ञक त्रास मिटाय परीज्ञित छिन में तारे री॥

किलियुग में सतयुग विस्तारें जिय निस्तारे री।

मारग सुक्ति सुलभ कर स्वामी पतित उबारे री॥

चरण दास श्राचारज के ग्रह इष्ट हमारे री।

सरस माधुरी दरस परस कर तन मन वारे री॥

॥ बधाई राग सोरठ॥

श्री शुक मुनि महाराज प्रगट भये निरखन चालो री।

मन भायो फल पायो हेली दिन छै बालो री।।

धूप दीप नैवेद्य और ऋतु फल मँगवालो री।

करो श्रारतो वार फेर जल इत उत डालो री।।

चरन प्रछाल लेय चरगामृत भव भय टालो री।

फेर कहां यह श्रोसर श्राली सुरत सँभालो री।।

बीन मृंदग सरस सारंगी साज बजालो री।
श्रानंद रंग उमंग बधाई हिल मिल गालो री॥
श्रीति प्रतीत भाव भक्ति कर तिन्हें रिक्तालो री।
सरस माधुरी सांवरी मूरति हिये वसालो री॥

॥ बधाई राग ठुमरी ॥

देख सखी शुकदेव महामुनि भूतल में प्रगटाये री॥

सुन्दर श्याम काम मद् गंजन, नेन कमल दल श्रद्धत रंजन। बांकी भांकी भव भय भंजन, मोरे मन ऋति भाये री॥ सर पर बालं सजे बुँघरारे, श्राति कारे कटि लों सटकारे। गोल कपोल नासिका सोहन, लागत परम सुहाये री॥ मंद हँसन है सन की मोहन, वज्ञस्थल है श्रतिशय सोहन। बाहु विशाल चाल श्रलवेली, सद गज निरिख लजाये री॥ चरन सरोज सलोने पावन, पतित जनों के पाप नसावन। ध्यान करत बहु रोग मिटावन, हिय के मांहि वसाये री॥ सखी सरूप धाम में राजें, सेवें जुगल श्रधिक छवि छाजें। मारग प्रेम प्रकाशन कारत, श्यासा श्याम पठाये री॥ रस निकुंज जग में विस्तारें, श्रनगिन जीवन को उद्धारें। जन्म मरण दुख सबके टारें, श्राचारज ह श्राये री॥ मिलि है रंग महल में वासा, श्री दंपति की सेवा खासा। सरस माधुरी हरव निरित्व के, सुनिवर के युन गाये री॥

**

॥ बधाई राग माँड ॥

संवी री श्री शुकदेव दयाल मुनी म्हांने प्यारो लागे है ॥
सुन्दर श्याम काम मद मोचन लियो श्रविन श्रवतार।
संतन की रक्ता के कारन जीव करन उद्धार॥
निरित्व मुख दुख सब भागे हे॥१॥
रस निकुंज विस्तारन कारन श्राये जक्त मभार।
श्राचारज है प्रगटे प्यारे रिसकन के सरदार॥
भाग हमरे भल जागे हे॥२॥

सफल फली मन कामना जी नांशे सकल विकार। उदय भये सुकृत जन्मन के यह निश्चय निरधार॥ सबहि सुर नर श्रनुरागे हे ॥३॥

दरशन कर प्रसन्न भये री श्रानँद बढ़ो श्रपार। नाँचत नारी श्रप्सरा जी गावत मङ्गल चार॥ ऋषी सब रस में पागे है॥४॥

परमानंद परम उज्ज्वल रस रंग महल श्रधिकार। सरसमाधुरी मिलेमया कर दंपति नित्य विहार॥ यही श्रविचल वर मांगे हे॥४॥

॥ बधाई राग खम्मांच जन्म बधाई वाजे छै। श्री शुक मुनि प्रगटे सजनी शुभ दिन श्राजे छै॥ दशों दिशा में मंगल उसग्यो छिव श्रित छाजे छै। वेदव्यास घर घन ज्यों नोवत सुन्दर गाजे छै॥ निरित रूप श्रनुपम मुनिवर को रित पित लाजे छै। ऋषि मुनि मगन भये इह श्रवसर कियो समाजे छै॥ वित्र बृंद मिल वेद उचारत हिल मिल राजे छै। सरस माधुरी सहा सहोत्सव सब सिरताजे छै॥

॥ पद् राग सोरठ॥

सखी री धन्य दिन हैं श्राज ।

प्रगट भये शुकरेन स्वामी रिसक जनन सिरताज ॥

कीजिये हिल मिल मनोहर मुदित प्रेम समाज ।

साज सुभग मिलाय वहु विधि बीन ढोलक वाज ॥

भाग श्रपने भल सराहो नचो तज कुल लाज ।

पहिर कर भूषन वसन श्रंग सजो सुन्दर साज ॥

उदय सुकृत भये श्राली गये दुख सब भाज ।

सरस लह्यो श्रानँद भारी रंक पा ज्यों राज ॥

॥ पद् राग सोरठ॥

श्राज उमाहो हेली हिल मिल श्री शुकमुनि को दरशन करस्यां। निरित्व नेन मुख व्यास सुवन को परमानंद हिये निज भरस्यां॥ जीवन मुक्त जगत उजियारो ब्रह्म रूप तिनके पद परस्यां। श्रमरलोक निज धाम बसें नित सहजिह भव सागर ने तरस्यां।। श्री राधा वर कुंज विहारी तिनकी कृपा प्रान पति वरस्यां। सरसमाधुरी छवि मुनिवर की हरष हुलस मन मांही धरस्यां।।

॥ पद् राग भैरवी, सोरठ॥

प्रगटे हैं श्री शुंक देव सुनि बाजे हैं रंग बधाईयां। श्रीं व्यास को सुकृत उदय ऋषि नारि मंगल गाईयां। मगन मन माता सुभागी धन्य भाग बड़ाईयां।

चौक मिण मोती पुराये कुंभ कलस धराईयां॥ द्वार बंदन माल मालन बांध हिये हुलसाईयां। कलश ध्वज तोरन पताका चहुँ श्रोर सजाईयां॥

गगन छाये देव गन वरसे सुमन हरषाईयां।

श्रप्सरा गंधर्व नृतत साज बाज बजाईयां॥ भार भूतल को हरन सुख करन जन समुदाईयां।

पतित पावन दीन बन्धु दयाल दरश दिखाईयां ॥ श्याम वरन सरूप सुन्दर निरिष नैंन लुभाईयां । सरस मूरित माधुरी लिख लालं की बिलजाईयां॥

पद राग सोरठ, कालंगड़ा, त्र्यासावरी व भैरवी। शुक मुनि देव दया निधि त्राये। रंग महल तें रिसक प्रिया पिय प्रेम प्रकाशन हेत पठाये॥ प्रगट होत ही ऋषि मुनि सब ही निरखन मुनिवर को मिल धाये।
नैन निहार श्याम सुंदर वपु पुलक प्रेम तन मन तृप्ताये॥
संत महंत सबहि शोभा लखि स्तुति करत हिये हरपाये।
शीश नवाय चरण रज वंदत मंगल श्रानँद बाद्य बजाये॥
धन धन भाग सराहत श्रपने भये सकल सखि मन के भाये।
सरस माधुरी रस के दाता तिनके दरशन कर सुख पाये॥

॥ पद् ॥

(गेंद तक मारी सांवरिया) की धुन में ॥
शुक मुनि श्याम सलोनांरी सखी रूप रिकोनां ॥
श्याम घटा सी जटा सीस पर मुख मयंक समलोनारी ॥
वयस किशोर चोरचित चंचल चितवन में याके टोनारी ॥
चाल चलत मतवाली श्राली मनु मराल को छोनारी ॥
निरित्त नेंन छिन नार श्रप्सरा छकी सकल गिह मोनारी ॥
व्यास दुलारा प्रीतम प्यारा ऐसा हुवा न होनारी ॥
सरस माधुरी रही ठगी सी नांहि सुहावत भोनारी ॥

॥ गजल ॥

क्या मनोहर मूरती, मुनिराज की मन की हरन। है सखीनी सोहनी सूरत, श्रजब श्यामल वरन॥ चंद सा चहरा प्रकाशित, सर पे घुंघरारी जटा। छा रही श्रद्भुत छटा, चहरे पेश्रानँद की करन॥ प्रेम मतवारे नशीले, नेंन मदहर मैन के।

नासिका सुंदर मधुर, मुसकन हरन जी की जरन॥
ध्यान इनका जो धरें, संताप और दुख को हरें।
सहज भव सागर तरें, नहीं होवे फिर जीवन मरन॥
परम पावन कंज से, कोमल चरन तारन तरन।
सरस दंपति दरस देवें, जो रहें इनकी शरन॥

॥ रागमाँड ॥

ओजी रे म्हारा शुक्रमुनि प्यारा नीका म्हांने लागो छो मुनिस्ज

श्याम वरन मन मोहनां गल फूलांरी माल। भाल तिलक श्री सोहनां सिर घुंघरारे वाल।।

माधुरी मूरेत मन हरन सूरत सुंदर श्याम। या छवि म्हारे मन बसे निस दिन श्राठों जाम॥

घुंघरारी कारी जटा सुंदर सोहत सीस।

श्रमरलोक से श्राप पधारचा धरके संत सरूप।

धर्म चलावन कारने थे कीनों रूप श्रन्प॥ जो जन शरन चरन की श्रावें कर मन में विश्वास। सरस माधुरी दरशन पावें श्रमर नगर हो वास॥

॥ पद् गजल राग बिहाग॥

मांगने वाले चलो मांगे दुवा श्राज की रात। प्रगटा महबूब मुनिराज यहां त्राज की रात ॥ भक्ति का भान उदे श्राज हुवा व्यास के घर। करलो दरशन प्यारे भक्तो चलो त्राज की रात ॥ सुमेर बन में खिला प्रेम का गुंचा सोहन । भूमती फिरती यहां बादेसवा श्राज की रात॥ व्यास श्राश्रम में प्रगट श्रान हुवे नंद लला। गा रही गान ऋषि नारी यहां त्राज की रात ॥ ^{. हैं} मगन मन में सहाराज श्री वेद व्यास। लेलो जो कुछ जिसे चहिये यहां श्राज की रात।। सबही महोताज चले त्रावों गिरि सुमेरु तले। सदका हरि नूर का मिलता है यहां श्राज की शत।। दौड़ कर आवो यहां द्वार खुला मुक्ती का।

॥ गजल ॥

पोंहचो निजं धाम सरस काम बना श्राज की रात॥

जन्मे हैं व्यास के घर बनके मुनी हरि प्यारे। नाम शुक श्याम वरन शोभा है अपरंपारे॥

300

वर्ष शोडष की वयस चंद्सा मुख है सोहन।

छि को नेंनों से निरख सबही हुवे मतवारे॥
जीव केउद्धार की उर धार द्या कर किरणा।

रूप श्राचार्य्य हो अबनी में श्राप अबतारे॥
प्रेमा मक्ती का करें दान कृपा खान हमें।

देवें निज धाम बने काम मिटें दुख सारे॥
सर्स दंपति की हमें बख़शें महल की सेवा।
खास रस रास का सुख़ देवेंगे जग उजियारे॥

॥ गजल ॥

जै जै शुकरेव मुनी व्यास के घर आतारे।

कृष्ण हैं श्राप हमें प्रानों से बढ कर प्यारे॥

श्याम सुंदर है वरन मन का हरन मंद हँसन।

सोहनी मोहनी छिव नैना प्रेम मतवारे॥

सिर पे घुंघरारी जटा श्याम घटा सी छाई।

चंद से मुख की छटा देख छके सुर सारे॥

नारि सुरपुर की निरख रूप हुई बिलहारी।

नाच कर गान सुना तान को तन मन वारे॥

क्रिक हो श्राप परिब्रह्म भी हो श्राप तुम्ही।

सब में व्यापक हो प्रभु और सबों से न्यारे॥

पूज्य हो सबके जगत के हो तुम्ही आचारज।

गुरु हो मुनियों के हो रिसकों के प्रान आधारे॥
दीजे बरदान कृपा खान सरस श्राप हमें।
होके निज दास रहें खास चरण के लारे॥

॥ गजल॥

श्रीशुक मुनि का प्रगटाना मुवारक हो मुवारक हो। आचारज रूप धर श्राना मुवारक हो मुवारक हो॥ छटा मुख चंद की क्षांकी निराली लख श्रदा बांकी।

निरख छवि नैंन बल जाना मुबारक हो मुबारक हो॥ सरापा रयाम सूरत पर निछावर कर दिया तन मन।

मदन छिब देखि लिजियाना मुबारक हो मुवारक हो॥ दरस मुनिराज का करके हगन में रूप रस भरके।

मगन मन मस्त होजाना मुबारक हो मुबारक हो॥ बजा के बीन सारंगी पखाबज की परन चंगी।

वधाई गान का गाना मुबारक हो मुबारक हो ॥ पुलक तन प्रेम उमगाना नयन जल नेह का छाना।

निरत कर भाव बतलाना मुबारक हो मुबारक हो ॥ जनम उत्सव का सुख लख के सफल हमने जनम माना। सरस हँस फूल बरसाना मुबारक हो मुबारक हो॥

॥ पद् ॥

श्राज बधावरा माई श्राज बधावरा।
धन वेशाख मांस मावस तिथि प्रगटे शुक मुनि साँवरा॥
श्राचारज श्री हरि बनि श्राये वेद्व्यास के कुंवर कहाये।
मरिष नारिन मिल मंगलगाये चित में सब के चावरा॥
सुर समूह सब ही चिल श्राये बैठ विमान गगन में छाये।
जै जे बोल फूल बरसाये मन में करो उछावरा॥
इन्द्र श्रप्सरा सँग ले श्राये नाच गाय सुन भाव बताये।
उत्सव देख श्राधिक मगनाये तन मन कियो नौद्यांवरा॥
दसों दिशा में श्रानद छायो परमानंद प्रेम प्रगटायो।
सरस माधुरी रस उमगायो उर में उपज्यो भावरा॥

॥ गुजल ॥

श्याम तन सतिचेत घन व्यास के नन्दन प्यारे।
शुक्रमुनी राज महाराज प्रेम मतवारे॥
श्राये निज धाम से श्राचार्य रूप धर स्वामी।
धर्म परचार करन पाप हरन श्रोतारे॥
माधुरी मन के हरन मूरत सुंदर सूरत।
सोहनी मोहनी छब देख छके सुर सारे॥
श्राप्तरा नृत्त करें गान में लें तान नई।
मंद मुसकान निरख हर्ष के तन मन वारे॥

धन्य वैशाख है ये माँस वदी तिथि मावस । जिसमें प्रगटे हैं हरी ख़ास मनुज तन धारे ॥

रहेता भक्तों कों बतावेंगे महल का मारग ।
पल में पहुंचावें जुगल पास जगत उजियारे ॥
हर्ष आनन्द सरस रस में मगन हैं हरिजन ।
करके परनाम चरन जै जे बचन उच्चारे ॥

॥ गुजल ॥

शुक मुनि का जन्म उत्सव मनको लुभा रहा है। हर तर्फ प्रेम पूरन आनंद छा रहा है।

वांका है जो बिहारी रस रास लीला धारी।

मुनि रूप हो। दिगंबर दरशन दिखा रहा है।।
भांकी परम है प्यारी मन की हरन अपारी।
रिव चंद मुख पै वारी चित को चुरा रहा है।।

तन श्याम खूब सूरत शृंगार रस की मूरत। लख के मदन बदन छिव मन में लजा रहा है।। ऐसा हुआ न होना जैसा ये व्यास छीना।

चितवन में इसके टीना आंखें मिला रहा है।।
नख सिख है रूप सागर सब विश्व में उजागर।
नयनों में नित सरस के मुनिवर समा रहा है।।

॥ राग गरवी ॥

सलोना शुक वेद व्यास लाला।

म्हारारे स्वामी प्रगट्या छो बाला॥

स्याम श्रंग आति सुंद्र थांको।

श्याम अग अति सुद्र थाका। केश सिर पर ःसोहैं काला॥

भाल श्री तिलक सज्यो सोहन । नैंन सर मेंन हैं मतवाला ॥

्रक्पोलन अलक कुटिल नीकी। नासिका है अति ही आला॥

मंद मुसकावन मन भावन। हँसन में जादू पढ़ खाला॥

कंठ में कंबु सद्रश रेखा। गले में पुष्पन की माला॥

अभुजा त्र्याजानु अनूपम हैं । उच्च वचस्थल छबि जाला ॥

उदर त्रिय रेख त्रिवेनी समान । नामि गंभीर भँवर डाला ॥

केहरी सम कटि अति प्यारी।

ं जुगल जंघा कदली खनला ॥

श्चरण दोङ ग्रहण कमल जैसे । सरस संतन के अतपाना ॥

॥ पद् ॥

चलो वेद्व्यास द्रवार शुक्सुनि जन्मे वहां

॥ श्रंतरा ॥

्रप्रगट हुये हैं हरी संतरूप धर अवतार । है श्याम अंग साज्ञात मानो नंद कुमार॥

'प्रकाश मान है मुख चंद सा अजव मनहार। विशाल भाल है नयनों में भरा प्रेम अपार॥

श्रंनुपम उनका है द्दिार ॥ शुक० ॥

, लालित कपोलों पे हैं जुलफें छुटी छल्लेदार। सुढार नासा है और सरपे हैं घुंघरारे वार॥

वह मुख की मंद हँसन जादू सा पढ़ देवें डार। रसीली चितवन को देख के न रहे नेंक करार॥

हमारा है जीवन प्राग् अधार ॥ शुक् ॥

है नख से शिख लों अजव जिस्स जिनका सजधज दार। मानों विधना ने रचा हाथ से सांचे में ढार॥

माधुरी मनकी हरन शोभा छाई अपरम्पार। जो देखता है वही देता है तन मन धन बार्॥ सरस मुख जय जय कहै बलिहार॥ शुक०॥

॥ गुजल ॥

गावोरी मंगल बधाई आली जनम का दिन आज शुकमुनी का।
करो महोत्सव सकल सहेली परम है प्यारा हमारे जी का॥
रचोरी आश्रम के द्वार स्वास्तिक सजावो सुंदर सदन सुहावन।
बजावो बाजे मृदंग बीना मिला है औसर हमें ये नीका॥
करोरी दरशन हगन सें सारी नचोरी छिव लख बजावो तारी।
सलोनी सूरत पै जावो वारी लखोरी मुख सब रिसक पती का॥
जो इनको ध्यावें वो धाम जावें जुगल बिहारी का दर्स पावें।
महल में सेवा को कर लडावें होवे मनोरथ सफल सभी का॥
सरस आचारज रूप धारन किया है स्वामी जगत को तारन।
धरम प्रचारन पतित उबारन अधम उधारन है प्रन जती का॥

॥ गजल ॥

प्रगट हुवा है परम मनोहर जगत का जीवन ये ज्यास लाला।
है श्याम सुंदर सरूप इसका सलोना मानों मदन ग्रुपाला।।
जटा हैं बुंघरारी कारी सिर पर है चंद सा मुख आनंद कारी।
अलक कपोलों पे छूटी न्यारी रसीली चितवन से जादू डाला।।
है चोर चित का किशोर मूरत मदन मनोहर है प्यारी सूरत।
हुवा न होना नहीं है ऐसा रिसक आचारज जगत उजाला।।
श्रारन में इनके जो जीव आवें जुगल बिहारी जिन्हें मिलावें।
अमर नगर में उन्हें बसावें हैं ये दया निधि परम कृपाला।।
दिखावें दंपित की नित्य केली बसें महल में बनें सहेली।
सरस परस पर हो मन की मेली निरख के छिबनेंन हो निहाला।।

॥ पद् रसिया ॥

तरों सुन्दर श्याम सरूप शुक मुनि मन को मोहन हार ॥
नख सिख सोहन विश्व विमोहन मानों नंदकुमार ।
प्रेम भरी मद मांती चितवन भई कलेजे पार ॥
मंद हँसन मन हरन तुम्हारी जीवन प्रान आधार ।
निरख छकीं सुर नारी सारी तन मन दीने वार ॥
मदन मनोहर सुरत तेरी मूरत रस शृंगार ।
स्वर्ग अप्सरा सकल मगन भई दई मोहनी डार ॥
भक्तन के मन भावन हो तुम संतन के सरकार ।
प्रेमिन के प्रीतम हो प्यारे रिसकन के रिभावार ॥

निस दिन बसो हगन में मेरे आचारज अवतार। सरस माधुरी श्राण तुम्हारी विनवत वारंवार॥

॥ पद् ग़जल ॥

शुक मुनि छटी का उत्सव श्राति ही श्रानँद कारी।

च पियों की निर्देश हिल मिल गावें वधाई सारी॥
नांचे कोई नवेली कुल लोक लाज पेली।
सुंदर सकल सहेली हँसि हँसि बजावें तारी॥
शुक लाल दर्श करके नैनों में रूप भर के।

जै जै धुनी उचर के जावें लला पै वारी। आये अमर नगर से मुनि रूप धार मोहन। है श्याम रूप सोहन शोभा भई है भारी॥ श्राचार्य हो जगत गुरू गावेंगे भागवत को।
सुनके तृपत परीचित पावें जुगल विहारी॥
किल मल कलेश टारन कीना है रूप धारन।
हिर भिक्त को प्रचारन श्राये जगत मँभारी॥
इनकी शरन जो श्रावें निज धाम को वो जावें।
सेवा सरस महल की सों पें स्वजन निहारी॥

॥ दोहा ॥

۔ اللہ

सव उत्सव से है छटी, छटी शुक सुनी नाम। नवल वधाई गा रहीं, ऋषि पत्नी श्रमिराम॥

॥ राग सोरठ॥

सुन सखी शुक सुनि की छटी।
दिना छै के भये मुनिवर दिन बढ़े निशि घटी॥
गावें ऋषि नारी बधाई नचें नट श्ररु नटी।
पान श्ररु मिष्टान सेवा महोत्सव में वटी॥
स्वर्ग रंभा भई भेली दरस हग चटपटी।
सरस दरशन कर सुदित भई विरह विपता कटी॥

॥ ग़जल धुन नाटक ॥

वेदव्यास के बधइयाँ छाय रही रे ॥ प्रगट हुआ है प्रान धन शुकदेव लाल है । सुख चंद सा मनोहर दिलकश जमाल है ॥

मूरति किशोर चित की चोर श्रति रसाल है। रिसकों का प्रान प्यारा श्रति ही कृपाल है॥ में तो लख के सुरतिया लुभाय रही रे ॥ वेदव्यास० ॥ सर पर हैं श्याम चिकने सुंदर सलौने वाल। केसर का श्री तिलक है शोभायमान भाल ॥ नैना हैं अति नुकीले जिनमें हैं डोरे लाल। नासा सुढार मंद् हँसन है छ्वी का जाल ॥ मेरी गति मति इसी में फँसाय रही रे ॥ वेद्व्यास० ॥ शृंगार रस की मूर्ति है शुक सुनी का रूप। सुर नारी श्रप्सरा गन निरखें खड़ी सरूप ॥ ललचाय रित रही है देखी है छवि श्रन्प। लिजत हुये हैं ऋति ही मन में मदन से भूप॥ प्यारी सूरत हिये में समाय रही रे ॥ वेद्व्यास० ॥ श्री भागवत पुरान मुनी मुख से गायँगे। मारग श्रनूप प्रेम का स्वामी बतायँगे॥ इनके चरण के ध्यान में जो चित लगायँगे। पर धाम श्यामा श्याम सेवा निश्चय पायँगे ॥ सरस माधुरी मुनीरा शरण श्राय रही रे ॥ वेद्व्यास०॥

॥ राग मांढ ॥

होजी हो म्हारा शुकमुनि प्यारा व्यास का दुलारा म्हां का राज ॥ श्याम सुंदर सम सोहनां जी सुन्दर परम सुजान । रसिकांरा मन मोहना जी म्हांका जीवन प्रान ।

हो जी हो श्रंखिया रा तारा मंडन संत समाज ॥१॥ स्वयम् श्राप हरि ने धरचो जी श्राचारज शुभ रूप।

सुर नर सब सेवा करें संत शिरोमिण भूप॥ होजी हो प्यारा जग उजियारा मुनियांरा सिरताज॥२॥ परम हंस चूड़ामणी जी भगवत धर्म जहाज।

नृपति परीचित तारिया जी कीना पूरन काज ॥ हो जी हो थे इष्ट हमारा म्हांकी थांने लाज ॥३॥ नैंनां में म्हांके बसो जी हिये बिराजो श्रान।

सरस माधुरी श्राप पर जी वारत तन मन प्रान ॥ हो जी हो म्हां पे किरपा कीजो दरशन दीजो श्राज ॥ १॥

॥ गजल॥

हुवे प्रगट श्री शुक्रमुनि बधाई है बधाई है। हुवा श्रानंद त्रिभुवन में बधाई है बधाई है॥ श्री मत व्यास के नंदन रिसक जन भक्त चित चंदन। श्राचारज रूप नंद नंदन बधाई है बघाई है॥ सलोनी सांवली सूरत मनोहर माधुरी मूरत।

निरख नैना छके छिब में वधाई है वधाई है ॥

सफल माना जनम हमने दरस करके हुवा खुश दिल।

मिलेगा कुंज रस हम को बधाई है वधाई है॥

मिलावेंगे जुगल हमको बसावें वास वृन्दावन।

हमारे भाग हैं धन धन वधाई है बधाई है॥

परम उत्साह छाया है महोत्सव मन में भाया है।

श्रजब श्रानंद पाया है बधाई है वधाई है॥

सरस छिवेमाधुरी निरखें श्रमर गन हिये में हरषें।

सुमन श्राकाश से बरसें बधाई है वधाई है॥

॥ बधाई राग खमांच

शुक मुनी महा प्रभु स्वयम् श्राप श्याम हैं।
प्राचारज रूप धार करें प्रेम का प्रचार।
तारें संसार सकल ऐसे गुन ग्राम हैं॥
सत चित श्रानंद रूप मूरित मन हर श्रन्प।
निरख के सरूप लजित कोटि रती काम हैं॥
दीन बंधु हैं दयाल करुणा सागर क्रुपाल।
करत हैं निहाल देत सेवा श्रष्ट जाम हैं॥
संस्रित संताप हरन मेट देत जन्म मरन।
सरस माधुरी शरण करत पद प्रणाम हैं॥

॥ पद् ॥

श्राज भलो दिन धन्य घरी प्रगट हुवे शुकदेव हरी ॥ च्यास मनोरथ पूरन कीनो, पुत्र होय तिनको सुख दीनों। श्राचारज हो कृपा करी॥१॥

कलियुग में सतयुग विस्तारन, प्रेम भक्ति को करन प्रचारन।
सुनिवर श्रनुपम देह धरी ॥२॥

नृपति परीचित कथा सुनावें,श्री भागोत कृष्ण गुण गावें। प्रेम पियूष लगावें भरी ॥३॥

जो जन सुने श्याम ग्रन गाथा, जन्म मरन मिट होंय सनाथा। पावे वासा श्रमर पुरी ॥४॥

परम धाम सँग प्रीतम प्यारी, सेवा कर सुख लूटें भारी। सरस माधुरी रंग भरी॥५॥

॥ गजल ॥

शुक मुनी राज जनम दिन का ये जलसा भारी। जै जै बिलहार रहे बोल सकल नर नारी॥ श्रप्सरा स्वर्ग की गाती हैं सभी प्रेम भरी।

नांचती भाव वताती हैं वजा कर तारी॥ लखके शुकलाल का मुख मोही रती और श्रनंग। चंद से मुख को निरख भूले हैं सुध बुध-सारी॥ कृष्ण करतार दया धार बनें श्राचारज। तारें संसार के जीवों को करें भव पारी॥ देवें निज धाम जिन्हें शरण श्रावें में जो जीव। सर्स दंपति की मिले सेवा सहज सुखकारी॥

॥ सारठ॥

वेद्व्यास के दुलारे प्यारे शुक मुनी सिरताज।
हुवे श्राप ही श्राचार्य रूप कृष्ण महाराज॥
लिया श्रवनी श्रवतार करें प्रेम का प्रचार।
करें भक्ति नर नार तुमें सब की है लाज॥१॥

देवें जुगल नाम दान करें जक्त का कल्यान। दया कृपा के निधान सारा संतों के काज॥२॥

चरण शरण में जो श्रावें परा भक्ती को पावें। श्यामा श्याम को लडावें करें हिल मिल समाज॥३॥

इष्ट मिष्ट हो हमारे तन मन ये तुम पै वारे। सरस माधुरी मनोरथ सारे पूरे हुवे श्राज ॥४॥

॥ दोहा ॥

श्री शुक मुनि राजवर, श्राचारज श्रवतार।
भूतल प्रगटे श्राप हरि, भक्ती करन प्रचार॥
भव सागर के तरन को, श्री भागवत पुरान।
कही परीक्तित हित प्रभू, धर्म जहाज बखान॥
पढ़ें सुनें कर प्रेम जो, पोंहचें पद निरवान।
सरस माधुरी छबि लखें, रहें ध्यान ग़लतान॥

॥ पद् ॥.

व्यास ज्र सुक्तत कोंन सो कीनो।
ताक किये जगत पति तुम को यह सोहन सुत दीनो॥
सुंदर श्याम कमल दल लोचन प्रेम माँहि रंग भीनो।
शोडप वर्ष किशोर चोर चित सनहु कृष्ण सम चीनो॥
विधि हरि हर हरपे मन माही लिख के रूप नवीनो।
सरस माधुरी शुक प्रगटत ही छ्यो लोक सुख तीनो॥

॥ पद् ॥

व्यास जू तुम सम धन्य न और ॥
प्रगट भयो तुमरे घर लालन सकल मुनिन सिर मौर ॥
रयाम श्रंग शोभा निधि सुंदर रिसकन को चित चोर ॥
धुंघरारे वर वार वदन विधु श्रद्भुत वयस किशोर ॥
कमल नैन मृदु वेन मनोहर केसर चंदन खौर ॥
सरस माधुरी छ्वि को लिख के मुदित भयो मन मोर ॥

॥ ढाढी की वधाई॥

ऋषि पराशर कुल को ढाढी शुक मुनि जन्म सुनत हरषायो। वेद व्यास महाराज सदन में देन वधाई को उठ धायो।। धन धन धनश्री मात सुभागी है मन मुदित सोहिलो गायो। सुन वंशाविल श्री है पायन दियो दान सनमान सवायो॥ भूषन वसन श्रमोल मँगाये श्रीति सहित ताको पहिरायो॥ सरस माधुरी कियो श्रयाचक नौधा भक्ति श्रभय पद पायो।

॥ बधाई ढाढन ॥

हूँ ढाढन श्री व्यास तिहारी पुत्र जन्म सुन धाई श्राई। सफल मनोरथ श्री पित कीनों ले हूँ तुम से हरप वधाई॥ कृष्ण कला पूरन पुरुषोत्तम प्रगट भयो सुंदर सुख दाई। ज्ञान ध्यान जो कुछ तुम कीनो ताको फल ऐसो सुत पाई॥ श्रेम परा भक्ती को मारग जग में सब को देंहि वताई। जीव श्रनंत उवार जक्तसों परम धाम में देंहि पठाई॥ मुनियन में सिरताज रिसकवर तिन को दरशन कर सुख पाई। सरस माधुरी कुंज महल की मिल हैं टहल जुगल सुखदाई॥

॥ पद् ॥

मोहि निज घर को ढाढी जान ॥ लाल जन्म सुनि जाचन श्रायो सुनो व्यास भगवान ॥ प्रेम भक्ति में लेहों वधाई देहु दया कर दान ॥ सरस माधुरी निरखों शुक मुख यह निश्चय मन मान ॥

॥ बधाई ढाढिन ॥

ढाढन नांचे रंग भरी नांचे नांचे रे वेद व्यास द्रवार ॥१॥ श्री शुकदेव महा प्रभु प्रगटे रिसकाचारज नर तन धार ॥२॥ नव निकुंज रस की लीला को द्रशावें कर कृपा श्रपार ॥३॥ उदय करें भागवत दिवाकर दूर करें भय भ्रम अधियार ॥१॥ गावें गुन राधा गोविंद के बुज वनितन को नित्य विहार ॥४॥ जन्म बधाई सुन मैं श्राई तज के धाई सव घर वार ॥६॥

नख शिख लो पहरूँगी वस्तर सारी लहँगा जरी पल्लेदार॥ जेवर जटित जवाहर जगमग श्ररु लेउँगी मैं मोतिनको हार॥ पचमिनया पचलरी रतन की नथ नई लेऊँगी मैं भलकेदार॥ पायल पायजेब पग बजनी बिछिया श्रनवट बड़े मजेदार॥ सरस माधुरी मनसा मेरी पूरन करो भरो भंडार॥

॥ बधाई, (राम रंग बरसेगो की चाल में) ॥ श्री वेद व्यास दरबार बधाई बाजे श्राज भली हां हां बधाई बाजे श्राज भली ॥

श्री कृष्ण करुणा कर श्राये है पायन के कुँवर कहाये।
हिल मिल के ऋषि नार करें रस रंग रली॥
कोई नाचे कोई गावे कोई भली विधि भाव बतावे।
जय जय कहें बिलहार श्रनेकन आय श्रली॥
जान सु श्रवसर परम सुहायो संतन प्रेम समाज रचायो।
पायो परमानंद खिली हिय कमल कली॥
केसर रंग उमंग भराये चोवा चंदन श्रतर मँगाये।
सब के श्रंग लगाय छिरक दिये डगर गली॥
कृपा करें श्री शुक सुनि राई जुगल विहारी देंहि मिलाई।
सरस माधुरी बेलि मनोरथ सुफल फली॥

॥ बधाई राग कान्हरा ॥ हमारे आज बधाई भारी । प्रगट भये शुकदेव महा प्रभु आनँद मंगल कारी ॥ भूषन वसन साज घर घर ते जुर आई ऋषि नारी।

व्यास भवन में श्राय चाव सो नाचत दे कर तारी॥

गावत गीत प्रीति प्रगटावत भई प्रेम मतवारी।

लालन को लखि रूप श्रन्यम बोलत मुख बिलहारी॥

मिणि माणिक न्यौद्यावर करके राई नोंन उसारी।

जुग जुग जीवो वेदव्यास सुत सरस श्रसीस उचारी॥

॥ वधाई ॥

व्यास जू के प्रगट सुत सुखदाई।

सुंदर श्याम वरन मनमोहन चंद्र वदन छिव छाई॥

सुंघरारे सिर बाल सलोंने अलक कपोल सुहाई।

कमल नयन नासा अति नीकी मंद मंद मुसकाई॥
नवल किशोर चोर चित प्यारे श्रॅग श्रॅग सुंदरताई।

पद पंकज की शोभा लिख के मन मधुकर मगनाई॥
नाम जपें शुक्र मुनि जो मख से संकट कोटि नसाई।
ध्यान किये तें किलमल सारे सहजिह जात बिलाई॥
सिलें मयाकर कुंज विहारी कुपा करें मुनिराई।
सरस माधुरी हिये हरष के गाई जन्म बधाई॥

॥ बधाई चाल रसिया॥

बधाई बाजे रंग भरी श्री वेद्व्यास द्रबार। कृष्ण निज करुणा करके अरीकि प्रगटे मुनिवर को वपु धार॥ नाम शुक सखी रंग महल में,

श्वरी कि भूतल भेजी जुगल सरकार। ऋषि मुनि मन में मगन भये सब,

श्ररी कि उत्सव कीनो जन्म श्रपार ॥ धुजा पताका तोरन रोपे,

श्ररी कि द्वारे बांधी वंदन वार।

श्राय श्रप्सरा नृतन लागीं,

श्ररी कि गावें हिल मिल मंगलचार ॥ वैठ विमान गगन सुर छाये,

श्ररी कि कर रहे फ़ूलन की बौछार ॥ मागध सूत भाट वन्दी जन,

श्ररी कि पावत दान मान सतकार ॥ देत श्रसीस सकल हिय हरषत,

श्ररी कि जुग जुग जीवो शुकदेव कुमार । सरस माधुरी लख लालन छवि,

श्ररी कि बोलत मुख जय जय वलिहार॥

॥ राग विहाग ॥

लाल तेरो सुखी रहो जिजमान ।

लेज प्रताप रेंन दिन प्रगटो सुनों ज्यास भगवान ॥

शुक मुनि कुँवर सदा चिरजीवो संतन को सुख दान ।

श्राचारज सिरमोर जगत गुरू रिसक जनन को प्रान ॥

सुख सों रहो सुवन यह तुमरो जव लों जग शिश भान ।

सरस माधुरी मूरित मुनिवर श्रतुलित कृपा निधान ॥

॥ पद् श्रसीस ॥

व्यास तेरो चिरजीवो शुकदेव।

बढो सुजस जग में दिन दूनों यह श्रसीस सुन लेव। सकल मुनिन सिरमौर रिसकवर लहे न कोऊ भेव। वसे दगन छवि सरस माधुरी यही मोहि वर देव॥

॥ पद् श्रसीस ॥

व्यास तेरो सुखी रहो सुख लाल। वयस किशोर बनी रहो नितही नहात खसो जि न वाल॥ तेज प्रताप श्रिषक पर पूरन संतन को प्रतपाल। जगमग रहो जगत में महिमा सूरज सम सब काल॥ सुंदर श्याम काम मद मोचन चितविन नैंन विशाल। सरस माधुरी सूरति मुनिवर निरखत भयो निहाल॥

॥ श्री शुक सखी यूथेश्वरी जू को ध्यान मंगल छंद ॥

जयित जयित शुक सखी सरस श्रिभरामनी।

यूथाधिप रस भरी श्रिलिन की स्वामिनी॥

युगल अंगजा श्रित श्रम् वपु रावरो।

प्रीतम के उनहार सुहावन साँवरो॥

सुहावन श्रित सांवरो षोडष वरष रसिनिधि महा।

परम पूरन प्रेम प्रमुदित छिव श्रितुल किहें कहा॥

दीजिये युग चरण रित रिलिये निकट नव कुंज में।

सरस रस की माधुरी हिल मिल रहें श्रिल पुंज में॥

॥ बंदु ॥

जयित जयित शुक सखी शरन निज राखिये।
मेरे श्रवगुन श्रमित न चित श्रमिलाखिये॥
पतितन पावन विरद श्रपन प्रति पारिये।
श्रथम उधारन वान न भूल विसारिये॥
भूल नाहि विसारिये श्राश्रित चरन निज शरन को।
देहु युगल मिलाय तुम मेटो विरह दुख जरन को॥
कान दे सुनिये विनय पूरन करो मन श्रास जू।
सरस कर सेवा प्रिया पिय रहे तिनके पास जू॥

॥ इंद् ॥

जयित जयित शुक सखी लखी तुम सम नहीं।
भई न है निह होई और त्रिभुवन मही॥
शुकाचार्य वपु धार परीचित तारियो।
भगवत धर्म सनातन जग विस्तारियो॥
विस्तारियो जग जस सरस रस वृज वधू वरनन कियो।
प्रेम पंथ प्रवर्त कर परधाम पद जीवन दियो॥
श्रवन कर भागवत जस जीवन लह्यो निज धाम को।
सरस रस की माधुरी नित लखत रयामा श्याम को॥

॥ छंद् ॥

जयित जयित शुक सखी सुनो विल कान दे। जुगल लाडिली लाल प्रेम प्रिय दान दे॥ रहों सदा रालतान ध्यान श्रानंद भरी।
गाऊँ लीला लित लगाऊँ रस भरी॥
लगाऊँ रस की भरी सुनि रीभ पिये प्यारी जवे।
देंहि श्रधरामृत प्रसादी पाय प्रमुदित हों तवे॥
सरस रस की माधुरी मांती रहों रस रंग में।
करों सिवकाई सदाई श्राप परिकर संग में॥
॥ इति ध्यान मंगल संपूर्णम्॥

॥ वधाई राग मूँगा ॥

सखी सव श्रावो वजावो गावो वधाई म्हारे श्राज भली एरी हां वधाई म्हारे श्राज भली ॥

सखी री रंग महल तें आई प्रगटाई शुक देव आली एरी हां॥
सखी री श्यामाँ श्याम पठाई करेंगी रस रंग रली एरी हां॥
सखी री धर आचारज रूप कुंज सें सुघर चली एरी हां॥
सखी री रिसकन को अपनावें मिलावें दोऊ लाल लली एरी हां॥
सखी री निरख रूप रस भूप खिली हिय कमल कली एरी हां॥
सखी री धन निज भाग विचारो निहारो छवि प्रान पली एरी हां
सखी री सरस माधुरी वारी हमारी मन आस फली एरी हां

॥ राग सोरठ ॥

सखी री आंज की धन्य घरी।
प्रगट भई यूथेश्वरी शुक अली आनंद भरी॥
घटा प्रेम उमंग छाई लगी अमृतं करी।
भाव अंकुर उग्यो अद्भुत बेलि मनसा फरी॥
मधुर फल रस पान कीनो कृपा सत् ग्रह करी।
सरस माधुरि मगन मन शुकदेव छाँव उर धरी॥

॥ राग सोरठ ॥ सखी री ञ्राज दिवस पुनीत ।

प्रगट भई शुक अली स्वामिन जुगल की निज मीत ॥ शुकाचारज नाम जगमें धरचो रूप अतीत ॥ प्रेम पंथ प्रवर्त करि हैं करो सत्य प्रतीत ॥ कीजिये सब सोहिलो मिल गाय मंगल गीत । नचो नाना गित सु ले ले तजो तन मन भीत ॥ मिले नित्य निकुंज सेवा यथा जैसी रीत । सरस रस की माधुरी छिव छको होय नचीत ॥

॥ मलार, दादरा, सारंग ॥
जय जय शुक स्वामिनी निकुंज की निवासनी ॥
रूप की सलौनी श्रांत लोनी ललना श्रनूप,
जुगल रिसक भूप कुंज कोलि की प्रकाशनी ॥

वय किशोर भामिनी सुसेव्य कंत कामिनी, श्री राधे ग्रन गामिनी सुमंद मंद हासनी॥ रास के विलासी रस रासी संग रहत सदा,

प्रीति सिहत सेवा करत दंपति उपासनी ॥ सरस माधुरी सुजान सुनिये कथ्णा निधान, दीजे रस भक्ति दान वृन्दावन वासनी॥

॥ सोरठ, मलार, सारंग ॥

5

श्री शुक सखी नाम सुखदाई ॥

निश्चय मिले निकुंज महल सुख रिट्ये रिसक प्रीति ली लाई॥ पहुँचे जाय जुगल परिकर में दंपित ताहि लेहि अपनाई॥ सरस माधुरी छिव नित निरखे लाल लाडिली लेइ रिकाई॥

॥ भैरों, भैरवी ॥

जय जय शुक सहचरी सलीनी गुन रासी ॥ श्याम सहश्रारंग श्रंग रहत प्रिया संग संग,

1

मुदित मन उमंग रिसक राधिका उपासी ॥ राधा ग्रन गान बान राधा ही जिवन प्रान,

राधा को ध्यान संग राधिका विलासी॥ राधा मुख चंद की चकोरी निशि भोरी तुम, राधा मुसकान मंद अमृत की प्यासी॥ सरस माधुरी सुजान दीजे रस कुंज दान, जानो निज मोहि चरणदासिन की दासी॥

॥ भैरवी, सोरठ विहाग्॥

श्री शुक सखी की बालहार ॥ श्याम सुंदर श्रंग जिनको कृष्ण के उनहार ॥

श्याम सों श्यामाँ बनी तुम रिसक श्रात रिभवार। देख तुमको मुदित प्यारी करत पिय सम प्यारं।। रहत हो नित संग राधे करत केलि श्रपार।

रास रंग विलास बिलसत देत तन मन वार ॥ 'ग्रुप्त मंजु निकुंज लीला करत युग सरकार ।

तुम विना अलि और को तहां है नहीं अधिकार ॥

नेंक करुणा कर कृपा निधि दया दृष्टि निहार।

सरस रस की माधुरी को देहु नित्य विहार ॥

॥ भैरवी, सोरठ, विहाग ॥

लेवो मोहे शुक सखी अपनाय।

त्राहि त्राहि पुकार टेरत परूँ तुम्हरे पाय ॥

करो ऐसी कृपा स्वामिनि जुगल देहु मिलाय।

रहों तिनके संग नित ही सेऊँ हिय हुलसाय।।

ेतुम विना मन को मनोरथ कीन पुरवे आय। सरस दोउ कर जोर विनवत जन्म बीत्यो जाय॥

श राग सारंग दादरा व ठुमरी ॥ श्री शुक सखी भने सुख पावे।

विन सुख भजन नहीं सुख सपनें मन तू समक अंत मत जावे॥ विन सुख शरन कोट विधि कोउ कबहु न ठौर ठिकानो पावे। सुख को छाड़ चहै सुख कोऊ सब में सो नर सूढ़ कहावे॥ सुख सागर गंभीर परम शुचि तामें प्रेम सहित जो नहावे। सुख निर्मूल होत ताही छिन सुख ही सुख सब दिशि दरसावे॥ स्व:सुख बुज बनितन को जीवन तत्सुख निज निकुंज छिन छावे। सुख सों परे परत्व नहीं कुछ सद अंथन मांही कलकावे॥ सुख आधार सकत जीला रस यह रस रीति रिसक कोउ पावे॥ सुख आधार सकत जीला रस यह रस रीति रिसक कोउ पावे॥ जौिकक और अलौिकक दोऊ सब जग सुख ही को जलचावे। टहल महल सुख प्रेम प्रीति सुख परा परम सुख ही सरसावे॥ सुख सिद्धान्त सर्व पर काईयत नेति नेति कर वेदहु गावे। सरस माधुरी उज्ज्वल रस सुख श्री सतग्रह बलदेव बतावे॥

॥ राग कालंगड़ा, पीलू, वरवा ॥

जय जय श्री शुक सखी सुहावन ॥
दंपति संग रंग सों राजत जीवन मूरि जुगल मन भावन ॥
लाड़ लड़ावत लाल लड़ेती छिन छिन रहस रंग उपजावन ॥
सरस माधुरी शरन सलोनी कुंज केलि लीला द्रसावन ॥

॥ राग कालंगड़ा ॥

श्री शुक सखी परम सुखदायक।

प्रेम परा पद देत दयाकर जो जन नित प्रति रटत सुभायक ॥ मंगल करन अमंगल नाशन रितक जनन के सदा सहायक। सरस माधुरी रस प्रमोद प्रद मेटत श्रूल सकल जग मायक॥

॥ आरती ॥

आरती कर शुक चरन श्रली की। प्यारी श्यामा छैल छली की। श्यामल गौर किशोर शुभगतन नर्खाश्ख भूषन भांति भली की॥ कुंज महल बासिन सुख रासिन मुख मृदु हासिन कंज कली की। शरन चारु चिंतामाणि चिंतत मिलत मौज रस रंग रली की॥ निरखे केलि सुरित निशि बासर दंपित संपित लाल लली की। सरस माधुरी छिंव पर वारी बिलहारी बिब प्रेम पली की॥

॥ पद् ॥

श्री शुक चरन शरन जो श्राये॥ सोई सुक्रती सज्जन सर्वोपिर मुनिवर के मन भाये॥ सफल करी नर देह श्रापनी धन धन लोक कहाये॥ सरस माधुरी श्री मत दम्पति श्रपने श्रियतम् पाये॥

॥ राग रसिया ॥

तेरी सुंदर छवि सुखदाई, शुक मुनि नैनन मांहि बसाई॥

(भ्रंतरा)

श्याम वरन मन हरन तुम्हारो श्रॅग अँग सुँदर ताई।

रूप दिगंवर धारो प्यारो श्रनुपम श्राप कन्हाई॥

सीस जटा धुंघरारी कारी शोभा कही न जाई।

मुंख मयंक परिपूरन प्यारी रूप चांदनी छाई॥

नैन कमल दल नेह भरे नासाह परम सुहाई।

मंद हसन मोहत सब के मन चितवन चंचलताई॥

अज श्राजानु निरख मन हरषो नाभि परम गहराई।

श्रिवली उदर त्रिवेणी मानो किट कोपीन लगाई॥

चरण चारु चिंतामिण जैसे नख दुति दमक महाई।

सरस माधुरी के सरवस धन तिनमें सुरित समाई॥

॥ पद् ॥

j.,

(तमाशा की चाल में)

इष्ट हमारा प्यारा श्राप छो शुकदेव मुनीश्वर ।
इष्ट हमारा प्यारा प्रभुजी श्रमरलोक से श्राया।
वेद्व्यास घर प्रगट हुश्रा जी श्राचारज कहलाया।
ब्रह्मरूप व्यापक हो सारे तुम्हें न व्यापी माया जी ॥शुकः॥
नृपति परीचित मुक्त कियो तुम तक्तक त्रास मिटाई।
सात दिवस भागवत सुनाकर दियो हरिधाम पठाई।
हो सर्वज्ञ नियंता सब के महिमा जग में छाई जी ॥शुकः॥

श्याम चरण के दास शिष्य कर भगवत धर्म चलाया।
किलियुग में हिर भिक्त प्रचारी सतयुग कर दरसाया।
ज्ञान उदय कियो भान श्रापने सोवत जक्त जगाया जी।।शुकः॥
महा मुनीश्वर जक्त गुरु तुम रिसकन के सरताज।
ऋषियन में हो परम ऋषिश्वर मंडन संत समाज।
भक्तन के मन भावन हो तुम भगवत धर्म जहाज जी॥शुकः॥
जो जन जग में प्रेम प्रीत कर तुमरो ध्यान लगावें।
नाम जपें निश वासर मुख से जुगल जिन्हें श्रपनावें।
सरस माधुरी शरण तुम्हारी सेवा महल की पावें जी॥शुकः॥

॥ पद् ॥

स्वयम् श्री कृष्ण शुक मुनि हो आचारज जग कहाये हैं॥
परम उज्ज्वल जुगल रस कुंज का रासिकों को लाये हैं॥
पिलावें भागवत अमृत परीचित को कृपा कर के।
प्रचारन प्रेम की महिमां प्रभू भूतल में आये हैं॥
उपासन नाम लीला धाम अह हरि रूप की दे के।
श्रासन में आये हैं जो जन उन्हें दम्पति मिलाये हैं॥
सुनाके भागवत सब को पतित पावन करें अनिगन।
द्या कर के अधम अति ही परम पद में पठाये हैं॥
यशोदा नंद गोपी खाल सँग गोपाल प्यारे नें।
चरित्र जग में किये जितने उन्हें गा के सुनाये हैं॥

सनातन धर्म भगवत का प्रगट सूरज किया स्वामी।
पड़े सोते अविद्या में जिन्हें हित कर जगाये हैं॥
लगन जीवन जुगल में जो मगन द्रश्न के अभिलाषी।
उपासी श्याम श्यामा के सरस छिव में छकाये हैं॥

॥ पद् ॥

श्राचारज श्री शुकदेव हमारे।
स्वयम् कृष्ण करुणा के सागर वेदव्यास के वारे॥
रामानुज निम्बारक माधव विष्णु स्वामि वपु धारे।
एक सों होत श्रनेक रूप प्रभु भगवत धर्म प्रचारे॥
श्रुति पुराण किव कोविद जिनकी महिमा वरनत हारे।
सरस माधुरी सब में व्यापक श्रुरु सवहिन से न्यारे॥

॥ पद् ॥

श्री शुक स्वयम् कृष्णा सुख रासी। आचारज हो अवनि अवतरे अमरलोक के बासी॥ सुन्दर श्याम काम सद मोचन साया जिनकी दासी। सरस माधुरी महा मधुर रस देत निकुंज बिलासी॥

॥ पद् ॥

जै जै शुक मुनी सन हरन।
पतित पावन दुख नशावन अधम जन उद्धरन॥
श्याम अंग अनंग छिव हर कृष्ण के से वरन।
रासेक जन मन मोद कारी कुंज रस हिय भरन॥
भक्त त्राता प्रेम दाता दंद संकट दरन।
सरस श्री दंपित मिलावें रखें अपनी श्ररन॥

॥ राग सोरठ ॥

शुक मुनि मूरति की वलिहारी सांवरी सुंदर सूरत प्यारी॥ शरद चंद मुख मदन मनोहर सीस जटा घुंघरारी। नैंन विशाल प्रेम मद्माते संद हँसन पर वारी॥ लित कपोल गोल श्रति लौंने श्रलकें छुट रहि कारी। श्रवन नातिका है त्रित नीकी चित्त चुरावन हारी॥ कंबु कंठ उन्नत वच्चस्थल त्रिवली उद्र मँभारी। कृसि कटि केहरि मान विमर्दन जंघा श्रधिक सुढारी॥ पिंडली परम पुनीत सुहावन गोल गुल्फ़ रुचिकारी। चरगा श्ररुण पंकज से शोभित मन मधुकर सुखकारी ॥ श्याम सुअंग श्रनंग लजावन रूप राशि छवि भारी। जो जन ध्यान धरें उर अंतर पावें प्रेम श्रपारी॥ नख शिख सोहन विश्व विमोहन रिसकन प्राण प्रधारी। सुर नर मुनि जन छके निरख छवि शोभा अपरंपारी॥ जन्म समय श्राये दरशन को पारवती त्रिपुरारी। श्री नारद नांचे रंग राचे वीना निज कर धारी ॥ इन्द्र श्रप्तरा गन सँग लेके नृत्य कियो मनहारी। श्री गंगा ग्रुक थान न्हवाये ले जल कंचन भारी॥ कल्पवृत्त के सुमन सुगंधित पवन देव तिहँवारी। वर्षाये हरषाये मन में धन निज भाग विचारी॥ ٠,٠,٠

स्वयं कृष्ण श्राचार्य रूप हो श्राये श्रवित मँभारी। प्रेम भक्ति के दान करन को प्रगट जग हितकारी॥ देवें वास निकुंज महल में जहां श्री जुगल विहारी। रास विलास होत जहां नित ही शरद वसंत वहारी॥ दीजे दान प्रान पित मोकों मांगूं गोद पसारी। सरस माधुरी छके जुगल छवि रहे प्रेम मतवारी॥

॥ गुजल ॥

श्री शुक मुनी मिलने की श्रारज़ू हैं॥ लखूं बांकी भांकी यही जुस्तज़ू हैं॥१॥

श्री कृष्ण श्रोतार श्राचार्य धारा।
नहीं ऐसा कोई सनम खूवरू है॥२॥
हमारे हैं स्वामी मददगार हामी।
करें पार वेड़ा इन्हीं में ये खू है॥३॥

इन्हीं पे ही विश्वास सचा हमारा।

इन्हीं की तरफ दिल हमारा रजू है ॥४॥ मिलावें सरस हमको दंपति द्या निधि।

यही इनकी महिमां प्रगट चारस् है ॥५॥

॥ पद् ॥ (रसिया की चाल में)

शुक मुनि श्रमरलोक तें श्राये स्वामिनि श्यामां श्राप पठाये।

श्राचारज घर रूप श्राप हिर श्रपने दरस दिखाये। रस निकुंज रिसकन देने को रिसया सँग निज लाये॥ वेदव्यास भगवान जगत गुरु तिनके कुँवर कहाये।

वयस किशोर श्याम सुंदर वपु निरख श्रनंग लजाये ॥ श्रितशय सोहन विश्व विमोहन रिसकन के मन भाये।

थिर चर सकल लोक में व्यापक सबमें सहज समाये॥ सुर नर संत महंत मगन मन दरशन कर हरषाये। सरस माधुरी रिसक शिरोमणि जिनके ग्रण मुख गाये॥

॥ राग भैरवी तथा सोरठ॥

जग में भगवत की भक्ती को प्रगटा दिया शुक मुनि प्यारे नें। संसार में धर्म सनातन को फैला दिया शुक मुनि प्यारे नें॥ ॥ अंतरा॥

ऐसे रसीले के वारी विलहारी मैं वारंवारी।
दरशन उस कृष्ण कन्हैया का करवा दिया ग्रुक मुनि प्यारे नें॥
सताह सुनाकर श्री हरि की गोकुल के वसैया गिरधर की।
किया जीवन मुक्त परीचित को करुणां कर ग्रुक मुनि प्यारे नें॥
प्रेमा भक्ती प्रभु को प्यारी बसमें जिसके श्री बनवारी।
सब साधन त्याग करो इसको समभा दिया शुक मुनि प्यारे नें।
किल नाम कीरतन श्रुति सारा इसही के किये हो भव पारा।
भगवत मिलने का यह मारग दरसा दिया शुक मुनि प्यारे नें॥
हो कृष्ण श्रनंन्य भजे जोई नरनारी होवे जो कोई।
पापी श्रधमी पावन होई यह गा दिया शुक मुनि प्यारे नें॥

इक प्रेम प्रभू को है प्यारा इसके वस हो लें श्रवतारा। रेचा करें श्रपने भक्तों की फ़रमा दिया शुक्र मुनि प्यारे नें॥ जय बोलो व्यास दुलारे की मुनिराज प्रेम मतवारे की। सीधा रस्ता श्रमरापुर का वतला दिया शुक्र मुनि प्यारे नें॥ कहै सरस माधुरी चरण शरण मुनिराज महा प्रभु मनके हरन। पोंहचा दिया दंपति परि कर में श्री शुक्रमुनि व्यास दुलारे नें॥

॥ राग गजल॥

श्री कृष्ण श्याम छुंदर रिलकों का प्रागा प्यारा।

उसही ने ज्यास के घर श्राचार्य रूप धारा॥
जोगी जन जिसको घ्यावें ज्ञानी न पार पावें।
वेदों ने नेति नेती उसही को कह पुकारा॥
जव ही हो धर्म हानी दुख पावें विश्व प्रानी।
सिरयाद श्रपनी विगड़ी उसही को श्रा सँवारा॥
ग्रन हैं श्रनंत जिसमें माया है जिसके वसमें।
लीला श्रनेक उसकी जिसका न वार पारा॥
श्रनगिन श्रोतार धारे भक्तों के दुख निवारे।
दासों से श्रपने दम भर होता नहीं है न्यारा॥
निज प्रेम की प्रशंसा जग में प्रगट करन को।

मुनिराज वनके वोही भृतल में खुद पधारा॥ शुकदेव सर्व व्यापी तेजस्वी हैं अतापी। चरनदास को दरस दे किया शिष्यं जग उजारा॥

है इष्ट मिष्ट सोहन रित काम मन विमोहन। सरस माधुरी को इनके चरणों का है सहारा॥

॥ पद् ॥

(तर्ज मनड़ो मोह लियो छै म्हारो)

थारा श्याम वरण पर वारी शुक्रमुनिदासी छूमैं थारी॥

क्रपा करके दुरशन देवो, मानो विनय हमारी । हाथ पकड़ कर रास दिखावो, थे छो रास बिहारी॥ में नोकर चरणारो थारो, थे छो भक्त उधारी। चरण दास को शिष्य कियो है, पूरे हो श्रवतारी ॥ भवसागर से पार लगावो, नाव पड़ी मभधारी। गुरू गोविंद हो श्राप हमारे, सांचे कृष्ण मुरारी ॥ गल में हार फूलन को सोहे, सूरत लागे प्यारी। वेदब्यास के लाल कहावो, तुम दीनन हितकारी ॥ सिंहासन पर आप विराजो, चितवन की छवि न्यारी। स्वर्ग लोक से गंगा त्राई, दरशन खातिर थारी॥ घूंघर वाले केस जो भलके, जैसे नागिन कारी। द्वादश तिलक अंग में सोहें, श्रासन की बलिहारी॥ श्राचारज श्रवतार लियो है, महिमा अपरंपारी। सरस माधुरी शरण तुम्हारी, किरपा करो सुखकारी॥

॥ पद् ॥

(तमाशे की चाल में)

श्रजी हांजी सुमरूँ श्री शुकदेव द्याल,श्रीमत वेद्व्यास के लाख।
रयाम वरन सुन्दर तन जिनको सिर घुंघरारे वाल।
तिलक भाल नैंना रतनारे नासा वनी सुढाल॥
मंद हँसन मुख मनमोहन है कंबु कंठ गल माल।
वत्तस्थल उन्नत श्रति नीको भुज श्राजानु विशाल॥
इस कटि प्रश्रुनितंब है श्रद्भुत पिंडली कदली मिसाल।
चरण कमल कोमल श्ररुणारे लख नाशत जग जाल॥
श्राचारज हो प्रगट भये हिर संतन के प्रतिपाल।
सरस माधुरी नख शिख शोभा निरखत भई निहाल॥

॥ पद् ॥

परम शुचि श्री शुक मुनि को नाम।
जाहि जपत जिय के हिय माहीं श्रावत श्यामाँ श्याम॥
श्रनुभव होत श्रलौकिक श्रानँद कुंज केलि श्रभिराम।
सरस माधुरी रस में मन यह मगन रहत निसि जाम॥

॥ पद् ॥

जिन्होंने श्री शुक तत्व पिछानों ॥ तिन सों श्रुति सिद्धान्त सार रस रह्यो नहीं कुछ छानों ॥ उज्जल रस विहार दम्पति को निश्चय कर जिन जानों ॥ सरस माधुरी रूप छटा में निस दिन रहत छकानों ॥

॥ पद् ॥

जो जन श्री शुक के गुन गावे।। ताहि प्रिया प्रीतम ताही छिन श्रपनो कर श्रपनावे॥ श्रपनी गौर श्याम सुंदर छवि ताके दृगन बसावे॥ सरस माधुरी प्रेम सिंधु में मन नित गोता खावे॥॥

॥ पद् ॥

जो जन शुक मुनि ध्यान घरें। किल कलेश मन के मल तिनके छिनमें सकल हरें। श्राय विराजें जुगल हिये में टारे नाँहि टरें। सरसमाधुरी श्राश्रित जनकी सदा सहाय करें॥

॥ पद् ॥

नाम शुक मुनि सर्वस धन पायो। सुमरत श्यामा श्याम परम धन हृद्य प्रगट है श्रायो॥ परमानंद प्रेम परि पूरन रोंम रोंम में छायो। सरस माधुरी महा मधुर रस पीवत नांहि श्रघायो॥

॥ पद्॥

संलोंनो लागे शुक मुनि प्यारो री वेदव्यास को वारो री ॥ धुंद्रश्याम कमल दल लोचन पतित,जनन के पाप विमोचन। जग उद्धारन हार जीवन धन प्रान हमारो री ॥ स्वयं कृष्ण करुणा निधि श्राये श्राचारज श्रवतार धराये।
तारन तरन कहाय करें जग को निस्तारों री॥
किलयुग में सतयुग विस्तारें, श्रामित जीव जग के उद्धारें॥
भगवत धर्म प्रचारें सोई निज नयन निहारों री॥
नव निकुंज की लीला गावें, प्रेमामृत रिसकन को प्यावें।
छिव युग माहि इकावें ये ही निश्चय उर धारों री॥
जो जन शुक मुनिष्यान लगावें,जग वंधन दिन में छुट जावें।
जनम मरन छुट जावें जिन्हों पै तन मन धन वारों री॥
परम धाम परिकर पद पावें,नित नव श्यामा श्याम लड़ावें।
सरस माधुरी महा प्रभु को इष्ट सँभारों री॥

॥ पद् ॥

श्री शुक देव सुजस जग छायो।
योग यज्ञ तीरथ त्रत संयम सव को सार प्रेम द्रसायो॥
नाम धाम लीला सरूप गुन कृपा दृष्टि कर सवन सुनायो।
वृज वृन्दावन श्री जमुना जस रज रानी को रूप लखायो।
वरनन कियो श्रनूप महातम जिनको गायो सविहन गायो॥
श्राचारज सिरमोर महा प्रभु संतन रिसकन के मन भायो॥
श्रुक मुखकथित कथा श्रवन कर नृपित परीचित हरि पद पायो।
सरस माधुरी के मन माहीं शुक को रूप श्रनूप समायो॥

॥ पद् ॥

नमो नमो शुक मुनि सुख रासी॥ कुंज विहारी के सर्वस धन नित्त निरंतर विषिन विलासी॥ श्री भागवतसार निगमागम गुप्त केलि कल कुंज प्रकासी॥ सरसः माधुरी चरगा रजाश्रित पाये श्री दंपति श्रनयासी॥

॥ पद् ॥

श्री शुकदेव सर्व पर माने ॥
समसंपर जो केलि कुंजरस तिन की कृपा विन कोइ न जाने ॥
श्री सुख मई सकल लीला रस रिसक गुप्त यह रीति पिछाने ।
जेते भये रिसक श्रक श्रवह श्रागेह सुख सर्व प्रमाने ॥
निज निज वानी में सुख ही को श्राखादन कर सब तुप्ताने ।
जिन निह समभो तत्व सार सुख सो जग में नित भर्म मुलाने ॥
श्री शुक्र सरण सकल सुख सुछम दुर्लभ जिन्हें जो श्रीर बखाने ।
सरस माधुरी रस दंपति को सुख कहि भापत सकल सयाने ॥

॥ पद् ॥

हमतो सुख में मगन रहत हैं॥

सुख को मृल विहार जुगल को ताको तज नहीं और गहतहें॥
सुख प्रधार विविधि लीला रस श्रुति पुरागा प्रक वेद कहत हैं॥
सरस माधुरी उज्वल सुख रस ताही को चित माहि चहत हैं॥

॥ पद् ॥

श्री शुक्तंत्र सहष्ट हमारे ॥

माया काल कर्म त्रिग्रण तज रहत सक्रनतों न्यारे ॥

सुख निकुंज श्रास्त्रादन करि के रहें सदा मत्रवारे ।

होक रहें हिंदी गीर श्याम में जुनल रूप उर अंतर घारे ॥

तनजन में मन रहत महल में मीज लखे निम लॉन स्वारे ।

राथे कृप्ण रहे रसना सो प्रण श्रनत्य निम रहत मंगरे ॥

सेवें सुकर सदा दंपित को भुक्ति सुक्ति पढ़ सकल विसारे ।

सरस माधुरी जुनल विहारी जीवन श्राण नयन के नारे ॥

॥ पढ़ ॥

हं शुक सकल सुखन को सार।

जाको अनुसद भई अन्म दिन समको निश्चय निरंथार॥
श्री बुल्हादन सदा सुल मई श्री जमुना सुछ रूप निहार।
लता पता तर देखि सुछ मई सुखमय कृंज महर्ल आगार॥
सुख सय सकल सहर्ली अलियन सुछ सय करत परस्पर प्यार।
सुख सय महल महा मन भावन कंचन रख जटित वर चार॥
सुख सय शितल संद सुर्गधित सुग अन हारी वहन वयार॥
सुख सय शितल संद सुर्गधित सुग अन हारी वहन वयार॥
सुख सय गति वसंत चार वन कुससित सोरभ सुखद वहार।
सुख सय गान तान धुनि छाई गावत एन दुन खुग अली उदार॥

सुख मई सरस विहारन राधे सुख मई दंपति करत विहार।
श्रालिंगन चुंबन परिरंभन सुख मइ कटि किंकिन भुनकार॥
सुख मय सेज जान रँग भीनी विलसत भरत विबस अंकवार।
सुख मइ सोंज सकल सुंदर श्रात सेवत लिये सहचरी नार॥
सुख मई रास विलास होत नित सुख मई नृत्त करत सुकुमार।
सुख उज्वल कल केलि केलि दोउ तृप्त न मानत हिये मँकार॥
सुख बेलिन बतरान सुख भरी करत रहत दिन प्रति सरकार।
तत् सुख स्वसुख बृजसुख श्रादिक सुखकेरूप सुविविधि प्रकार॥
सुखही सुख दसहू दिशि पूरन वरनो कहा सकल विस्तार।
सरस माधुरी पूर रह्यो सुख ताको श्रादि मध्य नहि पार॥

॥ पद् ॥

वेद व्याल के छुंवर शुक मुनि तिन के चरण शरण जो आवें।।

राधे प्यारी रासिक विहारी तिन को तत् छिन ही अपनावें।

दया दृष्टि कर निज परिकर में रंग महल के निकट बसावें।।

सरस माधुरी उज्वल रस में सगन रहें दंपति गुन गावें।।

॥ पद् ॥

सर्वस धन शुकदेव हमारे॥

सुख निकुंज को जो सर्वोपर देत दया कर प्रान पियारे॥ सहचीर बपुहें सेवत अनु दिन दंपति प्रेम मगन मतवारे। सरस माधुरी श्रागा चरगा की निराखि नयन छावितन मन वारे॥

॥ पद् ॥

जय शुक देव व्यास के नंदन ॥

रंग महल की लीला गाई रासिक जनन की चित की चंदन ॥ दंपति रूप रँगीले रिसया रस निधान आनंद के कंदन ॥ सरस माधुरी रस के दाता देाउ कर जार करत पद वंदन ॥

॥ पद् ॥

जो शुक मुनि नांही प्रगटातो ।

तो फिर कौन भागवत रस की सरिता त्रिभुवन मांहि वहातो ॥ प्रान बहाभा बुज गोपिन की प्रेम कथा को को अस गातो। बुन्दावन की सहज माधुरी ताकी महिमाँ कवन सुनातो॥ परा भक्ति पथ अगम अगोचर ताको मारग कोन वतातो। रंग महत्त की टहत सहत ही रिसक सहज कोऊ नहीं पाती।। परम द्यालु दीन हितकारी दंपति जस कह को दुलरातो। सरस माधुरी जुगल चरण की शरण सुखद में कोउ न आतो॥

॥ राग विहाग ॥ भरोसो श्री शुक मुनि को भारी। जिनको नाम सकल सुख की निधि सब विधि मंगल कारी ॥ चरन चाह नख चंद्र चंद्रिका भावक हिये तम हारी। दरशें सहज सलौने दंपति राधा सरस बिहारी॥ अतु बित कुपा करत निज जन पर भाव भाक्ने दातारी। सरस माधुरी सेव कुंज की कृपा करो बितहारी ॥

Paris,

॥ राग कर्हरवा, विहाग ॥

हम सरनो गह्यो शुक चरन को ॥
संशय शोक सकल त्यागे हैं भय नहीं जीवन मरन को ॥
श्याम सरूप सिचदानंद घन ध्यान सकल दुख हरन को ।
जीवन मुक्ति करत निज जन को डर नाहीं जग तरन को ॥
शुक मुख रटें कटें सब संकट नाम श्रधम उद्धरन को ।
सरस माधुरी मूरित मुनिवर श्रानंद मंगल करन को ॥

. ॥ राग विहाग ॥

श्री शुक मुनि तुमसे तुमही खामी ॥

श्याम चरन के दास द्यानिधि तिनके ग्रुरु सरनामी ॥

रिसक राज महाराजमहा प्रभो सब उर श्रंतर यामी ।

जीवन की त्रय ताप नशावन दरशावन निजधामी ॥

छके रहत दंपित छिव निधि में श्रित श्रनन्य निष्कामी ।

सरस माधुरी शरन कमल पद करत श्रनंत नमामी ॥
॥ घद ॥

श्री शुकदेव रिसक सिर मौर।

भयो नही श्रव है नहिं कोऊ श्रागे कोउ न है है और ॥ गायो श्रीभागवत कृपा कर दरशाये दोउ श्यामल गौर । शुद्ध प्रेम श्रमृत उमगायो प्यायो रस मय भक्तन घोर ॥ नृपति परीत्तत कियो परायण पहुँचायो परधास सुठार । सुन सुन श्रवण नारि नर जग के करत भक्ति दंपति निश भीर॥ परा परम पद मारग प्रगटो नस्यो अंध तम कलि मल घोर। सरस माधुरी चरण चारु युग वंदत दाउ कर जोर निहोर ॥

॥ पद् ॥

श्री शुकदेव तत्व जिन जान्यो। सारको सारसकल सुखको सुख जुगलिवहारी निजधन मान्यो॥ श्रीदम्पति रसिकन की संपति तिनको सुजस वितान सुतान्यो। ताही के वल गायो सबहुन रस विहार बहु भाँति वखान्यो॥ श्रुति सिद्धान्त सकल पर सोई दरसायो रसिकन पहिचान्यो। सरस माधुरी सुलभ सबन कूँ कुंज केलि रस यह उर श्रान्यो॥

॥ पद ॥

श्री भागवत सार जिन पायो।

सोई सुक्रती सोई सकल शिरोमिश ता मांही जो रहत समायो॥ जाने जान लियो या रस कूँ और ठोर नांही भटकायो। पीयो प्रेम जुगल रस श्रद्भुत गोर श्याम छिन मांहि छकायो॥ नाना भेद भाव मत मारग तिनको तत छिन ही छिटकायो। सरस माधुरी रस चसकन को चरण शरण शुक्र मुनि की श्रायो॥

॥ पद् ॥

जय जय श्री शुकदेव कृष्ण अवतार हो ॥ श्री मत वेद्व्यास सुवन सुकुमार हो ॥ .नव किशोर चितचोर श्याम सुंदर महा॥ नखशिख रूप श्रन्य सुछविकहिये कहा॥

॥ छन्द् ॥

कहा किहये छिव सु अंगन मुख मयंक सुहावनो।
प्रभा पूरन रही चहुं दिशि रिसक जन मन भावनो॥
वार घुंघरारे सिचक्कन दीन जन उद्धार हो।
जय जय श्री शुकदेव कृष्ण श्रवतार हो॥
जय जय श्री शुकदेव सुखांबुज सोहनो।
उद्धित लिलत ललाट तिलक मन मोहनो॥
भकुटी काम कमान श्याम श्रलकावली॥
विवाधर वर वीच दिव्य दसनावली॥

॥ छन्द् ॥

दिव्य दसनावली सुशोभित मंद मुसकिन मोहनी ॥
चिंबुक चारु सुदार सुंदर श्रीव श्रद्भुत सोहनी ॥
किलत शुगल कपोल प्यारे तिन्हें नित प्रति जोहनो ॥
जय जय श्री शुकदेव मुखांबुज सोहनो ॥
जय जय श्री शुकदेव मनोहर गात हो ॥
वत्तस्थल सुअन्प रूप सरसात हो ॥
उदर श्रपूरव वीच लिलत त्रिवली वनी ॥
किट केहिर सम तूल नाभि शुभ सोहनी ॥
॥ इन्द ॥
सोहनी शुभ नाभि भुज श्राजानु श्रिथक सुढार हैं ॥

हस्त कमल सुचारु पिंडली जंघ जन मनहार हैं।।
चरण पंकज परम कोमल स्वजन सिर परसात हो।।
जय जय श्री शुकदेव मनोहर गात हो।।
जय जय श्री शुकदेव सुजन प्रतिपाल हो।।
देत तुरत द्रशाय लाडली लाल हो।।
प्रेम परायन करत घरत कर शीश हो।।
महिमा श्रतुल प्रताप सुनिन में ईश हो।।

॥ छन्द् ॥

ईश हो सब मुनिन में तृप परिज्ञित को तारिया।।

दया करके श्रमित जिय संसार सों उद्घारिया।।

शरन ले निज चरन ताको करत वेग निहाल हो।।

जय जय श्री शुकदेव सुजन प्रतिपाल हो॥

जय जय श्री शुकदेव छके रस माधुरी॥

जुगल ध्यान गलतान रूप छवि हिय धरी॥

जुगल नाम श्ररु धाम रूप लीला घनी॥

रस निकुंज की केलि विविधि भाँतिन भनी।।

॥ छन्द् ॥

भली विधि भाँतिन भनी हो मुकुट मिण श्रालि महल में॥ प्रान सों प्यारे युगल की रहत तत्पर टहल में॥ शुकाचारज है चरन के दास पर कृपा करी।।

100

जय जय श्री शुकदेव जुगलवर धन धनी ॥ नित दुलरावत दंपति दूलह दुलहनी ॥ दिन प्रति व्याह उछाह निकुंजन करत हो ॥ श्री लिलतादिक संग रंग उर भरत हो ॥

॥ छन्द् ॥

भरत हो उर रंग नित प्रति संग् युग वर के रहो॥ वाक्य रसमय सुरुचिकारी केलि वर्धन के कहो॥ रीभि के उर हार श्रपनी करत तुम्हें राधे बनी॥ जय जय श्री शुकदेव जुगल वर धन धनी॥ जय जय श्री शुकदेव दयाल उदार हो॥ इष्ट मिष्ट श्रभिराम प्राग् श्राधार हो॥ एक श्रास विश्वास श्रापकी दृढ गही॥ देहो निकट निकास भई निश्रय यही॥

॥ छन्द् ॥

भई निश्चे यही हिय में करुणा सागर ढरोगे॥ जान श्रपनी ख़ास श्रनुचरि विरह दुख को हरोगे॥ सरस माधुरी शरण श्राई कृपा दृष्टि निहार हो॥ जय जय श्री शुकदेव द्याल उदार हो॥

शुक मुनि राज शरन तेरी श्रायो ।
शुक मुनि राज शरन तेरी श्रायो ।
मोकों गति नहिं श्रान प्रान पति जानो चाकर घर को जायो ॥

द्वापर अंत श्रादि किलयुग के नृपति परीचित शाप लगायो।
तक्तक त्रास मिटाय श्राय तुम ताहि श्रभय पद में पहुंचायो॥
चरनदास महाराज शिज्य कर श्राचारज ग्रुरुदेव वनायो।
प्रगट करी तिन श्राप संप्रदा सुजस सकल जग मांही छायो॥
मैं हूँ निज दासन को दासा कैसें नाथ मोहि विसरायो।
शरणागत रक्तक जन पालक विरद रावरो रिसकन गायो॥
दीजे प्रेम मंक्ति दंपित की करिये करुणा निधि मन भायो।
सरस माधुरी जोर दोउ कर चरन कमल में शीश नवायो॥

॥ राग रेखता, भैरवी, पीलू वरवा ॥

श्रुकदेव जी मेरी जुगल को कब सुनावोगे।

महर करके कभी सुभ पर दरश उनका करावोगे॥

मैं गंदा श्रापका बंदा बहुत मन में हूं शरिमन्दा।

सुनो श्री व्यास के नंदा श्रथमता पर न जावोगे॥

पड़ी गल में करम फांसी सहै दुख नर्क चौरासी।

दया करके दया सिंधो दुसह दुख से छुड़ावोगे॥

बनी नेकी नहीं कोई बदी में उम्र सब खोई।

भला हूं या बुरा जेसा जिसे तुम ही निभावोगे॥

सहे संकट विकट भारी लगाये संग सुत नारी।

पड़ी है सरुत दुशवारी सुभे इससे बचावोगे॥

पिला कर प्रेम का प्याला करो मुनि राज मतवाला।
किशोरी नंद का लाला मुभे जल्दी दिखाबोगे॥
दुखी हो बिन मिले दंपित करो यह कन कृपा संपित।
द्या करके कहो मुखसें महल में कब बुलावोगे॥
विरह ने मुभको श्रित मारा जिगर है जिससे सद्पारा।
बहै नैंनों से जलधारा महर मरहम लगावोगे॥
मेरे श्रवगुन न चित धारो पितत पावन विरद पारो।
श्रथम हूँ सबसे मैं भारो मेरे पातक नसाबोगे॥
परीचित राज निस्तारा किया भव सिंधु से पारा।
करो मेरा भी उद्धारा श्रभय पद में वसाबोगे॥
सरस यह माधुरी श्रासी जुगल दरशन की है प्यासी।
सुनो मुनिराज रस रासी चरन दासी बनावोगे॥

॥ राग सारंग, पीलू वरवा ॥

शुक मुनि तुमरी शरण गही जू।

श्रान भरोसो त्याग दियो है , एक रावरी होय रही जू॥

सब गुण हीन मलीन दीन में, या में संशय नेंक नही जू॥

कर गहि पार उतारो प्यारे , भव सागर में जात बही जू॥

फँसी श्राय करमन के फंदे , महा विपति ने मोहि दही जू॥

श्राधम उधारन विरद श्रापनो , स्वामी मेरे करो सही जू॥

बुरी भली तेरी मैं चेरी , विनती सकल पुकार कही जू॥

सरस माधुरी सेव युगल पद , कहूँ दया निधि देहु यही जू॥

॥ पद् ॥

श्री शुकदेव सुइष्ट हमारे॥

साया काल कर्स त्रिग्रण तज रहत सवनलीं न्यारे॥

सुख निकुंज श्रास्त्रादन किर के रहें सदा मतवारे।

हके रहें छिव गौर श्याम में जुगल रूप उर अंतर धारे॥

तनजग में मन रहत महल में मीज लखे नित लॉक सवारे।

राधे कृष्ण रहे रसना सों प्रण श्रनन्य नित रहत सँभारे॥

सेवें सुकर सदा दंपित को भुक्ति मुक्ति पद सकल विसारे।

सरस माधुरी जुगल विहारी जीवन प्राण नयन के तारे॥

॥ पद् ॥

है गुक सकल सुखन को सार।

जाको अनुभव भई अन्पम तिन समभो निश्चय निरधार ॥
श्री वृन्दावन सदा सुख मई श्री जमुना सुख रूप निहार ।
लता पता तरु वेलि सुख मई सुखमय कुंज महल श्रागांर ॥
सुख मय सकल सहेली श्रीलगन सुख मय करत परस्पर प्यार ।
सुख मय महल महा मन भावन कंचन रत्न जिटत वर चार ॥
सुख मय पंछी विविधि मनोहर सुख सय मृंग करत गुंजार ।
सुख मय शीतल मंद सुगंधित जुग श्रम हारी वहत वयार ॥
सुख मय रहत वसंत वाग वन कुसमित सौरभ सुखद वहार ।
सुख मय गान तान धुनि छाई गावत गुन युग श्रली उदार ॥

॥ राग भैरों परभाती ॥

प्रात समय श्री व्यास सुवन को नाम प्रेम युत रसना लीजे है। सुख आनंद सो गुनो पइयत अशुभ अमंगल तत छिन छीजे। लोकिक अरु परलोकिक कारज होत सिद्ध यह निश्चय कीजे। सरस माधुरी शुकाचार्य जप निश दिन यह रस अमृत पीजें।

॥ राग विहाग ॥

प्रीति रीति जाही सों करिये जिन श्री शुकमुनि कों पहिचान्यों। स्वयं कृष्ण अवतरे अवनि पर परीचित मिस भागोत बखान्यों॥ प्रेमामृत की सरित बहाई रिसकन पियो भाग्य भल जान्यों। छक्तन छके दंपित की छिव में मन माधिर मूरित उरकान्यों॥ उज्जवल रस गायो श्री मुख तें बुज भक्तन को यश प्रगटान्यों। सरस माधिरी सुहृद हमारो जाको मुनिवर सों मन मान्यों॥

॥ राग विहाग ॥

श्री मत वेद्व्यास को नंदन श्री मुनिवर शुकदेवन गायो।
श्री भागवत सुनी निह श्रवनन वृथा जन्म जग में तिन पायो॥
सेये निह श्री दंपित निज कर विषय विकारन मांहि लुभायो।
बस्यो निहं श्री बृंदावन में सत संगति में मन न लगायो॥
ध्यान मानसी कियो न कपटी पर तिय परधन को ललचायो।
सरस माधुरी महा मूढ नर नरतन रतन श्रमोल गुमायो॥

॥ राग विहाग ॥

परम द्याल व्यास के नंदन श्री शुकदेव सुइष्ट हमारे। श्राणागत रक्तक करूणा निधि भवतें जीव अनंत उधारे॥ श्री भागवत प्रगट कर प्रभुजी किलमल दूर किये दुख टारे। प्रेस पंथ के भये प्रवर्तक रिसक जनन के प्राण अधारे॥ वृज वृन्दावन नव निकुंज रस सवको सुलभ कियो सुख प्यारे। सरस साधुरी जुगल मिलाये निरिख नयन तन मन धन वारे॥

॥ सोरठ, विहाग ॥

भज मन भाव कर शुकदेव।
कोटि कर्म कलेश टारत चरन तिनके सेव॥
श्यास सुन्दर रूप अद्भुत ध्यान हिय धर लेव।
सरस सहजहि श्याम श्यामाँ मिलें हाँसि कर हेव॥

॥ राग विहाग ॥ महा प्रभु श्री शुकदेव द्याल ।

श्राणागत को देत अभय पद पल में करत निहाल ॥
मेटत कृपा दृष्टि कर अकरम अक लिखे जिन भाल ।
उदय करत शुभ अमित जन्म के ऐसे परम कृपाल ॥
निज जन जान मान अपने कर सदा करत प्रतिपाल वास देत वृन्दावन कुंजन जहां लाड़ली लाल ॥
सेवा सोंपत रंग महल की सहचिर रूप रसाल ।
सरस माधुरी मांहि छकावत देत विरह दुख टाल ॥

॥ सोरठ विहाग ॥

सवतें श्री शुक्रमुनि नाम सलोनों। जैसें सर्व धातु में उत्तम मानत हैं वड़ सोनों॥ ज्यों सरितन में गंग शिरोमिशा दूजो जल निहं होनों। सरस माधुरी रटो रैंन दिन वृथा स्वास निहं खोनों॥

॥ राग चरचरी ॥

श्री मत शुकदेव शरण श्रतुलित सुख पावे॥ हिय में नित धरत ध्यान, दरशें दंपित सु श्रान। रसना ग्रन गान करत प्रेम में समावे॥ इन ही की राख श्रास, रहिये इन ही को दास। वृन्दावन वास पाय जुगल को लड़ावे॥ सरस माधुरी निंकुज, श्रित ही श्रानंद पुंज। नित विहार नैंन लखे रूप में छकावे॥

॥ राग विहाग, भैरवी, ठुमरी, खम्माच, सोरठ॥

महा प्रभु श्री शुकदेव उदार। श्रीमत वेदव्यास के नंदन जग वंदन सुकुमार॥ स्वयम् प्रगट पुरुषोत्तम द्वापर भये सुनंद कुमार। वज्ज लीला कीनी रङ्ग भीनी रसिकन प्रान अधार॥

पुनि श्रवतरे श्राचारज है के मुनिवर को वपुधार । प्रेम परा विस्तारन सारग निस्तारन संसार ॥ व्रज ललना व्रज मृमि सहातम वरन्यो विविधि प्रकार । परम तत्व सिद्धांत सर्व पर कह्यो श्रुतिन को सार ॥ शरनागत पालक जन रज्ञक अधम उधारन हार । सिर कर धरत हरत दुख संख्वित कृपा सुदृष्टि निहार ॥ इनको विसरि भजे श्रोरन को सो नर विना विचार । सरस माधुरी इष्ट हमारे अहिंमा श्रपरंपार ॥

॥ पद राग कल्यान तथा कालंगडा ॥

कृपा सिंधु श्री व्यास सुवन वर ।
श्री शुकदेव द्याल महा प्रभु श्रभय करत कर कमल शीश धर॥
देत सोंप श्री सेवा दंपित राखत शरण श्रापनें निज कर ।
प्रेम परायण करत दास को रस निकुंज देवें हिय में भर॥
दरशावें श्री युगल विहारी विरह वियोग लेत किन में हर ।
सरस माधुरी चरण रजाश्रित रहत न काल कमें ग्रण को डर॥

॥ चरचरी धुर पद ॥

श्री मत शुकमुनि दयाल श्याम रूप आति रसाल, सिर पर शुंघरारे वाल सुन्दर सटकारे हैं॥ शोभित श्री तिलक भाल वाँकी मृकुटी विशाल, कमल नेन कुपा ऐन रसिकन के प्यारे हैं॥ नासा सुठि कल कपोल विवाधर हैं श्रमोल ।

मंद हँसन मधुर बोल मुख सें उचारे हैं ॥
कंबु कंठ भुज मृनाल वक्तस्थल छिन को जाल,
तिवली उर श्रनूपम किट सूक्तम मनुहारे हैं ॥
पृथु नितंब जंगा जुग कदली तरु निदित हैं,
पिंडरी हैं श्रित पुनीत गुल्फ़ हू सुढारे हैं ॥
पंकज से युग्म चरण तृय विधि ताप हरण,
भक्तन सुख करन सर्वस्व धन हमारे हैं ॥
स्वयं कृष्णा सगुण रूप वय किशोर भक्त भूप,
श्राचारज वयु सुधार भूतल पधारे हैं ॥
सरस माधुरी के प्रान इन सम निह और श्रान,
निश दिन उर धरत ध्यान जात नहीं विसारे हैं ॥

॥ राग विहाग ॥

श्राचारज सिर मीर जगत गुरू श्री शुकदेव व्यास के लाला। शरण गये सरवातम समरपण करवावत हैं परम कृपाला॥ सेवा श्ररु संबन्ध दान दे नाम निवेदन करें दयाला। सोंपत जीव जुगल को निज कर दरशावें दंपति तत्काला॥ लेहि उवार जगत जल निधि तें कुंज बसाय करें प्रतिपाला। सरस माधुरी हगन वसी छवि निरिक हरष उर भई निहाला॥

॥ राग धुरपद चौताला ॥

तेज पुंज कुंज में विराजें शुकदेव मुनि,

श्याम चरनदास तहाँ सेवा माँहि राजे हैं ॥
तेज के सिंहासन सुख श्रासन शोभायमान,
तेज ही के संख नाद श्रनहद ध्विन वाजे हैं ॥
तेज मई सभा मध्य साधू जन तेज रूप,
करें टहल म ल माँहि चवर करन साजे हैं ॥
सरस माधुरी श्रपार तेज को दरवार जहां,
जगमगात सुंदर द्युति लिख सुरेश लाजे हैं ॥

॥ राग कल्यान ॥

प्रथम करूँ श्री शुक्रमुनिबंदन श्री मत वेद्व्यास के नंदन ॥
श्याम वरण मन हरण महा प्रभु भक्त जनन के चित्त के चंदन ॥
सुमरत सिद्ध होत सब कारज पुन्य प्रकाशन पाप निकंदन ॥
श्री भागोत भान प्रगटायो कृष्ण कथामृत कह्यो सुद्धंदन ॥
सुक्ति सरूप भूप मुनियन में ध्यान किये काटत जम फंदन ॥
सरस माधुरी चरन कमल मन भृमर भयो पीवत मकरंदन ॥

॥ राग भरों, भैरवी ॥

जय जय श्री व्यास सुवन शुकमुनि मतवारे। ब्रह्म रूप रसिक भूप श्याम अंग श्राति श्रनूप। वय किशोर चित के चोर जुगल प्रान प्यारे॥ दंपति ग़लतान ध्यान प्रेमामृत कियें पान,

ग्रुन निधान कृपा खान नैना रतनारे॥ चंद्र वदन शोभा सदन निरिख नैन लिजत मदन,

साज्ञात नंद नदन संत रूप धारे॥ सरस माधुरी निहार तन मन धन दीजे वार, चरण कमल बसो हिये मांहि नित हमारे॥

॥ राग सोरठ ॥

श्रव दीजे दरश दयाकर शुक्रमुनि प्यारे जी ॥
वेदव्यास के सुवन सलोंने तुम सम जग में श्रीर न होंने,
तक्तक त्रास मिटाय परीक्तित तारे जी ॥
श्री भागोत भान प्रगटायो सोवत सब संसार जगायो,
पतित श्रनयास किये भव पारे जी ॥
चरनदास कूँ दरस दिखायो सिर कर धर हित से श्रपनायो,
प्रेम भिक्त विस्तार जीव निस्तारे जी ॥
जो जन तुमरो ध्यान लगावे भव बंधन छिन में छुट जावे,
बहुर जगत के मांहि जनम नहि धारे जी ॥
श्रिवचल प्रेम भिक्त प्रसूदीजे श्रनुचर चरण कमल को कीजे,
सरस माधुरी तुमरे चरन सहारे जी ॥

॥ पद् ॥

तुम तो वेद्व्यास के लाल श्री शुकदेव मुनी मत वाले ॥

खयम् हो ब्रह्म रूप भगवान , करो नित प्रेम रसामृत पान। रहों दंपति रसमें ग़लतान, सकल रिसकों में हो तुम श्राले॥ तुम्हारी परमतत्व की काया , न व्यापी तुमको रंचक माया। दिगंवर भेष श्रनूप बनाया , जती हो जग सें भये निराले ॥ हैं तुम में गुन श्रनगिनत श्रपार ,हो पूरन कृष्ण कला श्रवतार। उतारन श्राये भू का भार , पतित के पावन करने वाले ॥ तुम्हारा चंद्र वदन श्रभिराम , सलोनी सुंदर सूरत श्याम । लजावें कोटि रती श्रोर काम , छुटे मुख ऊपर काकुल काले ॥ जुगल का जो बृन्दावन धाम , रहो तुम उसमें श्राठों जाम। सखी वपु सेवत श्यामा श्याम , सुहावन सेवा खास सँभाले॥ उचारत रस श्रमृत सम वैंन , सुने जिनके उपजे चित चैंन। बसें हिय राधा कृष्ण सुखैन, गले में हिल मिल बेंया डाले॥ तुम्हारी सरस माधुरी दासी . करो कृपा श्रपनी श्रविनासी। मिलादो श्री दंपति रस रासी , चरण के शरने मुक्ते बसाले॥

॥ विनय राग ठुमरी, सोरठ॥

प्यारे श्री शुकदेव दयाल मुक्ते निस्तारनारे॥ श्राय फँसो माया के फंदन, सुनो विनय मेरी जग वंदन, करम जाल सों मोकों श्रान उबारनारे॥ मानुप जन्म श्रन्पम पायो, हाय विना हरि भजन ग्रमायो, श्रव में भई तुम्हारी मुक्ते उद्धारनारे ॥

महा कुटिल में कोथी कामी, पतितन में मोहि जानो नामी, मुनिये श्रंतरयामी जगत सों तारनारे ॥

शरण गहे की लजा कीजे, प्रेम भक्ति दंपति को दीजे, दीन दुखी को दिल से नांहि विसारनारे ॥

मोकों वड़ी रावरी श्रासा, दीजे प्रभु बृन्दावन बासा, स्वामी श्रपनी कृपा सुदृष्टि निहारनारे ॥

मेरी श्राय वेग सुध लीजे, दर्शन मोहि द्यानिधि दीजे, सरस माधुरी लेत तुम्हारे वारनारे ॥

॥ गजल॥

इधर भी हो नजर मुक्त पर श्रजी मुनि राज थोड़ी सी। घनी गुजरी उमर मेरी रही महाराज थोड़ी सी॥ सलोने व्यास के नंदन करूँ कर जोर के वंदन। द्या कीजे दुखी जन पर श्रजी रस राज थोड़ी सी॥ रिसक वर राधिका मोहन गीर श्रक श्याम श्रित सोहन। दिखा दो छिव छटा उनकी श्रजी सरताज थोड़ी सी॥ करूँ सेवा निकुंजन में रहूँ नित संग बृज बन वें। तमन्ना है यही मन में श्रजी सुख साज थोड़ी सी॥ हुटावो जक्त जंजाला पिलावो प्रेम का प्याला। सुनो विनती कृपा करके मेरी यह आज थोड़ी सी॥ सरस है शर्ण चरनन की लगी मोहि श्रास द्रशन की। विरद निज पतित पावन की करो श्रव लाज थोड़ी सी॥

॥ पद् ॥

माहा मुनि तुम को शीश नवाऊँ।
श्री शुकरेव व्यास के नंदन जग वंदन विल जाऊँ॥
कमल नेन केशोर चोर चित निरखत नाँहि श्रधाऊँ।
रूप राति खंदर तन सावल लिख लोचनहुलसाऊँ॥
श्रानंद सों उठ करूँ श्रारती मोतिन चोक पुराऊँ।
तन मन धन न्योद्यादर करके फूलन को वरसाऊँ॥
धन्य श्राज को दिवस हमारे हरष वधाई गाऊँ।
सरस माधुरी रेहु द्या निधि प्रेम पदारथ पाऊँ॥

॥ पद राग सोरठ, वंसत, कालंगड़ा, भरवी॥

शुक सुनि देखे त्रिन रह्यों न जाय।

सेरे नेंनन में द्वित रही समाय॥
साँवल तन सुंद्र श्रित श्रम्प।
लाजत श्रनंग सत लिख के रूप।
महिमाँ वेद हु निह सकै गाय॥१॥

जीती माया सहज ही सुभाय। सुर नर मुनि जन नित पूजें पाय । सुमरें दंपति मन वचन काय॥ निर गुगा पद सब जानें रीति। तउ सगुण ब्रह्म में श्रिधिक प्रीति। छवि गौर श्याम लई हिये बसाय॥ सत् चिद्र श्रानंद घन जिन की देह। नित जुगल लाल सों श्रति सनेह । हैं विदित जगत में रिसक राय ॥ करें परम हंस संहिता गान। राधे मोहन में फँसे प्रान । लीला गुन गावत नही श्रघाय ॥ भूतल आचारज प्रगट रूप। अरु रंग महल में सिख सरूप। कुछ श्रद्भुत कौतुक कह्यो न जाय॥ सुन सरस माधुरी विनय कान। मोहि निज दासिन की दासी जान । निज परिकर में लीजे मिलाय॥

पद् ॥ पद् ॥ पद् ॥ पद् ।। प्रमु ह्यास नंदन जक्त वंदन द्या दृष्टि निहारिये॥

निज जान अपनो टास प्रसु भव हिंधु हों उद्घारिय ॥ जय जय सलोने र्याम सुंद्र मदन के सद के हरन। नित्य नवल किशोर मुरति चरन की श्रायो शरन ॥ जय जयति स्वामी विश्व नामी स्वयं कृप्ण अवतार हो । सर्वज्ञ संपूरन कला करुणा यतन उद्घार हो ॥ वृज के विहारी कुंज चारी पद कमल मस्तक धरो। काट कर्म कलेश मेरे युगल परिकर में वरो ॥ निज तात संश्य दूर कर वन वृज्ञ मिल उत्तर दियो । तक्क को त्रास मिटा परीकित अभय पद वासी कियो ॥ जान कठिन कराल काले चरनदास को दुर्शन दियो। त्रेम भक्ति प्रचार कर संसार को पावन कियो॥ श्री वृन्दावन रंग महल में सखी रूप सेवा में पगे। निरखि रूप अनूप दंपति प्रेम के रँग में रँगे॥ जो प्रात सायंकाल जन कर प्रीति पुलाकित गावहीं। कहै सर्स साधुरी श्राण निश्चय परम पद को पावहीं॥

॥ राग विलावल ॥

श्री शुकदेव सहाय करो जू।
श्रमय करो कर धरो शीश मम शरन चरन की श्राय परोजू॥
शरनागत पालक जन रक्तक हे विरद है यह जग विदित खरोजु।
काल कर्म ग्रन देत महा दुख इनकी सब भय भीत हरोजू॥
दींजे श्रविचल बास विपिन में मो श्रधीन की श्रोर दसेजू।
सरस माधुरी श्याम राधिका पारेकर में मोहि बेगि वरोजू॥

॥ पद् ॥

रस निकुंज शुक मुनि प्रगटायो।
सब तें प्रथम सुगम कि वरणो ता पाछे बहु रिसकन गायो॥
उयों भागीरथ भरतखंड में निज पुरुषारथ गंगा लायो।
पुनि पुहमी में प्रथक प्रथक कर घाट घाट बहुनाम धरायो॥
प्रीति सिहत भर लियो पात्र निज गंगोदक ताको कहलायो।
श्रास्तादन कीनो रंग भीनो सुजस सकल लोकन में छायो॥
श्रुक मुख कथित सर्वपर कि यत एसो कौन जाहि निह भायो।
सरस माधुरी रस आचारज चरणदास सोई सद गुरू पायो॥

॥ पद् ॥

आचारज सिर मोर जगत गुरू श्री शुकदेव दयाल हमारे परम हंस संहिता प्रगट कर सब रिसकन के कारज सारे।। स्वयं श्याम सुंदर सत चित् घन संत रूप भूतल अवतारे। सकल ऋषिन की सभा मध्य में परम धर्म निज मुख उचारे॥ नाम रूप लीला दंपित की श्री बन धाम सुजस विस्तारे। सुन सुन सकल कुंज रस छाके पाये युगवर प्रीतम प्यारे॥ रिसक मुकट मिशा मदन मनोहर श्री मद वेद व्यास के बारे। सरस माधुरी श्रशा हरशा मन मेरी दोउ अखियन के तारे॥

॥ पद् ॥

जी शुकदेव नाम ली लावे।

जाको श्री स्वामिनी अभिरामिनी बिपन विहारी जू अपनावै॥

कुपा दृष्टि करि गहि कर ताको श्री बंदावन माँहि वसावै। देवें टहल महल निज अपनी आलि परिकर पद निश्चय पावै॥ रस विहार श्रुति सार सर्व पर ताहि। निराखि निज नेंन छकावै। हाजिर रहें हुजूर कुंज में कोलि कुँवरि लिख लिख मगनावै॥ सीत प्रसादी श्रंग उतीरण रीम रिसक दें सीस चढावै। सरस माधुरी मोद भरी नित जुगल चंद के गुण गण गावै॥

॥विहास॥

श्री शुक मुनि अद जिन जन तरसावो। अभय हाथ निज दास साथ धर दृन्दा विपिन वसावो॥ कर्म भर्म वंधन जनमन के तिनको वेशि मिटावो। दे दंपति की भक्ति रसीली रासिक अनन्य वनावो॥ जुगल विहारी लाल जिन्हों को अबि के सध्य छकावो। सरस माधुरी सेवा देके कुंज केलि दरसावो॥

॥ दुमरी , गर्द्या ॥

भज मन श्रीशुकदेव द्याल।
श्री मत वेद्व्यास के नन्द्रन सुमरत होत निहाल।।
सुंदर श्याम सोहनी मूरित अव्भुत रूप रसाल।
जो जन ध्यान धरें उर अंतर तिनसों उरपत काल।।
कृपा करें मुनिराज मिलावें जुगल लाडली लाल।
सरस माधुरी अपने जन की सदा करत प्रतिपाल।।

॥ पद् ॥

श्री शुक चरण शरण जो अवि।

श्री वृन्दावन बास निरंतर सहचार वपु श्रात सुंदर पात्रें।।
शुक श्राश्रित तिहि जान प्रान सम प्यारी प्रीतम कंठ लगात्रे।
श्रुक श्राश्रित तिहि जान प्रान सम प्यारी प्रीतम कंठ लगात्रे।
श्रुक स्मा सेवा सर्वोपिर चहल पहल महली दरशात्रे॥
फूली फिरें करें सिवकाई वर विनोद उर श्रंतर छात्रे।
सरस माधुरी रहस छकन छिक घूमत सूमत सुख सरसात्रे॥

॥ पद् ॥

जय जय श्रो शुक चरगा उपासी।

बाल बाल जाऊँ जिनके वपु पर जे अनन्य आनंद बिलासी ॥ विशद विहार विहाराने निरखत कुंज नृपति की करत खवासी। सरस माध्री सत्य समक्त अन निश्चय है वृन्द।वन बासी॥

॥ पद् ॥

धन्य धन्य जो जन निष्कामी।

अति अनन्य उज्जल रस मांते श्री शुक्र संप्रदाय अनुगामी।। जुगल रहस गुन गान वांन नित वृन्दावन वासी निज धामी। सरस माधुरी युग्म पदांबुज जिनके वारंवार नमामी॥

॥ पद् ॥

श्री शुक मुख अमृत जो चाखें॥ खारे लागे लोक भोग सब मिश्री मधुर छुहारे दाखें॥ श्री भागवत प्रेम रस सागर यह निज मूल और सब साखें॥ गौर श्याम उज्जल युग जोरी जिनको ध्यान हृदय दृढ़राखें॥ मगन रहे लिख रूप साधुरी काहू सों प्रगट निहं भाखें॥ श्रीर ठोर की छोड़ बासना निश दिन याही कों श्रीभेलाखें॥ सरस माधुरी स्वाद सर्व पर तामें छकें अपर सब नाखें॥

॥ पद् ॥

जित देखूं सुख रूप मई है।

सुख मई बुज मंडल वृन्दावन लता लितत सुख रूप छई है।।
सुख सरूप रजरानी जमुना श्री वन चारों ओर वही है।
कुंज महल सुख रूप लखावत लितादिक सुख रूप भई है।।
सुख मई श्यामा श्याम मनोहर करत केलि सुख नई नई है।
सुख मई रास विलास केलि कल रिसक जनन भल जान लई है।
सुख मई उजल सर्वीपर रती श्रनंग गर्व विजई है।
सुख विहार दंपति की संपति सरस गुरुन हम मेलि लई है।।

॥ राग चर चरी ॥

श्री श्री वेद व्यास नंदन गुन गाइये। जिनको शुक मुनि सुनाम जपत प्रेम पाइये॥ वृन्दावन परम धास राजें जहाँ श्यामाँ श्याम। रास रंग जहाँ श्राठो जाम ताहि सदा ध्याइये॥ कुंज महल सिख सरूप श्याम अंग श्रित श्रनूप। आचारज पुरुष रूप सूतल मन लाइये॥ खंयं कृष्ण कमल नेंन रिसकन मन मोद देंन। छिव को लिख लिजत मेंन ताकी शरण श्राइये ॥ सरस माधुरी उमंग निरखत कल केलि रंग। चरण चारु चिता मणि हृदय निज वसाइये॥

॥ पद् राग सोरठ व सोहनी ॥

बंदो वेदव्यास सुकुमार । रिसक भूप श्रमूप शुक सुनि श्याम के उनहार ॥

मुख मयंक प्रकाश पूरन भौंह धनुष सुहार।
नैन श्रनियारे श्रहण सित चपल मारत मार॥
भाल दिपत विशाल सिर पर बारबूँघर वार।
मंद मुसकावन सुहावन मोहनी दें डार॥
पीत वत्तस्थल उदर तृय रेख छिव सु श्रपार।
गूढ जानु श्राजानू भुज किट क्रिस नितंब सुभार॥
चरण कमल अनूप श्रद्धत लीजिये उर धार।
सरस श्यामाँ श्याम दंपित मिलत लगत न बार॥

॥ पद विहाग ॥

बंदो शुक मुनी के चरन।

कित कंज समान कोमल मोद संगल करन॥ त्रविधि जुग संताप सेटन रिसक मन त्राभरन। मोह माया के निवारन शोक संशय हरन॥ श्याम श्यामा कुंज लीला चाश्रित हिय धरन। सरस दंपति देंहि दरशन लेंहि चपनी शरन॥

॥ श्रारती राग सारंग , विलावल टोंड़ी ॥ श्री शुक मुनि महाराज तुम्हारी करूँ त्रारती वारं वारी॥ चरन सरोज सकल सुख की निधि सब विधि करन सहाय हमारी। जुगल जंग कदली सम सुंदर नाभि गंभीर महा रुचिकारी॥ त्रिवली ललित उच वज्रस्थल कटि कोपीन सनोहर धारी ॥ पद्मासन त्रासीन महा प्रभु भुज त्राजानु त्रन्प सुहारी!। भाल विशाल तिलक श्री शोभित अंडुज नेन सेन मदहारी॥ छके जुगल छवि ध्यान साधुरी संद सधुर सुसकिन पर वारी॥ श्रवण सुभग नासा श्रति सुंदर विश्वरी शलक केपोलन कारी॥ चंद्र बदन सुख सदन सलोनो शिर केशाविल धूँघर वारी॥ महा प्रकाश तेज परि पूरन फैल रही चहुँ दिशि उजियारी॥ श्याम वरन शोभा को सागर मनो स्वयं श्री कृष्णा सुरारी ॥ सरस माधुरी रूप अनूपम लिख निज नैंन भई मतवारी ॥

॥ पद् ॥

तर्जा (तेरा श्याम कन्हैया कुंज विहारी चंद्र बदन मोहे भावत है) मेरे शुक प्यारे व्यास दुलारे मो अन से श्रिल भावत हो। में तो बिन्ती करूँ तोरे चर्न परूँ मेरे खामी तुमहि कहावत हो॥

॥ अंतरा ॥

लिया है व्यास के श्रीतार नंद लाला है। तुम्हारा संत रूप क्या ही खूब आला है॥ चंद से मुख पे तिलक पीत क्या निराला है। कटि में कोवीन और गल में पुष्प माला है॥ तुमतो यशुमत प्यारे जग उजियारे संत रूप धर श्रावत हो॥ तुम्हारा श्यामवरन मनका हरने वाला है। बजा के वंशी को जादू का करने वाला है॥ हर एक तरह के वह रूपों धरने वाला है। सुना है कार्य भक्तों का करने वाला है ॥ तुमतो धर कर रूप मुनी का प्यारे जोरी जुग मिलावत हो॥ वो सर्स माधुरी भाँकी जो वाँकी प्यारी है। उसके विन देखें मुक्ते सख़त वे करारी है। छुपा है रूप में वो श्रापके विहारी है। दिखा दो उसको हमें तुम से श्राशा भारी है। मेंतो जान लिया तुम्हें श्याम कन्हेया शुकमुनि नाम कहावतहा॥

॥ पद् ॥

तर्ज (हे श्याम कन्हैया कलेया मेरी छोड़ दे)
श्री शुक सलोने सखीरी मन भाये हैं॥
आये हैं यह असर नगर से आचारज वन श्याम।
इन्हें निरिश्व नर नारि अप्सरा थिर चर मन मगनाये हैं॥

वयस किशोर चोर हैं चित के मुनियन में हैं भूप।

रस निकुंज को रासिकन के हित अपने संग में लाये हैं ॥

सुरपुर की सब नारी प्यारी ललचाई लख रूप।

नाची गाई भन मगनाई मन मथ देख लजाये हैं ॥

व्यास सुवन हुवे परमारथ को करें भागवत गान।

पहुंचावन परधाम जियन को मूतल में प्रगटाये हैं ॥

जो जन चरण शरण में आये दंपित तिनको अपनाये।

सरस साधुरी जीत जन्म को अंत परम पद पाये हैं ॥

॥ गुजल ॥

विनती मेरी सुनो तुम श्रीमान शुक मुनीश्वर ।
देखो दया नजर कर श्री मान शुक पुनीश्वर ॥
करमों का हूं सताया देती है दुःखमाया ।
रचा करो रिसकवर श्री मान शुक मुनीश्वर ॥
निज दास खास जानो अपना ही मुक्तको मानो ।
परिकर में लो मुक्ते वर श्री मान शुक मुनीश्वर ॥
प्यासा जुगल दरश का, चित को लगा है चसका ।
प्याला दो प्रेम रस का, श्री मान शुक मुनीश्वर ॥
दम्पत के दर्श कारण, अँखिया अधिक हैं व्याकुल ।
छिव की छटा दिखादो, श्री मान शुक मुनीश्वर ॥
प्यारी पिया मिलादो, भिचा दरस दिलादो ।
मरती हूं में जिलादो, श्री मान शुक मुनीश्वर ॥

हे सर्स शर्ण तेरी, तुन को है लाज मेरी। सरपे दो हाथ निजधर, श्री मान शुक मुनीश्वर॥

॥ दोहा ॥

प्रगटत ही वन को रखे, यह जानत सब भेव। सरस माधुरी हेतु यह , नाम राम शुकदेव वेद व्यास व्यापक लखे, वन बृत्तन में देव। द्वतिय हेतु यह जानिये, नाम राम शुकदेव॥ रमे रहत मन में सदा, राधा रसण सुजान। नाम राम शुकदेव सुनि, या विधि लेहु पिछान ॥ श्री शुक मुनी महा प्रभु , विनय सुनो चित लाय । कृपा करहु भव दुख हरहु , देहु प्रेम हरषाय ॥ सुमरूँ दम्पति रैन दिन , आंसू दगन बहाय। गद् गद् स्वर रोमांच हो, तन मन सुधि विसराय॥ रिसकन संग निश दिन रहों, गाऊँ गुरा मन लाय। लित लाडिली लाल को , निज हम लेंद्र बसाय। सेवक मो को जान के, लीज निकट बुलाय। सेवा चरण सरोज की , दीजे मोहि बताय ॥ . सिवकाई श्री अंग की , करूँ हिये हुलसाय। सरवस धन सेवा गिनों , खर्ग मुक्ति बिसराय ॥

नित निरखों छिव माधुरी, श्रित ही श्रीति लगाय। बांकी मांकी हग वसे, चित इत उत निह जाय॥ तन में मन में नयन में, वसो लाउले आय। सरस माधुरी ध्यान में, दीजे नाथ छकाय॥

॥ रागं विलावल ॥

जय शुक सखी जुगल की प्यारी॥

परम पूज्य प्रग्तारत भंजन जन सन रंजन संगल कारी।।
नाम रूप रसमय नित जिनको यूथाधिप श्राल प्राग्त श्राधारी।
कुंज निकुंज केलि प्रकासन रस वर्धन दंपति रिभागरी॥
छिविश्रासक्त छकी सँग डोलत मुख सृदु वोलत जन मन हारी।
अतुलित दया कुएा करुगासय सरस माधुरी लख भई वारी॥

॥ राग भैरवी ॥ तुमसी तुमशुक सखि त्रलिवेली।

कृपा पात्र श्यामाकी स्वासिनि निरखत नित्त निकुं जन केली। सेवत सुकर सदां प्यारी पद रिक्षवत राधे लाड़ गहेली॥ गुन गावत दुलरावत दम्पति सुसुख सुनावत प्रेम पहेली॥ हँसिकिस भरतभुजन विचश्यामा सुखचूमत लखनिजमनमेली। सरस माधुरी रस आस्वाद्नि नमो नमो प्रिय परम सहेली॥

॥ राग काफी ॥

जय शुक सखी खामिनी मोरी।

रंग महल में रहत निरंतर सेवत नित्त किशोर किशोरी ॥ युगल चंद मुख मंद हँसानि लखि मगन रहत मन में निश भोरी। सरस माधुरी केलि विलोकत तृति न मानत नैंन चकोरी॥

॥ राग जंगला ॥

स्वामिनी श्री शुक सखी हमारी।
यूथेश्वरी रूप ग्रुग श्रागर छिब सागर दंपित की प्यारी॥
कुंज मंजु में निशादिन राजत सेवत श्यामां सरस बिहारी॥
जुगल चंद मुख हगन चकोरी गौर श्याम जोरी उर धारी॥
विलसावत पर्यंक परम सुख छिव श्रासक रहत निहं न्यारी॥
सरस माधुरी रूप रसाञ्चल नैनन पियत रहत मतवारी॥

॥ शग कान्हरा॥

जयित जय जयित शुक स्वामिनी नागरी ॥

श्याम सुचि वरन सुख करन रित मद हरन,

परम सोभाग्य गुगा रूप में आगरी ॥

सिखन यूथेश्वरी दया करुगा भरी,

जुगल छिव हिथे धरी सुयश शुचि सागरी ॥

सरस रस सिंधु की मीन छिब लीन नित,

रहत संग युगल वर परम बड़ भागरी ॥

॥ राग कान्हरा॥

शुक सखी स्वामिनी कृपा कम्णा करो।।
जुगल मुख चंद की छिव छटा रसभरी,
रैन दिन अचल सम नैंन में विल भरो॥
मंद मुसकान बतरान अमृत मई,
मद भरे नैंन की सैंन उर में घरो॥
सरस कर जीर जाचत टहल महल की,
देहु कर कृपा दुख विरह के परहरो॥

॥ राग कव्वाली ॥

प्यारा प्यारा हमारा शुक्र सुनि वेद्व्यास नन्दना, साँवला सलोना रिकोना है रूप का, माधुरी सूरति सुख चंदना ॥ नैना हैं विशाल छवि जाल बुँघुरारे वाल, सुख से हँसत मन्द मन्दना॥

> भांकी हूं बांकी दिखाय, ललचाय हाय, डार दियो प्रेम गल फन्दना ॥

> रसिकाधिराज ऋषीराज, सिरताज सर्व, अद्भुत है आनंद का कन्दना॥

सरस माधुरी निहार, तन मन धन दीनो वार, करी कर जोर चरण बन्दना॥

॥ राग भैरवी ॥

ऐ व्यास नंदन शुक मुनी	सुश्ताक	दीदारे	तुत्रम ।
चरण दास के प्यारे गुरू	77	"	"
ए सरवरे ऋषि मुनिवरां	"	77	"
श्री भागवत करदी वयां	;;	"	"
ए पेशवाये श्राचारजां	"	"	"
बखशिंदये राजे निहां	77	"	77
ए शाहंशाहे आशिकां	"	"	77
पुरसन्दये दुख वे कसां	77	"	"
ए रहनुमाये सालिकां	77	"	77
मक़बूल इवादत श्राविदां	"	"	75
ए नूरदीई दो जहां	77	"	15
इमदाद करदन कामलां	"	77	"
ए फ़ैज बखशे श्राजिजां	"	"	"
श्रासी सरस पीरे सुगां	"	,,	"

॥ दोहा ॥

व्यास तिहारे वंश को भोकों जानो राय। शुक मुनि की विरदावली यश सुनिये हरषाय॥ सभा सकल संतन भरी बेंठ ऋषि मुनिराज। गावन लागो रायवर मंगल निरख समाज॥

॥ राग कालंगड़ा ॥

व्यास जू तुम सम और न धन्न।
कृष्ण कमल लोचन भन्न मोचन पुत्र भयो उत्पन्न॥
श्राचारज है हैं रिसकन के सुनिन माहि श्रयन्न।
जो जन इनको ध्यान धरें उर होय श्रवश्य श्रनन्न॥
प्रेम परा पद पाय प्रमुद मन भाव भिक्त व्युत्पन्न।
सरस माधुरी टहल महल पा संतत रहे प्रसन्न॥

॥ धुन कहरवा ॥

कछु कहूं किवत कर प्रीति रिसिक सुन मोद भरो।

श्राति प्रेम परायन होय लाल शुक दरश करो॥

श्री शुक नाम उचार जगत दुख मूल हरो।

निश्रय कर दृढ़ विश्वास सिंधु जग सहज तरो॥

है मगन लगन के माहि भक्ति के भाव हरो।

कहै सरस माधुरी श्राण चरण को ध्यान धरो॥

॥ राग श्याम कल्यागा ॥

विघ्न विनाशन श्री शुकदेवा।

ब्रह्म सरूप सर्व में व्यापक विरत्ने जन जानत यह भेवा ॥ महिमां जकत प्रसिद्ध जिन्हों की ऋषिमानि जन मानें गुरुदेवा। सरस माधुरी रिसकाचारज करो निरंतर तिन पद सेवा॥

॥ सवैया ॥

श्री शुकदेव सहाय करें, जन की जो हरें भवकी सब बाधा। नौ यह त्रादि श्रनेक श्रमंगल मेटत हैं बहु भाँति उपाधा॥ रक्तक हैं निज दासन के, जिनके हिय में वात्सल्य श्रगाधा। सभ श्रभय पद में पहुँचावत ऐसे दया निधि को श्राराधा॥

॥ सबैया॥

श्री शुकदेव रहे रसना नित , कोिंह कहें भव संकट भारी । होिंह उदय शुभ कर्म श्रनेकन, पुन्य मताप बहैं सुख कारी ॥ रंग रँगीली छवीली छटा हग , श्राय बसे श्री कुंज बिहारी । सर्स की माधुरी सेवा मिले सखी , प्रेम के माँहि रहै मतवारी॥

॥ गजल ॥

चल देखो श्राज सजनी, शुकदेव रूप श्राला।
जन्में हैं व्यास जी के, मुनि रूप नन्द लाला॥
है मांकी प्यारी बांकी, मन मोहनी श्रदा की।
मुनियों के मन को मोहे, सुंदर सरूप वाला॥
सर पर हैं बाल प्यारे, घुंघरारे कारे कारे।
मस्तक तिलक श्री है, उर धारे फूल माला॥
श्रासन पद्म प्यारा, किट में कोपीन धारा।
है उम्र सोलह साला, तन श्याम रंग निराला॥

मुनियों में हैं ये राजा, रिसकों के सारे काजा।

श्रावें शरन चरन की, उनको करें निहाला॥

सुखदेव सुख के रासी, श्रानन्द के विलासी।

दें दर्स निज सरस को, करके कृपा कृपाला॥

॥ पद् ॥

श्री महाराज शरण चिल श्रायो ॥ शरणांगत वत्सल तुम स्वामी विरद श्रापको संतन गायो ॥ कृपा करो दुख हरो विरह को करिये नाथ मोर मन भायो॥

सरस माधुरी जुगल प्रेम दे जानों चाकर घर को जायो॥

॥ नाटक की चाल में ॥

नांचे गावें सुरनारी सुकुमारी सब वारी वारी जावें। हरषावें हुलसावें मिल सारी सब वारी वारी जावें॥ सुर वीगा बजावें मृदंग गति लावें,

करताल को लगावें, सब वारी वारी जावें ॥ पग घूंघरू छमकावें हाव भाव को बतावें।

नैनों को मिलावें सब वारी वारी जावें ॥ सुमेरु शिखर पर फूल खिले क्यारी,

हर रंग की फुलवारी की देखें शान।

सर्स चमन गुले गुल शन।
है सलोना। त्राला। शुकलाला। छिबजाला। मतवाला।
पियारी सब वारी वारी जावें॥

॥ राग भैरवी ॥

श्री शुक मुनि की छिव लिख लीजे।।
श्रानंद मंगल करके सजनी तन मन धन न्योछावर कीजे।।
सुंदर श्याम काम मद मोचन रूप माधुरी में मन दीजे॥
नयनन निरित्व हरष हिय माहीं रूप रसामृत को नित पीजे॥
श्रमर होय श्रमरा पद पावे प्रेम माँहि हियरो यह भीजे॥
सरस माधुरी ज्यास सुवन की शोभा देखि देखि के जीजे॥

॥ गजल ॥

निरखो निरखो छुबी मुनि राज की री।

सुंदर सूरत सलोनी महाराज कीरी॥
कैसा मन हरन मनोहर है सुंदर जमाल।

श्रवलोकन से करते श्राकरशन कमाल॥

श्राये श्रमर नगर से दिगंबर बन श्याम॥

व्यास सुवन कहाये परमारथ के काम।

कृपा भारत पे है व्रजराज की री॥

लेते जो जन हैं सरस चरन की शरन।

कुटा देते हैं दम भर में जीवन मरन।

है यह आदत शरीवनवाज की री॥

॥ कव्वाली ॥

जय जय बोलो शुकदेव दयाल, नचो दे दे कर ताल ॥

श्राज भलो दिन कियो विधाता, प्रगट भये संतन के त्राता।

त्रिभुवन में विख्यात निरित्व के होहु निहाल ॥

वय किशोर चित चोर छबीले, नैंना जिन के निपट रसीले।

मंद मधुर सुख कंज रसीले, श्याम शरीर सुढाल॥

चंद्र वदन सुख सदन सुहावन, नैंन कमल दल चित्त लुभावन।

रती मदन को गर्व नसावन, नख शिख लों छिव जाल॥

ऋषि नारी मिलि श्राई सारी, धूप दीप कर कंचन थारी।

दरशन करत भई मतवारी, सन मगन भई सब बाल॥

हरष निरख श्रारती उतारें, नैंनन रूप श्रनूप निहारें।

छिव मुनिवर की हिय में धोरं, वारें मुक्ता मिशा माला॥

कोइ नाचें कोइ भाव वतावें , फ़ूखन की वरपा वरसावें ।

मिलें परस्पर मोद वड़ानें , निहं तन की सुरत सँभाल ॥

सुर नर मुनि मिल करी ववाई, चित वानंद दसहों दिशि छाई।
गान तान धुन भरी लगाई, वाजें वीन दृदंग रसाल ॥

प्रेम भिक्त मारग प्रगटावें, जीवन जीवनमुक्त वनावें ।

प्रमित जीव जग धाम पठावें देवें जन्म सरन दुख टाल ॥
जो जन शुक मुनि ध्यान लगांवे, निश्चय श्याम राधिका पावें।
जगत जाल में वहुर न आवें, रहें सदा समीप खुशहाल ॥
श्री शुक निज मुख नित प्रति गावें, ज्ञनमोदन कर उर हुलसावें।
भाव भिक्त कर जो जन ध्यावें, तिन्हें मिलें मयाकर लाल ॥
सर्स माधुरी शुभ दिन नीकों, दरशन पायो प्रानपती को ।
जीवन मूर हमारे जी को, निज जन प्रसु करें प्रति पाल ॥

॥ दाद्रा ॥

वेद्व्यास लाला वाला दरल तो दिलायजा।।

श्याम वरन मन के हरन, अंगल अन ओद करन।

मेट मेरे जिय की जरन, नेंक नजर श्रायजा।।

निश दिन में धक्ष ध्यान, भूल गयो खान पान।

तलफत हैं पंछी प्रान, छिव में तू छकायजा।।

चंद वदन सुख को सदन, निरक नेंन लजन सदन।

मंद मुसकाय श्राय नेंनों को मिलायजा।।

चातक को स्वाति श्रास, निश दिन ता विन उदास।
तैसे मोहि प्रेम प्यास दरस रस पिज्ञायजा॥
सरस माधुरी सुजान, िनय लेहु मोर मान।
वेग मिलो प्रान विरह विपति को मिटायजा॥

॥ गज़ल ॥

देर से दरे दोलत पे हम सदा देते हैं।

देखूँ शुकदेव सुनि श्रव सुके क्या देते हैं।

अपने बंदों को बना देते हैं दम में सुलतान।

श्राप विगड़ी हुई तक़दीर बना देते हैं।

सुन के में नाम बड़ी दूर से श्राया हूँ हुजूर।

श्राप कर रहम नज़र प्रेम पिला देने हैं।।

श्रपनी रहमत से करो मुझ पे चरन का साया।

वन के मोहताज नरे दर पे सदा देते हैं।।

दस्त बस्ता तेरे दरवार में हाजिर है सरस।

श्राप निज दास को दम्यित से मिला देते हैं।।

॥ श्री शुक मुनि महाराज की श्रारती ॥ श्रारती करिये मुनिवर की, श्री शुक छविधर की ॥ श्याम मुश्रिय श्रनेग लजावन, छुंघरारी सिर जटा मुहावन। शरद चंद सम मुख है पावन, शोभा मन हर की॥ मंद हँसन दुति दसन उजारी, नैनन की चितवन श्रित प्यारी।

मुज श्राजानु श्रन्य सुडारी, किट सम केहरि की॥

प्रश्रु नितंब जंधा कदली सम, पिंडली गोल और गुल्फ मनोरम॥

चरण चारु नख चंद हरण तम, रूप दिगम्बर की॥

शोडष वर्ष वयस सुख कारी, प्रेम मई मूरित मतवारी।

निरखत सुध बुध विसरी सारी, बिधि श्ररु हरि हर की॥

श्री मत वेद व्यास दुलारे. आचारज ग्रुरु इष्ट हमारे।

सरस माधुरी तन मन वारे, दासी निज घर की॥

॥ श्रारती ॥

वेद व्यास के कुँवर क्रपानिधि श्री शुक मुनि प्यारे।

रूप श्राचारज धारे त्रिभुवन उजियारे॥ श्री शुकमुनि प्यारे॥

र्याम सरूप सुहावन पावन सुंदर वपु धारे।

नवल किशोर नवीने नयनन के तारे॥श्री शुकमुनि प्यारे॥

प्रगटत ही बन जाय वसे प्रभु जग से भये न्यारे।

प्यान समाधि लगाई टरेनहीं टारे॥श्री शुकमुनि प्यारे॥

स्वर्ग अप्सरा छलने आई तिन से निह हारे।

माया जीती छिन में मुनिवर मतवारे॥ श्री शुक मुनि प्यारे॥

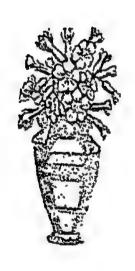
नृपति परीचित की सुधि लीनी ताहि कियो पारे।

श्री भागवत सुनाई हो दयालु भारे॥ श्री शुक मुनि प्यारे॥

र्याम चरण के दास किये शिष्य सब कारज सारे।

नौधा भिक प्रचारी जग जिय निस्तारे॥श्री शुक मुनि प्यारे॥

चारों मुक्ति करें सिवकाई खड़ी रहें द्वारे। चार पदारथ दाता रिसकन रखवारे॥ श्री शुकमुनि प्यारे॥ प्रेम भक्तिवर देहु द्यानिधि रखो चरन लारे। सरस माधुरी जुगल वसें चित शलवैया डारे॥ श्री शुक०



श्री शुकदेव जी की नवीन लीला।

45444444444

॥ श्री राधा सरस विहारियो नमः ॥

॥ समाजी दोहा ॥

श्री कृष्ण शुकमुनि वने, श्री आचार्य स्वरूप। सो लीला वरणन करों, आति ही सरस अनूप॥

श्री मत बृंदावन धाम में श्री युगल सरकार का गलवेंया दिये सिंहासन पर विराजमान होना श्रीर सिखयों का युश प्रताप श्रीर ऐरवर्य गुगों का पद गाना।

सिखयों का गाना।

॥ ऋारती ॥

स्रारती करो राधावर की श्री वंशीधर की ॥

मोर मुकट शिर शोमा मारी, कानन छंडल स्रांत उजियारी,
स्रालक कपोलन छुट रही कारी स्रांत ही मनहर की ॥

माल तिलक श्री रेख सुहावन, मृकुटी छुटिल धनुष सकुचावन,
नेंन मेंन सर मारत चावन, छिब शिय गिरधर की ॥

नाक बुलाक स्रन्य सुढारी, मंद हँसन मन मोहिन डारी,
स्राधर धरे बंशी बनवारी, भरी सप्त स्वर की ॥

कौस्तुम माशी कंठ में राजे, मोतियन माला गले बिराजे,
कछनी पीतांबर छिब छाजे, किट सम केहिर की ॥

पायजामा पायन में सोहै, पग नृपुर धुनि मुनि मन मोहै, [उपमा वरन सके किव कोहै, भांकी नटवर की ॥ वाम अंग वृषभान दुलारी, कोटि चन्द छिव मुख पर वारी, भूषन वसन अनूपम धारी, प्यारी श्री हिर की ॥ नारद शारद गुण नित गावें, सुर नर मुनि जन शीश नवावें, सरस माधुरी बिल बिल जावें, दासी परिकर की ॥

॥ श्री युगल सरकार स्तुति अप्टक ॥

श्री राधिकावर श्याम श्रांत श्राभिराम युग सरकार हो।
सर्वज्ञ संपूरन कला रिसकेश परम उदार हो।।
वृषमानु नंदाने नंद नंदन मूर्ति रस श्रृंगार हो।
रित मदन के मन के हरन सुंदर दोऊ सुकुमार हो।।
भक्त वत्सल भय हरन तारन तरन संसार हो।।
किलमल हरन मंगल करन करतार करुणागार हो।।
सर्वेश परम परेश प्रभु तुम मुक्ति पद दातार हो।।
व्यापक सकल ब्रह्मांड में युग युग में लो श्रवतार हो।।
श्रिव धाम पूरन काम सद्युण ग्राम सब के सार हो।।
विद्युत छटा श्यामल घटा सहश दोउ रिक्तवार हो।।
भक्त वत्सल भय हरन संतन के तुम सरदार हो।
दीन बंधो दया सिंधो श्रथम जन उद्धार हो।।
सुधि लेहु दर्शन देहु दंपित ग्राँन के श्राधार हो।
सुधि लेहु दर्शन देहु दंपित ग्राँन के श्राधार हो।।
नंक करुणा कर निहारो नाथ वेड़ा पार हो॥

नवल नागर त्रेम सागर नेह निधि मनहार हो।
अशरण शरण आनंद करण प्रभु हरण भुव को भार हो॥
जो प्रीत कर अष्टक पढ़े उनकी न कब ही हार हो।
कहै सरस माधुरी धाम जावे जग में जय जय कार हो॥

श्री त्रिया जी का सिखयों सिहत कुंज से पधार जाना। पीछे श्री करुणा देवी का ज्ञाना और ठाकुरजी को हाथ जोड़ कर प्रार्थना पद सुनाना और गाना।

॥ राग सोरठ, पीलू ॥

हे कृष्णाचन्द्र कृपाल करुणा सिंधु अधिमन उद्धरन।
हे पितत पावन प्रभु सव के हो तुम पोषन भरन॥
कर्म वंधन में वंधे जिय मायावस व्याकुल महा।
जन्मते मरते जिन्हों की लेहु सुधि श्री गिरि धरन॥
आप विन निस्तार उनका होना संभव है नहीं।
मेटिये हँस श्री हरी लेलीजिये उनको शरन॥
सरस दरस दिखाय अपना दीजे निज छवि में छका।
अभय दाता भक्त त्राता आपके निज हैं चरन॥

श्री कृष्ण महाराज का सिंहासन से उठ कर करणादेवी का सतकार करना श्रीर प्रेम पूर्वक श्रंक सें भरना श्रीर श्रालिंगन करना श्रीर दोनों नेत्रों से करुणा के श्रांसू ढरना श्रीर जकत के दुखी जीवों की सुरित करना । करुणा रस का पद श्री मुख से गाना श्रीर करुणा देवी को गाकर सुनाकर व्याकुल होजाना ॥

॥ राग लावनी ॥

करुणा देवी तुम सुनो वचन मेरे प्रिय कान लगाई।
तुमसे मिलते ही सखी मोहि, जग जीवन की सुधि आई।
रहे त्रिविधि ताप में तस कर्म वस पावें दुख आधिकाई।
संकट मेटूँ भेटूँ उनसे कहूँ सत्य वचन सममाई॥
जीवन की ताप निवारूँ, अवगुन मन में न विचारूँ।
प्रगटूं आचारज रूप धार के, यह मेरे जिय माई॥
जो आज़ा देवें प्रिया मनोरथ सकल सिद्ध हो जावे।
उनकी संमति के विना काम यह हमसे नहि वन आवे॥
हैं अति दयाल रयामाँ गुन धामाँ वेद विमल यश गावें।
श्ररणागत वत्सल विरद सत्य कर पतितन पार लगावें॥
जग जीव अंग हैं मेरे, जिनको कर्मन ने घेरे।
तिनको करके उपदेश सरस संस्ति दुख देहुँ मिटाई॥

(पद के गाये पीछे ठाकुरजी का ज्याकुल होकर बैठ जाना और ध्यान लगा कर विचार करना । श्री जी का त्राना और प्यारे को समाधान करके हृदय लगा कर पूछना।
॥ श्री श्रियाजीवचन॥

प्यारे श्राप क्या कर रहे हैं किस वात के सोच विचार में बैठे हैं। श्री ठाकुरजी:-

हे प्यारी जू संसार के जीव दुखी हैं श्राप की श्राज्ञा होय तो उन को उद्धार करूँ॥

॥ दोहा ॥

प्रियाजी:—

श्रहा हा! श्री प्राग्णपति, भली विचारी श्राप।

विल हारी जग जियन को, मेटो भव संताप॥

मात पिता सब विश्व के, हम तुम प्राग्ण श्रधार।

जीव सकल संतान सम, अपने लेहु विचार॥

पितु से माता सौ गुनो, सुत सो राखे प्यार।

सत्य सत्य यह बात है, जानत सब संसार॥

॥ सवैया॥

प्रियाजी:--

मम प्रीतम श्याम सुजान सुनो,कहूँ बात प्रत्यच्च तुम्हें समभाई। इच्छा जग जीव उद्धारन की उत्तम हिय में तुमरे प्रगटाई ॥ यह नीको मनोरथ श्राप कियो, मोहे प्यारो लगे श्रित ही सुखदाई। है ससी सुहावनो काम यही यासों प्रगटे तुमरी प्रभुताई॥

॥ पद् ॥

मेरे सुनो वचन प्रीतम सुजान करो जग के जीवन को कल्यान।
लेवो श्राचारज श्रृंगार धार, उर धरो द्या करुणा श्रपार ॥
देवो जीव मात्र को श्रभय दान ॥
श्ररणागति पद्धति करो प्रचार, सत्संगति शिक्ता देवो सार।
प्रेमामृत तिन्हें करावो पान ॥
किलि नाम कीर्तन करो प्रकाश, जग जीवन को होय पापनाश।
तज देह वसें सब धाम श्रान ॥
काटो जीवन के करम फंद, मेटो माया के दुःख दंद।
या सम परमारथ नहीं श्रान ॥
सुनो सरस माधुरी वचन कान, पतितन तारन की तुम्हें वान।
हो बुद्धि विशारद गुन निधान॥

॥ दोहा॥

हे इच्छा देवी सखी, सुनहु वचन चित लाय।
प्यारे को याही समय, रूप श्राचार्य वनाय॥
वात्सल्य करुणा कृपा, हृदय नेंन भलकाय।
मधुर वचन मंगल करन, सुंदर गुन प्रगटाय॥
। राग रेखता॥

इच्छादेवी!-श्राचारज रूप प्रीतम को श्रभी प्यांरी वनाऊँ मैं। करोगी श्राप खुद दर्शन श्रभी करके दिखाऊँ मैं॥ दिगम्बर भेष श्रित सोहन मदन के मन का मन मोहन ।
फिरं श्रिधि सिधि लगी गोहन, तुम्हें नयनों लखाऊँ मैं ॥
सलोनी साँवली काँकी, मनोहर माधुरी बाँकी ।
श्रनूपम अंग की शोभा सहज करके बताऊँ मैं ॥
रहे संग मुक्ति हो दासी, करे सेवा सरस खासी ।
बनें मुनि राज रस रासी तभी कुछ रीभ पाऊँ मैं ॥
इच्छा देवी:—

हे श्री राधे प्यारी श्रापकीप्यारी दासी श्रपने संगश्रुगार कुंज में श्री प्राननाथ को ले जाती है और श्राचार्य रूप बना कर श्राप को भाँकी कराती है।

(इच्छादेवी और श्री कृष्णा दोनों शृंगार कुंज में जाते हैं)

श्वास्त्र का धन्यवाद पद गाना ॥ धन्य दिवस श्राज श्याम भूतल में जावेंगे ॥ श्राचारज रूप धार जीवन को करें उद्धार । माया कर्म वंध काट धाम में बसावेंगे ॥ जन्म मरन नरक त्रास चौरासी योनि वास । मेटें गर्भ त्रास शरन इनकी जो श्रावेंगे ॥

रेंन दिवस धेरें ध्यान प्रेमामृत करें पान।
पुलक परम श्रानंद सों गोविंद ग्रन गावेंगे॥
श्रमर लोक करें वास रहें नित्य युगल पास।
सरस रस विलास निरख मोज नित मनावेंगे॥

(इच्छादेवी का त्राना त्रोर श्रीकृष्ण को त्राचार्य स्वरूप में लाना) ॥ दोहा॥

हे प्यारी नेंन लखो, श्री श्राचारच रूप। विश्व विमोहन मन हरन, श्रद्धत श्रधिक श्रनूप॥ ॥ पद्॥

प्रियाजी:-श्राचारज रूप श्यास, श्रद्धसुत शोभा के धाम।

तिरख लजित कोटि काम अंगकी निकाई ॥

वुँघरारी शीश जटा श्रद्धुत घनश्याम घटा।

चंदा सम मुख की छटा चित्त ले चुराई ॥

बहाचर्य दिसभाल भौंह धनुष श्रित रसाल।

नासिका सुढाल मंद सुसकन सुख दाई ॥

प्रेम मत्त युगल नयन श्रम्हत सम मधुर वयन।

करुणा रस श्रयन हृद्य हरष रह्यो छाई ॥

दया स्तमा गुण श्रपार दीनन दुख हरन हार।

सरस माधुरी सहूप शोभा श्रधिकाई ॥

बिलहारी! बिलहारी!! इच्छा सखी प्यारी। श्रहा श्रापने प्रीयतम को श्रत्यंत सुंदर आचार्य सरूप करायो है हमारे मन में भायो है और हृदय नयनन में समायो है।।

दोहाः- वेद व्यास के श्राश्रम, प्रीतम प्रगटो जायः। श्राचारज मुनि रूप हो, करो सुधर्म सहायः॥

श्री गंगा जी श्रागमन लीला।

マンシンシンシンシンシンシンシングのりゃくとくとくとくとくとくと

॥ श्री राधा सरस विहरिगो नमः॥

॥ सूचना॥

श्री गंगा शुक मुनि जनम, सुन कर हिय हुलसाय। श्री वेद व्यास भगवान के, आश्रम पहुँची श्राय॥ गंगाजल भारी लिये, श्ररु फूलन की माल। मंद मंद मुसकात मुख, मूरति परम कृपाल॥

सर्खी:- जय जय जय वित्तहारी। आप कहाँ से पधारीं। कहा आपको नाम है। रहने को आप को कोंन सो गाम है॥ आपने श्रनुपम दर्शन दियो। हमारो सोभाग्य वर्धन कियो॥

गंगाजी:-

हे सखी प्राण प्यारी। तुम्हरी प्रेम भरी बोलन पर मैं वारी॥ आप श्रपन प्रश्न को उत्तर सुन लीजिये। और हमारी मन इच्छा पूरण कीजिये॥ सखी:—जो आज्ञा आप श्रपनो सर्व वृतान्त सुनाइये। श्रोर मेरे योग्य जो सेवा हो वह मोको अवश्य बताइये।

॥ गजल ॥

आई हो तुम कहाँ से कह दीजे भेद सारा। क्या नाम शापका है कर दीजे आशकारा॥

रहती हो तुम कहाँ पर क्या नाम धाम का है। श्राने का कारन श्रपना सुख से करो उचारा॥ सेवा हसारे लायक जो हो कहा कृपा कर। सिवकाई हम करेंगी यह काम है हमारा॥ तुम हो द्याल भारी सूरत तुम्हारी प्यारी। सरस साधुरी ने अपना सर्वस्व तुम पे वारा॥

॥ गज़ल ॥

गंगा:-गंगा है नाम मेरा गौ लोक से मैं श्राई। जनमें हैं व्यासजी के मुनि रूप श्री कन्हाई॥ दर्शन करन को नैंना ललचा रहे हैं मेरे। मुख चंद शुक मुनी का दीजे जरा दिखाई॥ जग में धरम सनातन क्रायम करेंग प्यारे। भागोत को हुनाके परीज्त को दें तराई॥ आचाँच वन के ब्रज की वरनन करेंगे सहिसाँ। निज प्रेम भक्ति मारग देवेंगे खुद वताई॥ नाम रूप धाम लीला प्रगटावेंगे उपासन। पहुँचविंगे पर्भ पद निज जन को कर कुपाई ॥ जो जन इन्हों को ध्यावें प्रीतम प्रिया को पावें। सरस साधुरी जुगल की छवि में देवें छकाई॥ सखी:-हो तुम हरि की लाड़ली, श्री गंगा गुण धाम ।

पापी पावन होतं हैं, लेत तुम्हारी नाम ॥

व्यास आश्रम में आप अव, चितये मेरे संग। करो दरश शुक लाल के, हृदय भरो रस रंग॥

॥ समाजी दोहा ॥

श्री गंगा सानंद मन, चली सखी के साथ। वेदव्यास को नमन कर, जोर लिये दोउ हाथ। स्तुति कर वहु भांति सों, कहत धन्य मुख धन्य। संत रूप श्री मत हरी, हुये तुमरे उत्पन्य॥

॥ श्री गंगाजी वचन दोहा ॥

श्री मत वेदव्यास जू,तुम सम धन्य न आन । प्रगट भये तुमरे सदन, श्री पुरुषोत्तम जान ॥ आंचारंज है अवतरे, हरि करुणा के ऐन ।

रूप अनूपम श्याम घन, लाखि लाजत मन मैन॥

इनके गुगा अन गिनत हैं, शेष न पावत पार।

श्रवन कराऊँ आपको, कछु इक वचन उचार॥

संतन के सर्वख धन, मुानेयन के सरदार।

ऋषियन के हैं मुकट मागी, रसिकन प्रान अधार ॥

सर्व ग्रंग सुंदर महा, नव किशोर सुकुमार । सरस माधुरी रूप पर, तन सन दीजे वार ॥

॥ त्रासावरी ॥२॥

वेद व्यास भगवान आपको पुत्र वधाई देने आई । परिब्रह्म पुरुषोत्तम प्रगटे रसिक राज संतन सुख दाई॥ सुनके श्रवन अधिक सुख उपजो परमानंद हिय न समाई। मगन भई धाई इत आई दर्शन दीजे नैंक कराई ॥ लालन को अभिषेक करावन उत्तम जल भारी भर लाई। सेवा करूँ सुकर शुक सुनि की यह मेरे मन मांही भाई॥ पतित जीव जग नहावत मो में तिनको पाप रह्यो हिय छाई। चरन छुवत मुनिवर के तत् छिन जैहैं पातक सकल विलाई॥ आश्र लगी मोहे आमित दिनन तें धन्य घरी शुभ दिन दरशाई। होऊँ सनाथ नाथ निज देखे नेंन हृदय होय शीतलताई ॥ द्रैपायन कर कृपा सुरधुनी मंदिर अपने मांहि पठाई। लिख लोचन मन मुदित भई तब आनंद अंबु रहै हग छाई॥ जय जय कह निज करन नहवाये ऋंग परश निज सेव जनाई। चरन चारु निज मस्तक परसे वार दोऊ कर लई बलाई॥ गद गद कंठ करी बहु श्रस्तुति फूल माल गल में पहराई। परिक्रमा कर छवि निज उर धर चली लोक।नेज शीश नवाई॥ तीरथ सकल पुनीत करन को मुनि के पाद पद्म सुखदाई। सरस साधुरी के सर्वस धन सदा रहे तहां सुरात समाई ॥

॥ पद् ॥१॥

सुनो वचन श्री वेद व्यास जू तुम घर श्री हिर श्राये हैं। श्राचारज है भये प्रगट प्रभु संतन के मन आये है॥

परम संहिता गान करेंगे हरिजन हिय हरवाये हैं।
दर्शन कर मन मुदित भये हैं सुर नर मुनि मगनाये हैं॥
श्याम वरगा शोभा के सागर लिख लोचन तृप्ताये हैं।
परमानंद मगन मन सब ही सुख के सिंधु समाये हैं॥
वैठ विमान श्रमरगन नभ में फूल फूल वरवाये हैं।
जय जय धुनि दसहू दिशि छाई थिर चर चित हुलसाये हैं।
उन्नत नित्य निकुंज पुंज रस रिसकन के हित लाये हैं।
सरस माधुरी शरन हरन मन प्रेम मुदित ग्रन गाये हैं॥

॥ पद् ॥

जो जन शुक मुनिराज चरन की शरन भाव कर श्रावेंगे।
निश्रय वह नर नार सहज संसार पार हो जावेंगे॥
शुक शुक रहें कहें भव संकट जन्म मरन मिट जावेंगे।
चौरासी यम दंड न व्यापें अंत परम पद पावेंगे॥
प्रेमा परा भिक्त को करके प्रीतम प्रिया रिभावेंगे।
रंग महल में पहुँच जुगल संग नित रंग रखी मनावेंगे॥
वसें श्रमर पुर वास ख़ास सेवा करके हुलसावेंगे।
सरस माधुरी छक के छिब में मन में श्रित मगनावेंगे॥

इन्द्र ग्रप्सरा ग्रागमन।

॥ श्रीः ॥

॥ सूचना ॥

इन्द्र राजा का श्री मत वेद्व्यास श्राश्रम में श्रप्सराश्रों के सिहत श्राना श्रीर सभा की सुंदर रचना निहार मंद मंद मुस-काना। परस्पर एक दूसरे की तर्फ इशारे से उत्तमता आश्रम की सूचना करना श्रीर हाथों से भाव बता कर मस्तक श्रुमा कर। इधर उधर फिरना। श्रापस में मिल कर आश्रम की मुख से प्रशंसा करना। हृदय में श्रानंद भरना।

॥ इन्द्र राजा का बोलना ॥

बिल हारी। बिल हारी। यहाँ की तो शोभा ही बड़ी भारी है सभा की रचना श्रजब ही न्यारी है। मानो विधना ने श्रपने हाथ ही से संवारी है। सुमेरु तरेटी कैसी सुखकारी है। जहाँ देखिये वहाँ हरित लता पता परम प्यारी प्यारी है। चारों श्रोर नाना भाँति के फ़्लों की परम सुंदर फुलवारी है। जिन्हों की महक महान मोदकारी है। शीतल मंद सुगंध पवन हू संचारी है ये भी श्रत्यंत हर्ष के बढ़ाने वारी है। मद माते भौरान की गुंजार परम श्रानन्द कारी है। पत्तीन की मधुर बोलन कलोलन चित्त को चुराने हारी है। जहाँ तहाँ फरनान से परम निर्मल जल जारी है। स्वच्छ सरोबर में नाना रंग के कमलन की पराग परमानुराग की उद्य करन वारी है। श्री मत वेद्व्यास परम धन्य है जिन्हों के श्राश्रम में श्राज श्री

कृष्ण महाराज महा मुनिराज रूप धारन कर प्रगट हुये हैं। जयहो। जय हो। जय हो॥

इन्द्र और श्रप्सराओंका मिलके गाना श्रीर नृत्यकर भावका वताना॥

॥ गजल ॥

दिन श्राज महा मन भावन है जन्मोत्सव परम सुहावन है।। प्रगटे हैं श्री शुकदेव लला, परिपूरण षोडस कृष्ण कला। शुभ सुंदर माँस वैषाख भला, तिथि मावस हू त्राति पावन है।। सुमेर शिखर की है शोभा भली,तर वेली लता सव फूली फली। सौगंध मनोहर गुंजें अली, ऋतु राज मनो छवि छावन है॥ करें कोयल शोर नचें कहूँ मोर, चकोर चकोरी लें चित को चोर। सुहावन हंसन के बहु जोर, हिये सब हर्ष बढावन है ॥ मुनिराज ऋषी यहाँ राजरहे, वेद्व्यास के श्राश्रम साजरहे। यहाँ वाजे श्रनेकन बाज रहे, सुन के सब चित्त लुभावन है॥ नव नारी बधाईयाँ गाय रहीं, श्रानंद के सिंधु समाय रहीं। धुनि मंगल बन में छाय रहीं, रित हू की मित ललचावन है॥ कोई फूल के फूलन वृष्टि करे, जय जय कहि के मनमोद भरें। कोई मंगल द्रव्य ले थाल श्रली,चली श्रावत चावन चावनहै॥ छकी छविमें सरसकरे लाल दरस,निज मस्तकसों कियेचर्ण परस। मन माँहि हुआ है महान हरेष, प्रगटी तन में पुलकावन है॥

॥ ऋषी बचन इन्द्र से॥

॥ दोहा ॥

कहा नाम है श्राप को, रहो कौनसी ठौर। कहो कृपा कर भेद सब, हे सज्जन शिर मौर॥

॥ इन्द्र वचन ॥

पुरी मेरी श्रमरावती, इन्द्र है मेरा नाम। रजधानी सुर लोक है, श्रति श्रन्य शुभ ठाम॥ पुन्यवान विरले कोइ, पावत तहाँ निवास।

सुख भोगें बहु विधि जहाँ, षट ऋतु वारह मास ॥ श्री नारद मुख में सुनों, शुक मुनि जन्म विधान ।

प्रगट भये श्री व्यास घर, खयम् कृष्ण भगवान ॥ दरशन तिन के करन को, लिये श्रप्सरा संग।

त्राये त्रित ही प्रेम सों, कर मन माँहि उमंग॥

दिव्य वस्त्र सुंदर सरस, भेट करन के काज। लायो हों हिय हुई के, देंन बधाई आज॥

वेद व्यास पद वंदि के बोले दोऊ कर जोर।

कहन लगो श्रमृत वचन, कर बहु विनय निहोर॥

॥ इन्द्र वचन ॥

॥ प्रार्थना पद् ॥

दर्शन देहु कराय व्यास जू दर्शन देहु कराय। तुम्हारे शुक सुत प्रगटे श्राय॥

एक तो हैं ये खयं श्यास घन डूजे हैं सुनिराय।
तीं जो तीन लोक निस्तारन पार न कोई पाय॥
श्री सत सगवत धर्म सनातन जग में दें फेलाय।
नृपति परिज्ञत तार सहज ही हिर पद दें पहुँचाय॥
परम हंस संहिता प्रगट कर हिरियश निज मुख गाय।
प्रेसा परा भक्ति जीवन को दान करें हरषाय॥
परम तत्व की काया इन की तेज पुंज छवि छाय।
नवल किशोर चोर हैं चित के लिख अनंग श्ररमाय॥
जो जन ध्यान धरें उर अंतर अजर अमर हो जाय।
सरस माधुरी वसे धाम में सेवें युगल लड़ाय॥

॥ दोंहा ॥

द्रशन कर मन सुदित हो, नेंन प्रेम जल छाय। नख शिख लखि छित्र माधुरी, मृरत रहे छकाय॥ धन्य धन्य सुख कह बचन, दोउ कर लई बलाय। सहिसाँ शुक सुनिराज की गाय उठ हरषाय॥

॥ पद् ॥

शुक मुनि सरकार हमारे, प्यारे नयनन के तारे ॥
भक्ति विस्तारन वपु धारा, लियो प्रभु श्राचारज श्रवतारा ।
धाम से स्वामी श्राप पधारे ॥

कुंजरस रिसकन के हित लाये, श्रनन्यन के हिये श्रानंद छाये। दया तुम्हरे उर श्रपरम्पारे॥

जुगल छविध्यान माधुरी छाके, बसे हिय जुगल विहारीबाँके। धन्य हम नैनन श्राप निहारे॥

मानसी महल भावना भीने, मगन उज्जल रस रास नवीने। रहो नित प्रेम माँहि मतवारे ॥

निरंतर चरण शरण में लीजे सेव श्री मत दंपति की दीजे। सरस दर्शन कर सर्वस वारे॥

॥ इन्द्र वचन॥

॥ राग जंगला ठुमरी ॥

वेदव्यास भगवान श्रापको देन बधाई श्राये हैं।।
पुत्र जन्म सुन कर सुख पाये, दर्शन को नेना ललचाये,
निरित्व लाल मुख मन मगनाये, वस्त्र भेट हित लाये हैं।।
रोम रोम में श्रानँद छायो, श्रित ही प्रसन्न हियो हुलतायो,
परम प्रेम दरशन कर पायो, सुख के सिंधु समाये हैं।।
श्राचल भक्ति दंपति की पाऊँ, विनती कर निज शीश नवाऊँ।
सरस माधुरी मौज मिले मोहि, याते हिय हरषाये हैं।।

॥ इन्द्र और अप्सराओं का नाचना गाना ॥

मिल नचो श्रप्सरा नार लखो शुकदेव कुमार। सुभग माँस वैसाख तिथि मावस सोम सुवार। होम कुंड तें प्रगट हुये, हिर श्राचारज श्रवतार। लेवें जीव अनंत उवार करें भव सागर पार ॥ श्रोय मुनि को रूप धर खयम् कृष्ण सरकार । कित मल हरन कला निधि खामी भक्ती करन प्रचार। हरि भजन करें नर नार हरें सब सुब को भार ॥ परम हंस संहिता कहेंगे निज मुख कमल उचार। नृपति परिचित को सुनाय के करें सहज उद्घार। दीनन दुख भंजन हार ऐसे महाराज उदार॥ प्रेम परा पद देंन दया निधि नव निकुंज दुरवार । पहुँचावें परधास जनन को दरशावें दीदार । बाँकी छवि में छकाेंव कर प्यार लखावें नित्य विहार ॥ ऋतु वसंत संतत तहाँ छाई फूले फूल अपार। त्रिविधि पवन दुख द्वन गवन करें वन घन विविधि वहार वोल रहे पंछी श्रमित प्रकार करें भौंरा गुंजार॥ रास विलास हुलास जहाँ नित सत चित श्रानंद सार। वस्तु श्रमायक सकल जित विलसत वारंवार । रहें अजर श्रमर तन धार करत दंपति उर हार ॥ श्रमय करें सिर कर धरें रखें श्रापने लार । सरस माधुरी श्याम राधिका सिलें दोऊ मुजा पसार। प्यारे प्राण्न के आधार रसिक जन के रिभवार॥

शुंक मुनी महा प्रभु वेद्व्यास नंद्ना।
वेद्व्यास नंद्ना श्री वेद्व्यास नंद्ना॥
(श्रंतरा)

गिर सुमेर के तरे, संत रूप अवतरे। श्याम अंग अति अनूप, आनंद के कंदना॥ नव किशोर चित्त चोर, नयन वसत श्याम गोर। नख शिख श्री कृष्ण सृतिं, मुख सु हँसत मंदना॥ रसिक मुकट मिशा प्रधान, तुम सम नाह और आन। दीजे प्रेम भक्ति दान, करें चरन बंदना ॥ द्या दृष्टि कीजिये, खामी सुधि लीजिय। श्रवन सुनो विनय वेग, भक्त चित्त चंदना॥ विरह दुख को हरो, माथ नाथ कर धरो। परिकर में मोहि वरो, मेटो दुख इंदना॥ दंपति दीजे मिलाय, छवि में दीजे छकाय। टहल महल दो बताय, टारा भव फंदना॥ पाप ताप के हरन, आप हो तारन तरन। सरस माधुरी श्रन, गावत गुन छंदना॥

॥ पद नाटक की चाल में ॥

शुक मुनि महा प्रभु हो कृष्ण के त्रवतार । प्रभु निज धामी पतित उधार ॥ साँवल वरन, मनके हरन, मंगल करन, पोषन भरन, दुख के हरन, तुमरे चरन, श्रशरन शरन, तारन तरन सुनिये मेरी पुकार॥

भंसार सिंधु भार, इस से मुभे उवार,

करुणा नजर निहार, करिये मेरी संभार ॥

में दीन हूँ, बुधि हीन हूँ मलीन हूँ, श्राधीन हूँ।

तुम दीन वंधु, दया सिंधु, स्वामी हो हमार ॥

कृणा के हो निधान, दंपित मिलावो श्रान ।

दरशन का दीजे दान, विनती सरस की मान,

पाहि माम, पाहि माम, प्राण के हो तुम श्रधार ॥

प्रभु निज धामी पितत उधार ।

शुक मुनी महा प्रमु हो कृष्ण के श्रवतार ॥

॥ दूसरा पद ॥

नाचो नवेली मिल सारी बजावो गावो दे दे करतारी ॥

व्यास के लाला की विलहारी ॥ बजावो ॥

छवि लिख जावो वारी वारी ॥ बजावो ॥

साँवरी सूरत प्यारी प्यारी ॥बजावो॥

मोहनी है सोहनी छटारी ॥बजावो॥

छैल छ्वीली भाँकी भारी ॥बजावो॥

शुक लाला है सुख कारी ॥बजावो॥

मृदु मुसकन मनुहारी ॥बजावो॥

मोहनी दीनी है याने डारी ॥बजावो॥
प्रेम की है नैनों में खुमारी॥बजावो॥
बन में हैं फूले फूल क्यारी,हररंग की फुलवारी की देखें शान ।
सरस चमन। गुले गुलशन। है सलोना श्राला शुकलाला ।
छवि जाला। मतवाला। मनहारी। बजावो गावो देदे कर तारी॥
नाचो नवेली मिल सारी बजावो गावो दे दे करतार ॥

॥ राग ॥

शुक लाल हमारा प्यारा री नेंनों का है तारा ॥ व्यास दुलारा ये भोरा है भारा। ऐसा ना और निहारा री नेंनों का है तारा ॥ सुंदर सोहन विश्व विमोहन, है त्रिभुन उज्यारा री॥ श्याम सलोना है रूप रिक्तोना है, ता पर तन मन वारा री॥ श्राचारज शिरमौर जगत गुरु, रिसकन प्रान श्रधारा री॥ भक्त जनों का है सरवस धन, हमारा है रखवारा री॥ प्रेम भक्ति विस्तारन कारन, लियो है अवनि अवतारा री॥ स्वयं कला निधि कृष्ण कुँवर ने, श्रद्भुत नरतन धारा री॥ माधुरी मूरति मन में बसी है ध्यान टरत नहिं टारा री॥ सोबत जागत सुरत लगी है, बिसरत नाहिं बिसारा री॥ देवेंगे बास महल वृंदावन, यह निश्चय उर धारा री॥ परिकर में पहुँचावें प्रान धन जुगल मिलावन हारा री॥ सरस माधुरी सोंपे सेवा, सदा करें प्रतपारा री॥ शुक लाल हमारा प्यारा री नैंनों का है तारी॥

॥ इन्द्र वचन ॥

॥ दोहा ॥

गावो सुवारिकवादियाँ, कर सन उसंग हुलास। नित प्रति हो यहाँ शादियाँ, उत्सव प्रेम विलास॥ श्री शुक सुनि जुग जुग जियो, हो जग सुयश प्रकाश। सदा रहो श्रानंद सों, षट ऋतु धारह सास॥

॥ सुवारिकवाद की ग़जल ॥

सुवारिक श्राज का दिन है प्रगट शुक्रमुनि हुये श्राई।
वधाई गान संगल धुनि सकल संसार में छाई॥
जुरे हैं श्राके ऋषि सुनि जन, मुदित सवके हुये हैं मन।
किये शुक्रलाल के दर्शन, सकल जय जय उठ गाई॥
चरच के श्रंग अगर चन्दन, तिलक करके करी वन्दन।
गले में माल फूलों की, मुदित सन होय पहिराई॥
चढ़ाये फूल फल डाली, श्रनेकन श्राये हैं माली।
मिठाई पान और मेना, सभा में सनको चरताई॥
यहां जाचक जो श्राते हैं, सकल सनमान पाते हैं।
सनइच्छा दान लेले के, श्रशीसत हित से हर्षाई॥
सकल ऋषि सिद्धि कर जोरें, निहोरें लाल की श्रोरें
मुक्ति मांगत खड़ी होकर,चरन लालन की सिनकाई॥
सरस लख व्यास के नन्दन, करी कर जोर के वन्दन।
नज्ञर के डर से मन में डर, उसारत नोंन श्रीर राई॥

॥ समाजी दोहा ॥

माल प्रसादी पाय के, जय जय कह सिर नाय। इन्द्र श्रप्सरा गन सहित, चले सदन सुख पाय॥

—[⊛]—





* श्री नारद मुनि त्रागमन *



॥ श्रीः ॥ ॥ दोहा ॥

हरि ग्रन गावन मोहि प्रिय, नारद है मम नाम।
प्रेम भाक्ते अनुरक्त नित, सुमिरों रयामा श्याम ॥
तीन लोक चौदह भुवन, विचरत रहों हमेश ।
सुन्यो जन्म श्री शुकमुनी, व्यास भवन रिसकेश ॥
अग्रयो धायो हर्ष हिय, लेकर बीन नवीन।
दर्शन हित ललचाय मन, ज्यों जल चाहत मीन ॥
धन्य सुमेरु सुहावनो, सुभग तरहटी जान।
जहां प्रगटे मुनिराज वर, व्यासाश्रम में आन॥
देव बजावत इंदभी, वरषावत हैं फूल।
सुर नारी गावें सरस, सोहिल मंगल मूल॥

अहा ! आज को दिन अत्यंत मंगल कारी है। श्री मत वेद्व्यास आश्रम की शोभा सर्व विश्व से कुछ न्यारी है। गगन में देवता इंद्रभी बजा रहे हैं और जय जय ध्विन करके परम उत्साह साहित फूल बरषा रहे हैं। हा हा हू हू गंधिव बधाई गावें हैं। अप्सरा नाना भाँति नृत्य कर भाव बताय के रिकावें है। श्री मती भागीरथी गंगा भी आतुर उठ धाई हैं और श्री शुक्र मुनि के स्नान निमित्त श्रीजल कारी हू भर लाई है। सुरराज अप्सरा समाज सहित उत्साहित आये हैं और अलोकिक दिव्य वस्त्र भेट करवे को लाये हैं।

॥ पद् ॥

भजो श्री राधे गोविंद हरी॥

ुगल नाम जीवन धन जानो, या सम और धर्म निहं मानो। वेद पुरानन प्रगट वखानो, जपै जोई है धन्य घरी॥ किलयुग केवल नाम अधारा, नौधा भिवत सकल श्रुति सारा। प्रेम परापद लहे सुखारा, रसना नाम लगावो भरी॥ वृत्य करें प्रभु के ग्रण गावें, गदगद स्वर तन मन पुलकावे। टहल महल कर हिय हुलसावें, सरस माधुरी रंग भरी॥

॥ राग मांड ॥

श्रास्त वचन सुनत श्रकुलाऊं, ताही च्राग उठकर मैं धाऊं, नेक न कहूँ श्रवारा ॥

निज भक्तन को सर्वस देहूं, पल पल में उनकी सुधि लेहूं, करूं सदा प्रति पारा ॥

भक्तन हित नाना तन धारूं, भू को सबही भार उतारूं, युग खुग लूं अवतारा॥

जाको जसो भाद पिछानूं, तासों तैसी ही रित ठानूं, रितकन प्राण अधारा॥ ध्यान भक्त धारूं दिनरैना, भक्त बिना सोहि परै न चैना, दूं उनको निज दीदारा ॥

हम भक्तन के भक्त हमारे, मैं निज जन उर अन्तर धारे, नाता टरत न टारा ॥

भक्तन को ऋनियां कहलाऊं, नित प्रति उनको हुकम उठाऊं, जानें जानन हारा॥

कपटिन सूं निहं मेल करूं मैं, गर्व वचन सुन ऋधिक जरूं मैं, उनको भेजूं यम द्वारा ॥

द्रोही भक्त हमें निहं भावे, देखे हू निहं हमें सुहावे, तिनको करूं गर्व परिहारा ॥

भक्तिह मात पिता परिवारा, सजन सनेही भुत अरूद्।रा, सत यह वचन हमारा॥

सरस माधुरी जुगल उपासी, करे भावना उमंग हुलासी, पावे नित्य बिहारा॥

॥ पद् ॥

(रिसया की चाल में)

शुकंमुनि श्रमरलोक तें श्राये खामिनि श्यामां श्राप पठाये। श्राचारज धर रूप श्राप हरि श्रपने दरसं दिखाये। रस निकुंज रिसकन देने को रिसया सँगः निज लाये॥ वेद्व्यास भगवान जगत ग्रह तिनके कुंवर कहाये। वयस किशोर श्याम सुंदर वपु निरख श्रनंग लजाये॥ अतिशय सोहन विश्व विमोहन रिसकन के मन भाये। थिर चर सकल लोक में व्यापक सबमें सहज समाये॥ सुर नर संत महंत मगन मन दरशन कर हरषाये। सरस माधुरी रिसक शिरोमिश जिनके ग्रेग मुख गाये॥

॥ पद् ॥

व्यास ज् सुकृत कोंन सो कीनो।
ताके किये जगत पति तुम को यह सोहन सुत दीनो॥
सुंदर श्याम कसल दल लोचन प्रेम माँहि रंग भीनो।
शोडष वर्ष किशोर चोर चित सनहु कृज्ण सम चीनो॥
विधि हरि हर हरपे सन माँही लखि के रूप नवीनो।
सरस माधुरी शुक प्रगटत ही छ्यो लोक सुख तीनो॥

॥ पद् ॥

व्यास जू तुम सम धन्य न और।
प्रगट भयो तुमरे घर लालन सकल मुनिन सिर मौर॥
श्याम श्रंग शोभा निधि सुंदर रिसकन को चित चोर॥
धुँधरारे वर वार वदन विधु श्रद्भुत वयस किशोर॥
कमल नैन मृदु वेन मनोहर केसर चंदन खौर॥
सरस माधरी छवि को लिख के मुदित भयो मन मोर॥

॥ श्रीः ॥

॥ श्री वेद्व्यास वचन ॥

।। गजल ॥

नेनों में शुक मुनीश्वर मेरे समा रहा है।

तज के मुभे वेद्रदी वनको ये जा रहा है॥
सों वर्ष तप के फल से प्रगटा है प्रान प्यारा।

जाता नहीं विसारा मेरे मन में भा रहा है॥
किसको ये दुख सुनाऊँ लोटा के कैसे लाऊँ।

हाय हाय क्या करूँ में मुभको सता रहा है॥
संदर है श्याम सुरत मन मोहनी है मूरत।

वरही विरह की वेहव मुभपर चला रहा है॥
संकट विकट है भारी नेंनों से नीर जारी।

वेराग वल यह अपना मुभको बता रहा है॥
भांकी है सर्स प्यारी रिव चन्द जिस पै वारी।

भांकी न मेरी ओरी आगे को धा रहा है॥

॥ समाजी दोहा ॥

श्री शुकमुनि वन को चले, भिथ्या यह जग जान।
उदय भयो वैराग उर, प्रगटो पूरन ज्ञान॥
व्यास आश्रम तज दियो, गवन कियो तत्काल।
चलत मंद गति मन हरन, मानहु बाल मराल॥

॥ सोंरठा ॥

व्याकुल वेद्व्यास, मोह पासि गल में परी । अति ही भये उदास,शुक सुत के पीछे चले॥

वेद्व्यास-हे परमेश्वर आपने यह कैसा विचित्र चारित्र कर दिखलाया अत्यन्त सोहन विश्व विमोहन श्याम सुंदर मेरे यहां सुत प्रगटाया और प्रगट होते ही मुभासे वियोग कराया और बन को पठाया और मुभाको शोक समुद्र में डुवाया। अद्भत है तेरी माया। हाय हाय अब मै क्या करूँ और कैसे धीरज धरूं॥ (आप ही आप) अहो मेरा प्यारा पुत्र तो बड़ी ही दूर बन में जारहा है (ऐसे कह कर पद गान करते चलने लगे)

॥ गाना॥

॥ राग बहार ॥

शुकदेव सुवन ठाड़े रहो ॥

तात बात सुन लेहु हमारी विरह अगन तन जिन दहो।।
दिन्य बरस शत तप आति कीनो तब तो सो सुत में लहो॥
निरमोही हो जात कहां अब मृदुल वचन हाँसि मुख कहो॥
बुद्ध वयस मम लाखि के लालन बैंयां आ मेरी गहो॥
मोह महान देत दुख मोको जात नहीं अब यह सहो॥
शीतल करो हृदय सुत आके जो जीवन मेरो चहे।॥
सरस माधुरी छवि निज मुखकी दिखलावो प्रियतम अहो॥

॥ समाजी दोहा ॥

श्रंतरयामी शुकमुनी, व्यथा पिता लई जान । वृत्तन में शुक शब्द वहु, प्रगटाये हित ज्ञान ॥ व्यापकता गुन आपनो, दरशायो शुकदेव । बोध करायो व्यास को, समकायो निज मेव ॥

॥ वेद्ञ्यास वचन ॥

अहो अति आश्चर्य। देखो इन बन के वृत्तों में से 'शुकोहं शुकोहं' ऐसे अनंत शब्द सुनाई दे रहे हैं मानो मुभ ही से ज्ञानोपदेश वार्ता कर रहे हैं। कि शुक स्वयं सर्व व्यापी घट घट बासी आविनाशी सुख राशी है। (ऐसे कह कर रास्ते में ठहर कर शुक को बन में जाता हुआ दृष्टि से देखते हैं)॥

॥ समाजी दोहा ॥

सुरकन्या हिल सिल करत, सरवर में असनान। श्री शुक मुनि के दरसन कर, भई प्रसन्न महान॥ विनय सकल करने लगीं, शीश नवा कर जोर। इकी दरश छिव में महा, जिम लखि चन्द चकोर॥

सरकन्या पाठ पद् गुजल ॥

श्री शुकमनी मनमें भाये हुये हैं, अमरलोक से आप आये हुवेहैं स्वयं रयाम औतार धरके पधारे, सुवन व्यासजूके कहाये हुवेहैं प्रगटते ही प्यारे लिधारे हैं वन में, निजानंद में ली लगाये हुने हैं चलेठ्यास पीछहो ठ्याकुल विरह में, दरस कर ने की हगलुभाये हुने हैं शुकोहं शुकोहं किया शब्द पैदा, सचर और अचर में समाये हुने हैं श्रीकृष्ण में शुक में अंतर नहीं है, ये उन में वे इन में रमाये हुने हैं सर्समाधुरी धन्यहै जगमें वोही जो मुनिवरकी छिवमें छकाये हुने हैं

॥ सुकन्या पद दुमरी ॥

शुक मुनि को नैंन निहारों री।

रयाम वरण शोभा को सागर श्री मत व्यास दुलारों री॥

बहा रूप रिसकन को भूप सुंदर अनूप अंतरयामी।

निज धामी स्वामी सर्वेश्वर संतन को प्राण आधारों री॥

आनंद कंद मुख हँसत मंद छिव को लिख लाजत सूर चंद।

सुर नर सब ही रहे चरन वंदा त्रिभुवन तम नाशन हारों री॥

सर्वज्ञ सकल घट घट वासी अविनासी और आनंद रासी।

सर्वव्यापी सब में पूरन परमातम नर वपु धारों री॥

चरनन की शरन जो जन आवें मन वांछित इच्छा फल पांचें।

कहै सरस माधुरी दर्शन करके जन्म मरन दुख टारों री॥

॥ समाजी दोहा ॥

श्री शुक नृति आगे गये, हिय में भरे हुलास।
आये सुर कन्या निकट, श्री मत वेद व्यास॥
लेजा कर विसमित भई, वस्त्र लिये अँग धार।
मौन गहे ठाडी रहीं, शीश नाय नेहि वारः॥

॥ दोहा ॥

॥ दोहा ॥

सुरकन्या—नारि पुरुष रस शिति के, तुम सब जानन हार।
तात लजा हम करी, वस अंग लिये धार॥
शुक्रमुनि मन समस्त नहीं, कहा पुरुष कहा बाम।
सम दरशी शीतल हृदय, श्रतिशय श्रातम राम॥

वेदच्यास—मरा गुक पुत्र अव किसी प्रकार वन से लीट कर नहीं श्राना है। यह मैंने श्रपने मन में ठीक ठीक निश्चय करके जाना है। श्रब पुत्र के विरह वियोग में मेरा वृथा पछताना है। श्रवतो श्रपने श्राश्रम को चलना ही उचित है (ऐसे कहि के श्री वेदच्यास श्रपने श्राश्रम की तरफ लीटते हैं)॥

॥ समाजी दोहा ॥

है निराश तिज श्राश शुक, लोटे वेद्व्यास। पछताते श्राये उलट, श्राश्रम कियो निवास॥ श्री शुकमुनि बन सघन में, तब ही पहुंचे जाय। गुफा मध्य श्रासन कियो, बैठ ध्यान लगाय॥

॥ इति पहिला प्रसंग समाप्त ॥

॥ दुतिय प्रसंग ॥ इन्द्र श्रप्सराश्रों को बुलाकर वार्ता कहना ।

॥ समाजी दोहा ॥

इन्द्र श्रधिक मन में डरे, तप शुक मुनी निहार। सत्य हरन को श्रप्सरा, कीनी तुरेत तयार॥

इन्द्र—जावो जल्दी बन विषे, शुक मुनि को छल लेव। भंग भजन करके वहुर, हमें श्राय कहो भेव॥

श्रप्सरा—जो श्राज्ञा श्री इन्द्र महाराज श्रभी हम बन जाती हैं। श्रीर शुक मुनि को छल कर तपस्या से डिगाती हैं। श्रीर उलटी श्राय कर श्रापको मन वांछित समाचार सुनाती हैं।

॥ समाजी दोहा ॥ चर्ली सकल मिल श्रप्सरा, काम सैन्य ले लार । श्रंगन सज भूषन वसन, कर सोलह श्रंगार ॥ श्रा पहुँची श्रारन्य नं, करन लगी कल गान।
नाचन लागीं नवल गति, ले ले सुंदर तान॥
नेन मृँद कर ध्यान धर, शुक्र मुनि रहे विराज।
चरन वंदना कर कही. जय जय जय महाराज॥
केशर चन्दन तिलक कर, पुष्प माल पहिराय।
करी श्रारती प्रीति सों, ऋतु फल भेट चढ़ाय॥
कोलाहल सुन शुक्र मुनी, खोले श्रपने नेन।
देख श्रप्सरा गगान को, या विधि बोले बेन॥

शुक मुनि की सुरितयां है प्यारी घनी।

मनहारी घनी सुखकारी घनी।

है ये जीवन प्रानों की हमारी घनी॥

है किशोर चित चोर शुक, रियाम रूप सुख देंन।
नख शिख मृरत प्रेम की, निरख लजित यों मेंन॥
शुक मुनि की छिव माधुरी, वसी हगन में श्राय।
छकी श्रप्सरा रूप लख, करत हाय मुख हाय॥

रूप ठगोरी डार मन, ठग लीनों वर जोर।
साधु भेष में हे सखी, निकस्यो चितको चोर॥

गूबर वारी सिर जटा, घटा सिरस घन श्याम।
मुख मयंक की छिव छटा, श्रित सुंदर श्रिभराम॥

रूप दिगम्बर में रमो, नख सिख रस शृंगार। सुरकन्या सोहित भईं, तन अन दीने वार ॥ मृदु मुसकन मन सोहनी, नैंन मेंन के वान। तिरछी चितवन से सखी, घायल कीने प्रान ॥ जो घायल शुक नैंन के, सो तलफें दिन रैंन। फसे प्रेम के फंद में, पल छिन परे न वैंन ॥ साधुन को सर्वस्व शुक, भक्त जनन को प्रान। रिसकन को जीवन यही, संतन को सुखदान॥ रूप जाल शुक लाल में, फँसे सो हुये निहाल। पहुंचे नित्य निकुंज में, जहां लाडली लाल ॥ शुक मुनि सुंदर श्यास हैं, श्राचारज गुगा यास। अंतर सुंदर श्याम हैं, वाहर सुंदर श्याम॥ शुक मुनि रूप अनूप हैं, वसो दगन निशि भोर। सरस माधुरी सर्व दिशि, दरसत नहिं कुछ घोर ॥

॥ दोहा ॥

शुकमुनि-कहो खोल तुम कोन हो, कहा तुम्हारो नाम। क्यों श्राई वन में यहां, कहा तुम्हारो काम॥

॥ गाना॥

करन दर्शन तुमरे हमश्राई, सुनोतुम विनय वचन सुखदाई॥ खोलो सकुच वचन मुख वोलो, मिलो हृदय हरषाई। सुरकन्या सारी सुकुमारी, लो निज दासी बनाई॥ तुम से सुन्दर वर निहारो, सकल विश्व भटकाई। हमरी तुमरी जोरी श्रनुषम, विधि ने भली बनाई॥ श्रंग संग करिये सुद्र भरिये, हे रिसकन के राई। सरस माधुरी श्रधरामृत रस, दीजे चतुर चखाई॥

॥ गाना ॥

शुक मुनि की मूरित रस खान री॥
निराित के लुभानी सुर कामनियां हो।
सुध बुध ना रही निश जामनियां हो। सांची मान री॥
मंद मंद मुसकाय के मनवा मोह लियो।
अब चिन दर्शन के सखी कैसे जात जियो। जावे जान री॥
सरस माधुरी रस इकी प्रेम पियूष पियो।
तन मन धन मुनि चरन पै श्रपनो वार दियो। मेरे प्रान री॥

॥ दोहा ॥

शुक:-सुर पुर की तुम श्रव्सरा, जान लई मन मांहि। तुमरे छ न वल में कभी, हम श्रावेंगे नांहि॥

॥ गाना॥

(तमाशे की चाल में)

सुनो तुम सकल अप्तरा नारी, वात तुम्हरी हम जाने सारी। तपसी सन्यासी सब मोहे, जती सती ब्रह्मचारी। शृगी ऋषि सं छल तुम कीनो, अव्भुत कला तुम्हारी॥ सुर श्रक्त श्रसुर सकल बस कीने, विषयी नर संसारी।
जटा जूट लूटे बहु साधू, हो तुम ठगनी भारी॥
दूधा धारी फल श्राहारी, सब की बुद्धि विगारी।
ज्ञानी ध्यानी बहुतक मारे, मदन मोहनी डारी॥
कन्या क्वारी कहत श्रापको, मिथ्या बचन उचारी।
सरस माधुरी बानी बोलत, श्रंतर कपट अपारी॥

॥ दोहा ॥

श्रप्सरा-विषय भोग सम सुख नहीं, त्रिभुवन में कुछ और। रमन करो हम संग तुम, हे मुनिवर चित चोर॥

॥ पद ॥

शुक-चौरासी जम दंड भुगत के जीव जक्त में श्राता है। समय पाय श्री हिर कृपा से फिर यह नरतन पाता है॥ माया के बस होय विषय रित अंतकाल पछताता है। भजन किये बिन सरस माधुरी मानुष जन्म गमाता है॥

॥ पद् ॥

विषय भोग तो जोंन जोंन में करता यह जी श्राता है। जन्म श्रनेक विषय सुख भोगे तो भी नहीं श्रघाता है।। भजन बनत है इसी देह में तासे हिर पद पाता है। सरस माधुरी जन्म मरन श्रिट जीवन मुक्त कहाता है।।

॥ पद ॥

विनता वृत्ति हमारी प्यारी सोइ सँग सुन्दर नारी है। ब्रह्मानंद परम सुख विलसें जीवन यही हमारी है॥ सुखमन सैया पर हम सोवत हमें न चाह तुम्हारी है। सरस माधुरी रस नित पीवत श्रचल धारना धारी है॥

॥ दोहा ॥

नरक तुल्य हैं नारि सब, नख शिख निपट निकाम।
मल श्रर मुत्र मलीनता, वात पित्त कफ़ धाम।।
शुष्क श्रस्ति सम स्त्री, कामी कूकर जान।
मुख लोहू पी श्रापनो, सुख मानत श्रज्ञान।।
श्रातम सुख संतुष्ट हम, निजानंद ग़लतान।
विषय भोग संसार के, नखर लीने जान।।

ध दोहा ॥

श्रप्सरा—दिव्य हमारी देह है, श्रस्थि मांस की नांहि। उदर फार कर देखलो, है सुगंध तन मांहिः॥

॥ दोहा॥

शुक-पहिले जो हम जानते, निर्मल उदर तुम्हार।
माता तुम्हरे गर्भ में, हम लेते अवतार॥

॥ समाजी दोहा ॥

यह सुन सव लिजत भईं, दई कुटिलता त्याग। विषय वासना मिट गईं, उर उपजो श्रनुराग॥ हग नीचे भये तियन कें, मन में उपजी लाज। करंन लगी श्रस्तुति सकल, कही धन्य मुनिराज॥

॥ दोहा ॥

श्रप्सरा--ज्ञमा करो श्रपराध सव, हे मुनि परम द्याल । महिमां हम जानी नहीं, तुम प्रभु परम कृपाल ॥

॥ राग ठुमरी ॥

शुक मुनि प्रगटाये सो हमारे मन भाये।
स्वयं कृष्ण करुणा कर स्वामी, प्यारे श्राचारज वन श्राये॥
नवल किशोर चोर चित प्यारे, निरख रूपरित मदन लजाये॥
दीन वन्धु भक्तन हितकारी, वेद्व्यास के कुँवर कहाये॥
नव निकुंज उज्वल रसरित्या, रितकन को निज हितकरलाये॥
मुक्ति श्रादि इन्हा निहं मन में, ध्यान मानसी सहज समाये॥
दुर्लभ दर्शन देवन हू को सो, हम सहज सुलभ कर पाये॥
धन्य भाग्य हम श्रपने मानें, परम प्रेम तन मन पुलकाये॥
सरस माधुरी शोभा लखके, छवि मांही निज नेंन छकाये॥

॥ समाजी दोहा ॥ जोर के चरगान करी प्रगा

जय जय कर जोर के, चरणन करी प्रणाम । चली श्रप्सरा हार के, श्रपने सुर पुर धाम ॥

॥ तृतीय प्रसंग ॥ ॥श्री वेद्व्यास वचन विद्यार्थियों से॥

॥ दोहा ॥

सुनहु शिष्य मम प्रान प्रिय, श्राज्ञा लीजे मान। वन जा लावो फूल फल, पूजा हित भगवान॥ संथा श्री मत भागवत, करते जावो याद। कंठ करो श्लोक तुम, हिय में रख श्रह्लाद॥

॥ दोहा ॥

विद्यार्थी—जो श्राज्ञा हम जात हैं, लावन को फल फूल। जा वन में तप करत हैं, श्री शुक श्रानँद मूल॥

॥ समाजी दोहा ॥

चलो चलो किह के उठे, करत परस्पर प्रीत । मगन महा श्रानंद में, सख्य भाव रस रीत ॥ हरित सघन वन में शये, ऋतु वसंत अनुकूल। देखो नाना भांति जहां, कंद सूल फल फूल ॥ चुन कर कलियां फूल फल, डलिया करी तयार। निरखन लागे वाल सव, वन की विविधि वहार॥

॥ पद् ॥

विद्यार्थी—अहा! हा!! कैसा बन सुंदर हरा हर तर्फ़ छाया है।
सघन अति ही सुहावन है, हमारे मनको भाया है।।
खिली चंपा चसेली है, अनूपम राय वेली है।
जुही छाई नवेली है, निरख के मन लुभाया है।।
गुलावों की कहीं क्यारी, सुमन सीरम है किचकारी।
चले शीतल पवन पावन, सकल अम को मिटाया है।।
मनोहर बुलवुलें वोलें, जताओं पर उड़त डोलें।
सलीनी कूक कोयल ने, अजब रंग ढंग जमाया है।।
यहां पर वैठ के चारों, करो स्ठोक मुख गायन।
सुनावों सर्स सुर भर के, भला ये वक्त पाया है।।

॥ समाजी दोहा ॥

जहां शुक वैठे गुफा सें, करत आत्मा ध्यान । तहां श्लोक विद्यार्थी, करन लगे हैं गान ॥

॥ श्री कृष्णा ध्यान श्लोक श्ली सङ्गागवत १० स्कंध ॥ वहापीडं नटवर वपुः क्र्यायोः क्रिकारम् । विश्रद्वासः कनक क्रियं वैजयन्तीं च मालाम ।

रंधान् वेगुरधरसुधया पूरयन् गोप वृंदैः । वृंदारगयं स्वपद रमगां प्राविशद् गीत कीर्तिः।

॥ अर्थ ॥

मयूर का मुकट नटवर भेष कानों में कार्णिका के पुष्प सुवर्ण जैसा दीसमान पीतांवर तथा वैजयन्ती माला धारण किये हुये वंशी के छिंद्रों को अधरामृत से पूर्ण करते हुये गोप गणों के साथ जो गान कर रहे हैं श्री कृष्ण ने वृन्दावन में प्रवेश किया जो श्री चरणाविंदो से परम शोंभायमान हो रहा था।

॥ श्लोक ॥

अहो वकीयं स्तनकालकूटं। जिघांसया पाययदप्पसाध्वी। लेभेगतिं धात्र्याचितांतनोन्यं। कंवा दयालुं श्राणं ब्रजेम॥

॥ अर्थ ॥

वड़े आश्चिय की बात है कि पूतना ने मारने के लिये विष मिश्रित स्तन पान कराया। उस दुष्टनी को भी धाय की सी गती दी ऐसे श्री कृष्णाचंद्र को छोड़ कर कौन ऐसा द्यालू है जिसकी श्रा में जांय॥

॥ समाजी दोहा ॥

श्री शुकमुनि निज गुफा में, घरत निरंतर ध्यान । ग्रातम सुख अनुभव करत, ब्रह्म भाव गलतान ॥ श्लोकन की धुनि ऋति सरस, श्रवन परी तिन कान ! छोड़ ध्यान बाहर ग्रफा, आये कृपा निधान ॥

॥ पद् ॥

शुक-सुनावो फिर कृपा करके वही श्लोक शिशु प्यारे।

श्रम्पम है लिलत श्रात ही, मेरे मन के हरन हारे॥

मनोहर ध्यान संगलसय, किया है जिसमें सब वरनन।
बतावो कौन है स्वामी, जिन्हों ने मुख से उच्चारे॥
है महिमा उनकी श्रात भारी, जिन्हों ने पूतना मारी।
दयालू दीन हितकारी, वही हमने हृद्य धारे॥
श्ररण उनकी मैं चल जाऊँ, जनम धारन का फल पाऊ।
सरस श्री कृष्ण चरणों पर, करत है प्रान बिलहारे॥

॥ पद राग सोंहनी ॥

विद्यार्थी-हैं पिता तुमरे सोई श्री व्यास जिनको नाम है।
श्री भागवत वरनन करी श्रीकृष्ण यश सुख धाम है॥
पूतना पावन करी नँद नंद श्रुभ गुन ग्राम है।
मदन मोहन सर्व सोहन श्रंग की द्यात श्याम है॥
नवल नटवर छवि नई लखि रूप लाजत काम है।
सरस माधुरी भाव कर सेवत रासिक निश जाभ है॥

॥ दोहा ॥

शुक-बड़ी मूल मेरी भई, बन में आयो भाग। रह्यो नहीं पितु के निकट, करतो हरि अनुराग॥

सूखे आतम सुख विषे, में दिन दिये गुमाय। ध्यान कियो नहि कृण्ण को, हाय हाय फिर हाय ॥ कहां आत्मा सुस्क सुख, कहां कृष्ण को ध्यान। जिमि चिंतामारी काच में, अंतर लेहु पिछान ॥ कहां सगुरा सदगुरा सहित, कहां ऋगुन गुन हीन। निराकार आकार में, अंतर लीन्हों चीन ॥ श्रातम सुख में वृत्ति मम, रही प्रथम राजतान। अवतो भावत है हमें, कृष्णचन्द्र को ध्यान॥ आकर्पण की कृप्ण ने, मेरी माति निज ओर। अव नहि भावत ब्रह्म सुख, छूट गयो वरजोर॥ व्यास पिता पे ले चलो, मोको सब तुम संग। पठन करूँ श्री भागवत, हृद्य भरूँ रस रंग ॥ मेरे मन में लग रही, अतिश्य सरस उमंग। जैसे श्री गंगा विषय, अनिगन उठत तरंग॥ ध्यान नहीं श्री कृष्ण सम, सब ध्यानन शिरमौर। श्री भागवत समान कोई, दीखत शास्त्र न और ॥

विद्यार्थी । श्री शुकमुनि हम संग चलो, अपने पितु के पास । याद तुम्हारी नित करें, श्री मत वेदव्यास ॥

शुक-मोहि ले चलो संग निज, जहां श्री वेद्व्यास । पठन करूँ श्री भागवत, तुम सँग करूं निवास॥

॥ समाजी दोहा ॥

आस पास शिश मंडली, सध्य चले शुक लाल । पहुंचे आ आश्रम निकट, जहां श्री व्यास दयाल ॥ करी दंडवत शुकमुनी, दीनी व्यास अशीश । चिरजीवो सम प्रान धन, करो कृपा जगदीश ॥

॥ श्री वेद व्यास वचन शुक प्रति॥

पठन करो श्री भागवत, कृष्ण रसामृत सार।
ताहि सुना संसार के, जीव करो उद्घार॥
स्वयं श्याम तुम आप हो, आचारज अवतार।
भगवत धर्म प्रचार के, निस्तारो संसार॥

विद्यार्थियों का गाना।

॥ राग सोहनी ॥

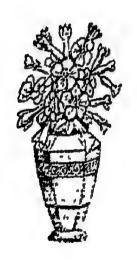
व्यास आश्रम में मुनी शुकदेव बन से आये हैं। ऋषी बालक वृंद सुंदर संग अपने लाये हैं॥ देख द्वेपायन सुवन मन में महा मगनाये हैं।

रंक ने ऋषि सिधि मनो भंडार धन के पाये हैं॥ शुक करी दंडवत हित कर नेंन चरन छुवाये हैं।

भुजा भर के तात ने निज हृदय से लिपटाये हैं॥ जय जय जय धानि बोल नभ से सुर सुमन वर्षाये हैं। सरस ने शुभ जान अवसर गीत मंगल गाये हैं॥

॥ ऋषि पत्तियों का गाना॥

आये हैं सखी बन तें शुक लाल, सलीने सुंदर श्याम तमाल।।
सोहें री सिर पर धुंघरारे वाल, कुटिल भृकुटी है अद्भुत भाल।।
प्रेम मदमाते हैं नैंन विशाल, नासिका सोहन अधिक सुढाल।।
हँसन मुख मंद हंस गति चाल, शरन जन रचक दीन द्याल।।
कृपा सागर संतन प्रतपाल, सरस दर्शन कर हुई है निहाल।।



4444444444

श्री शुक सखी प्राकट्य। लीला।

॥ श्रीः ॥

॥ समाजी दोहा ॥

दम्पित राजें महल में, कर विपरीत शृंगार ।

श्याम स्वामिनी बन गये, श्यामां नंद क्रमार ॥
जोरी गोरी सांवरी, श्रात सुंदर सुकुमार ।
सरस माधुरी प्रान धन, दीजे इन पर वार ॥
॥ सखी बचन पद श्रारती राग बहार ॥
जै जै श्रारित जुगल लाल की ।
जेंज नृपित प्यारी श्रक प्रीतम,नख सिखलों छिव जाल की ॥
गल वेंया दीनें रंग भीनें, रिसया रिसक रसाल की ॥
रस निधान रस खान रसीले,रिसकन के प्रतिपाल की ॥
मन मोहन सोहन सुंदर वर,िवतवन नेंन विशाल की ॥
सरस माधुरी मेंद मंद हँसि, सिखयां सकल निहाल की ॥

॥ युगल स्तुति अन्द ॥

जै जै जुगल रस खान आलगन प्रान कृपा निधान हैं। रित मदन के मद हरन सुर मुनि धरत नित प्रति ध्यान हैं॥ गौर श्याम सरूप श्री बन भूप परम सुजान हैं। ब्रह्मा विष्णु महेश आदिक कोउ न आप समान हैं॥ शेष शारद ऋषी नारद करें ग्रन गन गान हैं।
परात्पर परमेश प्रभु रिसकेश परम प्रधान हैं॥
परा प्रेमा भक्ति दासन कों करत नित दान हैं।
सरस माधुरी शरग जन को रखत दंपति मान हैं॥

॥ सखी वचन पद् ॥

जुगल की क्तांकी अति कमनी। श्रीतम वने श्रिया अति सुंदर प्यारी वनी धनी॥

॥ अंतरा ॥

गोरे श्याम साँवरी राधे अद्भुत वनावनी। निरख रूप अलियन मन आनंद छ ने निह जात भनी। जै जै जै वितहार वोल सुख हरवत सत्र सजनी। सरस माधुरी रित मद नर्दन सूरित प्रेम सनी॥

॥ साखियन के वचन ॥

श्री लालिता-अरी हे लाखी हो। श्री जुगल सरकार परम सुकुमार के विपरीत सनोहर श्रृंगार की वारंवार बिलहार जाइये। और परम आनंद संगल मनाइये। और निज नैनन सो निहार छिव से छकाय जे जे कहि लडाइये दुलराइये॥

श्री विशाखा वचनिका है सखी हो। श्रीमती श्याम सरूप परम अनूप प्यारी जू की परम सनोहारी मांकी है। श्रीर गौर रूप मनमोहन सोहन के नाक में पन्ना की वुलाक है तामें श्यामा प्यारी को अंग को प्रतिविंव कैसो अद्भुत चमत्कारी मनोहारी है। हे श्री रंग देवी ज तुम भी भली भांत दरशन करो।

> ॥ श्रीरंगदेवी वचिनका ॥ श्री कालजी के पास जाकर कहती है।

अहाहा ! अहाहा !! अरी सखी हो ऐसी अन्पम अलवेली नवेली छिन को नित्त निरंतर नेंनन तें हम तुम सदा देख्यो करें याकी सुगम उपाय येही है कि श्री युगल सरकार से निनय करें अपनो मनोरथ अवश्य ही पूरण करेंगे जामें कुछ संदेह नहीं है ॥

॥ सखी का विनय पद ॥

सुनो तुम विनय युगल सरकार ॥

गौर रयाम छवि धाम प्रियापिये जीवन प्रान अधार ॥ आज अनूपम अति सुंदर तुम कियो विपरीत श्रंगार ॥

वनें श्याम श्यामां ऋभिरामां प्यारी पिय उनहार ॥ श्यामाँ रूप दूसरो श्रपनों प्रभट करो विलहार ॥ निरक्षे ताहि निरंतर निशदिन करें परसपर प्यार ॥ छवि में छकें लखें भरिलोचन दें निजतन मन वार ॥ सरस माधुरी शरगा कृपा वल विलसें नित्य विहार ॥

श्री लाल जी वचन सखियों प्रति ॥

परम प्राण प्यारी सखी तुम्हारी इच्छा श्रनुसार हम श्रभी दूसरो श्याम सखी सरूप प्रगट कर तुम्हारो मंगलीक मनोरथ पूरण करने को हम तैयार हैं तुम निकुंज द्वार पर टेश लगावो पश्चात् टेरा खोल कर मनवां जित फल पावो श्रीर परेमानंद मंगल गावो ॥

सखी निकुंज द्वार पर टेरा लगाती हं और सरकार की महिमा का पद गाती है।।

॥ पद् ॥

जै जै जै श्री दम्पति प्यारे ॥

परम पूज्य प्रण्तारत भंजन, जन मनरंजन जग उजियोर ॥ भावाधीन रहत भक्तन के, कृषासिंधु प्रिय प्राण् हमारे । नाना रूप धरत संतन हित, लीला करत श्रनेक प्रकारे । देहें प्रेम को दान दया निधि, सहिसाँ कहत वेद विधि हारे। सरस माधुरी देत श्रभय यह, पूरण करें मनोरथ सारे ॥

त्राकाश बागी-त्रारी हे सखी सुकुमारी प्रान प्यारी निकुंज मंदिर का टेरा हटावो और मन बांछित मनोरथको दरशन पावो॥

ा सखी बचन ॥

भई श्रकाश बानी श्रभी सुनी सखी तुम कान। टेरा खोलो कुंज को करो रूप रस पान॥ देखो हग भरि के श्रली, लली बिंब श्रवतार । सरस माधुरी दीजिय, तन मन श्रपनो वार ॥

वचन -सखी कुंज द्वार का टेरा सरकाती है और श्यामाँ सहश दूसरो सरूप परम श्रनूप दरशन कर परमानंद पाती है, श्रीर सरकार को स्तुति सुनाती है, और वारंबार बिलहार जाती है।

श्रष्टश्रली स्तुति॥

जैति जैति जै शुक सखी, सुखदा हित की रूप।
श्रहलादनी कलवेनिका, श्रानन्दा जु श्रन्प॥
रसपुंजा रसरूपनी, प्रेम प्रभा श्रभिराम।
श्रष्टम प्रमुदा नाम शुक, तिन कों कोटि प्रनाम॥

श्री जुगल सरकार बचन ॥

॥ पद ऋंगना मंगना की चाल॥

ग्रष्ट श्रली प्रांग प्यारी हिल मिल सब श्रावोरी।

प्रेम सों बधाई शुक खामिनी की गावोरी ॥ ध्वजपताक सदन द्वार, खस्तिक रिचये सँवार।

हरी भरी बंदनवार, हरष हिये बँधावोरी ॥ धूप दीप धरो थाल, श्रद्धात रोरी रसाल ।

श्रारती उतार, श्रध देके बिल जावोरी ॥ सरस माधुरी सुरंग, ले के बीगा मृदंग। हरष हिये उमंग, नाच भाव बहु बतावोरी॥

श सखी वचन आरती पद ॥ श्री सुख सखी आरती करिये ॥

श्याम रूप श्रभिराम सुहावन,ध्यान निरंतर हिये में धरिये ॥ वयस किशोर चोर चित चंचल,चपल हगन दिशि देखन टरिये॥ मंद मंद मुसकान मनोहर, लखि लोचन उर श्रानंद भरिये॥ जुगल श्रंगजा जूथाधिप श्रली,श्रलवेली नवनाम सुमरिये॥ नित नव नेह वहाय चावसों, चरन सेव कर श्रंतन टरिये॥ परिकर वास पाय वडभागन, बृंदावन में नित्त विचरिये॥ सरस माधुरी दंपति सेवा, नित कर विरह तांप तन हरिये॥

॥ श्रीप्रियाजी वचन दोहा॥

श्री शुक संखी यूथेश्वरी, ख़ास तुम्हारो नाम।
श्रष्ट जाम सेवा करो, यही तिहारो काम॥
श्री तिलक मस्तक सुरचि, पहराऊँ उर हार।
हिथे लगाऊँ हरष के, करूँ प्रीत वहु प्यार॥

संखी-श्री सुखंस्वामिनी की जय हो जय हो। ऐसे सर्व सखी बोलके फूल बरषाती हैं श्रानंद मनाती हैं।

श्री प्रियाजी सुख सखी को संग लेकर श्रानन्द् मनाती हैं।

॥ राग सोहनी ॥

सुख सखी सुंदर सखीनी प्रानों से तू प्यारी है।

मैं हुई श्राशक तुभ पर तू मेरे पर वारी है॥

श्याम सुंदर मन हरन सूरत सलोनी है तेरी।
प्रान प्यारे ने यही छवि तेरी हिये में धारी है।
नंद नँदन का सा नख शिख एकसा नकशा तेरा।
एकसी सीरत है सूरत लोक से कुछ न्यारी है।
तुभ में श्रोर मोहन में कुछ अंतर तफ़ावत है नहीं।
एक इतना ही फ़रक वो पुरुष है तू नारी है॥
रह सदा संग में मेरे तू नित श्रदा श्रपनी दिखा।
मंद मुसकन सर्स चितवन मोहनी पढ़ डारी है॥

॥ दूसरों पद धुन नाटक ॥ प्यारी प्यारी हमारी शुक सखी मन की है भावनी हो ॥ (अंतरा)

श्याम रंग रूप छवि भूप है श्रन्प।
श्रात चितवन में चित की चुरावनी हो ॥
चंद सो प्रकास मंद मंद मुख की है हास।
परम श्रानन्द प्रगटावनी हो ॥
छवि की है खान गुनवान है हमारी प्रान।
रित हू की मित ललचावनी हो ॥
हाव और भाव बरताव प्रेम चाव कर।
नाच गाय नेह की बढ़ावनी हो ॥
है तू सुकुमारी सुखकारी रिभवारी।
श्रात खामिनी सलौनी सुहावनी हो ॥

सरस साधुरी निहार तन मन देवो वार।
भई श्रंग प्रेम पुलकावनी हो॥
श्री प्रियाजी वचन पद।

॥ राग वसंत ॥

श्रातम शुक सखी तोहिलडाऊँ, तेरे।ऊपर विल विल जाऊँ॥ श्रीतम के उनहार रिसकनी,तोहि निरख में श्रीत सुखपाऊँ॥ तेरी रूप रंगीली छिब को,नित प्रति श्रपनें हगन वसाऊँ॥ सब सुखकी सुखदेंन तुहीहै,हितकर श्रव तोहि हृदय लगाऊँ॥ जुदी होय जो इक पल मोसों,ताहीं छिन में श्रीत श्रकुलाऊँ॥ रह मोसंग रंगसों सजनी, नित नव तोसों प्रेम वहाऊँ॥ प्रानन तें प्यारी सुकुमारी, सरस दरश कर मन मगनाऊँ॥

॥ श्री लालजी बचन दोहा ॥

प्यारी मेरी सुख सखी, है तू रस की खान।

तोहि निरख में मन मुदित, तो सम प्रिय नहिं आन॥ तेरे बिन पल छिन घरी, मो मन परे न बैन।

प्राण बह्नभा है तुही, हे सुन्दर सुख देंन ॥

॥ श्री प्रियाजी वचन पद राग सौरठ ॥ श्री शुक सखी सलौनी तोपर वारी री ॥ (श्रंतरा)

प्राणनाथ सम रूप तुम्हरो, मोकों प्रानन सें ऋति प्यारो। तेरी सुंदर सूरत निज उर धारी री॥ है तही मेरी मन मेली, कर री मेरे संग रस केली।

श्रित ही नवल नवेली रूप उजारी री॥
नैंन निरख तोकों में जीऊँ, वारवार पानी नित पीऊँ।

तुही मेरी मन भावन हितकारी री॥
विरह ताप तन सकल नसाऊँ, आव निकट तोहि कंठ लगाऊँ॥

परम प्रेम रस पाय रहूं मतवारी री॥

सरस माधुरी भांकी तेरी, जिय की जीवन है यह मेरी।

प्रीत परस्पर चिततें टरे न टारी री॥

श्री श्रियाजी वचन-हे सुख सखी श्रान प्यारी मैं तेरे पर बारंबार बिलहारी। अब तुम निकुंज महल में चल कर मेरे संग बैठो और परस्पर श्रेमानंद बर्द्धन वार्तालाप कर मेरी विरह ताप हरो। और सुख करो और रसानंद विस्तरो।

सुख सखी बचन-हे श्री प्रानेश्वरी प्यारी जी दासी बचनामृत की प्यासी आपके संग निकुंज मंदिर में चलवे को तैयार है आप आनंद पूर्वक पधारें॥

श्री त्रिया जी के संग शुक संखी निकुंज मंदिर में जाकर सिंहासन पर विराजमान होती हैं और सखी नृत्त गान करती हैं।

॥ सखी वचन राग सारँग॥ के जे सुख सहचरी सलीनी ग्रन रासी॥

श्यास रूप रंग अंग, रहत त्रिया संग संग।

सुदित सन उमंग रिलक राधिका उपासी॥

राधे गुन गान वान, राधे ही जीवन प्रान।

राधे को ध्यान संग राधिका विलासी॥

राधे मुख चंद की चकोरी, निश्चि भोरी तुम।

राधे सुसाकन मंद अमृत की प्यासी॥

सरस माधुरी सुजान, दीजे रस कुंज दान।

जानो निज खास हमें दासिन की दासी॥

॥ दूसरा पद विहाग ॥

जै जै सुख स्वामनी निकुंज की निवासनी ॥

रूप की सलौनी श्रांत लौनी ललना श्रांत्प, जुगल रसिक भूप
कुंज केलि की प्रकाशनी ॥

वय किशोरी भामिनी, सुसेव्य कंथ कामिनी ।

श्री राधे गुन गामनी सुमंद मंद हासनी ॥

रास के विज्ञासी रस रासी सँग रहत सदा ।

प्रीत सहित सेवा करत दंपति उपासनी ।

सरस माधुरी सुज्ञान, सुनिये कहणा निधान ।

दीजे रस भिक्त दान, बंदावन वासनी ॥

॥ पद राग कालंगड़ा ॥ श्री शुक सखी की वित्तहार । श्याम सुंदर श्रंग जिनको कृष्ण के उनहार ॥ श्याम सों श्यामा वनी तुम रिसक आति रिभवार।

निरख तुमको मुदित प्यारी करत त्रिय सम प्यार ॥

रहत हो नित संग राधे, करत केलि अपार।

रास रंग विलास विलसत देत तन मन वार॥

गुप्त मंजु निकंज लीला, करत युग सरकार।

तुम विना आलि और को तहां है नहीं आधिकार॥

तुम विना ञ्रालि ञ्रोरको तहां है नहीं अधिकार ॥ नेंक करूणा कर कृपा निधि दया दृष्टि निहार । सरस रस की माधुरी को देवो नित्य बिहार ॥

श्री प्रियाजी बचन लिता से—हे प्यारी लिता सखी तुम रंगदेवी जी के यूथ में जावो । श्रीर प्रेम मंजरी प्यारी को बुलाकर हमारे पास लावो ॥

श्रीलिता वचन -हे श्री प्यारीजी महाराज में श्रापकी श्राज्ञा श्रनुसार जाती हूं। श्रीर श्रेम मंजरी को श्रपने संग श्रभी लाती हूं।

॥ श्री लिलता बचन दोहा॥ प्रेम मंजरी से-प्रेम मंजरी जी चलो, अब ही मेरे संग। प्रिया बुलावत महल में,जहां होत रस रंग॥

॥ प्रेम मंजरी बचन दोहा ॥

सरकार से - जै जै जै श्री राधिका, तुम हो जीवन प्रान। श्यामां मेरी खामिनी, करुणा कृपा निधान॥

॥ पद चाल नाटक ॥

राधे रानी रँगीली सरकार तुम्हारी भहिमां अपार । हो माहिमा अपार ॥

॥ अन्तरा ॥

प्यारी द्या निधान, तुम सम न कोई आन ।
देदीजे जेम दान, विनती सलोनी मान ॥शोभा खान॥
रूप उजारी भोरी भारी, पान प्रिया तुम परम सुजान ।
आति सुकुमारी में बिलहारी, चरण शरन विन गति निहं आन॥
टहल महल की मिले मनोहर करूं रूपरस अमृत पान ।
से अं में पद कमल लाडिली रहूं कुंज रस में गलतान ॥
धरो ध्यान ,सुनिये कान, कुपा खान ।
सरस की हो प्रान अधार ॥ हो प्रान अधार ॥ राधे रानी ॥

॥ श्री ठाकुरजी बचन ॥ ॥ पद राग बहार ॥ मिय प्रेम मंजरी आवरी॥

आति प्यारी तूमान अधारी, सुन वितयां वित लावरी। श्री शुक सखी मगट भई आली, तिनके ढिंग तू जावरी॥ रह तिन संग करो सिवकाई, यूथेश्विर किर भावरी। हिल भिल लिलत विशाखा आदिक, जनम बधाई गावरी। सरस माधुरी राग रागिनी, निज मुख हमें सुनावरी॥ भेम मंजरी वचन-हे श्री मीतम निकुंज बिहारी जी महाराज में श्रापकी श्राज्ञा अनुसार शुक सखी यूथे-श्वरी जी की सेवा में जाती हूं श्रीर लिलतादिक सखीन के संग शुक सखीजी की जन्म बधाई गाकर श्रापको सुनाती हूं॥

श्री ठाकुर जी बचन-प्यारी प्रेम मंजरी जी तुम जावो श्रानंद मंगल गावो।

॥ त्रस्ताव॥

प्रेम मंजरी शुक लखीजी के पास जाती हैं श्रीर स्तुति पद गान करती हैं। श्री शुक सखी जी मसन्न होकर मंजरी को प्यार कर अपने हृदय से लगाती हैं॥

॥ प्रेम मंजरी बचन छन्द ॥

स्वामिनी श्री शुक सखी युग अंगजा अवतार हो।

श्याम सुंदर पाणा प्रीतम उनके तुम उनहार हो ॥ दीन बन्धु दयाल परम कृपाल पानाधार हो।

भक्त त्राता प्रेम दाता मूरित रस शृंगार हो॥ श्रा ले तुम चरण की बेड़ा जिन्हों का पार हो। सरस माधुरी छिब छके रस रास रंग अपार हो॥

श्री शुक सखी बचन पद्।

॥ राग कान्हरा॥

श्रिय प्रेम मंजरी प्यारी।

साचात तुम मूरत प्रेम की दंपति प्रान अधारी॥
प्राण बह्नभा हो तुम मेरी में तुम ऊपर वारी।

हिय लगाय तोकूं मन हरखूं मेरे हिग तू आरी॥ तोकों नैनन तें नित निरखूं करूं न पल छिन न्यारी। सरस माधुरी रूप सलोनी अब तू भई हमारी॥

॥ प्रेम मंजरी वचन दोहा ॥

श्रावोरी प्यारी श्रली, गावो मंगल श्राज । नाचो सव ही प्रेम सों, हिल भिल करो समाज ॥ कुंज द्वार पर परम श्रुचि, सजो सुमंगल साज । सहनाई नौवत सरस विविधि वजावो वाज ॥

सवं सखी वधाई गान।

॥ राग गरवी ॥

प्रगट भई शुक सखी प्रिया प्यारी ॥ श्याम सुन्दर तन सुकुमारी ॥

॥ श्रेतरा ॥

श्रंगजा जुगल श्रन्पमं रूप यूथपति स्वामिनी श्रवतारी ॥ धाम में छाया परम श्रानंद, वधाई श्राक्षिन करी भारी॥ कुंज प्रति वांधी वंदन माल, पताका तोरन शुभ कारी॥ अतर चंदन छिरक के सब ठौर, धूप कर दीपाविल बारी ॥ बजाकर बीन प्रखाबज ताल, नृत्य कर गाई सहचारी ॥ मिठाई मेवा बीड़ी पान, प्रसादी बांटे भर थारी॥ निरख छवि सरस माधुरी रूप, दियो सब तन मन धन वारी॥

श्री ठाकुरजी बचन सिखयों से।

॥ दोहा ॥

सुनों सखी सब चित्त दे, कहूं बात समभाय ।

वेद व्यास भूतल विषे,कीनों तप अधिकाय ॥

मेरे सम सुत होंन को, कियो मनोरथ चित्त ।

महादेव जू वर दियो, कियो आधिक ही हित्त ॥

मेरी आज्ञा अब थेही, सुन शुक सखी सुजान ।

आचरज वयु दूसरो, धारो परम प्रधान ॥

सखी रूप निज सों रहो, सदा हमारे पास ।

अवारज वर् धार जग, भक्ती करो प्रकास ॥ वेद्व्यास आश्रम सरस, जहां प्रगटो तुम जाय । धरम सनातन भागवत, भक्तन देहु बताय ॥

॥ शुक सखी बचन पद ॥

्बिनय सुनो बांके श्याम बिहारी। श्री मुख आजा निज उर धारी॥

रूप आचारज धर यहि वारी। जाऊं में सूलोक मंसारी ॥ वेद्व्यास आश्रम शुभकारी । प्रगद्धं तहां मनुज तन धारी॥ विस्तारूं जग भक्ति तुम्हारी । प्रेम मगन होवें नर नारी॥ महा पुराण भागवत प्यारी । सुनें युनें सव जिय संसारी ॥ माया पति प्रभु मंगल कारी । तुम अवतारन के अवतारी ॥ संत जनन के नित रखवारी। दुष्ट दुलन रसिकन रिक्सवारी॥ जै जै काहि जाऊं वितहारी। सरस माधुरी छति ऊपर वारी ॥

॥ सखी वचन सोरठ सेंन ॥

जुगल के अंग छाई अलसान ॥
नैनन में निद्रा अति द्रसत, अलियन जीवन पान ॥
कोमल कालित लिति फूलन सों, सेज रची सुखदान ॥
पौढ़न तापर चले चतुर दोउ, रासिक छेल छित खान ॥
संग चली सहचरी सलीनी, करत सेन पद गान ॥
सरस माधुरी वसी हगन सें, संद संद सुसकान ॥

॥ दूसरा पद सोरठ सेन ॥

रँगीले रँग बिलसो रंग भरी रैंन ॥ कुंज बिहारिनिकुंज बिहारी,नींद घुरानी नैंन ॥ कुत्रमन सेज रची आति सुंदर, निरखत उमगत मैंन ॥ सरस माधुरी पिय प्यारी जू, करो सैंन सुख चैंन ॥



श्रीमत् श्याम चरण दासाचार्य चिरतामृत बधाई तथा विनय।

श्रीमन्निकुंज विहारियो नमः॥

श्रीमत् श्यामचरगादासाचार्यचरितामृत ॥

(दोहावली)

श्री सतग्रुरु बलदेव प्रभु, चरणन शीश नवाय। श्यामचरण के दासको, चरितामृत कहों गाय ॥ बैठि हिये मम श्री गुरु, करि हैं श्राय सहाय। सरस माधुरी गुरु कृपा, सबही विधि बनजाय ॥ सम्वत सत्रहसौ गिनो, ऊपर साठ पिछान। प्रगटे भागववंश में, कृष्ण अंश प्रभु श्रान ॥ शोभनजी के कुल विषे, श्रष्टम पीढ़ी श्रन्त। मुरलीधर घर पगट भये, श्याम रूप धरसन्त ॥ स्वप्त माहिं दुर्शन दिये, कुंजों को श्री श्याम। तुमरे पगटूं पुत्र हो, सुनहु मातु सुखधाम ॥ भादों शुक्का तीज को, कुंजो कूख मभार। बालनाम रण्जीत धर, प्रगटे कृष्ण मुरार ॥ जन्म समय श्रस्थान में, भयो श्रिधंक उजियार। अनहद् धुनि बाजे बजे, छई सुगन्धि श्रपार ॥ नाम ग्राम डहरे विषे, घरघर मंगल चार। विविधि बधाई गुनिनमिल, गाई भली प्रकार ॥ पंच वर्ष की वयस में, सरिता तट शुकदेंव।

गोद्लिये रगाजीत को, प्यार कियो गुरुदेव ॥

गये वर्ष उन्नीस में, गंगातट शुकतार। साचात दर्शन दिये, शुक मुनि व्यासकुमार ॥ ग्रस्दीचा दी विधि सहित, मन्त्र सुनायो कान। योग ज्ञान हैराग दे, कियो शिष्य हित मान ॥ श्री तिलक सस्तक रचो, श्रीतुलकी श्रुचि माल । गल में वांधी प्रेमसों, कीने शिप्य निहाल ॥ नौधा प्रेमा घर परा, तिविधि भक्ति दई दान। तारण तरण वनायके, कीने श्राप समान ॥ श्राज्ञा दी श्री शुक्रमुनी, जगमें भक्ति भचार। वियुखन हरि सन्मुख करो, निस्तारो संसार॥ सतग्रुरु त्राज्ञा शीशधर, त्रा दिल्ली ऋस्थान । रचि मन्दिर राजे जहां, कियो मानसी ध्यान॥ योग युक्ति चौदह वरष, करी समाधि लगाय। रूप श्रनेकन धार प्रभु, भारत दियो चिताय॥ राजा राना छत्रपति, तिनकी करी न चाह। चरण दास हरि रंग रंगे, सबसों वे परवाह ॥ ईश्वरीय परचय श्रमित, हिये भक्ति हरि हेत॥ किय मनोरथ सवन के, पूरण प्रेम समेत ॥ बादशाह दिल्ली तख़त, ठाड़े रहे हुजूर। चरणदास के चरण की, मस्तक धारी धूर ॥

श्रष्टिसिद्धि नवनिद्धि सब, खड़ी रही कर जोर।

श्यामचरण के दास प्रभु, लखें न तिनकी श्रोर ॥

शिष्य श्रनेकन कर प्रभो,तारन तरन बनाय। चार धाम सातों पुरी, तीरथ दिये पठाय ॥ श्री भगवत की भक्ति को,भानु दियो प्रगटाय। भर्म निशा सोते हुए,दीने जीव जगाय॥ नर नारी संसार के,करन लगे हिर भक्त। पगे प्रेम प्रीतम प्रिया,नशी बासना जक्त ॥ किल युग के कलमष सकल,दीने सबिह मिटाय। चरणदाल प्रभु कुपाकर, बिगरी दई बनाय ॥ कलियुग छायो जक्तमें, मिटी वेद मरयाद। उबरे श्रनगिन जीव जग,श्री चरगादास प्रसाद ॥ कलियुग सतयुग सम कियो, दियो नाम हरि दान। चरणदास जग जियन को प्रेम करायो पान ॥ कलियुग में सत कर्म को,कियो बहुत विस्तार। चरणदास गुरु भक्ति दे, निस्तारो संसार ॥

॥ श्रीवृन्दावनगमनवर्णन ॥

सगुण ब्रह्म सर्वज्ञ प्रभु,सर्व व्यापी श्याम।
पुरुषोत्तम परमात्मा, श्रीवन जिन को धाम॥
सतिचद्घन श्रानंदमय, जिन को श्रद्धत रूप।
ध्यानधरत विधि शिवसदा, तिन पद पद्म श्रन्प॥
श्यामचरण के दास प्रभु, श्राचारज श्रवतार।
दिल्ली से चलकर गये, बृन्दा विपिन मकार॥

हगन चटपटी द्रस की, निरखन नन्दकुमार।

विरह विथा व्याकुल महा, तनकी सुधि न सँभार ॥ पहुँचे सेवा कुंज में, निरखी श्रनुपम ठौर ।

सब कुंजनतें श्रित सरस, तेहि समान नहिं श्रीर ॥ सेव्य जहाँ श्री राधिका, सेवक श्रीनँदलाल ।

याते नाम प्रसिद्ध जग, सेवा कुँज रसाल ॥ लता ललित छाई जहां, छविको नाहिन पार।

कुसुमित तरु बेली छई, भृंग करत गुंजार ॥ द्रुम बहु नाना भांति के, छाई बेलि वितान ।

तिन में पत्नी विविधि विधि, करत युगुल गुगान॥ सीतलमन्द सुगन्ध मय, रोचक बहत समीर।

ऋतुबसन्त सन्तत रहत, बोलत कोयल कीर॥ रैनि माहिं तहां छिपरहै, श्याम चरगा के दास।

निज मन्दिर वारहदरी, जा बैठे जेहि पास ॥ करन लगे तहां भावना, मूंद लिये निज नैन ।

रोमांचित हो पुलक तन, कहे विरह मुख बैन ॥ हा राधे मम खामिनी, हे प्रीतम घनश्याम ।

वेगि दरश दे युगल वर, पूरणकर मन काम॥ हा हा छवि दीजे दिखा, दास मोहिं निज मान। नाहीं तन तज जायगो, तात्काल यह प्रान॥ विरह हुक हिय में उठी, भये महा बेहाल।

हगन श्रश्रुधारा बही, तनकी सुधि न संभाल॥

श्रन्तरयामी युगुल वर, रसिकन के प्रिय पान।

विरह विथा निज दासकी, श्रातिशय निज मन मान ॥ चरणदास श्राये यहां, हमरे घर महमान ।

प्रगट होय दे निज दरस, करें सन्त सन्मान ॥ रिसक हमारे प्रांग धन, हम रिसकन के प्रान ।

प्रेमिन के समतुल हमें, श्रोर न प्रिय जग श्रान ॥ श्रर्धनिशा बीती तबिह, प्रगटे प्यारी लाल ।

भक्तन के मन भावने, करुणासिन्धु क्रपाल ॥

गौरश्याम श्रभिरास दोउं, श्रनुपस नवलिकशोर।

ललितादिक श्रनगिन श्रली, संगलिये सिरमीर॥

नील पीत पट सोहने, नखिश्ख सजि शृङ्गार।

मुकट चन्द्रिका शीशपर, छविको नाहीं पार ॥

युगल चन्द्रमुख चन्द्रिका, छाई मध्य निकुंज।

द्मकत चमकत अंग्रदुति, श्रनुपम छविकी पुंज ॥

चंचल चितवनि रसभरी, मन्द मधुर मुसकान।

श्रलक' कपोलन छुट रही, श्रधर ललाई पान ॥ बेसर और बुलाक शुचि, नासा शोभा देत ।

निरखत ही निज जननको, मनमानिक हरि लेत ॥

गल बेंयां दीने दोऊ, मदन मनोहर लाल।

प्रीतम कर वंशी लसी, प्रिय कर कमल रसाल ॥ युगुल चरण बारिज बरण, छवि कुछ कही न जाय।

प्रायल घुंघरू सजि रहै, छुम छुम शब्द सुनाय॥

उठ श्रातुर चरण्न परे, चरण्दास तेहि बार । कृष्ण भुजनभर हियलगा, कियो प्रेम श्रति प्यार ॥ कुंवरि किशोरी करि कृपा, प्रेम मंजरी जान। , हस्तकमल मस्तक धरो, दियो प्रेम वरदान ॥ पुनि दोऊ प्रीतम प्रिया, चरणदास लै संग। जाय विराजे कुंज में,हिलमिल हर्ष उमंग ॥ हॅसिँहित रसबतियांकरन, लागे श्यान सुजान। चतुर शिरोसिण लाङ्ली, नागरि नेह निधान ॥ कहनलगे मुख सृदुवचन श्राये प्रीति पिछान। कहा करें तुम पहुनई, यर सेवा सनमान ॥ चरणदास दोउ जोर कर, या विधि बोले बैन। सेवादे निज एद कमल, निकट रखो दिन रैन ॥ हाँति बोते तत्र श्रीहरि, सतुर वत्रत श्रमिराम। ्जग में भेजे जिन जिये, लोन किये कुछ काम ॥ श्राचारज वपु दे तुम्हें, भक्ति प्रचारन काज। भेजा है संसार में, सुनहु भक्त महाराज ॥ योगध्यानं तज कीजिये, नौधा भक्ति प्रचार । त्रेमपरायण जीव हो, उतरे भवनिधि पार ॥ प्रेमभक्ति प्रगटाय जग, जीवन को दे दान। करो कृतारथ जक्त को, मेरे जीवन प्रान ॥ कबु इकदिन बीते तुम्हें, लें निज धाम बुलाय।

रखें निरन्तर निकट नित, सुन प्यारे चितलाय ॥

वचन कहे श्री कृष्ण ने, सुने श्याम चरनदास। विद्युरन विरह वियोग लखि, श्रतिशय भये उदास॥ गदगद वानी होगई, नेन वही जलधार।

सुबकी ले रोवन लगे, सन्मुख कृष्ण मुरार॥ हाय हरी कैसी करी, धीर धरी नहि जाय।

तुम सब समभत लाडिले, विद्वात दुख श्रिषकाय।! तुमरो श्रीमुख चन्द्रमा, भेरे नयन चकोर।

बिन दरशन जीवन नहीं, सुनिय नवल किशोर॥ सघन सजल शिरि श्राप हो, भें हों तुम्हरा मोर।

सुखी होहुं सुन सांबरे, बन्हों। घुनि घन घोर ॥

चरण कमल उत श्रापके, सधुकर है मन भीर। तहां बसन को चित चहै, श्रन्त नहीं किहं ठोर॥

सामी मेरे श्राप हो, मैं सेवक निज दास।

उत्कंडा श्रति रहन की, सदा तुम्हारे पास ॥

स्वाति बूंद तुम हो हरी, चातक मोहि पिछान। रूप सुधारस पान बिन, तलफत मेरे प्रान॥

श्राप पारधी प्रान धन, मोहि मृगा लो मान । मारो निस्तारो तुमही, मोको गति नहि श्रान ॥

गंगाजल सम श्याम तुम, में हों तुम्हरा मीन।
तुम माता में पुत्रवत, समभो सत्य प्रवीन॥

तुम गैया में वत्स सम, मैं पतंग तुम दीप। यही चाह चित में बसे, निशि दिन रहों समीप॥

कहनलगे श्रीकृष्ण तब, सुनहु श्याम चरन्दास। तुमरे हिय माहीं रहें, हमरो सदा निवास॥ सन्त हमारी श्रातमा, यामें नहि संदेह।

रोम रोम में रिम रहै, ज्यों वादर में मेह॥

श्राज्ञा जो हमंने दई, लीजे प्यारे मान।

भक्ति प्रचारो जक्त में, करो जियन कल्यान॥

जो त्राज्ञा करि हों यही, कही चरण ही दास।

देखो चाहूं सांवरे, सुन्दर रास विलास ॥

है प्रसन्न बोले लला, मूदो अपने नैन।

श्राज्ञा दूं तव खोलियो, हे प्रीतम सुख देंन ॥

मूंदे तव ही नैंन निज, चरणदास तेहि वार।

बोले पुनि श्री रयामघन, देखो पलक उघार ॥

हगन खोल देखन लगे, तेजोमय उजियार।

रत जटित श्रवनी लखी, जगमग जोति श्रपार ॥ ऋतु वसंत संतत तहां, श्रनगिन बाग वहार ।

फूले फूल श्रनेक जहां, लहरत लता श्रपार ॥ फुलवारी क्यारी बनी, न्यारी नाना रंग।

तरुन मांहि वहु वरन के, वोलत विविधि विहंग । वीच विविधि कुंजस्थली, छाई वेलि वितान।

तिन में सेवा हित रहें, सहचरि सखी सुजान ॥ ठौर ठौर सुंदर सुखद, भरे सरोवर नीर।

कमल खिले बहु रंग के, रोचक वहत समीर॥

वँगला श्ररु वारहद्री, बनी श्रनेकन श्रोर। तिन पर सूत्रा सारिका, क्रीड़त मोरी मोर ॥ मध्य महा रमनीक इक, रत्नन जटित सुढार। वन्यों चौंतरा श्रति सरस, मंडल गोलाकार ॥ चौसठ खम्भा तासु पर, जटित जवाहर लाल। पचरँग चुन्नी चमकनी, बूंटा बेलि सुढाल ॥ चौंसट खम्भा पर बनो, रंग महल रस खान। मिशा माश्यिक चहुँ दिशि जड़े, जगमग जोति महान॥ चौंसठ कलश सुहावने, ध्वज पताक धजदार। लहरत फहरत तड़ित सम, दमकत दुति मनहार ॥ चौंसठ खम्भा मध्य में, बिछी विछायत खूब। नरम रेशमी गलीचा, त्रातिशय सरस त्रजूब ॥ गुलदस्ता सुंदर सजे, सुमन श्रनेकन रंग। महल महक छाई महा, निरिख हगन गति दंग॥ चँदुवा पिछवाई सजी, सुबरन बूंटेदार। मुतियन भालर लग रही, जगमग जोति श्रपार ॥ सप्त रंग की मागीन के, शोभित सुन्दर भार। सजे सुहावन महल में, दमकत दुति सुअपार ॥ ्स्वर्ण मई दीवार में, चारो श्रोर सुढार। पन्ना हीरालाल मागि, जड़रहै विविधि प्रकार ॥ सिंहासन सुन्दर सजो; तापर छत्र सुहान । मसनद तिकया मन हरन, सुन्दरता की खान॥ राज रहे तापर तहां, युगुल विहारी लाल ।

चहों ओर ठाड़ी सखी,मनहुँ प्रेम की माल।

चमर मोरछल श्रह छरी, लिये खरी कोइ वाल।

इतरदान लीने कोऊ, कोउ कर लिये रुमाल॥

पानदान लेकर कोऊ, कोउ फूलन की माल।

कोउ दरपन अरपन करत, छवि लिख होत निहाल॥ सनमुख श्यामा श्याम के, खड़े सिखन के वृन्द।

इकटक निरखत युगल को, मनहुँ चकोरी चंद ॥ सख़ी रास रस करन को, बजत बीन मृदंग।

कोउ सितार कोउ सरंगी, कोउ बजात मुहंचग॥ मधुर मँजीरा कोउ अली, लिये बजावत संग।

कोऊ अलापत सप्तखर, हिय में भरी उमंग ॥ कोऊ उघटत सांगीत आलि, नृतत गति नव ढंग।

भाव बतात नचात हग, लचकावत किट अंग ॥ जै जै जुगल किशोर किह, कोऊ रही हरषाय ।

गोदन भर अति मोद मन, सुमन रही बरषाय ॥ चरगादास तहां अपन को, देखे सखी सरूप।

नव यौवन सुकुमार तन, नख शिख सुंदर रूप ॥ सिंहासन के सन्निकट, रहे दोऊ कर जोर।

तब हांसे बोले श्री हरि:, चितय चपल दगकोर ॥ अब नीके लाखि लीजिये, लीला रास बिलास । सुख रासी दासी चरन, आव हमारे पास ॥

चरगादासि कर गहि उठे, श्री मत गोपीनाथ। पुनि लालन निरतन लगे, प्राग प्रिया लै साथ ॥ वाम अंग श्री राधिका, दाहिने चरणहिदािस । मध्य बिहारी लाल जू, नृतत उमंगि हुलासि॥ चहें। श्रोर श्राली नचत, मंडल गोल बनाय। निरखत छवि रस माधुरी, हर्ष न हृदय समाय ॥ लेत स्वल्पगति लाड़लो, बहुविधि भाव बताय। नैन नचा लचकाय कटि, ताथेइया मुख गाय श्रंग संग दै अधर रस, प्यावत प्रेम बढ़ाय। चरणदासि को श्यामघन, लेत भुजन भर धाय॥ मुकट लटक मन को हरत, अलक रही बलख़ाय। छुटी कपोलन लाल के, चित को लेत चुराय ॥ मकराकृत कुंडल श्रवन, नाक बुलाक सुढार। मोती मटकत अधर पर, अजब सुराहीदार ॥ पाजामा कछनी कलित, पीत रंग मनहार। नख शिख लो भूषन सजे, गल फूलन के हार ॥ रंग रंगीली लाड़िली, मदन मने।हर लाल। नटवर गाति ले ले नई, रस बस कीनी बाल ॥

श्री राधे रासेश्वरी, सिखयन की सरदार। दरसायो चरन्दासि को, नित नव रास बिहार॥ पुनि राजे दम्पति तबहि सिंहासन पर जाय। चरणदासि को कर कृपा, लइ निज निकट बुलाय॥ हंिस बोले श्री हिर बचन, करके प्रेम अपार। चरगादासि जा जक्त में, भक्ति करो विस्तार ॥ तबही दासी जोर कर, आज्ञा सिर धर लीन। परिक्रमा करके वहुर, चरण प्रणाम सुकीन ॥ नैन मूंदि निज लीजिये, कही कृष्ण भगवान । हग मूंदे तव दास ने, ताही समय पिछान ॥ पुनि अकाश्वानी भई, चज्जु खोल चरन्दास । हग खोलतही आ गये, वंशीवट के पास ॥ संतरूप आपन लखो, श्याम चरन के दास । बिबुरन दंपति मन समाभः त्रतिशय भये उदास ॥ धरिन गिरे व्याकुल विरह, देह दशा विसराय। नैंनन जल धारा वहीं,करत हाय हरि हाय॥ इसी भांति बीते दिवस, होय गई पुनि रैन। प्रगट भये शुकदेव मुनि, निज शिष्य को सुख दैन ॥ श्री सतगुरु नैनन निरिख, उठ करि चरण प्रणाम। ब्याकुल हो बिलपन लगे, विन श्री श्यामा श्याम॥ विनय करी कर जोर कर, दम्पति द्रस कराय। नाहीं तो तन त्यागि के, जीव निकस यह जाय ॥ श्री शुक मस्तक शिष्य के, धरो क्रपा कर हाथ। वंशीवट नीचे जखे, श्याम राधिका साथ ॥ गलबैयां दीने युगल, नवल लाड़िली लाल। मंद मंद मुसकात मुख रूप राशि छवि जाल ॥

श्री दम्पति के दरस कर छके श्याम चरन्दास। रोम रोम में प्रगट भयो, परमानंद हुलास ॥ शिष्य के मस्तक से तभी, मुनि लियो हाथ उठाय। दृष्टि परे द्रम्पति न तब, अचरज भयो अधिकाय॥ श्री शुक मुनि चरनन परे, श्याम चरन के दास। घन्यवाद श्री गुरुन को, कीनो सहित हुलास ॥ पुनि गुरु शिष्य दोऊन में, ज्ञान गोष्टि सम्वाद । रह्यो रैन में रंग अति, उर उपजो आहुलाद ॥ प्रात होत शुकमुनि कही, सुनो श्याम चररणदास । दिल्ली जाके तुम करो, श्री हिर भक्ति प्रकास ॥ शिष्य करी तब दंडवत, श्री ग्रुरु चरगों मांहि। शीश उठा देखन लगे, शुक मुनि दरसे नांहि।॥ श्री शुक मुनि धर ध्यान उर, श्याम चरण के दास। बृंन्दाबन से गवन कर, दिल्ली कियो निवास ॥ रहन लगे आनन्द सों कृष्ण ध्यान गलतान। नर नारिन उपदेश दे, भजन करें भगवान ॥ दूर देश रामत करन, जावें श्री महाराज। भक्ति प्रचारें जक्त में. परमारथ के काज ॥ रूप अनेकन धार के, भक्तन करी सहाय। जल थल देश विदेश में, चरण दास मगटाय ॥ बैष्णाव नागरि दास को, जगन्नाथ निज रूप। द्रसायो करिके कृपा, सुंद्र आधिक अनूप॥

वैजनाथ विप्रन लखे, श्री महाराज सुजान । चरण प्रछाले गंग जल, शिप्य है गये अस्थान ॥

वैष्ण्व परमानंद की, मनसा पूरन कीन।

कृष्ण रूप निज है मभो, दर्श द्या निधि दीन ॥ जोग जीत ग्रुरु छोन को, दरसायो निज धाम ।

अमर लोक संग ले गये, जहां श्री राधे श्याम ॥ राम सखी सह वपु गई, श्याम सुंदर के संग ।

जा पहुंची निज धाम में, जहां रास रस रंग ॥ श्री मति कुंजो मात कों, दरस कराये श्याम ।

तन की तज के फिर गई, अमरलोक निज धाम ॥ विभिचारी जय करन को, कियो कृथारथ जाय।

अमर लोक में ले गये, दंपति दरस कराय ॥ , स्वर्ग प्रवाही गंगजल, सेवक दिये नहवाय ।

जय जय श्री महाराज की, सकल उठे मुख गाय॥ साधू परमानंद को, इसो सर्प ने श्राय।

श्याम चरण के दास प्रभु लीनो तुरत जिवाय ॥ दो कन्या पैदा हुई, सेवक के घर आन ।

निज प्रभुता सों पुत्र किए, चरेगादास भगवान॥ रज्ञा कीनी वैल सों, शिष्य प्रेंम ग्रलतान। घोड़े से लीनो वचा, निरमलदास सुजान॥ जमुना में न्हावत हुते, मुक्तानन्द सु सन्त। याह यसे लीने छुड़ा, चरनहिंदास तुरंत॥ दूसर श्रातम राम को, दीने नर्क दिखाय।

भय मानो यमदूत लखि, चरणशरणलइ श्राय ॥ वैठ जमुना नाव में, हूवन लागे संत।

ध्यान धरो महाराज को, दिये उबार तुरंत ॥ छै महिने पहिले कह्यो, श्रावन नादिरशाह।

परचय पा चरनन परे, शाह मुहम्मदशाह ॥ माना नादिंरशाह ने भक्तराज इर्शाद ।

मुरशद पीर पिछान के, कीना निज दिलशाद ॥ ग़िलचे श्राये कतल को, कियो तरवार प्रहार।

हाथ हुवे जड़ सबन के, तब मन मानी हार ॥ नौधा प्रेमा पराको, निशिदिन वरसे रंग ।

सदा होइ हिरिकीरतन वाजत बीन मृदंग ॥ सेवक साधू संत सब, रहें ध्यान लवलीन।

युगल लगन में मग्न नित, प्रेम सिंधु मन मीन॥ भक्ति हरी को कर दियो, श्री महाराज प्रचार।

भारत में करने लगे, प्रेम भक्ति नर नार॥ सर्परूप श्री हरी ने, पार्षद दिया पठाय।

श्राबो प्यारे धाम श्रब, दियो संकेत जनाय ॥ तब निज सन्तनको बुला, बोले श्री महाराज हम जावें हरिधाम को, कर मन वांछित काज। भक्ति भजन करते रहो, सुमरो श्री हरिनाम।

हरि गुरु उर विश्वास रख, रहो सदां निष्काम ॥ तुम सब तनताजि आयहो , निश्चय मेरे धाम ।

प्रेम प्रीति कर प्यार सों वोले गुरु गुगा ग्राम॥ श्री हरि श्राज्ञा सिरधरी, करी तयारी धाम।

दशम द्वार निज पुरगये, जहां श्रीराधे श्याम ॥ सम्बत अठारह सौ हुते, ऊपर उन्तालीस ।

देह त्याग चरन्दास प्रभु, गये धाम जगदीस ॥ अस्सी वर्ष भूतल विषे, राजे श्री महाराज । सरस माधुरी भक्ति हरि, जक्त प्रचारन काज ॥

॥ श्रीमत् श्याम चरण दासाचार्य महिमा ॥

चरगादास के चरगा में, जो जन आये धाय।

सूरज मगडल बेध कर, बसे अमरपुर जाय ॥ भेज श्यामा श्याम ने, करन जगत उद्धार ।

चरणदास ने क्रपा कर, किये पतित भव पार ॥ चार पदारथ प्रेम सो, सबको कीने दान ।

चरगादास ने द्या कर, कियो जकत कल्यान ॥ नवधा प्रेमा अरु परा, दियो भिकत उपदेश।

किये कृतारथ जीव जग, पार न पावत शेश ॥ ज्ञान दियो ज्ञानीन को, जोगिन को दियो जोग । भक्तन दुई भिवत हरि, मेटे भव दुख रोग ॥ ज्ञानी विज्ञानी बड़े, जोगिन के सरताज।

रिसकाचारज मुकुट मागि, चरगादास महाराज ॥ द्यावान दाता बड़े, परदुख भंजन हार।

पतितन के पावन करन, चरणदास अवतार ॥ सब सद्गुण सम्पन्न हैं, सब लायक महाराज।

सदा सहायक जनन के, मगडन सन्त समाज ॥ लोक श्रोर परलोक के, सुखदायक सिरमौर ।

व्याप रहें सब विश्व में, भीतर बाहर ठौर ॥ भक्तन के मन भावने, रिसकन के रिभवार।

प्रेमिन के प्रभु प्राण प्रिय, चरणदास सरकार ॥ शिष्यन के संशय हरन, सेवक जन प्रतपाल।

त्राश्रित जन रच्चा करन,श्री रगाजीत दयाल ॥ प्रगट भये संसार में, दूर करन भुव भार ।

धर्म सनातन भागवत, चहूं दिशि करन प्रचार ॥ जिज्ञासू जन सुसुद्ध, चरण शरण लई आय।

चरणदास प्रभु कृपाकर, श्रीहरि दिये मिलाय ॥ सेवा में ठाड़ी सदा, अष्टिसिद्धि नवनिद्धि ।

चरण्दास दाता बड़े, जग में भए प्रसिद्धिं॥

रंकन को राजा किये, दिये मुक्क अरु माल । वरणदास चरणन परे, सो सब हुवे निहाल ॥

भृत भविष्य वर्तमान के, त्रिकालज्ञ महाराज । चरणदास की दयासों, सुधरे सब के काज ॥ दे दे परचय विविधि विधि, कलिजिय किये सचत । चरगादास विश्वास दे, प्रगटायो हिर हेत ॥ भगवत धर्म प्रचार हित, लियो अविन अवतार ।

चरणदास तारण तरण, अधम उधारण हार ॥ चार धाम सातें।पुरी, तीरथ चेत्र सुठे।र ।

चरगादास बहु रूपधर, रमें रिसक सिरमार ॥ घर घर सेवा श्याम की, राग भोग रसखान।

चरगादास की दया सों, भिवत करी भगवान ॥ पुरुषोत्तम परमात्मा, अवतारी जगदीस।

चरणदास दृढ़ उपासन, थापी विसवा वीस ॥ रिक्षक अनन्यन की रहनि, रस उपासना भाव।

चरगादास सबही कहै, सुन उपजै वितचाव ॥ पापी अधम अनेक को,कियो जक्तसों पार ।

चरणदास सन्मुख हरी, पहुँचाये कर प्यार ॥ षहु जीवनको वपु सहित, कृष्ण ले गये धाम ।

चरणदास की दया सों। भिले महल विश्राम॥ बहुतन को संसार में, श्री हरि दिये मिलाय।

चरणदास ने सबन की, बिगरी दुई बनाय॥ आचारज को रूप धर, जग में प्रगटे आय।

चरणदास निज कृष्णहो, दरसन दिये कराय॥ निर्धन जनको धन दियो, पुत्र हीन सन्तान।

सबको मन बांछित कियो, चरगादास भगवान॥

बंधन में जो जन परे, तिनको दिये छुड़ाय।

मृतक जिवाये बहुत से, महिमा कही न जाय॥ ज्ञान योग वैराग को, जरा में कियो प्रचार।

कीनो भरावत धर्म को, चरणदास विस्तार ॥

यन्थ भिवतसागर सरस, बानी पांच हजार।

महाराज बरनन करी, प्रेम भिवत भंडार ॥

जोग ज्ञान वैराग को, वरनो विविधि प्रकार।

श्रह गायो निज धामको, श्रनुपम नित्य बिहार ॥ खंडन मंडन मतन को, कियो न श्री महाराज ।

गीता श्ररु भागवत मत, बिरचो धर्म जहाज॥

जो वांचे नित नेम सों, वानी परम पुनीत।

पावे परमानंद सुख, धाम जाय जग जीत ॥

सुन समभे हढ़ उर धरे, करनी करे जु कोय।

लहै पदारथ चार सो, श्री हरि बह्छम होय॥

वानी रससानी सुनत, नास्तिकता होय दूर।

श्रास्तिकता उपने श्रधिक, हरिग्रन हिय भर पूर ॥

संप्रदाय शुकदेव मुनि, इष्ट राधिका श्याम।

चरणदास बृंदा विपिन, वरणन कीनो धाम ॥

नव निकुंज व्रज की श्रमित, लीला के रस भेद।

दिये जनाय निज जननको, कियो सकल भ्रम छेद ॥

दिच्य मानसी महल की, टहल करन की रीत।

श्याम चरण के दास ने, प्रगट करी सह प्रीत॥

त्रली भंजरी सहचरी, सखी सहेली भाव। ग्रन्थ भक्ति रस मंजरी, कहे तहां चितचाव॥ दंपति सेवा सुख मई, सब को दई वताय।

श्याम चरण के दास हो, सहचरि पद लियो पाय ॥ रंग महल युग टहल में, पहुँच लह्यो श्रानंद ।

चरणदास चरणन परिस, पायो परमानंद ॥

चरगादास के चरगा की, लई शरगा निज श्राय।

तिनको श्री श्रीतम श्रिया, लीने हैं श्रपनाय ॥

चरणदास के चरण को, जिनके लागो रङ्ग ।

प्रेम पंगे प्रीतम प्रिया, तजे न तिनको संग ॥ चरगादास के चरगा में, जो नवाय निज माथ।

कुँवरि किशोरी राधिका, रीक्षि गहे तिहि हाथ॥ श्याम चरण के दास को, जपे श्रेम कर नाम।

तिनको दंपति भुजन भर, हँसि भेटें सुख धाम ॥ चरणदास के ध्यान में, जो जन हो ग़लतान ।

उज्जल नवल निकुंज रस, करे निरन्तर पान ॥ भजे भाव कर जिन्हों ने, श्याम चरण के दास।

पहुँचे सोइ निकुंज में, जहां नित्य रस रास ॥ होत रहत जहां परस्पर, दंपति विविधि विलास ।

रहत निकटवर्ती तहां, श्यामचरण के दास ॥
गुप्त प्रगट लीला लिलत, करत राधिका श्याम ।
चरण दास चरणन परिस, पाय तहां विश्राम ॥

हढ़ कर गहै श्रनन्य त्रत, चरणदास प्रभु इष्ट । सरस माधुरी रस मिले, महा मधुर श्रति मिष्ट ॥ जो जन मन वच कर्म कर, भजे श्याम चरन्दास।

रिधिसिधि सम्पति प्राप्त हो, श्रशुभ श्रमंगल नास ॥ लोक श्रोर परलोक के, रक्तक श्री महाराज।

सरस माधुरी शरण की, सब विधि उनको लाज ॥ स्वामी रामहि रूप जी, जोग जीत जी जान।

दोउन ने श्रनुपम कहाो, जीवन चरित बखान ॥ तिन दोउन को सार यह, भूत्तम रचना कीन।

पढ़ी सुनो सब प्रेम सों, साधू रिसक प्रवीन ॥ जैसे सुंदर सुमन की, लई सुगन्धि निकार।

सरस माधुरी ने रचो, यह चरितामृत सार ॥

चरितामृत को प्रीत कर, पठन करे नित जोय।

सुफल होंय सब मनोरथ, ग्रुरुभक्ति दढ़ होय॥ शुभ सम्बत उन्नीससी, और तिहत्तर जान।

चैत्र कृष्ण तिथि द्वादशी, भयो समाप्त सुख दान ॥ जयपुर शहर सुहावनो, जहां दरीबा पान। सरस माधुरी ने कह्यो, चरितामृत रसखान॥

॥ सुयश प्रताप ॥

श्री शुकमुनि के शिष्यवर श्याम चरण ही दास। यश प्रताप तिन को कछुक कीनों चहत प्रकाश॥ उनहीं को उर ध्यानधरि चरणन शीस नवाय। सरसमाधुरी शरण गुण गावत हिय हुलसाय॥

॥ छन्द् ॥

श्याम चरणिह दास श्रीशुकदेवके शिष्य ध्याइये।
नाम तिनको लेत ही परिकार युगलपद पाइये।
भक्त शोभन वंश भूषणा मुरिल स्तत है श्रवतरे।
कुंजो नन्दन जक्त वंदन भक्त हित नर वपुधरे।
शेम मंजरी कुंज में निश्चय यही मन लाइये।
नाम तिन को लेत ही परिकर युगल पद पाइये॥१॥
वाल पन वय पंच वर्ष मुनीश मिल वह हित करे।
मोदसों ले गोद मांही श्रभय कर मस्तक धरे।
पुनि दई शुकतार दीजा प्रेम में सरसाइये।
नाम तिन को लेतही परिकर युगल पद पाइये॥२॥
पिता परम पुनीत प्रेमी सदेही हिरपुर गये।
प्रकट श्राप प्रताप परमा जक्त में प्रायस्त करे।

प्रकट त्राप प्रताप पूरगा जक्त में शुभ यश छये। इन्द्रप्रस्थ पधार कर श्रीकृष्ण प्रेम समाइये।

नाम तिन को लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥३॥ ध्यान योग विराग द्वादश वर्ष कर त्रानंद भरे।

विविध परचय भक्तिहित दे जक्त के कलिमल हरे।
कृष्ण भिन्न प्रचार कीनी जास की विल जाइये।
नाम तिन को लेतहीं परिकर युगल पद पाइये॥॥

मुनिराज श्राज्ञा मान प्रभूज् भूपज्यों रहने लगे। वसन भूपण धार अंग में सरस सुन्दर जगमगे। होत नित द्रवार हरियश गान मन हरषाइये। नाम तिनको लेत ही परिकरि युगल पद पाइये ॥५॥ जगन्नाथ स्वरूप धारण श्रापने श्रद्धत कियो। नाम नागरिदास वैष्णव तासुको दरशन दियो । पुनि प्रगट श्राचार्य्य वपुसों ताहि को दरसाइये। नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥६॥ वैजनाथ निहारि प्रभु को विप्रवर तिन शिष्य भयो। गंगोदक ले चरण धोये भक्त है निज पुर गयो। श्रधिक एक सुएक लीला सुन सुश्रंग 'पुलकाइये। नाम तिन को लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥७॥ राधा वल्लभि वैष्णव जो परमानन्द सुनामजू। श्रीकृष्ण कराय दर्शन किये पूरण कामजू। पात पीपर वृत्त में श्री लालजू दिखलाइये। नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥८॥ सखी रूप अनूप धारो वस्त्र भूषागा अँगधरे। दुष्ट जन सब पाय परचय निहुर चरणन में परे । सुन सुयश सानन्द है के चरण शीस नवाइये। नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥६॥ शिष्य प्रभू के प्रेम मूर्ति राम सखी शुभ नाम को। है प्रकट श्रीकृष्ण तिनको लेगये निज धामको।

नित्य परिकर में बसाये ताहि नित्य मनाइये। नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥१०॥ जोग जीत पुनीत श्रीमहाराज के शिप्य जानिये। लीला सागर अन्थ करता तिन्हें प्रकट पहचानिये शरद पूनों नित्य लीला रास लिख तृताइये। नाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥११॥ गुरु भक्तानन्द गुण्निधि शिष्य जिनको नाम है। स्वामी रामहि रूप पद्वी जक्त में सरनाम है। किये निज दीवान प्रान समान प्रिय कहलाइये। नाम तिन को लेतही परिकर अगल पद पाइये ॥१२॥ करत रामत शाहजहांपुर दिल्ली प्रकटे श्राय के। सहजो बाई दर्स दे दियो वाजू ताको जाय के । पुनि उलट श्राये तहां मन मोद है मगनाइये। नाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥१३॥ याम हरसोरे प्रकट दिये दुरश जुगतानन्द को। दूध श्रवखोरा गहा गये इन्द्रप्रस्थ श्रानंद सो। दई पदवी गुसांइ तिन शिष्य कर सुख पाइये। नाम तिन को लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥१४॥ शिष्य गुरु छौना जिन्हौं को वृन्दावन दरसाइया। रास लीला दिखा के छिब जुगल मांही छकाइया।

धन्य किह गुरु चरण परसे तिन्हें नित लडाइये।

नाम तिन को लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥१५॥

जय करण पाषिष्ट जन तिहिं दियो दर्शन श्रायके।

कृपा कर निज धाम में प्रभू ले गये हुलसाय के।

दरश दम्पतिके करा मन माधुरी श्रटकाइये।

नाम तिनको लेत ही परि कर युगल पद पाइये ॥१६॥

मातु कुंजो प्रेम पुंजो नित्य लीला रास की।

दई सहज दिखाय खामी पूर्ण तिन श्रभिलास की। गुप्त गंगाजी नहवाई चरण तिन उर लाइये।

नाम तिनको लेतही परिकर युगलपद पाइये ॥१७॥ स्वर्ग गंगाजल सुधारा जासु की बर्षा करी।

संत सेवक सब नहवाये ताप त्रय तिन की हरी। अमित जनको पुत्र धन दिये तिहिं चरित चित लाइये।

नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥१८॥ मृतक नर बहुतक जिवाये चरणामृत दे चरण को ।

काल के सम्बत् करे वर्षाय जल दुख हरण को। रोग रोगिन के मिटाये सुन सुयश हुलसाइये।

नाम तिनको लेत ही परिकर युग पद पाइये ॥१६॥ सर्प काटे से जिवायो साधु परमानन्द को ।

करत रचा रहत निसि दिन मेट भव दुख इंद को।
प्रगात जन प्रतिपाल प्रभु मन मांहि निश्चय लाइये।
नाम तिन को लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥२०॥
एक सेवक के यहां है कन्यका पैदा भई।
कृषा कर प्रभु ५७ कीने जक्र मे कीरति छई।

ईश्वरीय अनेक परचय देख हगन सिराइये। नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये॥२१॥ कह्यो छै महीने पहले ही अ।न नादिरशाह को।

दियो लिख पढवाय परचा शाह मुहम्मदशाह को । भूत भविष्य वत्तमान ज्ञाता भिक्त उर उपजाइये।

नाम तिन को लेतही परिकर युगल पद पाइये॥ २२॥ नाम नादिरशाह शाहनशाह पायन से परचो।

दे सुपरचय अर्भ मेटो गर्व सब ताको हरगो।

करी नित्य नवीन लीला तासु प्रेम वढ़ाइये।

नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥ २३॥ करन दर्शन सप्त साधू पूर्व सों चल आइया।

त्रागरे जमुना में तिन मल्लाह नाव चढाइया। तिन्हें डूबत जा उबारे सुन प्रताप सराहिये।

नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये॥ २४॥ सप्त ठग मग में मिले गल फांस दीनी आयके।

दूट फांसी श्रिश्न वस्त्रन लगी दुष्टन जायके। तिन्हें हित कर शिष्य कीने सन सहा सगनाइये।

नाम तिन को लेतही परिकर खुगल पद पाइये ॥ २५॥ धाम वृन्दा विपिन सेवाकुंज में दुरुपति सिले ।

श्रंक भर भर मुजन क्षेटे प्रेम सागर में भिले।
नृत्य रास विलास लखि पुनि बंसी बट ठहराइये।
नाम तिन को लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥२६॥

रैन में सुख दैन शुक सुनि कृपा कर दरशन दियो। जुगल परिकर युत दिखाये विरह तन शीतल कियो । ज्ञान गोष्टि भई परस्पर हरष हिये छाइये। नाम तिन को लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥२७॥ पुनि पहुंच दिल्ली नगर में रचि सुमंदिर ब्राजई। जक्र जीवन को चितावन आपकी इच्छा भई। लगे उपदेशन सवनको ध्यान जासु लगाइये। नाम तिन को लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥२८॥ नाम आतमराम दूसर नर्क तिहि दरसाइया। पाय परचय परचो चरगान संत ताहि बनाइया । भक्ति करन प्रचार जयपुर कृपा कर सो पठाइये। नाम तिन को लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥२६॥ प्रेम के गुलतान शिष्य की वैल ते रेचा करी। दास निरमल अस्व काटत प्रकट है विपता हरी। संत मुक्तानन्द जमुना न्हात याह छुड़ाइये। नाम तिन को लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥३०॥ शाह मौला मौलवी की राम मौला कर लियो। शाह आलसशाह कीनों तख्त पद ताको दियो। रंक राजा करत छिन में शरण जिन की जाइये। नाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद पाइये॥३१॥ नाम राजाराम सेवक पुत्र दौलतराम ही। दुमंजले से गिरत गहिभुज कियो ले ठाडो मही ।

श्रा रचक जान सतगुर तासु की श्रानाइये। नाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद पाइये॥३२॥ बिपिन केहिर शिष्य कर द्वैगज लिये अपनाय के। सीत दै सुप्रसाद तिन को दिये धास पठाय के। चरित परम पुनीत रसना गा पवित्र कराइये। नाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥३३॥ क्रतल गिलची करन आये एंच असि मारत भये। वार करन न नेक पांचे हाथ जड है रह गये। पाय परचय नम्र है पुनि चरण मांहिं पराइये। नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥३४॥ शहर दिल्ली जामा मसजिद यवन मारन मन दियो। काढ के तरवार प्रभु के वार सर ऊपर कियो। टूट असि तब परी तिहि छिन दुष्ट सकल खिसाइये। नाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥३५॥ सिद्धको कियो शिष्य चाद्र कूप पै विद्यवायके । मंत्र दीचा देसु ताको लियो साधु बनाय के। तरन तारन ताहि कियो ग्रन कहां जों गाइये। नाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥३६॥ नाम विद्यानाथ जोगी वैष्णव ताको कियो। तिलक कंठी मंत्र दे निज जक्त में बड़ यश लियो। मोहर श्रांवल वृत्तं वर्षा देख भाव हहाइये।

नाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥३७॥

एक जादूगरं कुयोगी जहर ले प्रभु को दियो। नाम चरणामृत कह्यो मुख प्रेम कर ताको पियो। कुटिलता को मेटि तिहिं फिर कागा हंस बनाइये। नाम तिनको लेतं ही परिकर युगल पद पाइये ॥३८॥ नाम केशवदास वैश्य पुनीत श्रलवर जानिये। कर्म वश अपराध विन भई क्रेंद्र तिन की मानिये। प्रगट होय छुड़ाय लीनो प्रेम मांहि पगाइये। नाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद पाइये॥३६॥ एक यवन मलीन श्रामिप भर घरा में लाइया। कह्यो लेहु प्रसाद यामें बचन कपट सुनाइया। भये पेडे गुरु कृपासों जिन्हों की विल जाइये। नाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥४०॥ दास हँसमुखराम जू को प्रगट ह दर्शन दियो। दूध वेला ले सुकर में पान प्रभु ताको कियो । हें स्वयम् सर्वज्ञ तिनको चरित सुन श्रक्त सुनाइये। नाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥४१॥ वनिक के ले कर्ज साधू सेव कीनी प्रीति सों। संत पूरण प्रताप को सीधो दियो न कुनीति सों। रूप शिष्य सुधार लेकर द्रव्य जाय चुकाइये। नाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद पाइय ॥४२॥ शहर मथुरा में प्रगट है दरस बाई को दियो।

सीत श्रह सुप्रसाद सादर ले स्वगुरु पूजन कियो।

द्या के सागर प्रभु चित चरन मांहि बसाइये। नाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥४३॥ कामबन के नाम नागरिदास को निज शिष्य कियो।

खप्त में कंठी तिलक पुनि मंत्र ग्रह ताको दियो। लखत श्रन्तर की सुगति मति नैंन जल वर्षाइये।

नाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद पाइय ॥४४॥ जय नगर के नृपति ईश्वरीसिंह को निज शिष्य कियो।

प्रेम भक्ति प्रतापसिंह श्राय निज दर्शन दिंयो। किये श्री गोविंद दर्शन श्रर्स पर्स मिलाइये।

नाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥४५॥ नागे दस हजार सिलके प्रभु जाचे श्रायके ।

लियो तिन हित दोय मन प्रसाद मोल मंगाय के। मानसी धर भोग जिमाये साधु सकल श्रधाइये।

नाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥४६॥ पारषद निज सर्प रूपी भेज दिये समुकाय के।

प्यार कर प्रीतम प्रियाने लिये धाम बुलाय के। बसे जा रंग महल में निश्चय यही मन लाइये।

नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥४७॥ रूप नाना धार दस दिश प्रराट है दर्शन दिय ।

शिष्य सेवक संत और महंत पशु श्रनिगन किये।
करी पूरण सर्व श्राशा तिन्हें सकल रिकाइये।
नाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥४८॥

शिष्य संपूरण कला अनिगन महंत बनाय के। भरत खराड समस्त में दीन्हें तिन्हें पठवाय के। कियो यह उपदेश प्रेम भिकत जग फैलाइये। नाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥४६॥ पुरी सातों तीर्थ अडसठ रमे याही रीति सों। भिकत हित भये प्रगट जित तित करी जीजा प्रीतिसों। भाव के वश भये खामी तिन्हें नित दुलराइये। नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥५०॥ दीन लखि वहु द्रव्यदीनें विपत सवहिनकी हरी। श्रप्ट सिद्धि नव निद्धि जिनके रहत चरनन में परी। रोम प्रति जो होहि रसना पार ग्रन नहीं पाइये। नाम तिन को लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥५१॥ कई परचय ज्ञा श्ररू निरलोभता के प्रभु दिये। श्रमित याचक किये श्रयाचक काज तिन पूरन किये। चरित चारु विचित्र वहु विधि दिवस निशि मन लाइये। नाम तिन को लेत ही परिकरि युगल पद पाइये ॥५२॥ ज्ञान जोग विराग प्रेमा भक्ति दीनी दान जू। लिख सुरुचि जिहि जीव की तिहि कियो प्रभू कल्यगाजू। लोक श्ररु परलोक सिद्धि दई सुन सुख पाइये। नाम तिन को लेतही परि कर युगल पद पाइये॥५३॥ श्रथर्वगाकी उपनिषद् को भाष्य भाषा में कियो।

ं श्रगम श्रथिहिं सुगम कर श्रानन्द सब ही को दियो।

शद्ध ब्रह्म विवेक वेत्ता विदित जक्त लखाइये। नाम तिन को लेत ही परिकर युगल पद पाइये॥५४॥ कह्यो कर निरधार श्रुति सिद्धांत संतन सो यही।

प्रेम भक्ति विराग जोग ,श्ररु ज्ञान सो वढकर सही । हार मानत भक्ति सो माया यही दृढ लाइये।

नाम तिन को लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥५५॥ प्रेम को सु प्रभाव बारंबार वाणी में कह्यो ।

प्रेमवश श्री कृष्णज् कहि सर्व तज याको गहो। सार यही किल काल में सत्संग रंग लाइये।

नाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद पाइये॥५६॥ सहनता सद्गुन लखायो कटु बचन दुष्टन सहे।

मार गारि सहार खामी वाक्य सीतल मुख कहे। जमा सागर जग उजागर तिनहिं सो लो लाइये।

नाम तिन को लेत ही परि कर युगल पद पाइये ॥५७॥ रहे त्राप त्रमान स्वामी मान औरन को दियो।

लियो कुछ नहीं किसी से सब को सुमन वांछित कियो। श्राप जैसे श्राप पटतर श्रीर कौन वताइये।

नाम तिन को लेत ही परिकर युग्रल पद पाइये ॥५८॥ स्वयम् प्रभु सर्वज्ञ और ग्रुग्ज्ञ ग्रुग् निधि गाइये,।

त्रिकालज्ञ श्रुतिविज्ञ तिन की भिकत उर उपजाइये। तत्व वेत्ता वेदकें बिन मोल श्राप बिकाइये।

नाम तिनको लेतही परिकर युराल पद पाइये ॥४॥

सवं ग्रण सम्पन्न सतग्रह ग्रणातीत ग्रपालज् । सर्व रक्तक विश्व व्यापी ब्रह्म रूप रसाल जू। गुप्त प्रकट स्वरूप जिन के दुई भाव नसाइये। नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥६०॥ अगुन सगुन अनेक लीला वेद गावत जासु की। नित्य लीला धाम में तहां होत रास बिलास की। सोई आचारज हमारे सकल को समकाइये। नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥६१॥ जल सुथल में नभ अनलमें पवनमें दरसाइये। सर्व में भरपूर सब से पृथक जिन को पाइये। निकट सों अति निकट सोई ग्रप्त प्रगट बताइये। नाम तिन को लेतहा परिकर युगल पदपाइये ॥६२॥ रसिक चूड़ामाणि रसीले रस उपासक जानियें। कृष्ण ही नर वपु धरवो यह बात सत्य प्रमानियें। कुंज केलि दृढ़ाय लीला मन मुद्तित उमगाइये। नांम तिनको लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥६३॥ नाम रूप ग्रंह धाम लीला की उपासन रसमई। करी श्राप सुप्रेम पूर्वक और निज शिष्यन दई। नित्य परिकर में बसाये जिन्हें सकल लड़ाईये। ं नाम तिन को लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥६४॥ प्रकट किह गायो शिवाशिव भविष्योत्र पुराण में।

ा नाम श्री रणजीत श्रह चरणदास कहा प्रमाण में।

मुरलीधर निज तात कुंजो मातु के प्रगटाइये। नाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥६ ५॥ श्याम चरणहिदास श्रह रणजीत जिनके नाम हैं। भक्तराज महाराज सोई जक्त में सरनाम हैं। जपे जो लहे मन सुवांछित भरम सकल मिटाइये। नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥६६॥ सर्व जन को सुलभ खामी स्वयम् भावाधीन हैं। ने प्रेम के वर वश सहा प्रभु जल विवश जिमि मीन हैं। एक मनिक बृति निसि श्ररु दिवस लगन लगाइये। ानाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥६७॥ भक्त त्राता प्रेम दाता नित्य वासी धाम के। निकटवर्ती रहत नित प्रति राधिका श्रक श्याम के। चकोरी मुख चन्द दम्पति निरख नैन छकाइये। नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥६८॥ शेष शारद सुयश जिनके गात पात न श्रंत है। नेति कहि कहि सीन गहि मुख नाहि और भनंत है। भक्त अरु भगवंत अकथ गुन कहत बुद्धि थकाइये। नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥६६॥ भक्ति ज्ञान वैराग प्रेमा परा वरनी रस मई। अ भिक्त सागर अन्थ रचि कियो जक्त में कीरत छई। सार श्रुति सिद्धांत गायो मनन कर मुसकाइये। नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥७०॥

गहो भक्ति घनन्य श्री गुरु चरण में चित नित रहो। ः लही पदवी दास तिनकी जयति जय मुख सों कहो। सुरति सकल समेटि चित की वृति चरण रमाइये। नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥७१॥ भक्ति को विस्तार कर संसार में सतयुग कियो। धर्म को स्थाप श्रधर्म मेटि सब को सुख दियो। ऐसे प्रभु को नित सुभर मन से न कभु विसराइये। नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥७२॥ पराभिकत प्रकाश परचय सर्व को दरसाइया। सर्व में सब से श्रलोकिक सार तत्व लखाइया। भावना कर भर्म परिहर भव न फिर भटकाइये। नाम तिनकों लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥७३॥ महा प्रभु मन भर्म मेटन भाव दृ निश्चय करो। सकल पूरण कला स्वामी चरण तिन मस्तक धरो। कर सुमन विश्वास भन्न भय जन्म मरण गुमाइये। नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥७४॥ भीर भक्तन पै परी जित स्वयम् पहुंचे जाय के। भक्त वत्सल गुगा सुमिर मन लिये जीव बचाय के। करे चरित श्रपार तिनको श्राप गाय गवाइये। नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥७५॥ भागीव कुल भानु भक्ताचार्य प्रभु भगवान हैं। सम्प्रदाय शुक्मुनि प्रवर्तक तिन्हें मोर प्रणाम हैं। जान दासानुदास श्रपनो निकट चरण वसाइये।
नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये।।७६॥
श्री कृष्ण प्रभु श्रवतार ले लीला करीजू श्रननत है।
तेसे श्री महाराज की लीलान को निह श्रन्त है।
सरस माधुरी ध्यान नित धर शरण जिनकी श्राइये।
नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये।।७७॥

॥ दोहा ॥

नेम प्रेम सों साठ दिन पाठ करे जो कोय। सकल मनोरथ सिद्ध है दम्पति वह्नम होय॥ श्रद्धा श्ररु विश्वास कर बांचे श्रर्थ विचार।

श्री सतगुरु प्रताप से मिल युगल सरकार ॥ यश प्रताप जो जन पढ़े बढ़े प्रेम ग्रधिकाय।

चौरासी वन्धन कटें जन्म मरण छुटजाय॥ दुगध भात भोजन करे हरि श्रिपित परसाद।

वहाचर्य भू शयन कर त्यागे मिथ्या वाद ॥ भिवत मुक्ति दाता गुरु भाषत वेद पुरान । सरस माधुरी कहत है निश्चय लीजे मान ॥

श्रीमत् श्यामचरगादासाचार्यं परत्वपद् ।

॥ ठेका कव्वाली॥

श्यामचरणदास श्राचारज खास मुकटमणिहो सरताज हमारे॥ पेगम्बर ढहरे में प्रगटाये पेशवा, श्रालम के कहलाये।

लेके पेगाम जमीं पर श्राये वजे जब श्रनहद् नाद् नकारे ॥१॥ वालपन मुनिवर दरशन दीये, खुशी हो गोद श्रापको लिये। प्यार कर पेड़े बख़िशश कीये, मिले तुम्हें मुरशद नदी किनारे॥२ जलवागर हुवा जहां में जमाल, लोगजियारत कर हुए निहाल। तजल्ली रोशन नूर जमाल संत का रूप धार श्रवतारे ॥३॥ फ़रिश्ते और हूर ग़िलमान परी पैकर जन्नत के आन । हुवे सब सूरत पे कुरवान, सबों ने श्राकर नैन निहारे ॥४॥ प्रभू ने द्या दई अति दिल में, मनोरथ सबके पूरे पल में। रहते थे हरदम इश्क शराल में, जिकमें दिन और रैन गुजारे॥४॥ कभी भर नींद नहीं सोते थे, हिजा हरि में हरदम रोते थे। तुम्हें दम दम दर्शन होते थे, निरखते निसदिन दम्पति प्यारे ॥६ कित्युग सत्युग कर दिखलाया, सनातन धर्म जक्त फैलाया। लोग सोतों को तुमने जगाया, भक्ति मारग प्रगटाने वारे ॥७॥ वली श्रवलाह ओलिया सारे, नहीं कोई सानी हुआ तुम्हारे। जीव जन्नत पहुँचाये श्रपारे, हमारे हो नैनों के तारे ॥८॥ रूप नाना प्रभु तुम्हने धारे, दुख भक्तों के श्रमित निवारे। याद किये जहां तहां श्राप पधारे, दयालू ऐसे हो तुम भारे॥६॥ मुरादें सब की पूरन कीनी, दीन दुनिया की दौलत दीनी। विपत सवकी तुमने हरलीनी,काम संतोंके सहज सुधारे॥१०॥ तरन दिल्ली के शाहनशाह, बताई सब को इबादत राह । रहै सब से तुम वे परवाह, हक्रीक़त रब की रहे संभारे ॥११॥

्शाह मौला क्रंधार से आया, आप के दरशन कर सुख पाया। उसी को राजे निहां द्रसाया, राम भौला हो वतन सिधारे ॥११ पुरी सातों अरु चारों थाम, तीरथ अडसठ अंह चेत्र तमाम । शहर सारे सबछोटे याम, रसे तुम शुकदेव मुनी दुलारे ॥१३॥ अर्थं कुरसा जहां रव का नूर,खास खिल्वत का वहां जहूर। रहो तुम हाजिर जहां हुजूर, भेद कुद्रत के जानने हारे ॥१४॥ ्र लुदन्नी इलम तुम्हें भरपूर, मुजिस्सम आप सरापा नूर। देख के जजत चंद अह सूर, हुवे मशहूर हिन्द में सारे ॥१५॥ करे तुम्हें सिजदा सकल जहान, तुम्हारा सचा रहा इमान। हुवा तुमको असली इरफ़ान, वहर वहदत में गोते मारे ॥१६॥ वहद हुला श्रीक का ज्ञान, शिर्कतज सेवा करी रहमान। तबकचैादह हुवे रोश्न-ञ्चान, ञ्चनल हक्रइस्म ञ्चाज्ञम उचारे १९७ आपने धारा सदा सुहाग, कृष्ण से किया प्रगट अनुराग। हाल महिफ़ल में उठता जाग, वजाते गाते गाने वारे ॥१८॥ मिले श्री बनमें कृष्ण करतार, किया तुमसे हिलामिल के प्यार। दिखाया तुमको निज दीदार, लगेसीने से सनम तुम्हारे ॥१६॥ स्वरे। इत्म जानते खूब, बताते सब का वात अजूब। मुहब्बत सब से धी मरगूब,खुल्क खलकत से करने वारे॥२०॥ हो मुरशद पीर खुदा के वजीर, रहनुमा आरिफ अस्ल फ़कीर। ' पेशवा मौला के हो मशीर, गुनाहों के बख्शाने वारे ॥२१॥ हजारों हुवे इरादत मंद, फ़कीरी फ़िरका किया पंसद। असुल्ह कुल फैलाया चोचंद,तसब्बुर रव में रहे मतवारे॥३२॥

श्राखिरू जिमा नवी हुवे श्राप, हमारे तुमही मां श्ररू वाप।
दूर किये दुख दोजाख संताप,तुम्हारे यश गावत हम हारे॥२३॥
शरण जो जीव श्राप की श्राये, बोही मकबूल खुदा कह लाये।
दरजे लाहत उन्हें पहुँचाये,जन्म श्ररूमरण जिन्हों के टारे।२४॥
सरस है, तुम चरणों का दास, करोगे मेरी पूरन श्रास।
देवोगे निज वृन्दावन वास, जहाँ तुम रूप सहचरी धारे॥२५॥

॥ दोहा ॥

जुगल जन्म सों सो गुनो, शुभ मंगल दिन श्राज।
प्रगटे श्री रनजीत प्रभु, माया जीतन काज॥
श्री हरिज रणछोड़ हैं, श्राचारज रणजीत।
जीते माया दल प्रवल, करिये सत्य प्रतीत॥
जी जो जन श्रावें शरण, दे जग वंध छुड़ाय।
वंदी छोड़ प्रसिद्ध प्रण, वेद विमल यश गाय॥
हिर माया बांधे श्रीभत, जीव श्रासुरी जाल।
तिन्हें छुड़ाके परम पद, ले जावें तत्काल॥
त्रह्मा ने श्रृष्टि रची, सो भरमे संसार।
श्री सतग्रह श्रृष्टि रची, उतरे भवजल पार॥
वह्मा सिरज्यो विंद कुल, लगो विमुखता रोग।

मनगह कीनों नाद कल सनम्रव हरि संयोग॥

सतग्रह कीनों नाद कुल, सनमुख हरि संयोग ॥ जग शृष्टि सम काग की, भच अभचाहि खाय। इंस शृष्टि सतगुरु रची, हरियश मुक्ता पाय॥ सतगुरु हिय भंडार में, अनिगन राधश्याम । शरणागत को देत हैं, लें निहं एक छदाम ॥ श्री हिर ने जगजीव को, छोड़ दियो है हाथ ।

सतग्रह कीनों शरण जब, तब नहिं छोड़त साथ ॥ अंधी शृष्टि जक्न की, ब्रह्माने राचि दीन ।

ज्ञान चत्तु दीनी ग्रुरुं, तबिह परे प्रभु चीन ॥ भिल्यो रहत फिर निहं भिलत, सखा जीव हरि संग।

प्रगट मिलायो श्री ग्रुरु, द्रशायो रस रंग ॥ कर्म शुभाशुभ तीन विधि, तिनके नाशन हार।

जीव करें निषकर्म प्रभु, प्रेम भक्ति दातार ॥ कोटि नाम हरि के जपे, एक आचारज नाम ।

तुले नहिं सम तासु की, जपो रिसक निश् जाम ॥ कोटि जन्म उत्सव हरि, गुरु उत्सव पर वार।

एक रसना निहं किह सके, मिहमा श्रपरंपार॥ ज्यों हाथी के खोज में सकल समावत खोज।

यों श्राचार्य उत्सव विषे, सब उत्सव की मौज॥ धर्म स्थापन हेतु हरि, ले निमित्त श्रवतार।

नित्य प्रगट नर रूप हरि, श्राचारज संसार ॥ खप्नेहू सुधि लेत निहं, जिय की श्री हरि श्रांन ।

गुरु पल पल रक्ता करें, श्रतुलित कृपा निधान । हेतु सहित हरि करत हैं, जिय की श्रान सहाय। निरहेतुक श्राचार्य गुरु, दें भव बंध छुड़ाय ॥

ज्यों हरि के प्रति 'रोम में, लटकत श्रमित विराट। त्यों श्री गुरु प्रतिराममें, युगल रूप के ठाट ॥ श्राम वृत्त सिंचिन कियें, उपजत बहुरैंस श्राम । श्राचारज सेवन कियें, मिलं राधिका श्याम॥ मेरे साधन हैं नहिं, जप तप नेस श्रचार। श्री त्राचारज गुरु शरण, सोवत पांत्र पसार श्री श्राचारज गुरुन बिन, मोहि नहिं गति श्रान। सनसा वाचा कर्मना, श्री गुरु इष्ट प्रधान ॥ श्री ग्रह व्यापक सर्व दिशि, श्रादि मध्य श्रवसान। जायति स्वन्न सुशुप्ति, तुरिया गुरु पद् ध्यान । श्री गुरु साधन सिद्धि फल, जीवन प्रान श्रधार। सर्वस धन श्री सतगुरु, सर्व तत्व के सार ॥ तन सें मन में वचन में, श्री गुरु रहे समाय। सरस माधुरी रोंम प्रति, श्री गुरु छवि रही छाय ॥

॥ दोहा ॥

श्री सतग्रह वर्लेव प्रभु, बंदो बारंबारे।

मृगुवंशी वंशावली, कहत सरस उच्चार॥
जग के कर्ता जानिये, श्री नारायण जान।
नाभि नारायण सों भयो, कमल प्रगट पहिचान॥
कमल मध्य ब्रह्मा भये, जिन सिरज्यो संसार।
सुर नर मुनि वंदन करें, तिनकों विविधि प्रकार॥

वरुण देव के यज्ञ में, श्री ब्रह्मा से जान।
प्रगट भये तहां श्रिय तें, श्री भृगु ऋषी सुजान॥
भृगु की पत्नी पुलोमों, पतिव्रता श्रिधकाय।

प्रगटे तिनके गर्भ तें च्यवन ऋषीश्वर श्राय ॥

श्री राजा सर्याति की, नाम सुकन्या जान।

च्यवन ऋषी की भार्या शुभ ग्रन मांहि प्रधान ॥ पर्वत वर इर्चाक पर,कियो श्राश्रम श्राय ।

होसी नाम प्रसिद्ध जग, तीरथ श्राति शुभदाय ॥ च्यवन ऋषीश्वर से भई, जो उत्पति संतान ।

दूसर कहत सुनाम जग, भागव वंश वखान ॥ रजधानी श्रलवर निकट, डहरा नाम सुयाम ।

द्वसर जाति प्रसिद्ध भये, शोभन जू सरनाम ॥ निष्कामी प्रेमी महा, श्रनन्य भक्ति सिरं मौर ।

ध्यान मानसी में मगन,सेवें युगल किशोर ॥ हे प्रत्यच्च दर्शन दिये, युगल बिहारी लाल ।

मिले परस्पर प्रेम कर, बोले वचन रसाल ॥ वर दीनों श्रति कृपा कर, श्रष्टम पीड़ी अंत ।

भक्ति प्रचारन जक्त में, धरूँ रूप निज संत॥ वर देके ताही समय, हरि भये श्रंतर ध्यान।

शोभनजू के सुत,भये चतुरदास पहिचान ॥ चतुरदास जूके भये सुत,श्री गिरधरदास । तिनके लाहड़दास जू. प्रेम भक्ति सुख रास ॥ जगन्नाथ जिनके तनय, तिनके प्रागहि दास।

मुरलीधर तिनके सुवन,तिन जस जगत प्रकास॥
श्री मुरलीधर दासके,प्रगटे श्री महाराज।
कृष्ण कला कलयुग विषे,भक्ति प्रचारन काज॥

नाम सुनो तिनको सकल, श्री रणजीत द्याल।

शोभन को जा वर दियो,सो कीनो प्रतिपाल ॥ सत्रह से श्ररु साठ का,सम्वत विक्रम जान ।

भादों शुक्का तीज तिथि, मंगलवार पिछान॥ नाम जपे रनजीत मुख,जीते माया जाल।

पहुँचे जाय निकुंज में,जहाँ लाडली लाल ॥ व्यास पुत्र शुकरेव मुनि,मिले मया कर श्रान ।

शिष्य वनावें श्रापको, मंत्र सुनावें कान॥

नाम धरें इनको हरष,श्री श्याम चरणदास।

प्रगट करें श्री शुक्र संप्रदा, जग में करुणा रास॥

ले जावें संसार सों, श्रनिगन जीव उधार।

्रपहुँचावें निज श्रमरपुर,जहाँ युगल सरकार ॥

सुन हरषे वंशावली, प्रागदास महाराज।

मुरलीधर मन में मुदित, मिल्यो रंक ज्यों राज ॥

सभा सकल फूलत भई, जय जय कही उचार।

ढाढी को दीने मँगा,भूषन वसन श्रपार ॥

भारत श्रह श्री भागवत इनके, मत श्रनुसार।

सरस माधुरी ने कही, वंशाविल उचार ॥

हरि हरिजन श्रंतर निह, वरनत वेद पुरान।
हरिते हरि के दास वड़, गावत संत सुजान॥
श्री भृगुकुल वंशावली, सुन पावे श्रानंद।
कृषा करें तिन पर सदा,श्री राधा ब्रज चंद॥

॥ कवित्त ॥

श्री कृष्ण स्वयं कला प्रगटे काल काल मांहि च्यवन कुल प्रशंस कियो मृतल में आयके। मुरलीधर तात मात कुंजो आनन्द मगन प्रागदास दादा रहे सुख में समाय के॥ डहरे वर आम सास आदों तृतीया पुनीत मंगल दिन शुक्क पच रह्यो रस छाय के। कहै सरस माधुरी बधाई मिल नवल नारि लालन रनजीत निरित्व नांचत हैं गाय के॥

॥ कवित्त ॥

मृग्र ऋषि वंश सो प्रशंस सर्व विश्व मांहि च्यवन कुल तिलक श्री शोभन सुखदाई है । प्रेम भिक्त मांहि परिपूरन प्रसिद्ध महा दिये दर्श जुगल लाल हिय में हुलसाई है। दीनो वर है प्रसन्न श्रष्टम तुम पीड़ी में लेंहों श्रवतार संत गिरा कि सुनाई है ॥ कहै सरस माधुरी महोत्सव यह संगल मय प्रगटे श्याम चरनदास स्वयं श्री कन्हाई है॥

॥ कवित्त ॥

पावस ऋतू मांहि आदों भल सर्व भांति मघवा मन मगन मेघ भरी हू लगाई है। हरी भूमि हरे वृच्च हरी लता लित स्वच्छ वोलत विहंग मोर नाचत मगनाई है॥ भर्ना हू भरत नीर निद्यां हू उमग चली गुंजत है भृंग बहु पराग पुष्प छाई है। कहें सरस माधुरी मनोरथ की बेलि फूली श्याम चरनदास फल लागो सुखदाई है॥

॥ कवित्त ॥

जन्मे हैं जगत गुरु र्रासक रनजीत लाल मंगल सज थाल वाल घर घर ते आई हैं। नख शिख शृंगार नवल साज रही सुंदर तन मोद भरी मधुर सुरन गावत बधाई हैं। मुरलीधर आजिर मांहि मांची है महाधूम भूम भूम भमक सकल नृत्तत मगनाई हैं। कहै सरस माधुरी महोत्सव सुख छाय रहा नौबत नफीरी द्वार बाजत सुहाई है॥

॥ कवित्त ॥

मुरली धर अजिर वीच मांची दिध हर्द कीच चोवा और चंदन ले छिरकत सब अंग में । ग्रनी जन आये सनमान दान पाये बहु गाय ग्रन रिकाये अति प्रेम की उमंग में ॥ आनंद घन वरस करी नेह मेह लगी भीज रहे तन मन सुख जनमोत्सव रंग में । कहै सर्स माधुरी रंगीले मिल रिसक भक्त जय जय ध्विन बोल रहे बानी तिन संग में ॥

॥ सवैया ॥

सुन आये सबे मिल संत शिरोमाण मोद महा मन में मगनाई॥
मुंख जयजय बखान भली विधिसों कर मंगल गान निशान
बजाई ॥ लिख लोचन सों रणजीत लला मनो रंकन सिद्धि
नवो निधि पाई ॥ भाग सराहत आपन को कहै सर्स बधाई
सुदर्शन पाई ॥

॥ सवैया छंद ॥

परम सुधाम परात्पर में श्री दंपित राजत हैं सुखदाई ॥ जक्त में भिक्त प्रचारन कारन प्रेम की मंजरी छाप पठाई ॥ सो प्रगटी मृगुवंश शिरोमिश शोभन के कुल मध्य सोछाई॥ ससे सुहावन भादव मास में छाई सुमंगल मोद वधाई॥

॥ राग आसावरी ॥

राय में तुम्हरे घर को आयो॥

लालन के गुन गान करन को आति आतुर उठ धायो॥ कुंजो रानी सब गुन खानी सुत पुरुषोत्तम जायो।

विश्व चराचर श्रंतरयामी मुरली सुत कहलायो॥ आचारज सिर मौर जक्त गुरु यश फैले अधिकायो।

सम्प्रदाय शुकदेव प्रकाशक सो मेरे मन भायो॥

धन घरि धन दिन लगन महूरत दरशन कर मगनायो। सरस माधुरी छवि को लिख के प्रेम पदारथ पायो॥

॥ कवित्त ॥

आये हैं उमंग जन्म सुन के रनजीत लाल जाचक अनेक द्वार भुरलीधर राय के । भूषन वसन जर जेवर विविधि भांति दान सनमान पाय सब गये हैं अधाय के॥ विप्रन को गऊ दई दूध की सबच्छ शुभ शास्त्र अनुकूल अलंकार को सजाय के । देत हैं अशीस सरस माधुरी प्रसन्न होय चिरजीवो कुँवर कहें वचन वर सुनाय के॥

॥ सबैया ॥

जन्मत श्री रनर्जात कुमार के द्वारे बंदनवार बँधाई ॥ रोपे पताक ध्वजा चहुं श्रोरन तोरन की छवि श्रद्भुत छाई ॥ स्वस्तिक श्रान रचे हैं सवासानि मोतिन सों शुभ चौक पुराई ॥ सर्स की माधुरी बीथी बजारन मालन फूल बिछा हुलसाई ॥

॥ सवैया ॥

नाचत वारमुखी दरवार में गावत मंगल गीत महाई॥ भाँड़ भवैया जुरे बहु द्वार पे केलि करें मन मोद बढ़ाई॥ पाट पटंबर द्रव्य न्योछावर पाय प्रसन्न भये अधिकाई॥ जीवो जुगजुग कुंजो लाल कहै सस्त सुबानी हिथे हुलसाई॥

॥ सवैया ॥

धन्य घरी दिन आज अली मिल मंगल मोद बधाई गावें॥ भादव मास सुदी तृतीया तिथि ढोलक ताल बजा हुलसावे॥ जन्म लियो जग में जगदीश्वर प्रेम परा जिय भक्ति सुपावें॥ सर्स बर्से अमरापुर में नित संस्टृति कर्म कलेश मिटावें॥

॥ कावेत्त ॥

डहरे वर ग्राम में सुभीर भृगुवंसिन की हंसन की पंक्ति ज्यों लगत सुहावनी। प्रागदास दादा अरु श्याम सुंदर भैया आदि बोलत सुबानी भेम सानी मन भावनी। भूवा और भतीजी बहिन भानजी सुनेग देत लेले सब भूषन पट तन मन पुलकावनी। कहें सभी माधुरी अशीश देत हर्ष मान चिरजीवो लालन वर बानी सरसावनी।।

॥ राग माँस ॥

कुंजो नंदन बरस गांठ दिन हिलिमिल सजनी आवोरी।

संगल महा महोत्सव आली रंग बधाई गावोरी॥
भादों तीज सुदी।तिथि सुंदर मोतिन चौक पुरावोरी।
शुभग साथिये द्वार बनावो बंदन माल बँधावोरी॥
कंचल कलश धरो आंगन में कदली थंम रुपावो री।
केसर चंदन चहुं दिशि छिरको फूलन को बरसावो री॥
बीन मृदंग चंग सारंगी बाजे विविधि बजावो री।
नाचो प्रेम रंग में रांचो नाना भाव बतावो री॥
अतर मिलाय उबटनो अंग कर सोंधे नीर नहवावो री।

पीतांबर पोशाक सजावो भूषन रतन धरावोरीः॥

लेकर गोद सोद भर भामिनि सिंहासन बैठावो री।
पट रस विंजन मन के रंजन लालन लाड़ जिमावो री॥
पुनि अचवाय पान वीरी दे आरित कर बिल जावोरी।
सरस माधुरी शोभा लिख के नैनन को फल पावोरी॥

॥ वधाई राग कालंगड़ा ॥

रंगीली म्हारे श्राज की घरियां।
श्री रनजीत जनम सखी री श्रीत श्रुभ श्रवसरियां॥
भादों मास सुहावन पावन स्रूमि भई हरियां।
दादुर मोर चकोर कोकिला बोलत इह बिरियां॥
मंगल मोद महोत्सव हली सुख स्टिष्ट विस्तरियां।
मोतिन चोक पुराय प्रेम सों श्रुभ खस्तिक धरियां॥
विविधि वधाई नारिन गाई वृष्टि कुसुम करियां।
श्राये उमँग रसिक जन सारे मिले परस्परियां॥
निरिख रूप रितक।चारज को जय जय मुख उच्चरियां।
दरसन कर प्रसन्न भये हिये सुख सागर भरियां॥
छाई घटा घुमड़ श्रानंद की डहरे पर दिखां।

॥ राग माँड ॥

सरस माधुरी रस की सजनी लाग रही भरियां॥

सखी री श्री श्याम चरणदास परम ग्रह प्यारो लागे है।। चयवन ऋषीश्वर वंश विसूपन, शोभन भक्त विशाल। जिनके प्रेम भक्ति वस मोहन, भये मुरलीधर लाल। भाग कुंजो भल जागे हैं॥

प्रेम मंजरी नाम धाम में, निकट लाड़ली लाल। तिन श्राज्ञा सों भूतल प्रगटे, संतन के प्रतिपाल। निरित्व सुर नर श्रनुरागे हैं॥

भादों मास सुहावनो, शुक्का तीज रसाल। श्राय श्रवतरे रसिक शिरोमणि, नख शिख लों छवि जाल। प्रेम के रस में पागे हैं॥

रंग वधाई उहरे छाई, गावत मंगल वाल । दरशन कर रनजीत कुँवर को, वारत मोती थाल । रूप लिख दुख सब भागे हैं॥

परमानंद मगन नर नारी, तन मन की नसभाल। सरस माधुरी दंपति संपति, दे कर करो निहाल। यही निश्चल वर माँगे हैं॥

॥ बधाई॥

रंगीली बधाई श्राज बाजे॥

श्री रनजीत जन्म भयो सजनी भक्त जनन के काजे॥ भादों मास महा रंग भीनों बरसत मेह गगन घन गाजे॥ हरी भूमि जल भेर सरोवर फूले कमल श्रधिक छवि छाजे॥ नारी हिल मिल मंगल गावत पट मूषन तन सुन्दर साजे॥ बटत विविधि विधियान मिठाई सभा भरी जहां रिसक विराजे॥ निरिंख नगर डहरे की शोभा नारि रमापुर मन में लाजे ॥ सरस माधुरी संत रूप हरि प्रगट भये सुर मुनि सिरताजे॥

॥ बधाई ॥

सखी सुन डहरे मंगल चार।
जन्मे हैं जगदीश कलानिधि चरनदास श्रवतार॥
वित्र वेद ध्वनि करत सकल मिल मंगल गावत नार।
मुरलीधर दे दान जाचकन माणिक मोती वार॥
मुगुवंशिन को प्रागदास घर भलो जुरो दरबार।
गान तान धुनि छाय रही है छवि को अंत न पार॥
ध्वजा पताका सजे सुहावन बँध रही बंदन वार।
बाजत नौबत और नफीरी ढोलक बीन सितार॥
गह मह भई भीर रितकन की शोभन भवन मँभार।
छिरकत केसर चंदन हित कर जय जय कहत उचार॥
संत श्रनंत जुरे तिहि श्रवसर लिख रनजीत कुमार।
सरस माधुरी मगन भये सब बोलत मुख बिलेहार॥

॥ बधाई राग विलावल ॥

भादों सुदी तीज सुख रास, प्रगटे श्री श्याम चरणदास ॥ मुरली धर की पुजई आसा,भिक्त चन्द्रमा कियो प्रकासा॥ चन्द्रमा भक्ती प्रकास्यो लिये बिप्त बुलाय के। वेद ध्विन सब करत मुख सो रह्यो श्रानंद छाय के॥ करी गुश्रुषा भर्ली विधि वचन सधुर वखान जू। सरस साधुरी प्रेम पूर्वक कियो है सनमान जू॥

मुरलीधर कीनो स्नाना, पहिरे पीतांबर वाना। कर श्राचमन पूजन ठाना, श्री तिलक माथे कियो सुहाना॥ सुहावन मस्तक तिलक करा, गोत्र उच्चारन कियो।

वेद विधि संयुक्त कुल के, देव पूजन मन दियो॥ नवल नारी मिल बधाई, गात सुन्दर गान जू।

सरस माधुरी श्याम प्रगटे, खुगु सुकुल के भान जू॥ रचि रचि चंदन लदन लिपायो, चौक चारु मोतिन पुरायो। द्वारन वांधी वंदन साला, ध्वजा कलश सज़ धरे रसाला॥ जयति जयति धुनि रिसक बोलत, होत हैं बलिहार जू। धरे कंचन कलश फहरत, ध्वजा त्राति शुभ कार जू॥ द्वार नीवत वजत घन ज्यों परम सुख की खान जू। सरस रस की माधुरी ध्वनि सुनत हैं सब कान जू॥ पुर घर घर की श्राईं बाला, लीनें हाथन कंचन थाला। मंगल कलश शीश धर प्यारी, रमा लखि लजत श्रपारी॥ लिख लजात रमा उसा मिल सकल संगल गाइया। निरिष नैंन सरूप लालन सकल तन पुलकाइया॥ भई परम प्रसन्न सगरी रूप रस कर पान जू। सरस रस की साधुरी भल भाग्य अपने मान जू॥ प्रागदास दादा रँग भीने, बहु विधि दान जाचकन दीने। देत अशीश सकल मगनाये, अूषन वसन पटंबर पाये॥

पाय कर भृपन पटंचर कहत धनि दिन श्राज को। चिरजीवो रणजीत श्री मुरलीधर महाराज को॥ चले भवन श्रशीश दे शुभ विरद वहुत बखान जू। सरस रस की माधुरी में भये सब रालतान जू॥

॥ गजल॥

प्याम चरनदास जन्म तीज श्राज है।

घर घर वधाई मंगल छन्दर समाज है॥

प्रागदास द्वार वाजें नीवतें भली।

मानो मनोहर हे सखी घन की सी गाज है॥

छाई घटा गगन में नांचे हैं मोर वन में।

भादों का मास सोहन सब सर का ताज है॥

निरतें हैं नारि प्यारी हँस के बजावे तारी।

भूपन वसन छहावन सब तन में साज है॥

जाचक हजारों श्रावें मन माने दान पावें।

विरदावली छनावें श्रानंद का राज है॥

सरस माधुरी हू श्राई रण्जीत छिव छकाई।

दरशन इनाम पाई भये पूरन काज है॥

।। बधाई ढाढी के गायवे की ।। श्री मुरलीधर ज़् के घर श्राय, नांचे नांचेरे ढाढी प्रेम वढाय ॥ जन्म सुनत रणजीत कुँवर को तुरत ही उठके श्रायो धाय ॥ नाना गित ले लिलत श्रंगसों गायत ग्रन हियमें हुलसाय ॥
एक्न बधाई बोल भली विधि सभा लई है सकल रिभाय ॥
सुन जस सुखी भये पुरवासी तन मन में रह्या श्रानंद छाय ॥
सभा भरी है संत जनन की रिसक रहे मन में मगनाय ॥
कोऊ बांटत है पान मिठाई कोऊ श्रतर अँग देत लगाय ॥
कोऊ फूलन के हार हरष कर हरिजन को हँसि दे पहिराय ॥
कोऊ मिण माणिक न्योछावर कर देत जाचकन को सुखपाय॥
कोऊ केसर चन्दन छिरकत है कोऊ जन रहे फूल वरसाय ॥
दिध कादो की कीच करन ले कोउकोउ के मुखदें लिपटाय ॥
सरस माधुरी महा महोत्सव इक रसना वरन्यो नहिं जाय ॥

॥ रसिया॥

वधाई बाज रही श्री मुरलीधर दरवार ।

प्रगट भये पूरन पुरुषोत्तम, श्ररी कि माता कुंजो कूंख मकार ॥

श्राचारज सिरमोर महाप्रभु, श्ररीकि लीनों जगमें नर श्रवतार॥

ध्वजा पताका तोरन रोपे, श्ररी कि द्वारे वांधी बंदन वार ॥

धाजरही नौबत सहनाई, श्ररीकि कमकम कांकन की कनकार॥

पुरनारी सुंदर सुकुमारी, श्ररी कि हिलमिल गावें मंगलचार ॥

लाई भृषन वसन विविधिविधि, श्ररीकि भरभर सुंदर कंचन थार॥

धनधन भादों तीज सुदी तिथि, श्ररीकि शुभ दिननीको मंगलवार॥

धनधन भादों तीज सुदी तिथि, श्ररीकि शुभ दिननीको मंगलवार॥

बैठे सभा रिसक जन जितने, श्ररीकि साधू संत महंत श्रपार ॥

जय जय जय बिल हार कहें सब, श्ररीकि कर रहे वंशाविल उचार ॥

मागध सूत भाट बंदीजन, श्ररी कि कर रहे वंशाविल उचार ॥

ग्रिनजन जुरे जन्म सुन सगरे, श्ररीकि नांचे गावें दे कर तार ॥ नकल भांड़ नाना विधि करके, श्ररी कि राजी करें सकल नर नार॥ जो रनजीत जपें रसना सों, श्ररीकि जिनको मिलें पदारथ चार॥ श्री शुकदेव सहाय करें नित, श्ररीकि देवें दरस ग्रुगल सरकार॥ देखें रास विलास महल में, श्ररी कि देखें दंपति नित्य विहार॥ सरस माधुरी रहसी डोले, श्ररीकि कर रही फूलन की बौद्धार॥

॥ बधाई राग टोडी ॥

श्राज म्हारे रंगरी हो वधाई महलां छाई छे जी।

मुरली सुत हो मोहन प्रगटे भई सकल मन भाई छे जी।
छंजो माता जायो जगपित जाको नाम कन्हाई छे जी।
प्रागदास प्रफुछित तन में महा परम निधि पाई छे जी।
है भक्ता प्रवतार महाप्रमु हिय करुणा उपजाई छे जी।
जीव उद्धारन जग निस्तारन जिनके जिय में ब्राई छे जी।
जाव जब भीर परत भक्तन पर तब तब करत सहाई छे जी।
विरद विचार श्रवतरे प्यारे नेंक न ढील लगाई छे जी।
विरद विचार श्रवतरे प्यारे नेंक न ढील लगाई छे जी।
किलमल हिरहें जिय निस्तिर हैं यह निश्चय दृढताई छे जी।
शोभन वर श्रा पूरन कीयो दरस दियो सुखदाई छे जी।
शाभन वर श्रा पूरन कीयो दरस दियो सुखदाई छे जी।
बाज रही नौवत द्वारे पर और सुंदर सहनाई छे जी।
छल की नारि पहर पट मूजन हिलमिल मन मगनाई छे जी।
कंचन थाल श्रारती वारी जगमग ज्योति जगाई छे जी।
हँसकर हरष बलैयां लीनी कर अँगुरी चटकाई छे जी।

चिरजीवो रणजीत कुँवर वर यही श्रशीस सुनाई छे जी ॥
रिसक संत गुनवत जुरे हैं फूलन वृष्टि कराई छे जी ॥
जय जय जय बितहार बोल बहु मनमें खुशी मनाई छे जी ॥
फूलमाल छिनजाल जुगित सों सब के गल पिहराई छे जी ॥
श्रतरन श्रंग लगाय परस्पर वांटे पान मिठाई छे जी ॥
ढाढी संग सुहागिन ढाढिन बहु विधि नांची गाई छे जी ॥
भाव बताय विविधि मांतन सों सगरी सभा रिमाई छे जी ॥
छगन मगन को रूप निरख के छिन के मांहि छकाई छे जी ॥
सरस माधुरी मूरित लालन श्राविचल हगन वसाई छे जी ॥

॥ बधाई ठेका कव्वाली ॥

रस रंग बधाई छाय रही, सुकुमारी सखी मिल गाय रही ॥
यह भादों महीना महान भला, प्रगटाये श्री रनजीत लला।
श्रवतार लियो श्री कृष्ण कला, श्राल प्यार दुलार लडाय रही॥
तिथि तीज सुदी अति पावन है, दिन मंगल हू मन भावन है।
सब के हिय हर्ष बढ़ावन है, छिव उत्सव देख छकाय रही॥
सारंगी सुरीली सितार मिला, कर ताल लगाय रही श्रबला।
कोई कंधे पे धार तूमरा भला,कोई बीन मृंद्ग बजाय रही॥
कोई नाचत नारि उमंगन सों, बहु भाव बतावत श्रंगन सों।
कर नैंन कटाच सुढंगन सों, चित वित्त सबों के चुराय रही॥
कोई जय जय मुख उच्चारत है, मािश मािशक लालपे वारत है।
कोई राई नोंन उसारत है, कर हेत हिये हरषाय रही॥

कोई प्यार पगी पलना ललना अक भूम के घूम अलाय रही। मुख,चंद लला लखि सर्स, सखी, निज नयनन को फलपाय रही॥

॥ बधाई राग ठुमरी ॥

प्यारा लला प्यारा प्यारा लला,श्री कुंजो का वारा लला॥ श्री मुरली सुत मंगल मूरति, सुंदर रूप उजारा लला॥ भादों शुक्का तीज जान शुचि, आन लियो अवतारा लला ॥ भक्ति प्रचारन पतित उधारन, जग में नर तन धारा लला॥ आचारज हो अधम उधारें,हरिहें भू को भारा लला॥ नारि नवेली होकर भेली, गावें मंगल चारा लला॥ रंग बधाई महलन छाई, छवि को अंत न पारा लला।। नीवत वजत सरस सहनाई, मांभन का भनकारा लला॥ ध्वजा पताका लिलत लगाये,वांधी बंदनवारा लला ॥ मंडप बृहद बनों ता नीचे, विछे गलीचा न्यारा लला॥ प्रागदास कर सभा दिराजे, सज सोहन द्रवारा लला॥ भक्त वृत्द बहु जुर मिल आये,उत्सव कियो अपारा लला।। बाजे विविधि बजावें गावें, जय जय कहत उचारा लला ॥ केसर चन्द्न चरन परस्पर, भेटत भर अँकवारा लला॥ आज भलो दिन कियो विधाता, जागा भाग हमारा लला॥ अतर पान सनमान सबन को, करें सकल सतकारा लला॥ द्धि काँदो कर रिसक जनन नें, सब ही को रंग डारा लला ॥ जाचक दान पाय परपूरन, भये अजाचक सारा लला ॥ कहैं रनजीता जुग जुग जीवो, भक्कन प्रान अधारा लला॥

जो जन ध्यान धेरं उर अन्तर,ताहि करें भव पारा लला॥ अवल वास वृन्दावन पावे,निरखे नित्त विहारा लला॥ सेवे युगल सहचरी होके,यह निश्चे उर धारा लला॥ सरस माधुरी का सरबस धन,अरु नयनों का तारा लला॥

॥ ढाढी के गायबे की वधाई ॥

श्रहो मेरे प्रागदास जिजमान, तिहारो ढाढी श्रायो ॥ सुफल फलो भुगुवंश हंस कुल, जग में सुयस सवायो॥ श्री रनजीत जन्म सुन कर में,मन में श्रिति मगनायो ॥ ढाढन सहित हरष हिय माँही, निज घर तें उठ धायो ॥ एक वेर में श्रागे श्रायो, मुरलीधर जब व्याह्यो ॥ ढाढन कही चलो तुम डहरे,श्री कुंजो सुत जायो ॥ कृष्ण कला कलियुग के मांही, तुमरे घर प्रगटायो ॥ शोभन भक्त दियो वर पूरव, सो कर सत्य वतायो॥ श्रीर पदारथ में नहिं लेहों,दर्शन को ललचायो ॥ गोद मोद भर लेकर नाँचू, कर मेरे मन भायो॥ दीजे वास मोहि निज पुर में, श्रन्त रहन विसरायो॥ चरण शरण रह युन गन गांऊँ, सुख में रहूँ समायो ॥ यह सुन च्यवन ऋषि कुल भूषन,ढाढी निकट बुलायो॥ भूषन वसन अमोल मंगाये,नख सिख लों पहरायो ॥ लई वधाई मन की भाई, सुजस आमित मुख गायो॥

सरस माधुरी लिख लालन छित,मन वांछित फल पायो॥॥॥ बधाई॥

भला वे त्राज बाजे है रंगवधाईयां,सुन सर्खी वे सब मन भाईयां॥ गुनि जन त्रावे गार्ने वाजानें, लय सुरताल मिलाईयां ॥ ढाढी के सँग ढाढन नांचे, नाना गति उपजाईयां॥ मागध सूत भाट बन्दी जन, कुल करतृत सुनाईयां ॥ मुरलीधर को सुक्रत उदय भयो, सुन्दर सुत प्रगटाईयां॥ कुंजो माता कुंख सिरानी, करी न जाय बडाईयां॥ कृष्ण कला कलियुग के मांही,भक्ति चलावन श्राईयां॥ हरिजन संत महंत मगन मन, फूले श्रङ्ग न माईयां॥ शुभ सातिये रचे द्वार पर, बंदन माल बँधाईयां॥ बाज रही नौवत सहनाई, ज्यों घन गरज सुनाईयां॥ धन भादों धन तीज सुदी है,धन दिन मंगल श्राईयां॥ प्रागदास भूखर सनमाने दई, गऊ वहु ब्याईयां ॥ जाचक सकल श्रजाचक हुये, लै लै दान श्रघाईयां॥ देत श्रसीस लाल चिरजीवो, सुजस रहो जग छाईयां ॥ सरस माधुरी निरिख लाल मुख,मनमें श्रति मगनाईयां ॥

॥ बधाई पीलू वरवा ॥

महे तो थांका जाचक छां जी राज । श्री रणजीत जनम सुन श्राया भृगुवंशी महाराज ॥

प्रेम भक्ति वर मांगां थांसू देवो दयाकर त्राज। मिले मौज सत्संग भजन की निशि दिन सन्त समाज॥ दर्शन करस्यां श्री लालन मुख सब दुख जावें भाज। सरस माधुरी दृगन वले छवि नहीं और सो क्राज॥

॥ पीलू वरवा ॥

हूँ तो थांकी ढाढन कूँ जी राज।

श्री रगाजीत जनम छन श्रीई प्रागदास महाराज ॥ शोभन भक्त दिया प्रभु जो वर सो प्रन भयो श्राज । संत रूप धरि श्री हरि श्राये रसिकन के सिरताज ॥ मन मानी मैं लेहुँ वधाई सुनिये धर्म जहाज । सरस माधुरी जाचत तुसकों श्रीरन सो नहिं काज ॥

. ॥ वधाई ॥

चरन के दासा पूरी करो मन श्रासा।
सुनोजी स्वामी तुम हो श्रंतरयामी, की जिये हियमें प्रेम प्रकासा
बसोजी नयनों तुम ध्यान तुम्हारो ही नाम जयं प्रति स्वासा।
करोजी मोकों परामिक्त वरदान जान कर श्रपनो ही निज दासा
दिखलावो बुन्दावन निज धाम बसावो श्याम राधिकापासा॥
करावो टहल महल की नित्य जहां होवे रास विलासा।
रखो तुम मोकों निज परिकर में सरसके चितमें यह श्रमिलासा॥

॥ बधाई ॥

श्री मुंरलीधर दरवार वधाई वाजे रङ्ग भरी ॥ हां हां बधाई वाजे रङ्ग भरी॥ शोभन भक्त श्याम मन भाये, तिनको पूरव बचन सुनाये। ं श्राये पूरन करन श्रवनि श्रीकृष्ण हरी॥ भक्तन हित नाना तन धारे, वेद पुराण कहत जस हारे। युग युग ले अवतार धर्म सहाय करी॥ भागीव वंशभान प्रगटाये, सुरलीयर के सुत कहलाये। कुंजो नंदन भये धन्य हैं त्राज घरी॥ रस निकुंज की वर्षा करि हैं,रिसकन के हियमें रस भरि हैं। हरि हे मन संताप लगे श्रानन्द भरी॥ प्रेमपरा मारग प्रगटावन, श्रमित जीव नित धाम पठावन । जीवनं की यम त्रास त्रिविधि सब ताप टरी॥ खर्ग मांहि देवत हुलसाये, इन्द्रहु मन श्रानन्द मनाये। वर्षत भादों मास भूमि भई सकल हरी॥ जो जो जन जांचन को श्राये, दान मान मन वांछित पाये। दे दे चले श्रशीस जयति जय सुख उचरी॥ सरस माधुरी गावत नारी, श्रेम मगन तन पुलकित भारी। निरिख नयन बलि गई लाल छवि हिये धरी॥

॥ बधाई ॥

मुरलीधर घर बजत बधाई। प्रगट भये भक्तन हितकारी, चरणदास संतन सुखदाई॥ घर घर तें भामिन गज गामिन संगल द्रव्य लिये कर श्राई। घरे खासन सीख साथिया नारिन हिल मिल मंगल गाई॥ श्रात श्रानंद भयो पुर मांही भक्ति भान श्रद्धत प्रगटाई। रिसककमल कुल फले चहुँ दिशि रंक मनो चितामिश पाई॥ भादों नाल लुहो दिन तुनीया प्रयश लेचन भरी लगाई। सरस माधुरी जान सुश्रवसर सुमन समूह हरप वर्षाई॥

॥ बधाई ॥

वधाई बाजे माई, कुंजो रानी लखना जायो सुंदर सुखदाई ॥
मुरलीधर को सुकृत सफल भयो श्रव्यमुत निधि पाई।
चरणदास हरि श्रंश श्रवतरे श्रति ही छिव छाई॥
सज श्रेगार नारि जिरि श्राई मिल मंगल गाई।
पुरवासी लिख जन्म महोत्सव हिया में हरषाई॥
प्राट भये रस रासि चन्द्रमा रिसकन के राई।
सरस माधुरी निरिख लाल सुख मन में मगनाई॥

॥ बधाई राग बिलावल ॥

श्राये हैं श्रनेक गुनीं देस परदेसन से छाई है बधाई श्राज पागदास द्वारे री।

ध्वज पताक तोरनं कंचन के कलस सखी।

सोहन शुभसाज सदन नीके सँवारे री॥ स्वस्तिक बनाये चौक मोतिन पुराये थंभ। कदली रुपाये छवि कवी कहत हारे री॥ सुंदर सहनाई मन भाई राग रंग भरी।

वाज रही बीन और ढोलक नगारे री॥

मुरलीधर श्रिजर बीच मांची दिध दूध कीच।

चन्दन केसर सुवास फैल रही सारेरी॥

गावत हैं नारी मिल मंगल बधाये सारी।

लालन रनजीत नवल नयनन निहारे री॥

गुंजो मैया उदार करके श्रित मीत प्यार।

पय को पिवाय मान बस्लम दुलारे री॥

श्रारती उतारे कोई राई नोंन वारें मुख।

जय जय किंह बानी सरस माधुरी उचारे री॥

॥ राग गनगीर व कालंगड़ा ॥ 🧨

मुरलीधर द्वारे श्राज बाजत हैं बधाइयां।
ध्वज पताक तोरन की सुन्दर छवि छाइयां॥
नीवत हू गाज रही सुंदर सहनाइयां।
नांचत हैं नवल नारि भाव बहु बताइयां॥
मोतिन के चौक पूर साथिये धराइयां।
हरी भरी बंदनमाल पौल के बँधाइयां॥
भक्त संत सबही श्राये हरषे ग्रन गाइयां।
लालन को रूप निरित्व श्रंग ना समाइयां॥
सरस माधुरी समाज शोभा भल पाइयां।
कृष्णा चंद नर तन धरि भूतल प्रगटाइयां॥

॥ भाँड वधाई ॥

महाराजा तेरे भांड भवन में श्राये।

श्री रतर्जात जन्म जुन श्रवनन सन में श्रीन सगनाये॥ नाचत गावत सुजस सुनावत निज घरतें उठ श्राये।

नकल श्रकल के श्रमित खजाने हम सब ही भर लाये॥ नाना हास विलास वारता तुमको चहत खुनाये। सरस माधुरी दरस लाल कर तन मनमें पुलकाये॥

॥ भाँड वधाई ॥

शादियाँ सलोवी आनन्द की भली वे।
हिल मिल के आवो गावो ग्रमी रंग की रली वे।।
करते ग्रमी ग्रम गान ले ले आनन्द की तान अजी वाह वाह है।।
स्त माँगथ सुजान करें दंशावली वखान . अजी वाह वाह है।।
हुआ मंगल का राज दुख दूर गया भाज, अजी वाह वाह है।।
प्रगटे हें सरके ताज महाराज भकराज, अजी वाह वाह है।।
पर्ने वाँकाहो न वाल रहो लालोंका लाल अजी वाह वाह है।।
क्लें अंग नर नार फूलो सब ही दरवार, अजी वाह वाह है।।
हिये छायो हुलास भये पुत्र सुख रास, अजी वाह वाह है।।
लालन मुख चंद लाल आनंद के कंद , अजी वाह वाह है।।
सिखयाँ सयानी नार पानी पीनें वार वार, वाह वाह है।।

प्यारे लाल की बलाय परो खारे सिंधु जाय, श्रजी वाह वाह है॥ भये मन में खुश हाल नाचे गावें दे दे ताल, श्रजी वाह वाह है ॥ देख श्याम गौर तन लख मन हुये मगन, श्रजी वाह वाह है ॥ पाया पट श्रीर भूषन होते मन में प्रसन, श्रजी वाह वाह है ॥ पीवें प्रेम रस रंग उठें दिल में तरंग, श्रजी वाह वाह है ॥ छवि मन की मोहन श्रति सुंदर सोहन, श्रजी वाह वाह है ॥ मुख लालन को जो श्रहा श्रहा हाहो, श्रजी वाह वाह है ॥ मगन मगनाय मन भाये सोई पाये, श्रजी वाह वाह है ॥ दिये विप्रन को दान यथा योग कर सनमान, श्रजी वाह वाह है॥ बोले सबही जयजयकार वारबार बलिहार, श्रजी वाह वाहहै ॥ खुश होते श्रपार जैसे रंक निधि सँभार, श्रजी वाह वाह है॥ बजें ढोलक सितार गावें पावें कंचन थार, अंजी वाह वाह है ॥ रहोसदा खुशहाल निज भक्तन प्रतपाल, अजी वाह वाह है।। वदो सुजस अपार तीनों लोकमें प्रचार,अजी वाह वाह है॥ आवें सुनके जिज्ञासी मन पूरे श्राभेलासी, अजी वाह वाह है॥ जपें श्याम चरनदास पावें वृंदावन वास, अजी वाह वाह है ॥ जहां नित्त रसरास निरखें दंपति विलास, अजी वाह वाह है।। जो इनको धरें ध्यान पावें पद्वी निरवान, अजी वाह वाह है ॥ करें प्रेम रसका दान बहु जीव करें पान, अजी वाह वाह है॥ निजजनको श्राभिराम पहुँचावे खासधाम, श्रजी वाह वाह है॥ सरसमाधुरी सरन हिय धरे निज चरन, अजी वाह वाह है ॥

॥ वधाई राग वंसत, परभाती ॥

भार्गव वंश प्रशंस प्रभाकर द्विज कुल शोभा धाम री।

श्याम चरन के दास द्या निधि प्रगटे हें अभिराम री॥

परम पित्र पिता मुरलीधर माता कुंजो नाम री।

अलवर निकट जन्म भूभी जहां डहरो सुंदर आम री॥

गावन लगी वधाई वहु विधि हिलमिल पुर की वाम री।

सहा सहोत्सव आनंद मंगल छायो आठों जाम री॥

स्वयं श्याम सुंदर जहां आये जन मन पूरन काम री।

सरस माधुरी जोर दोऊ कर जुग पद करत प्रणाम री॥

॥ राग विलावल ॥

धन धन आज की है घरी।
आ कुंजो रनजीता जायो रसिकन जीवन जरी।।
हिये हुती आभेलापा जैसी विधना पूरी करी।
निरित्व चंद मुख मुरली सुत को आले आनंद भरी।।
भादों शुक्क तीज दिन मंगल वरषत अमृत भरी।
सरस माधुरी वेलि मनोरथ सब विधि फुली फरी।।

्॥ पृद् ॥

सखीरी मुरलीधर घर जड़ये। इंजो रानी ढोटा जायो निरक्षि नयन सुख पड़ये॥ भूपन वस्तर साज सुअंगन रहस बधाई गइये।
शोभन भक्त मनोरथ को फल ताके दर्शन लहिये॥
प्रागदास जसुधा की जीवन छवि लख हिये हुलसइये।
बड़ भागन यह श्रोसर श्रायो श्रानद सिंधु समइये॥
संत रूप धरि निज हरि श्राये श्रोर कहा अब चिहये।
लेके गोद मोद सों सजनी पलनें गोद खिलइये॥
ध्वजा पताक साथिये शुभ धरि बंदनवार बँधइये।
धूप दीप अच्तत दाधे दुर्वा मोतिन चौक पुरइये॥
ताल बीन मृदंग मँजीरा मंगल वाद्य बजइये।
करो सोहिलो सब मिल श्राली फूलन को बरसइये॥
अपनो भाग सराहो हेली हिय में हर्ष बढ़इये।
सरस माधुरी लालन मुख लखि हित सों कंठ लगइये॥

॥ गनगौर की ध्वान बधाइ॥

-प्रागदास द्वार बाजे नौवत्या भली वे । जन्मे रनजीत लाल रंग की रली वे ॥

> मुरलीधर तात मात कुंजो आनंद हुलसी, हिय मांहि सखी कमल ज्यों कली वे॥

जसुधा दादी सुजान जाके बडभाग मान।

मनसा की बेलि ताकी सुफल श्रब फली वे॥

इहरे वर नगर धाम गावती बधाई बाम।

नाचत मन मोद मान सकल मिल श्रली वे॥

चोवा चन्द्रन सुवास महकत मन्द्रिर श्रवास ।
समन सुठि विद्याय दिये डगर श्ररु गली वे ॥
ध्वज पताक सद्द्र द्वार खिरतक विरचे सवार ।
हरी भरी दूव मालिन लाई भर डली वे ॥
सरस माधुरी हुलास निरखत श्रानन्द विलास ।
पूरन भई मन की श्रास भाग की भली वे ॥

॥ खम्माच॥

भयो घर मुरलीधर श्रवतार।
संत रूप घर श्री हरि श्राये भक्तन प्रागा श्रधार॥
भादों तीज सुदी तिथि सुंदर शुभ दिन मंगलवार।
ध्वजा पताका तोरन रोपे वांधी वन्दन वार॥
ग्रीन गंधर्व वधाई गावत ढोलक लिय सितार।
ढाढन ढाढी नाँचत छिव सों शोभा भई श्रपार॥
भागध सूत भाट बंदीजन वंशावली उचार।
देत श्रशीश जीवो रनजीता नहात खसो निहं बार॥
भिक्त प्रचारन किनल टारन आये जक्त मँभार।
सरस माधुरी युगल कमल पद बंदों बारवार॥

॥ रेखता॥

सलोनी कुंजो रानी ने श्री रनजीता जाया है।
मगन मन में हैं मुरलीधर अनोखा लाल पाया है॥

जिसे शिव अज सदा ध्योवं,विमल यश वेद नित गावें। वोही श्री कृष्ण करणा कर मनुज तन धरिके आया है ॥ मुनी जन सुर सकल जिसको करें परनाम हित चित सें। सोई करतार संत्चिद घन तरन तारन कहाया है। दिया वर भक्त शोभन को तुम्हारी पीड़ी अष्टम में। लेऊँ अवतार में आके वचन सोई निभाया है॥ रिसक जन संत अनुरागे सभी आनन्द में पागे। ध्वजा तोरन पताका ले सदन सुंदर सजाया है ॥ लियें फल फूल की डाली तभी आया मगन माली। हरी दुवी सवीं को दे हरष हिय में बढ़ाया है ॥ बजे नौवत ऋमित बाजे गरान में मेघ बहु गाजे। घटा भुकं भूम चहुं दिशि को भरी का रँग जमाया है ॥ भई सब भूमि हरियारी नचत हैं मोर मुदकारी। कुहुक कोयल की आति प्यारी समय मंगल सुहाया है॥ आई हिलमिल के नव नारी बधाई गावती सारी। भई सब प्रेम मतवारी हिये ज्ञानन्द छाया है॥ यशोदा लाल की दादी विराजी आयके गादी। करी खुश हो जनम शादी कुँवर गोदी खिलाया है॥ धरमधुर प्रागदासा हैं ऋधिक हिय में हुलासा हैं। सुयश सूरज प्रकाशा हैं वहुत अन धन लुटाया है ॥ गऊ विप्रन को बहु दीनी विनय कर जोर के कीनी। करी हो नम्र आधीनी वचन मृदु मुखं सुनाया है ॥

करें कलकोले सुकुमारी लला की जावें विलहारी। हँसन किलकन निरख सारी कमक पलना कुलाया है।। सरस के मन में अभिलापा करूं तेवा रहूं पासा। यही नयनों में मेरे आ चरनदासा समाया है॥

॥ वधाई राग विलावल ॥

वधाई रनजीत की ग्राऊँ॥

कुंजो सुत को निरित्व कमल मुख अपने नेन सिराऊँ॥

नृत्त करूँ नाना गित ले ले वहु विधि भाव वताऊँ।

गोद सोद सों ले लालन को हँस हँस हृदय लगाऊँ॥

पुनि पलना पधराय चाव सों अपने हाथ भुलाऊँ।

किलकिन मंद मंद मुसकिन लिख फूली अंग न माऊँ॥

चकरी भोरा और भुन भुना नव नव खेल खिलाऊँ।

तन मन धन न्योद्घावर किर के फूलन को वरसाऊँ॥

जय जय वोल वलइयां ले ले कर अंग्ररी चटकाऊँ।

सरस माधुरी छगन मगन की छिव निज हृदय वसाऊँ॥

॥ वधाई ढाढन के गायवे की ॥

ढाढन नांचे रंगभरी नांचे नांचे रे प्रागदास दरवार।
श्री रनजीता जन्म लियों है सुन के धाई में तज घरवार॥
वर जो दियो भक्त शोभन को सो कीनो पूरन करतार॥
श्री कृष्ण नर को तन धारो लीनों श्राचारज श्रवतार॥
सारी लगी किनार लेउंगी लहंगा लेउंगी में घूम घुमार॥

वाजू भी लेउंगी गजराभी लेउंगी लेउंगी लेउंगीरे नथ भलकेदार दुल्यीभी लेउंगी मैं तिल्ही भीलेउंगी लेउंगीलेउंगी जड़ाक में चंदनहार हीरा भी लेउंगी मैं पन्ना भी लेउंगी लेउंगी लेउंगीरे मोती भरके थार॥ ढाढन के संग ढाढी नांचे गावत है दे दे करतार॥ भाव बतावत तन पुलिकावत जय जय बोलत बारंबार॥ सरस माधुरी निरख लाल मुख तन मन धन सरबस दीनोंबार॥

॥ बधाई पद राग कालंगड़ा ॥

रंगीली बधइयां बाजेरी श्री मुरलीधर द्रबार। कुंजो कूख प्रगटे पुरुषोत्तम महा प्रभू मन हरन नरोत्तम । रूप राशि रसिकन की जीवन सब सिरताजे री॥ सहनाई सुर अति सुखदाई भांभ भनक सुन मन मगनाई। नवल नवेली नौबत द्वारे घन ज्यों गाजेरी ॥ रसिक संत गुग्वंत रसीले सजे सुअंगन वस्त्र सुपीले केसर चंदन छिरक छबीले कियो समाजे री॥ नव निकुंज रस देंन पधारे आचारज वर नर तन धारे। अमरलोक सें आये आली रसिकन काजेरी॥ नाचन गावत सुन गरवीले भाव बतात चतुर चटकीले। नुख सिख भूषन वसन साज सोहन तन साजे री॥ श्री रनजीत गोद ले मैया लिख लालन की लेत वलैया। मुख चूमत कर प्यार महल के मांहि।विराजे री॥ गीर वरन मृदु गात सलीना मंद हँसन कर डारत टीना। जाको दुरस कियें जीवन को जग दुख भाजे री॥

ध्वजा पताका सजे सदन में छिव अपार निहं आत कहन में। इहरे की शोभा लिख मन में सुर पित लाजे री॥ जय जय धिन दशहों दिशि छाई हरिजन रहे सुमन वरपाई। सरस माधुरी महा महोरंसव हमरे आजे री॥

॥ वधाई भूँगा की चालमें ॥

सखी री सव मिल आवो गावो वधाई म्हारे रंग भरी। अजी हां वधाई म्हारे रंग भरी॥

सखी री नव निकुंज सों आई नाम है प्रेम मंजरी॥
सखी री श्यामा श्याम पठाई करेंगी रस रंग ररी॥
सखी री भई आचारज रूप अहेतुक कृपा करी॥
सखी री करिके करुणा हृद्य हमारी प्यारी ओर हरी॥
सखी री मिले महल निज वास सकल मन आस फरी॥
सखी री घन यह भादों मास लगाई आली मेघ भरी॥
सखी री भरे हैं सरोवर नीर भूमि भई हरी हरी॥
सखी री लिख सुकुमारी रूप छवीली छिव हगन धरी॥
सखीरी सरस माधुरी वारी जोर कर पाय परी॥

॥ पद् वधाई ठेंका कव्वाली ॥

सखी आज वधाई आनंद छयो, श्री कुंजो के सुतउत्पन्न भयो॥ देखो नारी नवेली ए आयरही, अग भूषन वस्त्र सजाय रही॥ भिल संगल गीतन गाय रही, सुन के सजनी सुख चैन लहारे॥ कोई स्वस्तक द्वार रचाय रही, कोई बंदन माल बँधाय रही। कोई मोतिन चौक पुराय रही, चल देख सखी मेरो मान कहो। ॥ पय पीवत मात की गोद लला, मन मोहन सोहन रूप भला॥ मुसकावन में मन मोर छला, चितचाव चढ़ो दुख दूर दहो। ॥ देखी सर्स की माधुरीभांकी भली, मेरे सनकी सनोरथ बेलीफली। उर प्रेम तरंग उठें हैं अली, उमगो रस सिंधु गलीन बहो।॥

॥ वधाई धुनि गनगौर ॥

श्राज महाराज भक्तराज प्रगटाये हैं। श्याम चरणदास खास वृन्दावन जिन को वास,

प्रेम को प्रकाश करन करुणा निधि श्राये हैं॥ श्रमर लोक रंग महल करत जहां जुगल टहल,

त्रेम मंजरी सरूप धाम में कहाये हैं॥ श्रष्ट जाम श्यामा श्याम सेवा को करत काम,

श्रष्ट नाम नवल धार दस्पति लड़ाये हैं॥ पतितन के पाप हरन संगल मन सोद करन,

रस निकुंज देंन राधे कृष्ण ने पठाये हैं॥ रसिक जन जुरे त्रान कीनो उत्सव महान,

सुंदर सुथान विविधि याजने वजाये हैं॥ लिये वीन श्ररु मृदंग नाच गाय करत रङ्ग,

रीभ भीज सानुराग सबको रिभाये हैं॥ जय जय मुख बोल करत हिल मिल कलोल घोल, केसर श्रह चन्दन श्रँग सबके छिरकाये हैं॥ निरित्त मुख मयंक लाल फँसे सकल प्रेम जाल, होय के निहाल परम श्रानँद छकाये हैं॥ श्राचारज ग्रन निधान इन सम निहं और श्रान, सरस माधुरी के प्रान पूरे पुन्य पाये हैं॥

॥ बधाई ॥

मुरलीधर घर श्रानन्द माई।
जन्म दिवस रनजीत लाल को गावत मंगल नारि बधाई॥
मंगल कलश धराय भवन में मोतिन को ग्रुभ चौक पुराई।
मंगल दिध श्रचत श्रक रोरी दुर्वा हरित श्रली ले श्राई॥
भक्त बंद मिल करत महोत्सव रिसक जनन कुल कीरित गाई।
संत समूह करत जय जय ध्विन मुरली शंख मृदंग बजाई॥
किलयुग में सतयुग द्रशावन संत रूप धिर श्री हिर श्राई।
प्रगटे हैं भुगुवंश महाप्रभु सरस माधुरी स्वयम् कन्हाई॥

॥ राग सोरठ ॥

श्राज सलोनी कुंजो रानी लालन जायो है।

श्री मुरलीधर को सुक्तत फल श्रद्भुत पायो है॥ श्री पुरुषीत्तम कृष्ण कला सोई सुत प्रगटायो है।

निरिष रूप नयनन सों सजनी सुख उपजायों है।। गावत त्रिलगन हिलमिल त्राई नवल बधायों है। इहरे मांहि महोत्सव सुन्दर घर घर छायों है॥ भग्र कुल चंद उदय भये श्रमृत रस बरसायो है।
रिसक चकोर छिकित भये छिव लिख हिय हुलसायो है॥
प्रागदास महाराज जाचकन दान दिवायो है।
भूषन वसन श्रमेक भांति दे द्रव्य लुटायो है॥
धन्य यशोदा दादी जिन ले गोद खिलायो है।
सरस माधुरी रिसकाचारज मो मन भायो है॥

॥ राग कालंगड़ा ॥

मंगल मय श्राज दिवस श्रित ही मन भायो री ॥

इहरे वर श्राम भये प्रगट श्राय श्राप श्याम ।

नवल नारि गाय रही जन्म को वधायो री ॥

मुरलीधर मन श्रानंद लालन मुख निरिष्ठ चंद ।

पुरुषोत्तम संत पुत्र कुंजो ने जायो री ॥

मंगल मय भादों मास तृतीया तिथि सुख की रास ।

मंगल ही वार परम मंगल मन भायो री ॥

मंगल मय बजत वाज नौवत घन ज्यों श्रवाज ।

मंगल उत्साह सकल पुर ही में छायो री ॥

सरस माधुरी मुकुन्द देंन सकल परमानन्द ।

काटन भव फंद प्रभु जग में प्रगटायो री ॥

.॥ वधाई ॥

श्राज उहरे में मंगल छायो। कृष्ण कला रनजीत लाल प्रभु कुंजो के प्रगटायो॥ भादों तीज सुदी दिन संगल सात घड़ी दिन श्रायो ।
हिल्लिमल नारि नगर की श्राईं गाथो गीत वधायो ॥
मुरलीधर श्रानंद सगन मन सब परिवार बुलायो ।
कर मनुहार महल श्रपने में सबही को बैठायो ॥
ध्वजा पताका वन्दनमाला सुन्दर सदन सजायो ।
नोवत श्रीर वजत सहनाई सुन हिय श्रति सरसायो ॥
जाचक सकल श्रजाचक कीने दान दियो मन भायो ।
बिरदावली वोल वन्दीजन वरनत सुजस सवायो ॥
केसर चन्दन श्रतर श्रमोलक गलियन में छिरकायो ।
वांटे पान प्रीत कर सबको रोली तिलक करायो ॥
श्रनिंन गऊ दई विप्रन को बहु धन माल लुटायो ।
सरस माधुरी महा महोत्सव लिल परमानंद पायो ॥

॥ वधाई ॥

श्री प्रागदास दरवार वधाई बाज रही।

हां हां वधाई वाज रही।

नौवत वजत श्रीर सहनाई,

लागत निपट सुहाई घन उयों गाज रही।।

हाढी के संग ढाढन नाचे, सूषन वसन
श्रमोल सुश्रंगन साज रही।।

गुन गावत सनमें हरषावत, हँसत हँसावत

चतुर श्रिधक छिव छाज रही।।

उमंग रह्यो रस रंग श्रनूपम, रंभा निरिष्व समाज मन ही मन लाज रही॥ श्री पुरुषोत्तम संत रूप धरि, श्राये रसिकन काज सनो यह बात सही॥ संत महंत सभी हर्षाये, बरषाये वहु फ़ुल जय जय सबन कही॥ भक्ति प्रचारन पतित उधारन, श्राये श्री महाराज दुसह दुख सूल दही ॥ धन भादों धन तीज सुदी है, धन दिन मंगलवार धन है घरी यही ॥ धन्य धन्य श्री कुंजो माता, धन मुरलीधर तात प्रेम परसिद्धि लंही ॥ परमानन्द सुडहरे छायो, गलियन ब्रह्मानन्द बहायो पार नहीं ॥ सरस माधुरी लखि लालन मुख, हाथ जोर सिरनाय चरन की शरन गही॥

॥ दोहा॥

श्रति पुनीत दिन श्राज को, जन्मोत्सव रंजीत। गावत हैं हरिजन हुलस, श्रनुपम मंगल गीत॥ नवल बधाई गा रहीं, नारी परम पुनीत। सरस माधुरी कर रहे, रिसक परस्पर श्रीत॥

॥ गजल ॥

जनम रंजीत उतसव की खुशी जयपुर में छाई है। जहां राजेन्द्र भूपति मान-सिंह राजें सवाई है॥

सुदी तिथि तीज भादों की परम पावन है मन भावन।

रिसक भक्तों ने रचना जलसे की सुंदर रचाई है।। सरस निज कुंज की शोभा सकल भक्तों की मन लोभा।

जुगल सरकार की भांकी श्रधिक वांकी वनाई है।।
श्री शुक मुनि चरण के दास दोनों तरफ राजे हैं।
करें दरशन जिन्हों के चित में नख शिख छित्र समाई है॥
नचें निर्तक नई गित ले बतावें भाव भक्ती से।

गुणी जन मन मगन होके बधाई हित से गाई है ॥ कहें धन धन सकल हरिजन मगन हैं सबके तन और मन। सरस सोहन समय सुंदर को लख गति मति भुलाई है

॥ बधाई ॥

डहरे नगर के महिंया बधेंया बाज रहियां रे॥ उमंग रह्यो श्रानंद महल में नारिन मंगल गैयां॥

कुंजो मैया लालन जायो त्रिभुवन पती गुसैयां॥ मुरलीधर मन मुदित भये हैं रंक मनो निधि पैयां॥

श्राचारज श्रवतार धरवो हिर भूतल में प्रगटैयां॥ अमर लोक से श्राय पधारे श्यामा श्याम पठैयां॥

पहुँचावन परधाम जनन को श्रपने दरस दिखैयां॥ सरस माधुरी छवि रंजीता देख हगन विलेजियां॥

॥ मंजू ॥

रंजीता की जन्म बधाई, नारि नवेली गाँव। घर घर से सबही बन ठन के फुंड़ र मिल श्रावें। राई नोन उसार लाल पर दरशन कर हुलसावें। जुग जुग जीवो मुरली नंदन सरस श्रसीस सुनावें॥

॥ मंजू ॥

भादों मास सुदी तिथि त्रितिया मंगल दिन मन भावन।
प्रगट भये हिर ग्रंश संत हो कियो च्यवनकुल पावन॥
शरगा होय जो इन चर्गान की करे प्रेम कर धावन।
सरस माधुरी हिर जग श्राये जिय परधाम पठावन॥

॥ मंजू ॥

भृगु कुल च्यवन वंश भूतल पर श्री शोभन प्रगटाये। प्रेम भक्ति परि पूरण करके श्रीमत कृष्ण रिभाये॥ श्रष्टम पीढी मुरंलीधर घर श्राचारज हो श्राये। प्रगट करें शुक मुनी सम्प्रदा भये सरस मन भाये॥

॥ मंजू ॥

प्रगट भये श्री श्याम श्रविन में जग जीवन उद्घारन।

मुरली सुत कुंजो नंदन हो भूमि उतारन भारन॥
किल मल हरन करन पाव^न जन प्रेमा भक्ति प्रचारन।

सरस माधुरी दरस परस कर करिये सरवस वारन॥

॥ मंजू ॥

जन्म महोत्सव मुरली लुत में रचना रुचिर वनाई। ध्वजा पताका तोरन रोपे बंदन माल वंधाई॥ ढांढन ढाढी नाच गाय गुण सारी तभा रिभाई। सरस माधुरी रंजीता की पाई दरस वधाई॥

॥ मंजू ॥

रखें इष्ट रंजीत लाल को रिसक श्रनन्य कहावें। सखी भाव सेवा दम्पति की श्रमर लोक पद पावें॥ रंग महल में रास लखे नित दम्पति को दुलरावें। श्री शुक सखी खामिनि तिनको श्रपनी कर श्रपनावें॥

॥ मंजू ॥

जुगल लाल की प्राण वक्षमा प्रेम मंजरी प्यारी। चरण दास धर नाम नवीनो जग मांही श्रवतारी॥ जुगल भावना ध्यान मानसी रस की रीति प्रचारी। लई शरण जिन इन चर्णन की पाये सरस विहारी॥

॥ वधाई ॥

रंजीता जनम की वधाई सली, मन भाई भली सुखदाई भली। सर्खी उत्सव की शोभा है छाई भली॥ (भ्रतरा)

कृष्ण अंश भृगुवंश में, प्रगट भये महाराज। शोभन कुल पावन कियो, संतन के सरताज॥ कुंजो माता गर्भ से, उपजे श्रानँद कंद। डहरे गोकुल प्रगट भये, चरगादास कुल चंदु ॥ श्रीमत शुक मुनि सम्प्रदा, प्रगटावें कर प्रीत। प्रेमा भक्ति प्रचार के, दरसावें रस रीत॥ किलयुग में सतयुग करें, हरें भरम अधियार। जीव चितावें जक्त के, करदेवें भव पार ॥ ज्ञानी जन को ज्ञान दें, जोगी जन को जोग। प्रेमिन को दें प्रेम हरि, मेटें भव दुख रोग॥ रसिक जनन ही को करें, रस निकुंज को दान । सेवें श्यामा श्याम को, करें रूप रस पान॥ शरण गहै इन चरण की, रटे नाम लौ लाय। जगत जाल से छूट कर, बसे श्रमरपुर जाय॥ रसिकाचारज जक्त गुरु, कलिमल नाशन हार। पतितन के पातक हरगा, चरगा दास सरकार॥ चरगा दास के चरगा की, लई शरगा जिन श्राय। तिन को श्री प्रीतम प्रिया, लीन्हे हैं श्रपनाय॥ चरण दास के चरण को, जिन के लागो रंग। प्रेम पगे प्यारी प्रिया, तजें न तिन को संग॥ चरण दास के चरण में, जो दढलगे सनेह। रींभ तिन्हे प्रीतम प्रिया, महल खवासी देंह॥

रींभ तिन्हे प्रीतम प्रिया, महल खवासी देंह॥ चरणदास के चरण में, जो नवाय निज माथ। कुंबरि किशोरी राधिका, रीभ गहत तिहि हाथ॥ भजे भाव कर जिन्होंने, श्याम चर्ण के दास ।

पहुँचे सोई निकुंज में, जहां नित्त रस रास ॥
होत रहत जहां परसपर, दम्पित विविधि विलास ।

रहत निकट वरती तहां, श्यामचरण के दास ॥
आचारज हो अवतरे, मिहमा कही न जाय ।

सरस माधुरी शरण भई, चरणन पर बाले जाय ।

॥ गुज़ल ॥

अनोखे दास चर्गों की अनोखी यह बधाई है। अनोखा है दिवस मंगल अनोखी रैन आई है॥ अनोखी मूमि उहरे की अनोखी है चरण गङ्गा। अनोखी रीति उत्सव की सरस सुंदर चलाई है॥ कहीं रस रास के विलसन कहीं रस गान ग्रनियन के। कहीं संकीर्तन संगल की मंगल ध्वनि सुहाई है॥

कहीं संकीर्तन मंगल की मंगल घ्वनि सुहाई है भरे भंडार रस रंग के उमंग मन की अनोखी है।

अनोखी छवि यह लालन की अनोखे नयन छाई है॥ अनोखा सुख महोत्सव का अनोखे चौक मोतिन के।

अनोखी सखी सथियन से पुरी शोभा महाई है।। पुरुष बड़भागी डहरे के हैं बड़भागन सकल नारी। सखा सखियों ने हिल मिलके बधाई सर्स गाई है॥

॥ गजल ॥

डहरे नगर में देखो कैसी बहार छाई। प्रगटे हैं श्याम सुंदर रनजीत यहां आई॥ कुंजो के गर्भ जन्मे, भादों की तीज शुक्का। घर घर में नारियां मिल, गावें जनम बधाई॥ श्री प्रागदास दादा, बहुदान दे रहे हैं।

हैं सम्न मुरली धरजी, आनंद कह्यो न जाई॥ तोरण ध्वजा पताका, हर तर्फ सज रहे हैं।

हरियारी सूमि प्यारी, सघवा मारी लगाई ॥

पलना में लाल भूलें, नरनारी निरख फूलें।

जय जय उचारें मुख से, छवि लख रहे लुभाई ॥

छाई घटा गगन में, नाचें हैं मोर बन में।

कोयल कुहुक रही हैं, शीतल पवन सुहाई॥

मेवा मिठाई बहु बिधि, उत्सव में बट रही है। दासी सरस नें दिलकश, द्रशन इनाम पाई॥

॥ पद् राग बहार ॥

प्रगटे कृष्ण कला रनजीत मुरली धर के गेह री।

माता कुंजो बालक जायो वेद बतायो जेह री॥

भादों माँस महा मन भावन बरसत रस को मेह री।

प्रागदास दादा मन प्रमुदित हिय में सरस्यो नेह री॥

समर्थ सर्व कला निधि खामी काले गज मारन केह री।

माया जाल जीव काटन को सुन्द्र धारी देह री॥

श्राण गहो जो चहो अचल सुख मम सिखवन सुन लेह री।

सरस माधुरी सिर निज धारो जुगल कमल पद लेह री॥

॥ पद पलना राग विलावल ॥

पलना श्री रनजीता भूलें। हरख भुलावत कुंजो रानी लखि सुत तन मन फूलें।। किलकन हँसन निरख लालन की मैया सुधि बुधि भूलें।। सरस माधुरी जसुधा दादी ललना जीवन मूलें।।

॥ पद् श्रासावरी ॥

पलना श्री रन जीता भूलत पुर की नारि भुलाय रही।
मुदित मने हर रूप निहारत मंद मंद सुर गाय रही।।
चकरी भोरा फेर प्रेम सों तन मन में पुलकाय रही।
चिवुक प्रलोय बलेया ले ले अलिगन अमित लड़ाय रही।।
अपनो तन मन वार प्यार कर सुख के सिंधु समाय रही।
सरस माधुरी मन भावन को लिख लोचन मगनाय रही।।

॥ राग टोड़ी॥

भूलो प्यारे पलना श्री रनजीता।

जुग जुग जीवो मुरली नंदन जग वंदन हिर मीता।।
वहो वयस दिन दिन प्रति दूनी प्रगट करो रस रीता।
दादी भूवा दें अशीश शुभ गावत मंगल गीता॥
पुचकारत सिर पर कर फेरत करत अधिक ही प्रीता।
सरस माधुरी ललन खवावत मिश्री अह नवनीता॥

॥ पलना राग त्रासावरी ॥ लला भूलो पलना सुकुमार। जीवो मैया कुंजो वदन निहार कुल मंडल रनजीत लला ॥ मुरलीधर मोद बढाय हैं हो, किह किह मृदु मुख बोल । हँसि गोदी में आय हैं हो आनंद है अनमोल। श्राति संदर रनजीत लला ॥ पुर वालक संग खेलि हैं हो, नाना खेल पुनीत। नदी किनारे मुनि मिलें हो करें अधिक प्रभु प्रीत-। चित चंदन रनजीत लला॥ पंच वरस की वयस में हो, सुमिरं श्री गोपाल। छापा तिलक लगाय कें हो, कर सों फेरे माल। जग बंदन रनजीत लला॥ इन्द्रप्रस्थ घर ननां के हो, जाय रहे सुख कंद । भक्ति करें श्रीकृष्ण की हो, प्रगटे परमानन्द । जन रंजन रनजीत लला॥ गंगा तट शुकतार पे हो, जाय मिलें शुकदेव। दीचा लें गुरुसों तहाँ हो, करें मानसी सेव । भव भंजन रनजीत लला॥ सुनि वृन्दाबन पहुँच के हो, मध्य श्री सेवा कुंज। दम्पति सों मिल रास रस हो, निरखेंगे रस पुंज। र्सिक राज रन्जीत लला॥ दिल्ली में आश्रम रचें हो, है अधारज आप।

श्री शुकसुनि शुभ संप्रदा हो, करें ताहि श्रस्थाप। जगत गुरु रनजीत लला॥

सर्व जक्त में भक्ती को हो, किर हैं वहु विस्तार।
पापी वहु पावन करें हो, उपदेशें नर नार।
जग तारन रनजीत लला॥

बादशाह को श्रादि ते हो, राजा रंक श्रमीर।
परें चरन में श्राय के हो, मेटें सब की पीर।
दुःख हरन रनजीत लला॥

काहू कों राजां करें हो, काहू वादहीशाह। मन इच्छा पूरन करें हो, जैसी जाके चाह। सुख करन रनजीत खला॥

किल्युग में सत्युग करें हो, भगवत धर्म प्रचार। सरस माधुरी शरन के। इन चरनन श्राधार। भक्त राज रनजीत लला॥

॥ दोहा॥

भादों शुक्का तीज तिथि, शुभदिन मंगलवार।

मुरलीधर घर प्रगट भये, चरनदास श्रवतार॥

कुंजो कूंख सुहावनी, प्रगटे दीन द्याल।

श्राचारज हो श्रवतरे, संतन के प्रतिपाल॥

शोभन श्रपने भक्त को, दीनो वर करतार।

किल्युग में सत्युग करूँ, रूप संत को धार॥

श्राये वर पूरन करन, जगपित कृपा निधान। प्रेम भक्ति वस श्याम धन, गावत वेद पुरान॥ डहरे में श्रानँद महा, घर घर मंगलचार। सरस माधुरी जन्म की, गात बधाई नार॥

॥ राग विहाग ॥

सुक्रत फल प्रगटो त्राज तुम्हारो।
श्री मुरलीधर तुमरे निज घर, कृष्ण कला त्रवतारो॥
पतित उधारन जन निस्तारन, यह निश्चय मन धारो॥
नाम जपै जो इनको जग में, सो हो दम्पति प्यारो॥
सरस माधुरी श्री रनजीता, जीवन प्रान त्रधारो॥

॥ शेर ॥

हम श्राये जनम लाल सुन श्राज भवेया। दुनियां में नहीं हमसा कोई श्रीर गवेया॥ गाते हैं वजाते हैं सुनाते हैं मधुर तान। सानी हमारी श्रीर नहीं जग में नवेया॥ दरसावें सभा बीच में हम भाव भली भांति। लो जान हमें खास हैं हम भांड़ों के भवेया॥

वधाई (नाटक की चाल)

देखो डहरे में छाई बहार, जगत ग्रुरु जनमे यहां ॥ भक्त शोभन को दिया श्यामने मुख से वरदान । प्रगट हुये हैं हिर कुंजो के करुणा के निधान ॥ मुरलीधर होके मगन दे रहे हैं वहु विधि दान। जो जाचक श्राये किया उनका श्रधिक ही सनमान। हुश्रा सुजस सकल संसार॥

प्रागदास ने उत्सव किया है अनुपम आज।

गुनी जन गा रहे हैं राग रहे वाजे वाज।

जुरे हैं संत भगत हो रहा अनूप समाज।

मगन हैं मन में सभी रंकों ने पाया ज्यों राज।

जय जय वोल रहे हैं नर नार॥

हुई हैं शेदा परी हूर हजारों इक बार ।

निहारा आनके जिस दम श्री रनजीत कुमार।
करे हैं सिजदा भुका सर को क़दम पर कर प्यार।
छकी छवी में सभी देख के दिलकश दीदार।
लला सब का जीवन आधार॥

भई है धूम हरी भक्नों की हर तर्फ अपार।

घरों में गाय रही नारी नवल मंगलचार।
रहे हैं भूल भमक पलना में मन मोहन हार।
सरापा नूर की मूरत हैं मनोहर सुकुमार।
इई सरस निरख बलिहार॥

॥ पद् ॥ . .

श्री रनजीता सरकार गुरु रनजीता ॥ भक्त शोभन त्रिय प्रान तुम्हारे, तिनके हित नर तन धारे। कियो डहरो प्राम पुनीता॥ भाम से राधेश्याम पठाये, जग में भक्ति प्रचारन श्राये। भरो है रूप श्रनूप श्रतीता॥

प्रेम भक्ति प्रभु पूरन कीनी, लगाई हरिसों लगन नवीनी। कियो है ख़ास कृष्ण निज मीता॥

ज्ञान को भान श्राप प्रगटायों, जक्त सोते को सहज जगायो। कियो उपदेश भागवत गीता॥

सहस्रों संवक संत बनायें, जुगल श्री राधा कृष्ण मिलाये। सिखाई सबको रस की रीता॥

शरन जो जीव आपके आयो, वोही हरिदास अनन्य कहायो। जन्म मरने से भये नचीता॥

सरसमाधुरी श्रचल विश्वासा, मिले वृंदावन कुंज बिलासा। यही निश्चय मन भई प्रतीता ॥

॥ बधाई भूमका ॥

वजत बधाइयां हो मुरलीदास के दरबार। प्रगट भये पुत्र सोहन हो सलौने श्याम नर तन धार॥ सुहावन मास भादों का सुदी तृतीया सुमंगलवार। चढ़ा जब पहर दिन पूरन लियो प्रभु ता समय श्रवतार॥

॥ भूमका ॥

नारि कुल की जुरि श्राई, सजे श्रृगार महाई। थाल कर कंचन लाई, फूल फल भरे मिठाई॥ भुगुलिया टोपी प्यारी, लगी-चहुँ और किनारी। कनक के भूषन भारी, जड़ाऊ रत श्रुपारी॥

🦥 ॥ श्रंतरा ॥

उमँग श्राई भवन भीतर वधाई गावती वर नार।
परस्पर नाचती हिलिभिल मुदित मुसकात करके प्यार॥
करे श्रानंद श्रलवेली नवेली नागरी सुकुमार।
अमाछम पायलों की धुन छई मंगल मई मनहार॥

॥ भूमका ॥

मोतियन चौक पुराये, साथिये द्वार धराये।
हरी हरी बंदनमाला, सदन में बांधी वाला॥
पताका तोरन साजे, बाजे शुभ मंगल बाजे।
नफ़ीरी और नकारा, भांभन भनक भनकारा ॥

॥ अंतरा ॥

नगर उहरे की श्रित शोभा भई भारी श्रिधिक ही जान। घरन श्रित सुंदरी सजनी सजाये सुभग निज श्रस्थान।। मनो सबके भवन भीतर दिया मंगल ने डरा श्रान। नवों निधि सिद्धि हु श्राठों करन श्राई सकल सनमान।।

॥ भूसका ॥

खता चहुँ दिशि को छाई, घटा सुन्दर घिर श्राई। चमक चपला सुखदाई, भरी श्रानंद लगाई॥ भूमि श्रति ही हरियारी, मोर नाचत सुदकारी। पपेया बोल सुहाई, कूक कोयल मन भाई॥

॥ अंतरा ॥

उसँग सरिता वहन लागी चरन गंगा है जाको नाम। भई मन में मुदित भारी करे जल केलि प्रभु श्रिभराम॥ सखाले संग रनजीता विमल जलमं करें श्रसनान। चरन को कर परस पावन लहुंगी लाभ पद निरवान॥

॥ भूमका॥

भागव कुल की शोभा, सकल मुनियन मन लोभा। च्यवन ऋषिवंश उजागर, दिपत ज्यां दिव्य दिवाकर॥ प्रागुदासा मगनाये, दान दीने मन भाये। मगन मुरलीधर मन में, समात न फूले तन में॥

॥ श्रंतरा ॥

गऊ विप्रन को वहु दीनी श्रलंकृत कर विविधि सनमान। दुशाले शाल जर जेवर जगामग जिनकी श्रित चमकान॥ श्रमीसत प्रेम सों भृसुर करो जिजमान हरि कल्यान। जुगन जुग पुत्र चिरजीवो सुखी राखे श्री भगवान॥

॥ भूमका ॥

. # 7

ग्वजाने खास खुलाये, श्रमित धन माल लुटाये।
पटंवर डुपटे दीने, पाग पेचा रंग भीने॥
लला पर मोती वारे, लुटाये भर भर थारे।
सभासद बैठे प्यारे, जयित जय धुनि उच्चारे॥

॥ अंतरा ॥

नचत हैं ढाढी और ढाढिन मटक गति लेत हैं किट मोर। वतावत भाव श्रंगन से सर्वोंके चित्त लेवें चोर॥ श्रजव अंदाज का गाना ग्रनीजन सों श्रिथिक सिरमीर। सुनावें भक्तशोभन जस मिलें जिन्हें श्याम राधे गौर॥

॥ भूमका॥

वसन भूषन मँगवाये, ढाढी ढाढन पहिराये। सजाये नख शिख भारी, नृपति सम शोभित भारी॥ चढ़न घोरे रथ दीने, श्रजाचक सब को कीने। मुदित मन दई श्रसीसा, जीयो सुत कोटि वरीसा॥

॥ श्रंतरा ॥

गुनी जन जनम सुन श्राये गवैया राय भांड श्रह भाट।
जुरे सब लोग मंडल के लगे श्रनगिन जिन्हों के ठाट।।
तराने तान मिल गावें वजावें बीन ढोलक ढोल।
नक़ल नूतन करें हिलमिल हँसावें करें विविधि किलोल।।
वनावें सांग नाना ढङ्ग हँसें पुलकें करें रंग रोल।
सुनावें सरगमें नच नच मानो प्यावें हैं श्रमृत घोल।।
चुरावें चित्त सब ही का करें केली कला श्रनमोल।।

॥ भूमका॥

दान मन माने पाये, द्रव्य ले सकल श्रघाये। कहें मुखवारंवारी, लला की जावें वारी॥ उसारें राई नौना, जिवो मुरलीधर छौना। दोव दुख पास न श्रावें, श्रमीसे यही सुनवें॥

॥ श्रंतरा ॥

कहें धन धन्य संत महंत 'सुनिये सब सभा के लोग।
सुनावें ज्योतिषी यह फल भला पाया है सुख संजोग॥
स्वयम् श्री कृष्ण प्रगटाये मिटावें जीव संस्ति रोग।
करेंगे भक्ति जो इनकी छुटैंगे उनके सब भव सोग॥

॥ भूसका ॥

इन्हों का ध्यान लगावे, वास बृन्दावन पावे। रहे नित दंपति पासा, निहारें रास विलासा॥ सखी तन सुंदर पाई, करें सेवा हुलसाई। कुंज में रहसी डोलें, श्रलिन मिल करें कलोलें॥

्रग श्रंतरा ॥

रखे जो इष्ट इनहीं का जपै जो नाम दहता धार।

मिलें मन भावते प्यारे हमारे श्री युगल सरकार ॥ सरस यह माधुरी दासी कहत कर जोर विनय उचार । मिलावो मुभको परिकर में दिखादो नित्य युगल विहार ॥

ा पद्

शादियां सुरंगी हम भांडदेव श्राये। श्रजी वाह वाह है।। नाचते श्रीर गावते हुलसावते सुहाये। श्रजी वाह वाह है।। लाये भांडों का गोल, नकल करते श्रनमोल।। श्रजी०॥ तान टप्पों का रंग, गावें भरके उमंग। श्रजी वाह वाह है॥ नचें कूदें किलकावें, नाना स्वांग कर दिखलावें ॥ श्रजी० ॥ कोई वोल बोले टट्टू, हों सुनके सबही लट्टू। अजी वाह०॥ कहैं भांड हम हिरके प्यारे, हमने सुकृत किये भारे। श्रजी०॥ हमारा जो करे सनसान, पावे पुन्यं गऊ दान । श्रजी०॥ देवे हमको जो दुशाला, जिसके पैदा होवे लाला। श्रजी०॥ हमें नोंत के जिसावे, सो यज्ञों का फल पावे। यजी०॥ करावे जो हमें जल पान, पावें गंगा फल स्नान ॥ श्रजी० ॥ देवे हमको मोहर क्षेट, बोही होवे जक्त संठ ॥ श्रजी० ॥ जिस लिया भांड़ नास, सानो किये चारों धास ॥ श्रजी० ॥ देवे भाड़ों को दाम, उसके होवें पूरत काम ॥ श्रजी०॥ करी भाड़ों से मित्रताई, उसने अष्ट सिद्धि पाई ॥ अजी० ॥ करी भाड़ों की बुराई, उसकी कंवरवती ग्राई ॥ ग्रजी ॥ करें भांड़ों को प्रसन्न, भिले उसको धन ग्रन्न ॥ ग्रजी० ॥ जो जन भांड़ों के ग्रन गावे,उसकी सभी वात वन जावे ॥ त्रजी ०॥ देवे भाड़ों को श्राराम, उसने तीरथ किये तमाम ॥ श्रजी० ॥ किया भांड़ों का सनमान,मानो किया त्रिवेगी नहान॥श्रजी०॥ जिमावे भांड़ोंको जिजमान,गया फलमिले सहजमें श्रान॥श्रजी० बोले जो कोई मुख भांड़, खावे नित्य खीर खांड़ ॥ श्रजी० ॥ जिसके भांड़ भवन में श्राये, उसने मन वांछित फल पाये॥ श्रजी० भांड़ त्राये जिसके द्वारे, उसने पुन्य कर लिये सारे ॥ त्रजी ।॥ जो भांड़ों से करे भलाई, कीरत उसकी जगमें छाई ॥श्रजी०॥ जिसको देवें भांड़ श्रसीस, वोही पूरा बिस्वा बीस ॥ श्रजी० ॥ जिसने कीनी भांड़ बधाई, मानो मंदर धजा चढ़ाई॥ श्रजी०॥

सुनिये प्रारादास जिजमान,तुमको खुश रक्खें भगवान।त्रजी ा। प्यारे सुरलीधर दास, तुस्हारे प्रगटे कृष्ण खासं॥ श्रजी०॥ श्राये नरतन को धार, करें जीवों का उद्घार ॥ श्रजी०॥ माता कुंजो तुम भन्न, तेरे हरि हुये उत्पन्न॥ श्रजी०॥ भादों शुक्ल तीज सार, दिवस दिव्य मंगलवार ॥ श्रजी० ॥ लिया त्राचारज त्रवतार,हुत्रा जग में जय जय कार ॥त्रजी०॥ देखो नभ छुये विमान, देखें देव महोत्सव श्रान ॥ श्रजी० ॥ करें श्रप्सरा गुन गान, गावें मधुर मधुर तान ॥ श्रजी० ॥ वरसे कल्प वृद्ध फूल, विधना भये ' श्रनुकूल ॥ श्रजी० ॥ दादी यशोदा सुन कान, कीजे हमारा सनमान ॥ श्रजी०॥ हुआ पोता श्री भगवान, लेवें मन माना हम दान ॥ अजी०॥ श्री ठ्यास पुत्र शुकदेव, इनके होवे श्री गुरुदेव ॥ अजी०॥ शुक सम्प्रदाय प्रगटावें, अक्री जक्र में फैलावें ॥ अजी०॥ बहु जीव ठिकाना पावें, चले पर्स धाम को जावें॥ अजी०॥ नर्क चौरासी छुट जावें, जो जन इनके श्रन आवें ॥ अजी०॥ कलियुग पावन अवतार, करो बंदन बारंबार ॥ अजी० ॥ नाम रनजीता लाल, जपे जीते माया जाल ॥ अजी० ॥ रटे श्याम चरनदास, पहुँचे दंपति के पास॥ अजी०॥ महाप्रभु हैं आचारजं, सारें जीवों के सब कारज ॥ अजी० ॥ कहै नाम भक्रराज, होवे सबका सरताज ॥ अजी०॥ बोले जय जय श्री महाराज, सर्व दुःख जावें भाज ॥ अजी० ॥ कुंज केली करें दुन, करें रिसक प्रेम पान ॥ अजी०॥

जगमें प्रगटावें सत्संग, चढे प्रेमा मंक्री रंग ॥ अजी०॥ अर्थ धर्म मोच काम, सेवें इनको अतों जाम ॥ अजी०॥ जोगी सिद्ध समाधी ध्यानी, इनको ध्यावें मुनिजन ज्ञानी ॥ अजी० ॥ वें सेवें राजा वादशाह, करें सर्व इनकी चाह ॥ अजी०॥ वें श्रीलिया दरवेश, इनसे पावें फेज हमेश ॥ अजी०॥ शरन आये जीव तारें, सर्व वंश को उद्धारें ॥ अजी०॥ सर्व सभा के समाजी, हुये सुन के मन में राजी ॥ अजी०॥ भग्रुवंशी हरवाये भाड़ नख शिख पहिराये॥ अजी०॥ सरस माधुरी ने गाई, यही भाड़ों की बधाई॥ अजी०॥

॥ नाटक की चाल में।

नगर उहरे में छाय रही प्यारी बधाई चरगादास की दास की दास की ॥ हां॥

शुक्का तीज सुहावन अति ही उत्तम भादों मास की मास की मास की मास की ॥

मुरलीधर धर प्रगट भई है मूरत प्रेम प्रकाश की प्रकाश की प्रकाश की प्रकाश की ॥ हां ॥

श्री हरि श्राये धाम से पूरन शोभन श्रास की श्रास की श्रास की श्रास की ॥ हां॥

संत रूप आचारज धरके रचा की जन खास की खास की खास की खास की ॥ हां॥ कुंजो माता कूख सिरानी लाखे छिव आनँदरास की रास की ॥ हां॥

जो जन शरण चरण की पाई जम की त्रासा नास की नास की नास की नास की ॥ हां ॥ सरस माधुरी शोभा निस दिन निरखें रास विलास की विलास की विलास की विलास की ॥ हां ॥

॥ राग भैरवी ॥

श्राज श्याम मुरलीधर घर में गौर रूप धर श्राये हैं।
निरखन चलो सकल मिल श्राली मन वांछित फल पाये हैं।
रिव शिश कोटि बदन की शोभा सुंदर सुखद सुहाये हैं।
निरख छत्री रनजीत कुँतर की मदन रती शरमाये हैं।
कुंजो माता कूँख सिरानी श्री हिर पुत्र जनाये हैं।
पतित उबारन भन्न भय टारन चरनदास कहलाये हैं।
बहे भाग दादा प्रयाग के सब हू ने बतलाये हैं।
शोभन जी के नर के कारन ख्यं कृष्णा प्रगटाये हैं।
गुनिजन श्रावें गावें बजावें रिसक श्रांति ही हरषाये हैं।
भादों मास सुदी तृतीया को दान दरस का पाये हैं।
सरस माधुरी उमँग हुंलस कर फूल फूल बरसाये हैं।

॥ पद्र ॥

उहरे में श्राज देखो शोभा श्रपार सजनी। रन्जीत की श्रदा पर हरगुल निसार सजनी॥ पीले वसन से सज कर, छतरी में बैठ श्राकर।

हहरे निकट चमन में निरखें वहार सजनी॥

भक्तों का जम घटा है, छिटकी लिलत लता है।

हर तरफ धुन सुनायें गायें मलार सजनी॥

भक्तों की देख भक्ती शरमा रही है मुक्ती।

गउलोक ब्रजपती का देखें विहार सजनी॥

कैसा सरस समा है, श्रानँद रङ्ग जमा है।

कर दीजे इस पै तन मन सब श्रपना वार सजनी॥

॥ पद् ॥

प्रगटे हैं श्री रनजीत लला, परिपूरण श्री कृष्ण कला।

रूप संत धरि श्राय लला, रिसकन के मन भाये लला।

राधाकृष्ण पठाये लला, पर्मधाम सों श्राये लला।

महा प्रभु कहलाये लला, श्राचारज पद पाये लला।

शोभन जो वर दियो लला, सो परि पूरन कियो लला।

शोभन जो वर दियो लला, सो परि पूरन कियो लला।

जनमत भयो उजास लला, मानों चंद्र प्रकास लला।

जनमत भयो उजास लला, मानों चंद्र प्रकास लला।

वाजे श्रमहद नाद लला, सुनत भयो श्रहलाद लला।।

प्रागदास दिये दान लला, कियो सकल सनमान लला।

गऊ द्विजन को दई लला, स्विहेन हितकर लई लला।।

ढाढी ढाढन श्राये लला, हास हास माये लला।

वंश प्रशंसा सुनाये लला, सुन यश सब हरषाये लला।।

भाँड़ भवन चल आये लला, सरस कवित्त सुनाये लला। जन्म कर्म युन गाये लला, प्रेम माहि पुलकाये लला ॥ भक्त मंडली आई लला, जय जय जय धानि छाई लला। फूलन बृष्टि कराई लला, केसर घास छिरकाई लला ॥ वाँटत पान मिठाई लला, आनंद कियो महाई लला। भवन अजिर के बीच लला, द्धि कादो भई कीच लला॥ डहरे भई वधाई लला, सजि तन नारी आई लला। भुगली टोपी लाई लला, भूषन रत जड़ाई लला॥ गावत मृदु मुसकाई लला, नृतत मन मगनाई लजा। मोतिन चौक पुराई जला, हिये माहीं हुजसाई जला ॥ धरे सातिये द्वार लला, बाँधी बंदनवार लला। ध्वजा पताक अपार लला, सजे सदन मनुहार लला ॥ भृ युवंशी जुरि आये लला, बैठ सभा हरषाये लला । परमानंद समाये लला, उत्सव देख छकाये लला ॥ भांड़ भवन में आये लला, नकल करी बहु गाये लला । कौतुहल दिखलाये लला, सज्जन सकल हँसाये लला ॥ छवि को अंत न पार लला, जहां प्रगटे सकुमार लला। रिधि सिद्धि खड़ी द्वार लला, करत सकल सतकार लला।। बांटत धन निहं घटत लला, अधिक सौ गुनो वहत लला। रंग चौ गुनो चढ़त लला, विप्र वेद् धानि पढ़त लला ॥ भक्ति प्रचारन आये लला, तारन तरन कहाये लला। द्रश्न करन उमाहे लला, फुंड नारि नर धाये लला॥

जक्त गुरू कहलावें लला, अनिगन जीव चितावें लला।
जो जन इन शरन आवें लला, श्यामा श्याम मिलावें लला।
जो इन के गुन गावें लला, जग वंधन छुट जावें लला।
जाको मंत्र सुनावें लला, सो जमपुर निहें जावें लला।
पहुँचें जा रंग महल लला, मिले युगल वर टहल लला।
रास विलास हुलास लला, रहे दंपित के पास लला।
जहां बंदावन धाम लला, विहरत श्यामा श्याम लला।
तहां पाव विश्राम लला; पूरन हों मन काम लला।।
यह शुभ जन्म वधाई लला, सरस माधुरी गाई लला।
लख लालन मगनाई लला, प्रेमा भिक्त सुपाई लला।।

॥ राग भैरवी ॥

हुआ तवल्लुद कुंजो तुम्हारे मुरशदे पीरान पीर।
दरवेशों का शाह दुनी में सिजदा करें अमीर॥
वली श्रोलिया खास येही हैं रोशन इनका जमीर।
है मक्तवूले खुदा खलकत कहै खिदमत करें फ़क्रीर॥
करें क्रदम वोसी हर रोजा शाहंशाह वजीर।
सरस माधुरी खास खुदा के समभो इन्हें मशीर॥

॥ सुवारक वादी गजल ॥

जनम रनजीत का पाना मुवारक हो मुवारक हो। हमारा जलसे में श्राना मुवारक हो मुवारक हो॥ सुनाना तान का सबको, बताना भाव भक्ती से। वधाई गान का गाना, सुवारक हो सुबारक हो॥ बजाके साज सारंगी, लगाके ठेका ढोलक का।

त्रहा हा वोल मुसकाना, मुवारक हो मुवारक हो॥ निरत कर नक्क दरसाना, हँसाना हरि के भक्नों को॥

हुलस कर स्वांग भरलाना, युवारक हो मुवारक हो॥ कराना जन्म उत्सव का, बँधाना द्वार बन्दन माल।

खुशी सुनकर महोत्सव की, शगुक्ता होना हर दिल का

सजाना त्राज महफ़िल का, सुवारक हो मुवारक हो ॥ जियारत लाल की करके, तसदृदुक होके हरषाना ।

खुशी से फूल वरसाना, मुबारक हो मुबारक हो ॥ सरस चर्गों में कर सिजदा, श्रदव और इन्ज से भुक के। नमो जय कह के वलजाना, सुबारक हो मुबारक हो॥

॥ गजल ॥

लालन रनजीता का पलना क्या सजा निरखो श्रली।
जित जगमग ज्योति जिसकी है श्रजब शोभा भली॥
भूलें हैं लालन सलोने पौढ़ें परमानंद सों।
मंद मुसकावन सुहावन लिख भई मन बेकली॥
पीत भँगुली तन में पहिनें श्रीर टोपी शीश पे।
लग रहे गोटा किरन जिनकी है खूब भला भली॥

कोंधनी कटि श्ररु करा कर कनक के रतनों जड़े। चित चुराये लेत हैं गित मित मेरी सारी छली॥ मंद भोटा दे भुलावें नारियां सुकुमारियां।

जावें हैं विलिहारियां पुरनारियां मृगुकुल लली॥ गावें कर ढोलक वजावें संग मंजीरा ताल दे।

नांचें गति ले ले नई आनंद मन मानी रली॥ कर रहीं न्योछ।वरें नारी नवल वत्सल भरी।

दे रहीं हँस जाचकों को खिल रही दिल की कली ॥ जय जय कह कर जोर दर्शन कर रहीं रस में पगी। सरस रस की माधुरी वेली मनोरथ की फली॥

॥ रसिया ॥

पलना भूल रह्यों है श्री रंजीत कुमार ॥ रतन जटित रंग भीनो सुंदर,

अरी कि ताकी शोभा को नहिं पार ॥ रेशम गादी लघु ताकिया,

श्ररी कि तामें बिछे परम मनहार ॥ पोढि रहे तामें मन भावन,

अरी कि कीड़ा करत अनेक अपार ॥ शिर घुंघरारे बार सलोने,

अरी कि तिनकी छाबे है अधिक अपार ॥ भाज ड़िठोना अतिही लोना,

श्ररी कि केसर सुंदर खीर सुहार ॥

मंद हसन मन फसन सबन की,

अरी कि सोहन कमल नयन रुचिकार ॥ गोल कपोल बुलाक नाक मैं,

अरी कि लिख २ मोहत हैं नर नार॥ पहुँची करा कनक कर राजत,

अरी कि पग पेंजनियां की मुनकार ॥ कटि कोंधनी बजे रुन मुनियां,

अरी कि रिसकन की है प्राग् अधार ॥ भग्रुकी टोपी पीत मनोहर,

अरी कि तन में देत है अजब बहार ॥ लगे किनारी गोटा तामें,

अरी कि निरखत जजत रती अरु मार ॥ छगन मगन की छटा छबीली,

अरी कि इकटक रहे नयन निहार ॥ सरस माधुरी रूप लुभानी,

श्ररी कि बोलत मुख जय २ बालिहार ॥

॥ ध्यान मंगलस्तव छंद ॥

जय जय श्री महाराज श्याम चरनदास जी।

मोकों सब बिधि नाथ तुम्हारी श्रास जी॥

प्रेम मंजरी नाम महल श्री वन जहां।

करत युगल वर टहल रहत सुख संग तहां॥

रहत सुख संग तहां नित प्रति प्रेम पुलकिन श्रंग में।
दंपित विहार श्रहार श्रनुदिन मगनमांती रंग में॥
खखत प्रति छिन रंक धन ज्यों चकोरी विश्वचंद की।
भेम प्यासी स्वांति स्वादित मधुर मुसकान मंद की॥

॥ छंद ॥

जय जय श्री चरगादासि चरन राति दीजिये।
ानित नवसरसे नेह कृपावाले कीजिये॥
कुंज भाव निज रूप न भूलूँ छिन घरी।
सेऊँ श्यामा श्याम रहूँ आनन्द भरी॥

रहीं आनन्द भरी नयनन केलि निरखों महल की। करों अंग श्रृंगार निज कर रहे हुलसाने टहल की॥ जीवन अहार विहार रसमय दीजिये रासिकन मनी। सरस की चित चाह पूरन कीजिये सहचरि धनी॥

॥ छंद् ॥

जय जय श्री चरनदासि शरण युग पद गही।

मेरी तुम लग दौर जान निश्चय सही॥

श्राय परी हों द्वार दया उर धारिये।

परिकर मांहि मिलाय विरह दुख टारिये॥ विरह दुख को टार दीजे वास अलिगन खास में। करों सेवा गान नृत्तन विविधि विधि रस रास में॥ रीभ श्री रासेश्वरी मम शीश पर निज कर धरें। सरस रस दे दान श्रीतम पकर भुज हित कर बरें॥

॥ छंद् ॥

जय जय श्री चरनदासि नाम रटना रहें। मिले निकुंज निवास दंद संकट कटें॥ छके रूप रस रसिक लाडिली लाल के।

बुलहिन दूल्ह दोऊ अलिन प्रातिपाल के ॥

अलिन के प्रतिपाल प्यारे नेंन के तारे सखी।

कृपा तिन की पाय प्रीतम प्रिया निज नैनन लखी ॥ सरस रसकी माधुरी ने श्रा चरनन की लई । अप्रय निज रावरो लाखि रहत नित आनँद मई ॥

॥ सूहा व विलावल ॥

जय जय श्री श्याम चरनदास च्यवन कुल मंडना।
करन भिक्त विस्तार कलुष काले खंडना॥
कृष्ण कला श्रवतार संत वपु धारिया।
रिसकाचारज विदित जगत जीय तारिया॥

॥ छंद् ॥

तारिया जग जीव अनिगन प्रेम भक्ति प्रचारि के।
दई सेवा युगल प्रभु की कृपा दृष्टि निहारि के॥
अति अनन्य नरेश जन की दूर करी विडम्बना।
जय जय श्री श्याम चरनदास च्यवन कुल मंडना॥

जय जय श्री चरनदास सुजन प्रातिपाल की।
ध्यान परायन जुगल विहारी लाल की॥
अष्टयाम रंग महल महा रस में पंगे।
सेवत श्यामा श्याम प्रेम रंग में रंगे॥

॥ छंद् ॥

रँगे रंग में रहत नित ही त्रिया नवल किशोर के।

छके छवि में परम प्रमुदित रहत श्यामल गौर के॥ रटत नामावाले नित प्रति रासिक राधा वाल की॥

जय जय श्री चरनदास सुजन प्रतिपाल की ॥ जय जय श्री चरनदास खास श्रील महल की ।

रहत चटपटी चित्त जुगल पद टहल की ॥ अंग श्रंग श्रंगार श्रनूपम साजई।

निरख नैंन होय चैंन श्रधिक छ्वि छाजई॥

॥ छन्द ॥

छाजई छवि अधिक दंपति देख हग दर्शन परो।

रहें इक टक हेरि हँस हिय पलक सों पलकन लगे॥ कुंज कीड़ा श्रगम श्रति ही निज जनन को सहल की।

जय जय श्री चरनदास खास श्रील महल की ॥ जय जय श्री चरनदास चरन की विल गई।

तुमको श्री शुकदेव खास संपति दई॥ राखत नयनन मांहि न बिसरत छिन घरी। छटा विलोकत जुगल रंगीली रस भरी॥

॥ छन्द् ॥

भरी रस में रहत श्रनुदिन प्रेम पुलकिन अंग में।

पगी पूरन भाव भीनी सखी परिकर संग में॥
लिये ललन लड़ाय हितंकर बचन बोलत रस मई।

जय जय श्री चरनदास चरन की बिल गई॥
जय जय श्री चरनदास श्रास तुम चरन की।

सब विधि तुमको लाज श्राश्रित शरन की॥
महा कठिन किलकाल जाल में श्रापरी।
लेहु बेगि सुधि नाथ विनय तुम प्रति करी॥

॥ छन्द् ॥

विनय तुम प्रति करी करुणा सिंघु सुधि श्रा लीजिये।
काट कर्म कलेश मेरे निज श्रनुग्रह कीजिये॥
है तिहारी बान प्रभु जी पतित पावन करन की।
जय जय श्री चरनदास श्रास तुम चरन की॥
जय जय श्री चरनदास कृपा यह कीजिये।
युगवर प्रम श्रांखंड निरंतर दीजिये॥
सुरित रहे निज रूप नवल किल कुंज की।
बसे सदा छिव हगन जुगल रस पुंज की॥

॥ छन्द् ॥

छवि बसे हग जुगल वर की सुरुचि संतत मन रहे। सरस माधुरी सेव सुख निधि प्रान सम दढ़ कर गहै॥ है यहै श्रभिलाष मेरी श्रवण दे सुन लीजिये। जय जय श्री चरनदास कृपा यह कीजिये॥

॥ छन्द् ॥

जयित श्याम चरनदास तिहारे नाम की ।

कला श्रवतरे श्रवनि खयं श्री श्याम की ॥

शोभन श्रपने भक्त जाहि जो वर दियो ।

प्रगटे तिहि कुल श्राय वचन पूरन कियो ॥

कियो पूरन वचन श्रपनो मुरिल सुत हो श्रवतरे ।

मात कुंजो भेम पुंजो गोद ले वहु हित करे ॥

जाऊँ बिल जहां जन्म लीनो सुथल दहरे श्राम की ।

जयित श्याम चरनदास तिहारे नाम की ॥

जय जय श्री श्याम चरनदास जगत पर हित कियो ।

श्राचारन वर्ष श्रार सनस्म शनि ही विशो ॥

जय जय श्री श्याम चरनदास जगत पर हित कियो। श्राचारज वपु धार सुजस श्रति ही लियो॥ जान कठिन कलिकाल चित्त करुणा भई।

भादों शुक्का तीज त्रवतरे मुदमई॥

मास भादों शुक्क तृतीया वार मंगल सुखमई।

प्रात पहिले जाम प्रगटे महा द्युति तिहि छिन् छई ॥ लगे श्रनहद बजन वाजे श्रवन कर हुलसो हियो।

जयं जय श्री चरनदास जगत पर हित कियो॥

जय जयित श्री श्याम चरनदास सरूप लिख बिल गई। पलना भुलावत मात लखत छवि रस मई॥

चकई भोरा फेर खिलावत ख्याल को। कवहूं ले निज गोद लड़ावत लाल को ॥ लड़ावत है लाल को कर केलि कल दुलरावती। वद्न विधु को चूम के कर नेह नैन सिरावती॥ रहो निंत सानंद सुत मम मात विनवत है दई। जय जय श्री चरनदास चरन की विल गई ॥ जय जय श्री चरनदास जनस दिन जान के। श्राये द्विज गन बृन्द सुश्रवसर मान के॥ वेद् ध्वनि उच्चार श्रमित श्रासिष दुई। पाय विश्र गोदान भये श्रानंद मई ॥ भये श्रानंद मई भूसुर तवहि ढाढी श्राइया। संग ढाढन नृत्त करके सभा सकल रिभाइया ॥ विहँसि वंशावित सुनाई सुनी सब सुख मान के ।

जय जय श्री चरनदास जन्म दिन जान के ॥

जय जय श्री चरनदास भक्त चिंतामनी। जग मांही विख्यात भई महिमा घनी॥ गुनि जन जाचक श्रमित द्वार पर श्राइया। पूरी सब मन श्रास सुजस जग छाइया॥

सुजस जग छायो घनो घन सम सुनौवत बाजई। नारि मिल गावत बधाई सुन वधू सुर लाजई॥ दान लेके चले जाचक अये सव ले धन धनी।

जय जय श्री चरनदास भक्त चिंतामनी ॥

जय जय श्री चरनदास दरश श्रपने दिये।

सुफल मनोरथ सकल नाथ तुमनें किये॥ तुमरी कृपा कटाचा सिले परधाम हैं।

राजत जहां संदेव राधिका एयाम हैं॥

राधिका वर श्याम सुन्दर मिलें सन के भावने।

सेव चरन सरोज दें निज कुंज मांहि वसावने ॥ श्राश्रित तुम जान दंपति श्रापने निज कर लिये।

जय जय श्री चरनदास दरश श्रपने दिये॥

जय जय श्री महाराज श्याम चरनदास हो।

श्रतुलित सुजस प्रताप खयं सुप्रकाश हो ॥ पतित पावन श्रधम उधारन नाथ हो।

निज जन अपने जान धरत सिर हाथ हो ॥ धरत सिर निज हाथ श्रपनो विरह दुख वेगहि हरो।

देहु चरन निवास श्रपनी खास परिकर में वरो ॥ सरस माधुरी की कृपा निधि करन पूरन श्रास हो। जय जय श्री महाराज श्याम चरन दास हो ॥

॥ इंद्र॥

प्रभो पतित पावन दुख नशावन जयति श्याम चरनदास हो। रसिक आचारज विदित पूरन कला सुख रास हो॥ कुंजो के नंदन करों बंदन मुरित सुत मंगल करन। प्रेम भक्नी के प्रदाता इंद् संकट के हरन॥

जान कर किल काल मृगु कुल प्रगट है दर्शन दियो।
च्यवन वंश प्रशंस कर संसार को पावन कियो॥
योग ज्ञान विराग साधन। सिद्ध कर समरथ धनी।
विमुख हरि सम्भुख किये भव विपति जीवन की हनी॥
रूप नाना धार देश विदेश भिक्त प्रचारिया।
नाम दंपति दान कर जिय अमित भव सों तारिया॥
धाम वृन्दावन युगल वर मिले सेवा कुंज में।
लखी रास विलास लीला मिल सखिन के पुंज में॥
इन्द्रप्रस्थ निवास कर वहु शिष्य सेवक निज किये।
राव रंक नरेश जिनको विविधि विधि परचय दिये॥
प्रात संध्या प्रेम कर स्तोत्र जो गायन करें।
कहैं सर्स माधुरी भक्त जन संसार सागर को तरें॥

॥ राग कालंगड़ा ॥

श्याम चरनदास प्रभु प्यारे हमारे तुम चरनन को ध्याना ॥ श्रास और विश्वास आप को यह निश्चय प्रण ठाना । तुम ही सांचे सजन सनेही वारों तुम पर प्राना सुनो मो बिनती द्या निधाना तुम्हें सरबस धन मैने माना ॥ ज्यों गज टेर सुनत ही धाये आये श्री भगवाना । त्यों ही आय लीजिये मो सुधि मूल बिसर मत जाना वेग ही आना हो प्यारे विमुख जन जग के नाहिं हँसाना ॥ मेरी सुधि तुम आप राखियो हों जग जाल फँसाना । अवगुगा पर मत जाना स्वामी अपनो विरद् निभाना मुभे नाहीं बिसराना हो वेग ही आकर के अपनाना ॥ त्रिविधि ताप संताप तपत हूँ विकल भये मेरे प्राना। तुम बिन और नहीं कोइ रक्तक सुनो विनय कर काना ढील अब नाहि लगाना हो हमारी विपता आय मिटाना॥ अभय हस्त सस्तक सम धर के धीरज मोहि वंधाना। सरनागत पालक प्रग् अपनो ताहि आय प्रगटाना द्रस दिखाना हो प्यारे अपनी छवि के माँहि छकाना ॥ तिलक माल पीतांबर वस्तर पहरो तुमरो बाना। तुमरे चरन कमल को चेरो जानत सकल जहाना भेष की टेक रखाना हो संरा रासिकन को नित्त कराना ॥ नहि शुभ करम किये कुछ साधन नहिं जप जोग विधाना । नहीं भाक्ने अरु भाव हृद्य में कपटी कुटिल महाना पापी हूँ मुक्ते पार लगाना हो प्यारे अध विच मत छिटकाना॥ पतितन पावन विरद् रावरो संतन प्रगट बखाना । यही भरोसो हढ़ है मेरे और नहीं उर श्राना भूल मत जाना हो प्यारे नहीं फिर दुनिया देगी ताना ॥ काम कोध श्ररु लोभ मोह मद इन से पर रह्यों पाना । जन्म जन्म दुख देते श्राये इन में बल श्रधिकाना मुभे छुड़ाना हो प्यारे अब के मेरी श्रम रखाना ॥ घर लियो माया ममताने तासों तुम्हें न जाना। ज्यों जयकरन कियो पारायन परम धाम दिखलाना

लाड़ली लाल लखाना हो प्यारे पावन परम बनाना ॥ दे निज भक्त जक्त तें तारो प्रेम करावो पाना। दंपति की छवि मांहि छकावो देहु दरस को दाना लगन लगाना हो प्यारे प्रिया प्रीतम की कुंज बसाना॥ जुगल कमल पद सेवा देके परिकर में पहुँचाना। भाव खरूप प्राप्त कर मोकों श्रमर लोक श्रम्थाना । रास लीला दरसाना हो नृत्य ग्रन गाना मुके सिखाना ॥ जव से सुरत सँभारी जग में तुम ही को पहिचाना। हा हा नाथ शरण में तेरी अब देरी न लगाना मिटावो श्रावन जाना हो प्यारे निज छवि में श्रटकाना ॥ तुम को तज कर और जक्त ग्रह भूल न मेंने माना। करो सनाथ चनाथ जान के अपने निकट रखाना अंत कहुँ मत भटकाना हो नहीं कहिं मोको ठौर ठिकाना ॥ श्री वलदेव दास गुरु मेरे तिन की करके काना। सरस माधुरी श्री रनजीता श्रव के जन्म जिताना पतित पांवन तुम्हे जाना हो प्यारे तुसरे हि हाथ विकाना॥

॥ राग बिलावल ॥

जय जय नमो श्याम चरनदासा । भागित वंश प्रशंसत कीनों किल में सत्युग कियो प्रकाशा ॥ जो जो शरण श्राप की श्राये जग दुख दूर भये श्रनयासा । पाये प्रीतम कुंज बिहारी लह्यो श्रचल वृंदावन वासा ॥ सहचरि वपु धर सेये दंपित सुख संपित हिय उमँग हुलासा। श्रवलोकत नित युगल माधुरी निरखत नेन सदा रस रासा॥ श्रवल प्रेम भक्ती प्रभु दीजे कीजे मेरी पूरन श्रासा। सरस माधुरी कहत जोर कर रखिये चरण कमल के पासा॥

॥ पद् ॥

करुणा निधान सुन कान श्याम चरनदास श्ररज मेरी। मैं श्रति श्रयान श्रय खान श्रान कर परी शरन तेरी॥ श्रधम उधारन वान तुम्हारी, दीन बन्धु जीवन हितकांरी। में हूँ पतित पतित पावन तुम क्यों कीनीं देशी॥ श्रनगिन पाप किये मन माने, सो तुमसों नाहीं कड्ड छाने। वाने की कर लाज लखो मोहि नेंक नजर हेरी॥ श्रपनो कहो कृपा कर मुख सों, वेग छुढ़ाय देव जग दु:ख सों। सेवा करूँ रहूँ सुख सों काटो ममता वेरी॥ विषय वासना चित तें टारो, कीजे मोहि प्रेम मतवारो। दीजे टहल महल मोकूँ लिख ख़ास चरन चेरी॥ काटो करम भरम उरभेरे, दूर करो सब बन्धन मेरे। रहों लग्न में मगन रखो मोहि रिसकन के नेरी॥ नाम जपूँ निशदिन मैं हित सों,ध्यान धरूँ दंपति निज चित सों। लाख यही श्रभिलाष होय श्रारत बिनती टेरी ॥ सरस माधुरी करत निहोरे, शीश नवाय जुगल कर जोरे। देहु अमरपुर वास यही मन लग रही श्रवसेरी ॥

॥ कन्हेया मुरली वारो री की चाल में ॥
ललन रनजीता प्यारो री श्री मुरलीधर वारो ॥
गोरवरन मन हरन दुलारो, कुंजो माता प्रान व्याधारो ।
प्रागदास जीवन धन मो नयनन को तारो री ॥
व्याचारज है श्री हरि त्राये, रस निकुंज रिसकन हित लाये ।
भक्ति प्रचारें जक्त करें जीवन निस्तारो री ॥
श्री श्रुक संप्रदाय प्रगटावें, श्री भागोत तत्व द्रशावें ।
प्रामां श्याम मिलावें यही निश्चय उरधारो री ॥
नाम रूप लीला जु लखावें, धाम परत्व प्रकाश जनावें ।
परम धाम पहुँचावें जिन्हों पे तन मन वारो री ॥
शरनागित की रन्ना करिंहें, श्रमय हस्त निज सस्तक धिर हैं।
सरस माधुरी सो जक्त ग्रह इप्ट हमारो री ॥

॥ विनय पद् ॥

तुम सुनों चरन के दास प्यारे, मुरलीधर के वाले। दिया जो शोभन को वरदान, अपना प्रेमी भक्त पिछान। प्रगटे संतरूप भगवान, वचन अपने आकर प्रतपाले॥ लीनो आचारज अवतार, माता कुंजो गर्भ मँकार। लिये हैं सँग सखा सुकुमार, नदी के तट पर खेलन चाले॥ मिले जहां श्री शुक्सुनि रंग भीना, तुमको गोदी मंले लीना। सिर पर कर धर के हित कीना, जान कर सुंदर भोले भाले॥ तुम्हारे श्री मुरलीधर तात, जिनका सुजस वहुत विख्यात। गये निज धाम न छोड़ा गात, जगत से जिनके ढंग निराले॥ गये दिल्ली से जब शुकतार, दिये दर्शन शुक्रमुनि उद्धार। किया उपदेश मंत्रसरकार, शिष्य कर सबही भांति सँभाले ॥ जुगल को जो बृन्दावन थाम, तहां है सेवा कुंज सरनाम । मिले जहां सुन्दर रयामां रयाम,दिखाये रास रंग ऋति आले ॥ संप्रदा शुक्रमुनि की प्रगटाई, विश्व में हरि भक्की फैलाई। दिये जी श्रमित धाम पहुंचाई, नरक श्रौर दुख चौरासी टाले॥ वनाये श्रनगिन संत महंत, समाधी ज्ञानी गुनी श्रनंत। अधिक सब अब्सुत शोभावंत, तिलक श्री पीले वाने वाले॥ करो अब करुणा करुणा रास, दीजे अमरलोक में वास। निकट श्री जुगल विहारी पास, चरन के शरगों मुभे बसाले॥ श्ररज यह सरस माधुरी मेरी, सुनिये श्री महाराज सवेरी। जानकर निज चरनन की चेरी, खास परिकर में मुभे मिलाले॥

॥ पद् ॥

चरनदास स्वामी पद पंकज निज उर धारे री।
श्री मुरलीसुत कुंजो नंदन परम प्यारे री॥
शोभन वंश प्रशंस प्रभाकर जग उजियारे री।
प्रागदास के जीवन धन मृगुकुल उद्धारे री॥
जिल्ला कला कलियुग में प्रगट नर वपु धारे री।

श्रेम भक्ति विस्तार जीत्र किये भव निधि पारे री॥

भक्तराज महाराज सकल भय संकट टारे री। सरस माधुरी तुम बल सोवत पांव पसारे री।

॥ विहाग ॥

भज मन श्याम चरणहिदास।

कला कृष्ण कृपाल स्वामी करत भव भय नास ॥ शरण ले नित चरण की जो धार दृढ़ विश्वास । पराभक्ती कर परायण देंहि श्री वन बास ॥ रंग महत्त बसाय के दें टहल दम्पति खास । रहें निशि दिन प्रेम प्रमुदित प्रिया प्रीतम पास ॥ नित्य निरखें कुंज लीला लिलत रास विज्ञास । सरस रस की माधुरी पूरन करें श्रमिलास ॥

॥ विहाग ॥

महा प्रभु श्याम चरन के दास ।

रंग महल रस लीला राचे जिनके जुगल उपास ॥
दंपति को दृढ़ व्रत कर सेवें हितकर उमँग हुलास ।
छिन छिन छवि में छके रहत हैं निरखें विविधि विलास ॥
रहें निरंतर निकट हुज्री प्यारी प्रीतम पास ।
कुंजन केलि करें निशि वासर श्री वृन्दाबन वास ॥
श्राश्रितजन निज जान प्रान पति देत श्रचल विश्वास ।
सरस माधुरी श्याम राधिका द्रशावें श्रनयास ॥

॥ पद् ॥

श्री महाराज रसिक चूड़ामािग रंग महल तें आये हैं। प्रेम भक्ति विस्तारन कारन द्पति आप पठाये हैं॥ जन्म लियो युग्रवंश हंस कुल मुरली सुत कहलाये हैं। कुंजो कूँख उदित प्राची दिशि प्रेम चंद्र प्रगटाये हैं॥ प्रागदास दादा की जीवन लख लोचन लखचाये हैं। शोभन वर पूरन आ कीनो सखियन मंगल गाये हैं॥ घर घर आनंद भई बधाई संत रसिक हरषाय हैं। विप्रन को गौ दान याचकन सन वांछित फल पाये हैं॥ पांच वर्ष की वयस भई तब श्री सुखदेव मिलाये हैं। कर मन सोद गोद वैठाये सिर कर घर अपनाये हैं॥ नाम श्याम चरन दास विदित जग सब ही के मन भाये हैं। सेवक संत महंत उपासक जीव अनेक बनाये हैं॥ तिलक भाल तुलसी गलमाला पीत वसन छवि छाये हैं। सरस माधुरी जुगल कमल पद अविचल हिये वसाये हैं॥

॥ पद् ॥

श्री चरनदास प्यारेजी सरन में परी तुम्हारे जी। श्री मुरली घर के हो नंदन,श्री कुंजो सुत सब जग बंदन संतन के चित चंदन सिर के छत्र हमारे जी॥ शोभन वंश प्रशंसित कीनो, साधु रूप अति घरो नवीनो। वर कूँ पूरन कियो सत्य मुख वचन उचारे जी॥ भक्ति भान जग में प्रगटायो, सोवत सब संसार जगायो चरन शरन जो आयो भयो भव सागर पारे जी।। प्रेम भक्ति की वर्षा कीनी, त्राविधि ताप सब की हर लीनी बड़े बड़े किव महिमां तुमरी करते हारे जी।। सरस माधुरी दीन दुखारी, कृपा करो जाऊँ बिलहारी लीजे चरन लगाय अभित तुम पतित उवारे जी।।

॥ राग सौरठ ॥

प्यारे श्याम चरन के दासा दरश दिखावना रे।

जगमें तेरो दास कहायो, तूही इक मेरे मन भायो। निशि दिन मोकों तेरे ही गुन गावना रे॥

चरण शरण तुम्हरी तक आयो, तुमरे ही मन ध्यान समायो। भव सागर सें भोकों पार लगावना रे॥

प्रेम भक्ति अपनी प्रभु दीजे, यह विनती मेरी सुन लीजे। अपनों अनुचर कीजे भूल न जावनारे॥

मेरे अवगुरा चित न धारो, पतितन पावन विरद विचारो । अपनें जान उवारो नहि विसरावनारे ॥

अमरलोक निज धाम बसावो, रास विलास हुलास दिखावो। दंपति देहु मिलाय करो मन भावनारे॥

सरस माधुरी शरण तुम्हारी, चरण कमल सों करो न न्यारी। युगल विहारी सेवा महल करावनारे॥

॥ विनय ठेका कीवाली॥

विनय कर जोर करूँ सुनलो रनजीत कुमार । श्री मुरली सुत कुंजो नंदन जीवन प्रान श्रधार ॥ श्री शुकमुनि के परम लाड़ले आचरज अवतार ।

जीव उवारन जग में आये भक्ती करन प्रचार ॥ युगल विहारी तुमकी भेज निस्तारन संसार ।

अमरलोक सें आप पधारे पतित उधारन हार ॥ में हूं श्रा आपकी स्वामी आनपरो द्रवार ।

शरणागत की लाज करोगे अपनी ओर निहार ॥ प्रेम भक्ति दो दान दयानिधि लीजिये नाथ सँभार । सरस माधुरी विरद भरोसे चरनदास सरकार ॥

॥ भैरों व भैरवी ॥

करुणा निधि कृपा सिंधु चरनदास स्वामी। दीनके दयाल और भक्तन प्रतिपाल प्रभु,

करते हैं ।निहाल विरद श्राण पाल नामी ॥ अश्राण के श्रा विविधि ताप जन्म मरण हरण,

अभय करन आतँद घन अमरलोक धामी॥ त्रगटे हरि आज्ञा मान येम भक्ति दीनी दान,

तारे बहु जीव महा दुष्ट कुटिल कामी ॥ सरस माधुरी निहोर विनवत युग पान जोर,

शीश निज नवाय करत पद्म पद नमामी॥

॥ कालंगड़ा ॥

मेरे चरनदास मन माने।
श्री शुक मुनि के परम प्यारे सबजग सुयश बखाने॥
जोगी सिद्ध समाधी ध्यानी ज्ञानी ग्रुरु कर जाने।
रिसक श्रमन्थन के जीवन धन दंपित दरस दिवाने॥
लगन मगन रंग भीने निशि दिन प्रेम मांहि मस्ताने।
निज धामी निष्कामी नामी जगत प्रगट निहं छाने॥
श्री तिलक तुलसी गल माला पीतांबर वर बाने।
सरस माधुरी श्याम राधिका तिनके हाथ बिकाने॥

॥ प्रभाती, भैरों ॥

श्याम चरनदास नाम प्रातिह उठ गाऊँ।
कृष्ण कला कलियुग में प्रगट भये महा प्रभो,
निरख नयन श्रितिही सुख परमानँद पाऊँ॥
भुगुकुल के तिलक च्यवन वंश के विभूषन को,
सुयश भाष रसना सो नेंक ना श्रधाऊँ॥
कहें सरस माधुरी श्री मुरली सुत जग वंदन,
कुंजो के नन्दन की चरण शरण जाऊँ॥

॥ पद विहाग ॥

सुनो विनय स्वामी निजधामी श्रीमत श्याम चरन के दासा।
तुम ही तारण तरण हरण दुख मो मनमें निश्चय विश्वासा॥

भूल भज़ं निहं और देव को करूँ तुम्हारी सदा उपासा। सब साधन फल शरण रावरी लई प्रीति कर करणा रासा॥ तन मन प्रान करों न्योछावर हिय में मेरे यह श्रिभलासा। सरस माधुरी विरद भरोसे सदा मगन श्रानंद हुलासा॥

॥ पद राग भैरों ॥

श्याम चरनदास सदा संतन सुखदाई।
शुक मुनि के शिष्य सकल शोभा शुभ गुन निधान
देत श्रभयदान दीनवन्धु रिसक राई॥
हस्त कमल शीश धरत त्रिविधि संताप हरत
दरसावत सहजहि श्री राधिका कन्हाई॥
बृन्दावन कुंज धाम विहरें जहां त्रिया श्याम
टहल महल सोंप देत हैं तहां वसाई॥
सरस माधुरी सरूप निरखत नैनन श्रनूप
कुंज नृपति जुगल लाल देत हैं मिलाई॥

॥ राग धुरपद चौताल, बिलावल ॥

श्याम चरनदास खास निरखो निज नैनन तें बैठे कर सभा मध्य सिंहासन राजें री॥ पदवी बड भक्तराज संतन के शीश ताज

देख के सुतेज नृपित शाह श्रमित लाजें री॥ हरियश नित होत गान उपदेशत ज्ञान ध्यान भक्तिभान उदय कियो छवि श्रपार छाजें री॥ सरस माधुरी सुजान द्या कृपा ग्रुग निधान प्रेमामृत किये पान देखत दुख भाजें री॥

॥ पद राग विलावल चौताला ॥

श्याम चरनदास को निहार रूप नैनन सों कोटि काम रती देख छिव को लजावें री॥ मस्तक घुंघरारे वाल सोहत श्री तिलक भाल टोपी सज शीश पीत फेंटा सुहावें री॥ नीमा है जरद रंग तन में पहरें सुनंग

तुलसी और पुष्प माल ग्रीवा छवि छाजें री॥ नेना श्रित ही विशाल भृकुटी वांकी सुढाल नासा श्रित सुंदर मंद होठन मुसकावें री॥ धरें कटि पीतांवर रेशमी किनारदार

चरण चारु श्ररण कंज मधुप मन लुभावें री ॥ श्रमुपम श्राजानु वाहु हस्त कमल लिख लुवाहु मुद्रा कर ज्ञान उपदेश को सुनावें री ॥ सरस माधुरी सुअंग लिख लोचन भई उमंग दर्शन कर भक्त रोग भव के मिटावें री ॥

॥ पद राग विलावल, सोरठ ॥

विनय मोरी सुनो श्याम चरनदास जी ॥ किल के कलेश टारो, भव समुद्र से उवारो दीजिये सहारो नेक करुणा की रास जी ॥ इंद्री मन शत्रु गन लूटत हैं भजन धन

लीजिये वचाय श्राय मेरी मेटो जम त्रास जी॥ साधन न जानू कृपा नेरी को वल मान्

सो से मित हीन की तुम काटो भव पास जी॥ श्रवगुरा न निहारो निज विरद पितत पावन पारो

दया दृष्टि से उधारो राखो चरनन के पास जी॥ पिय प्यारी पद सेवा दीजिये दयाल देवा

करूं टहल महल मिले कुंज में निवास जी ॥ हा हा विलहारी में रावरो भिखारी

मेरी करो ज़ सँभारी देवो वृन्दावन वास जी॥ सरस माधुरी है दासी नाम तेरे की उपासी दरशन की प्यासी लखूं दंपति विलास जी॥

॥ ग़जल, रेखता ॥

सुनो स्वामी चरनदासा विनय तुमको सुनाऊं में। दोऊ कर,जोर कर प्यारे चरन में सिर नवाऊं में॥ सुरत जब सें संभारी हैं तुम्हारी श्वास धारी हैं

भरोसा मुभको भारी है तुम्हारा जन कहाऊं में॥ पड़ा हूं मोह माया में श्रधिक दुख ने सताया मैं

तुम्हारे चरन को तज के कहो किस ठौर जाऊं मैं॥ दया कीजे पतित जन पर करो प्रभु लाज निज पन पर पतित पावन विरद पारो विपन में वास पाऊं में॥ किये श्रनुचित करम श्रनिंग ख़बर ले कोंन श्रब तुम बिन वृथा जाते हैं मेरे दिन उमर योंही ग्रमाऊं में ॥ विषय जंजाल ने घेरा नहीं चलता है बस मेरा

भजन सुमरन नहीं वनता विपत किसको वताऊं मैं॥ रिसक जन संत श्रनुरागी रहे जिनसों लगन लागी

वनू जव ही में यहमागी परम सुख में समाऊं मैं॥
दिखादो छवि जुगल प्यारी रहूं लिख प्रेम मतवारी

करूं तन मन में विलिहारी सुम्हारे युन को गाऊं मैं॥ करू श्रृंगार प्यारी को पिया वांके बिहारी को

दिखा दरपन खवा बीरी प्रिया प्रीतस रिभाऊं मैं॥ सरस है माधुरी तेरी खबर लीजे प्रभु मेरी महल दंपति टहल दीजे बिरह विपता नसाऊं में॥

॥ राग विहाग ॥

श्रासरो श्याम चरनदास चरन को।
श्रीर उपाय निहं कोऊ दीखत या भव सिंधु तरन को॥
हढ़ विश्वास श्रास इन ही की जाचक नाहि नरन को।
टारी टेक टरे निहं कबहूं भय निहं जन्म मरन को॥
जग में दासन दास कहाये नहीं श्रीभमान वरन को।
सरस माधुरी संशय नांही है वल मोहि शरन को॥

॥ राग सोरठ व पीलू वरवा ॥

श्री शुकमुनि के परम त्रिय शिष्य श्याम चरनदासा ग्रन गाइये तिनकी कृपा निकुंज भवन की सेवा सुख सर्वोपरि पाइये॥ उज्ज्वल रस उन्नति श्रति श्रद्धत निरिष्व केलि दंपति हुलसाइये सरस माधुरी रस श्राचारज चरन शरन इनहीं की आइये॥

॥ पद् ॥

हमारे चरनदास गुरु ध्यान।
इष्ट उपास श्रास इनहीं की सब विधि सुख की खान॥
जो उपकार कियो करुगा निधि को करि सके वखान।
चौरासी से काढ़ कृपा निधि दीनो पद निर्वान॥
सन्मुख किये जीव हिर श्रनिंगन प्रेम भक्ति दे दान।
निर हेतुक हितकारी श्रिति ही तिनके सम निहं श्रान॥
मो सम श्रधम श्रपावन हूं की सुनि विनती निज कान।
सरस माधुरी शरन लाज श्रव तुमको जीवन प्रान॥

॥ पद् राग चरचरी ॥

श्याम चरनदास नाम नित प्रति जप भाई॥ चाहत जो जुगल प्रेम रिटये नित राख नेम होय योग चेम मिलें राधिका कन्हाई॥ चरण शरण रहो स्नान हढ कर उर धार ध्यान निश्चय कर जान बसे स्नमरापुर जाई॥

पावे परिकर सुखास निरखें दंपति विलास सरस माधुरी खवास त्रिया की कहाई ॥

॥ राग कालंगड़ा॥

इष्ट श्याम चरनदास हमारे। श्री शुक सखी कृपा कर सिंचित रस विहार बिवि चंद उजारे॥ शरनागत को करत कृतारथ दरशावत दोऊ प्रान प्यारे। सरस माधुरी तुमरे ऊपर रीक्त भीज तन मन धन यारे॥

॥ छप्पै ॥

व्यास पुत्र सुखदेव कृपा कर दर्शन दीने ॥
राधा कृष्ण उपास तिलक जो मुनि जन कीने ॥
पुनि इन्द्रप्रस्थ में आय सबिह पूजे अरु पुजाये ॥
जुगल रहस्य प्रेम अगाध अनंत परचे द्रशाये ॥
अष्टांग योग को साधि कर दशम द्वार निज पुर गये ॥
किल काल कितन भरद्वाज मुनि चरनदास प्रगट भये ॥

॥ कुंडली छन्द ॥

प्रेम मंजरी वपु धरवो नाम श्याम चरनदास । भागव कुल भूषन कियो च्यवन वंश प्रकास ॥ च्यवन वंश प्रकाश व्यास सुत शुक्रमुनि खामी । किये आपने शिष्य भये जग में सरनामी ॥ श्रनिगन जिय उद्धार जग दियो श्रमर पुर वास । प्रेम मंजरी वपु धरयो नाम श्याम चरनदास ॥

॥ छप्पय ॥

भगवत धर्म प्रचार हित चरनदास प्रगट भये।

ठयास सुवन शुकदेव मुनि शुकतार मिलाये॥

तिनतें दीचा पाय बहुरि बृंदावन आये।
सेवा कुंज निहार विहार स्थल पिय प्यारी।

साचात है प्रगट मिले जहां जुगल विहारी॥

इन्द्र प्रस्थ अस्थान कर अभय दान जीवन द्ये।

भगवत धर्म प्रचार हित चरनदास प्रगट भये॥

॥ पद् ॥

चरनदास शुकदेव ग्रह बिहारी विहारन पद भजो ॥
योग स्वरोदय सिद्ध तीन कालन के ज़ाता ॥
अष्ठ सिद्ध नव निद्ध सहज में सब के दाता ॥
नाना यंथ विचार शिष्य देशन में कीने ॥
प्रेम संप्रदा प्रचुर साध्य साधन संग लीने ॥
कुंज केलि वर्णन करी इन्द्र प्रस्थ अस्थल सजो ॥
चरनदास शुकदेव गुह विहारी विहारन पद भजी ॥

॥ पद् ॥

कुंजो नंदन करुणा रासी। कुपा करो दुख हरो विरह को देवो मिलाय निकुंज विलासी॥ श्रिति श्रासक्त श्रधीर रहत नित श्रंखिया जुगल रूपकी प्यांसी। सरस माधुरी की सुध लीजे जान नाथ चरणन की दासी॥ ॥ पद्॥

श्री मुरली सुत सुध मो लीजे।
जुगल प्रेम परि पूरण अपनो, दीन जान खामी मोहि दीजे॥
लगन युगल में मगन रहे मन, करुणासिंधु कृपा यह कीजे।
सरस माधुरी वयस बुथा यह, विन अनुराग नेक नहिं छीजे॥
॥ पदः॥

श्री रणजीत जगत ग्रह प्यारे।
परम पूज्य प्रणतारत भंजन जन मन रंजन जक्न उजारे॥
करो अनुग्रह दास जान निज श्रीमत मुनि शुकदेव दुलारे।
सरस माधुरी जुगल चरण पर अपनो तन मन धन सब वारे॥

॥ पद् ॥

रंजीत जगत ग्रह कृपा कर अमरापुर से जग आये हैं। श्री मुरली सुत कुंजो नंदन जग वंदन सब सन भाये हैं॥ एसे हैं आप दया धारी निज भक्क जनों के हितकारी। पिततों के पावन करनेको भूतल में प्रभु प्रगटाये हैं॥ शोभनजी को वरदान दिया इस कारण डहरे जन्म लिया। निद्या तट खेलत लड़कों संग शुकदेव मुनी दरसाये हैं॥ हित कर लालन को गोद लिये दो पेड़े दे बहु प्यार किये। मुनिवर के तबही चरण छिये ग्रह देव निरख हुलसाये हैं॥

उन्नीसवे साल में श्रीखामी शुकतार गये श्रंतरयामी। श्री व्यास सुवन द्रश्न करके दीचा ले हिये हरषाये हैं॥ दिल्ली में रहे जा गुफा बना कर जोग जुगत धुनि ध्यान लगा। पहुँचे जा धुन्न समाधी में निज गगन मंडल घर छाये हैं॥ लाहूत सकां जहां अर्शवरीं जिसजापर खुद पहुँचे मुरशद। हुये नूर जहूर में जा शामिल वहदत पा वहां समाये हैं॥ धर रूप अनेकों भारत में प्रभु भक्ति प्रचारी श्री हरिकी। प्रतीत करा परमेश्वर की भक्ताचारज कृहलाये हैं॥ दिये परचे शाहंशाहों को सीधे किये सब गुमराहों को। पूर्या कर सवकी चाहों को दिलके भय भर्म मिटाये हैं॥ श्रीवन जा सेवा कुंज रहे श्री दुरुपति दुरश्न खास लहै। सखी रूप हो रास विलास रमें ले रस निकुंज तृपताये हैं॥ अंशा अवतार श्री हरिके श्री नित्य विहारी युगल वरके। जिसने किये याद जहां पहुँचे जग जीव अनंत चिताये हैं॥ जो चरण शरण में चल आये मन वांछित फल सबने पाये। कहे सरस माधुरी जीत जनमको अत परम पद पाये हैं॥

॥ पद् ॥

श्याम चर्णदास अपनाओं कृपा कर। हा हा कर में पांय परत हों, चित चरनों में लगावो कृपाकर।। तुम्हरों उर विश्वास अधिक है, प्रेम सुधारस प्यावो कृपाकर। लगन लगाय लाडिली लालन, रिसक अनन्य बनावो कृपाकर।। जुगल बिहारी जीवन मेरे तिन्हें दिखाय जिवावो कृपाकर। दे निज टहल महल मनमानी परिकर मांहि मिलावो कृपाकर॥ सरहा माधुरी श्ररण तुम्हारी नवल निकुंज बसावो कृपाकर॥

॥ पद् ॥

जय जयित श्री जगत ग्रह, रंजीत शागा प्यारे।
रिसकाधिराज खामी, हो इष्ट तुम हमारे॥
निज धाम ही से आये, दम्पति ने तुम पठाये।
हिर प्रेम हम को लाये, हम दास हैं तुम्हारे॥

हार अस हम का लाय, हम दास ह तुम्हार

नर रूप धार आये, कुंजो कुंवर कहाये।

मुरली के सुत सलीने, नेनों के आप तारे॥

हरि भक्ति हिय भरोगे, हमरी तरफ़ हरोगे।

परिकर में प्रभु वरेगों, हो तुस द्याल भारे॥

संकट सकल हरण हो. शानंद के करन हो।

श्रथमां के उद्धारन हो, शुकदेव मुनि दुलारे॥

निज जन के हो सहायक, सामर्थ सर्व लायक।

रस केलि कुंज दायक, नेनों से हम निहारे॥

निश दिन बसं हगन मं, है ध्यान तुम्हरा मन मं।

रख लो प्रमृ शरगा मं, करिये न नेक न्यारे॥

श्राचार्य्य धाम वाली, रस रास सुख विलासी। सरस माधुरी ने सरवस, तुम्हरे चरण पे वारे॥

न सरवस, छुक्हर चरमा प नार ॥

॥ पद् ॥

चरगादास प्रभुकी चलिहारी, राखी लाज महाराज हमारी ॥

डहरे नगर जन्म लियो स्वामी, श्रव्भुत लीला विस्तारी।
श्रीशुकदेव मिले तुम्हें सतग्रह, किल में हुवे कलाधारी॥
श्रास पास है वाग वगीचा, फूल रही है फुलवारी।
वीच विराजे चरगा पादुका, छतरी की शोभा भारी॥
जती सती दरशन को श्रावें, ध्यावें सव ही नरनारी।
संत महंत रहें सेवा में, गुगा गावे दुनियां सारी॥
मन इच्छा फल सेवक पावे, जावें प्रभु की विलहारी।
फूल पान मिष्टान चढ़ावें, नृत्य करें देकर तारी॥
प्रेम भक्ति सब जक्त प्रचारी, पतित किये वहु भव पारी।
सरस साधुरी साचात तुम, श्री कृष्णा हो श्रवतारी॥

॥ पद् ॥

श्याम चरण के दाल महात्रभु चरण शरण लड़ तेरी रे ॥
सर्व पूज्य सरताज जक्त ग्रुरु, लाज राखिये मेरी रे ॥
दीन हीन दुखिया में भारी, श्राय परो प्रभु शरण तुम्हारी।
भव सागर में भय श्रात भारी, सुधि श्रा लेओ सबेरी रे ॥
सुमरन भजन कळू नहीं कीनो, शुभ कर्मन में मन नहिं दीनो।
महा पतित पामर मोहि चीन्हो, मित माया ने घेरी रे ॥
कृपा दृष्टि कर करुणा कीजे, सुधि मेरी महाराजा लीजे।
श्राविचल भक्ति दान मोहि दीजे, नैंक न कीजे देरी रे ॥
निशदिन युगल लाल ग्रन गाऊँ, नाम जपूं नित ध्यान लगाऊँ।
परम धाम परिकर पद पाऊँ, रहूं निरन्तर नेरी रे ॥

विनय सुनो रंजीता प्यारे, इष्ट देव हो श्राप हमारे। सरस माधुरी जनम जनम की, निज कर जानों चेरी रे॥

॥ पद् ॥

रंजीता प्यारा दरस तुम्हारा मन भावना । श्रजी हांजी म्हाने लागो छो सुहावना ॥

संत रूप धर श्रवतरे जी, कुंजो कूंख मभार।

मुरली सुत मंगल करन, प्रागदास उरहार॥

हरष थांका गांवां जी स्हेरहस बधावना॥

भेजे ग्यामां ग्याम हे जीव करन उद्धार । जो जो जन श्रावें शरण, उतरें भवनिधि पार ॥ जगत ग्रह जग जंजाल छुड़ावना ॥

प्रेम भक्ति प्रगट करन, हरण सकल भू भार।

श्राचारज हो जक्त में, करो हिर धर्म प्रचार॥
हमारी सुधि भूल विसर मत जावना॥

इप्ट हमारे श्राप प्रभु, सब ही के सरताज। हम हैं निज जन श्रापके, तुम्हें हमारी लाज॥ हमारे प्यारे सीस चरण परसावना॥

भले बुरे हम श्रापके, श्राप हमारे नाथ। कृपा दृष्टि कर कींजिये, सब विधि हमें सनाथ॥ हमारे स्वामी श्रवगुगा पर मत जावना॥ भक्त राज महाराज जी, तुम लग हमरी दौर।
चरण शरण विन श्रापंक. श्रंत नहीं किह ठौर॥
भरोत्तो थांको भारी म्हारी श्रीर वंशावना॥

गुगल विहारी लाल की जी, छिव दीजे दरसाय।
सर्स माधुरी सेवा देके, परिकर में पहुंचाय॥

निरख छिव निश दिन नयन छकावना॥

॥ पढ़॥

यही हैं मेरे मनमें दृढ़ विश्वासा, करोगे प्रम् मेरी एरण श्रासा ।।
धरोगे स्वामी मेरी विनय पर ध्यान,
देओगे प्यारे निज बंदावन वासा ॥
सलोनी संवा दे निज वीरी पान,
रखोगे मोकों गुगल विहारी पासा ॥
कृपा दृष्टि करके पोषोगे ।
सफल सब करि हो हिय श्रिमलासा ॥
मिलावो मोकों श्री शुक सखी परिकर में,
मनोरथ पुरवो करुणा रासा ॥
लखों नित लीला रास विलास,
लिलत गुण गाऊँ उमँग हुलासा ॥
सरस वेरी रंजीता तेरी.

द्या कर करहु विरह दुख नासा ॥

भरोसो तेरो भारी रंजीत कुमार।

श्री मुरली सुत कुंजो नंदन जीवन प्रान हमार॥ जन्म लियो जग में जग करता भूमि उतारन भार।

कलियुग के कलिमल मेटन को धरो मनुज श्रवतार ॥ विमुख जीव सनमुख हरि कीने श्रनगिन नर श्ररु नार।

भरतखंड में भिक प्रचारी पतित किये भव पार ॥

दीन जनन के दुख के हरता सुख करता सरकार।

पतितन पावन परम द्यानिधि श्रधम उधारन हार ॥ बिरद बड़ाई सुन कर स्वामी श्रानपड़ो प्रभु द्वार ।

नैंक नजर करुणा कर देखो श्रपनी ओर निहार॥ श्रविचल प्रेम भक्ति वर दीजे मांगों गोद पसार।

निज परिकर में बर मोहि लीजो संतन के सरदार ॥ सेवा सुख दे हरहु विरह दुख श्रवग्रण नाथ निवार। सरस माधुरी शरण चरण की जानत सब संसार॥

॥ पद् ॥.

मांगने वाले चलो मांगो दुश्रा श्राज की रात।

बैठा छतरी में है महबूब बना श्राज की रात॥

भक्ति का चांद उदय श्राज हुआ डहरे में।

करलो दरशन ए चकोरो चलो तुम श्राज की रात॥

प्रेम का फूल खिला गुलशनें शोभन में आज। भूमती फिरतीं यहां वादे सभा त्राज की रात॥ कुंजो माता के गर्भ प्रगटे हैं रंजीत कुँवर।

गा रहीं गान नवल नारी यहां श्राज की रात॥ दे रहे दान नक़दों ज़र का श्री मुरलीधर।

लेलो जो कुछ जिसे चिहये यहां श्राज की रात॥ सबही मोहताज चलो श्रावो नगर उहरे में।

सदका हरि नूर का मिलता है यहां त्राज की रात॥ दौड़ कर त्रावो यहां द्वार खुला मुक्की का। पहुँचो निज थाम सरस काम बना त्राज की रात॥

॥ पद् ॥

क्या मने।हर मूरती रंजीत की मन की हरन।

है सलोनी सांवरी सूरत सरस गोरे बरन॥

चंद सा चहरा प्रकाशित सरपे लंबे बाल हैं।

छारही अद्भुत छटा चहरे पे आनंद की करन॥

प्रेम मदमाते नशीले नैन मद हर मैन के।

नासिका सन्दर मधर मसकत हरन जिय की जरन॥

नासिका सुन्दर मधुर मुसकन हरन जिय की जरन ॥ ध्यान इन का जो धरें संताप श्रक दुख को हरें।

सहज भव सागर तरें नाहें होवे फिर जीवन मरन ॥ परम पावन कंज से कोमल चरण तारन तरन । संसी दम्पति दसी देवें जो रहें इनकी शरन ॥

ें प्यारे श्याम चरण के दास हमें हितकर अपनावोजी ॥ ध्यान सानसी मांहि सहा प्रभु बेगा आवोजी। श्यामा श्याम उमंग रंग से संग में लावोजी ॥ द्रश्न की प्यासी हैं श्रांबियां मत तरसावोजी। कुंज विहारिन कुंज बिहारी आन मिलावोजी ॥ लाल लडेती सों तुम स्वामी लगन लगावोजी। प्रेम प्रीति का प्याला प्रीतम भर भर प्यावीजी ॥ अमर लोक अविचल हमको बास बसावीजी। अष्ट्र याम की सारी सेवा आप करावोजी ॥ रास विलास हुलास निरंतर नयन दिखावोजी। रस भरी राग रागनी नई नई श्रवण सुनावोजी ॥ सखी सहेली मन मेलिन के संग रखावोजी। परमानंद प्रेम परि पूर्गा हिय प्रगटावोजी ॥ नाचो गावो आप प्रेम सो हमें नचावोजी। संरस माधुरी श्री दम्पति के रंग रचावोजी॥

॥ पद् ॥

रोशन है नाम विश्व में रंजीत तुम्हारा, मनजीत तुम्हारा। अवतार धार आपने जीवों को उबारा, भव सिंधु से तारा॥ श्री कृष्ण अंश आप हैं मा बाप हमारे। हमकोतो फ़कतआपके चर्णों का सहारा, किया सबसे किनारा॥

भक्तों ने किया याद जहां पहुँचे वहां तुम । दरशन को देके दुख सकल उनका निवारा, अवग्रण न निहारा॥ संतों की करी आपने हर वक्त में रचा, दुष्टों को दी शिचा। हरि भक्ति को इस जक्त में तुमने ही अचारा, अधरम को है टारा॥ हामी हो मदद गार हो आगों के हो प्यारे, सरकार हमारे। निजमुख से यह कहदी जे सरस तू है हमारा, तबही हो छज़ारा॥

॥ पद् ॥

गीर तन मन के हरन कुंजो के नंदन प्यारे।

मुरलीधर दास सुवन नेनों के हो तुम तारे॥
प्रयागदास जी दादा के बड़े भाग जागे।

जिन के घर जन्मे स्वयम कृष्ण मनुज तन धारे॥ भारगव वंशमें हिर अंशने अवतार लिया।

भाक्ने शोभन की फलीभक्त बचन प्रत्पारे॥

पुरकी सब नारी हुईं वारी निरख छवि रंजीत।

त्रेम के रंग रची आय नची सब द्वारे॥

देश मेवात में दिन रात है घर घर मंगल।

बज रहे बाजे विविध मेरी ढोल नक्कारे॥

डहरे निज धास की शोक्षा का नहिं वारापार।

छारही नभ में घटा बरसे है अमृत धारे॥

हर तरफ़ भूमि हरी बाग़ हरे बुच हरे।

नाचे हैं मोर करें शोर भृंग गुंजारें॥

गारहै गान गुणी जन हैं सकल मन में मगन।
भक्त जन प्रेम भरे जय जय करें घुनि सारे॥
वाह क्या त्राज जनम दिन का यह दिलकश जलसा।
सर्स नयनों से निरख हर्ष के सरवस वारे॥

॥ पद् ॥

देखें रंजीत मेरे अब मुक्ते क्या देते हैं ॥
अपने बन्दों को बना देते हैं दम में सुलतां।
अपने बन्दों को बना देते हैं दम में सुलतां।
अप विगड़ी हुई तकदीर बना देते हैं ॥
सुन के में नाम बड़ी दूर से आया हूँ हुजूर।
आप कर रहम नजर प्रेम पिला देते हैं ॥
अपनी रहमत से करो मुक्त पै चरण का साया।
बनके मुहताज तेरे दरपे सदा देते हैं ॥
दस्त बस्ता तेरे दरबार में हाजिर है सरस।
आप निज दास को दंपित से मिला देते हैं ॥

॥ पद् ॥

रंजीत जी दरस दो छिब के दिखाने वाले।
सुंदर छबी दिखादो चित के चुराने वाले॥
नदी के तट पे खेले लड़कों को संग लेले।
प्रगटे थे शुक मुनी वहां पेड़े खिलाने वाले॥

लड़की से तुमने लड़के पल में बना दिये हैं। पूरण की लाज रखली करजा चुकाने वाले ॥ तुमने जो तीन खन से देखा गिरा वह वचा। हाथों पै ले लिया तब सहदी लगाने वाले ॥ शेरों को शिष्य वनाया शाहों ने पांत्र चूसे। आंवल के वृत्त से तुम मोहरें गिराने वाले ॥ जादू का जोरं तुम पर कुछ भी नहीं चला था। चाद्र विद्या कुवे पर मंतर सुनाने वाले ॥ परचा दिया मुहम्मद शाह को वह तुमने लिखकर। छै छै महीने पहिले खवेरं सुनाने वाले ॥ नादिर की तुमने कलंगी कुद्रत से थी उड़ाई। मँभाधार नाव डूबी जिसके वचाने वाले॥ नादिर ने करके गुस्सा डाली थी पांच वेड़ी। नादिर को देके ठोकर उसको जगाने वाले॥ माता को तुमने पल सें दंपत द्रस दिखाया। फिर साथ उनको लेके गंगा न्हिलाने वाले ॥ मुद्रों को भी जिलाया भय भर्म से छुड़ाया। जयपुर नरेश के हो तुम शिष्य वनाने वाले ॥ थे दस हजार साधू भोजन तो दोही मन था। दो मन बना रहा सब सब के खिलाने वाले ॥ शिष्यों की टेर सुन कर जा जा के एक दम में। हर एक की लाज रखली स्वामी कहाने वाले॥

तुम्हरे श्राण में आये जितने चरण के सेवक। जाशीर सब ने पाई श्रो नास पाने वाले ॥ निज साधुत्रों की तुसने पूरन करी है इच्छा। निज कुप्एा रूप वन के दुरशन कराने वाले ॥ तुमको विरहमनों ने जब वैजनाथ माना। श्री जल चरण पखाले श्रानंद मनाने वाले ॥ दो पंडित आये दहली उनका भी भर्भ मेटा। शहतूत सूखी लकड़ी जिसके लगाने वाले ॥ ञ्चातम श्राग् में ञ्चाये जमदूत जब दिखाये। ऐसे विमुख जनन के हिर जन बनाने वाले॥ केश्व जो दास था निज जपता तुम्हारी माला। करके द्या खुद् उसका वंधन छुड़ाने वाले ॥ परीच्तपुरे पधारे वरसों ही गुप्त रह कर। जगन्नाथ रूप में तुम दरशन दिखाने वाले ॥ ब्रन्दा विपिन पहुँच कर सेवा निकुंज भीतर। सखी रूप रास लीला आनंद पाने वाले ॥ भगवत का धर्म तुमने संसार में चलाया। श्रन्थों की श्रांख खोली रस्ता बताने वाले ॥ श्रद्रभुत तुम्हारी लीला कुछ श्रन्त ही नहीं है। चोद्ह वरस समाधी निरभय लगाने वाले ॥ पतितों के तारने को श्राये हैं श्राप जग में।

धन धन है तुमको भक्ती सागर वनाने वाले॥

में हूं श्रनाथ पापी तुम हो श्रनाथ रच्चक । प्रीतम हो तुम सरस के दुख़ के मिटाने वाले ॥

॥ पढ़ ॥

र्याम वरण के दास वरण की शरण गहा सब भाई रे। स्वयं र्यास त्राचार्या रूप धर उहरे प्रगट त्राई रे ॥ कोटि चन्द्र सम शीतल वाणी, श्रवण करत शीतल हो प्राणी। कोटि भानु सम ज्ञान उद्य हो, हिये तम जात नशाई रे॥ कोटि उद्धि सम है गँभीर चित् , यमृत सम बोलन कारक हित। कोटि मातु सम प्यार करें प्रभु, त्राश्रित जन सुखदाई रे॥ कोटि कुवेर समान उदारा, चार पदारथ के दातारा। श्रारत जन रज़क हैं स्वामी, दृढ़ निश्चय मन लाई रे॥ शिव ब्रह्मादिक तरसें देवा, रंग महल दंपति पद सेवा। निज जन को निज हित कर देवें, ऐसी है प्रभुताई रे॥ संखत शोक हों ततकाला, ऐसे हैं सामर्थ द्याला। तिनक नाम की फरो माला, प्रीति प्रतीति बढ़ाई रे॥ श्रजर श्रमर कर श्रमृत प्यावें, श्रमरलोक में वास वसावें। जहां गये जग बहुर न त्रावें, हरि लिख हों मगनाई रे॥ भरमं भूल में मत भटकावा, स्वामी श्ररण गहो सुख पावा ! नहीं अंत में चिति पछतावो, चूक दाव जब जाई रे॥ माया दल जीतन को श्राये, जन्म नाम रंजीत धराये। सरस माधुरी के मन भाये। इवि रही नयन समाई रे॥

तुम्हारी सुंदर सूरत प्यारी, श्री रंजीत लला बलिहारी ॥
प्यारे तुम कृष्ण श्रंश श्रवतारी, है प्रभुता तुम में भारी ।
लाल तेरी लीला श्रपरंपारी, ग्रण गावत रसनाहारी ॥
जगत में कीरत वहु विस्तारी, शरण में श्राये वहु नरनारी ।
पतित कीने श्रनगिन भवपारी, दया तुम्हरे उर श्रंतर भारी ॥
मात कुंजो के प्राण श्रधारी, पिता मुरलीधर के सुखकारी ।
धाम से भेजे प्रीतम प्यारी, जगत में प्रमा भक्ति प्रचारी ॥
रिसक श्राचारज पदवी धारी, श्राप हो जीवन मूर हमारी ।
इष्ट तुम हमरे हो हिंतकारी, सरस माधुरी चरण पर वारी ॥

॥ पद् ॥

बिनती मेरी सुनो तुम रंजीत मुरली नंदन ।

रिसकों के प्राण प्यारे भक्तों के चित के चंदन ॥

निज धाम से पधारे, दंपित के प्राण प्यारे ।

श्राचार्थ्य हो हमारे, श्रानंद के हो कंदन ॥

भक्ती प्रचार करने, श्रवतार धार श्राये ।

श्रधमों के उद्धरन हो, तुमको श्रनंत बंदन ॥

श्रमुचर हमें करोगे, श्रावागमन हरोगे ।

परिकर में प्रभु बरोगे, मेटोगे दुःख दंदन ॥

है सरस खास दासी, चरणों की है उपासी ।

रस रास के बिलासी, गाये हैं गुण सु छंदन ॥

तुमहो जन्म सुधारन हार सहा प्रभु चरण्दास सरकार ॥

श्रमरलोक से श्राप पधारे श्राचारज श्रवतार।

पतित जनन के पाप हरन को सन में कियो विचार ॥ माया के बंधन के सांही बंध्यो सकल संसार।

बंदी छोड़ श्राप भये स्वाभी जीव किये भव पार ॥ भर्म निशा में सोय रह्यो जो मूल गये करतार ।

दें उपदेश जगाये श्रापने ऐसे परम उदार ॥

माया प्रबल जीत के तुमने भक्ती करी प्रचार।

याही तें रंजीत श्रापको करें नाम उचार ॥

श्रष्ट सिद्धि नव निद्धि श्रापके भरे रहैं भंडार।

जो मांगे जाको तुम देवो ऐसे हो दातार ॥

श्रपने जन की श्राप करत हो पल पल मांहि सँभार।

संकट काट सहाय करो तुम दीन वन्धु दुख हार ॥ श्रारण शरण श्रधम उधारन सुनिये नाथ पुकार।

सरस सांधुरी की सुधि लीजे त्रान परी है द्वार ॥

॥ पद् ॥

श्रीमत रंजीत लाल मुरलीधर नंदना। कुंजो के कुँवर श्राप श्रानंद के कंदना॥ भेजे श्री श्यामा श्याम, प्रगट करन लीला धाम। नाम रूप श्रीत ललाम भक्तन चित चंदना॥ रिसकन की रहिन रीत, श्रृद्धा विश्वास प्रीत।
दींजिये द्याल श्राप मेटो दुख द्वंदना॥
रंग महल रस विलास, होत जहां नित्त रास।
परिकर में दीजे वास प्यारे तुम मुकंदना॥
सरस माधुरी निहार तन मन धन दीनो वार।
सीस को नवाय करे चरण कमल बंदना॥

॥ गजल ॥

जय जय रंजीत कुंवर कुंजो के नंदन प्यारे।

मुरलिधर दास सुवन वनके आप अवतारे॥
दास शोभन को दिया रीभ के वर जो तुमने।

पीढी अप्टम में प्रगट होके वचन प्रतपारे॥
होके आचार्य्य हरो भार आप भूमी का।

तारो संसार करो पार पतित जन सारे॥
प्रेम भक्ती का करो दान कृपा करके प्रभू।

अपने निज दास बना रिखये चरण के लारे॥
तुम से लग जावे लगन करदो मगन मन भावन।

रैन दिन छिव को निरख जग में फिरें मतवारे॥
ध्यान हिरदे में रहे नाम रटे नित रसना।

सर्व मांगे है यही दीजे द्यालू भारे॥

॥ पद्

जय जय श्री महाराज जगत ग्रह, चरणदास प्यारे। प्रभु चरणदास प्यारे॥

रूप अचारज धारे जग जिय निस्तारे ॥ भृगुकुल में प्रभु प्रगटे पापी वहू तारे। बीला बािलत तुम्हारी ग्रण गावत हारे ॥ कृष्ण अंश करुगानिधि स्वामी कलि में अवतारे। चर्गा शर्गा जो आये जन्म मरग टारे॥ ज्ञान जोग वैराग भक्ति के हो देने वारे। चार पदारथ दाता भक्तन रखवारे॥ अष्ट सिद्धि नव निद्धि तुम्हारी खड़ी रहें द्वारे। चर्ण तुम्हारे सेवें त्रिभुवन उजियारे॥ संत जनन के सरवस धन हो रासकन हितकारे। श्रेमिन के तुम श्रीतम नयनन के तारे॥ दीन जनन के दुख के भंजन हो द्याल भारे। सब में तुम व्यापक और सब से न्यारे ॥ कुंजो मात दुलारे मुरलिधर बारे। सरस माधुरी तुम पर तन मन धन वारे॥

॥ सोरठ कालंगड़ा व भैरवी ॥

चरगदास प्यारे॥

मेरे चितमें बसे श्याम चरणदास,में नाम जपूं प्रात खास खास॥ निज बृंदावन रंग महल जान, तहां प्रेम मंजरी लेहु पिछान। जग आय अवतरी करणा रास॥ दंपति पठई आति प्रीतिठान, निज प्रेम भक्तिको करन दान। भृगुवंश च्यवन छल कियो प्रकाश॥ श्री व्यास सुवन शुक मुनि द्याल,दे ग्रह दिचा कीने निहाल। तिनकी कृपा भयो हिये हुलास ॥

शुक संवदाय जग प्रगट कीन, किये रिसक हिर भक्ति लीन। दियो अचल अमरपुर मांहि वास ॥

नित रंग महत्त में रस विलास,जहां होत अखंडित नित्त रास। निज जन पहुंचाये जुगल पास॥

कोऊ तार दिये दै आत्मज्ञान,काहू दियो बताय जप योग ध्यान। बहु मुक्त किये जी अनायास ॥

जाको जस देखो संस्कार, ताको कियो कृतार्थ तिहि प्रकार। करी सब की पूरन मन की आस ॥

जो श्रमुरागी लीनें पिछान, तिन्हें दई भावना रस की खान। पाई पदनी सहचरी खास॥

कहै सरस माधुरी कर निहोर, बिनवत है दोऊ कर जोंर जोंर। निज चरन निकट दीजे निवास॥

॥ परभाती ॥

जय जय श्री श्याम चरनदास प्यारे॥

आचारज रसिकराज मंडन संतन समाज। भक्तन के शीश ताज इष्ट हो हमारे॥

च्यवन वंश कियों प्रशंस पूज्यनीय परम हंस । शुक मुनि महाराज शिष्य जक्न के उजारे ॥ राजत श्री तिलक भाल कंठ रुचिर तुलास माल। पीत वसन ऋति पुनीत अंग मांहि धारे॥ छके रहत जुगल ध्यान कृपा करुणा निधान। सरस माधुरी के प्रान तन मन धन वारें॥

॥ परभाती ॥

मेरें श्री श्याम चरनदास आश तेरी। तुमही हो गति मति मम कहाँ प्रयट टेरी॥ तुम ही हो अधमन उद्घारन भव तारन प्रभु। काटन को आश्रित जन कर्म वन्ध वेरी ॥ पतितन के पाप हरन संगल आनंद करन। त्रिविधि ताप सेटन को करत नां हि देंसी॥ अभिमत फल करत दान भाव भावत लेत मान। सर्वगुन निधान सुमात देत हो सवेरी ॥ सरस माधुरी की वार करो ना ऋँवार नाथ। विरद को विचार रखो चरनन के नेरी॥

॥ तमाशें की चाल में ॥

जय जय श्याम चरगा के दास हमारे आचारज हो खास ॥ गौर वरण मन हरण महात्रमु मूरत परम प्रकास। श्री तिलक मस्तक पर राजै पहरे पीत लिवास ॥ नख शिख सोहन विश्व विमोहन मंद मंद मृदुहास । प्रेम भरे नैंना हैं जिनके अद्भुत आनंद रास ॥

रिसक शिरोमार्श संत जक्र ग्रुरु हिय में हर्ष हुलास । मगन मानसी ध्यान रैन दिन निरखें जुगल बिलास ॥ देवें अचल बास बृंदाबन निश्चय यह मन आस । सरस माधुरी दंपति सेवा मिल है हह विश्वास ॥

॥ पद् ॥

श्राचारज श्रवतार छो चरनदास हमारा ॥ श्राचारज श्रवतार छोसजी कालियुग में प्रगटाया। श्री शुकदेव संप्रदा थापी तारन तरन कहाया॥ जो जो जन श्रगागत श्राये दंपति तिन्हें मिलाया जी॥च०॥ निरधनयां ने धन दियासजी, पुत्र हीन संतान।

दुखिया सुखिया कीना सारा, महा दया की खान॥ रंक राव कर दीना छिनमें ऐसे क्रपा निधान जी॥ चरन०॥ चार धाम और सप्तपुरी में, अड़सठ तीरथ सारा।

भिवत प्रचारन रूप अमित धर, प्रभुजी आप पधारा॥ जो जो इच्छा करी जिन्होंने काज सभी का सारा जी ॥चरन०॥ ज्ञान जोग वैराग भिवत, हिर दई दया कर दान।

करी जाचना ज्याने जैसी, सब के राखे मान ॥ प्रेम परा भक्ती प्रगटाई, कियो जक्त कल्याण जी ॥चरन०। चरण शरण में आपकीस जी,जो कोई चल आया।

चार पदारथ पाय सहज में, जीवन ५कत कहाया।। सरस माधुरी सुखी हुया सोइ अंत परम पद पाया जी ॥च०॥

भक्तराज महाराज हमारे। श्याम चरण के दास खास तुम मुरली सुत कुंजो के बारे॥ पूरण करो मनोरथ मन के निज जन के त्रमु हो रखवारे। सरस माधुरी श्याम राधिका नयनन वसें टरें नहि टारे॥

॥ पद् ॥

चरण दास स्वामी विलिहारी। खर्य श्वाम नर तन घर प्रगटे प्रेम भिक्क सब जकत प्रचारी॥ नाना रूप घार के विचरे किये कृतारथ वहु नरनारी। सरस माधुरी श्वाम राधिका नाम दान दे सृष्टि उवारी॥

॥ पद् ॥

डहरे जन्मे हैं महाराज जगत गुरु आचारज अवतार ॥ आये हैं हरि आप धाम से रूप संत को धार । भगट करें शुक मुनी संप्रदा हरें भूमि को भार ॥ नवधा प्रेम परा भिवत को जरा में करें प्रचार ।

जीव अनंत उवारें स्वामी संकट दें सब टार ॥ चरण शरण में जो जन आवे जिनको लेहि उवार।

जीवन मुक्त वनावें सवको कहा पुरुष कहा नार ॥ श्री हरि नाम कीर्तन किल में करै प्रभु विस्तार । पहुँचावें परम धाम जनन को जहां जुगल सरकार ॥

रास बिलास दिखावें निश दिन दंपति नित्य बिहार। सरस माधुरी इष्ट हमारे श्री रंजीत कुमार॥

॥ पद् ॥

रंजीता प्यारा कुंजो का लाला। मुरली सुत लागो छो बाला॥ चंद सो मुख मनहर थांको।

कमल दल नयन हैं मतवाला॥

तिलक श्री मस्तक पर सोहे।

भोंहें सम धनुष श्रजब श्राला ॥

पीत पोशाक पहर तन में।

गले में तुलसी की माला॥

शीश पर घूंघर वाले वाल ।

सचिक्रन अति सुंदर काला ॥

नासिका है मन मोहन हार।

मंद् सुसकन जादू डाला ॥

कृपा कर चर्गा श्रा लीजे।

पिलादो प्रेम प्रीति प्याला ॥

मिलादो श्री दंपति सम्पत।

दिखादो दरशन छवि जाला ॥

अधाचारज हो श्री हिर अवतार।

सरस के हो प्रभु प्रतपाला ॥

मेरे रंजीता प्यारे मुरलीधर बारे मो मन में अति भावत हो। मैं तो ध्यान धरूँ और पांव परूँ मेरे स्वामी तुमही कहावत हो॥

॥ शेर ॥

लिया है मुरली के अवतार मुरली वाला है।

तुम्हारा रूप यह आचार्य्य खूब आला है।। नुकीला भाल तिलक पीत क्या निराला है।

तन में पोशाक जर्द तुलसी गल में माला है॥
तुमतो नंदनदन बुज चंद दुलारे कुंजो कुंवर कहावत हो॥
तुम्हारा गौर बरण मनको हरने वाला है।

अमर नगर में यही रास करने वाला है॥ अनंत रूप जगत में यह धरने वाला है।

सुना है भक्तों का बहु दुःख हरने वाला है।। तुम तो ललित त्रिभंगी अंग छिपाकर संतरूप धर आवत हो॥ वह सर्स माधुरी भांकी जो बांकी प्यारी है।

उसके बिन देखे मेरे दिल को बेक्सरारी है।। तुम्हारा रूप वही दूसरा बिहारी है।

दिखादो उसको जरा यह अर्ज हमारी है॥ मैं तो जान लिया तुम्हें कुंज विहारी चरगदास दरसावत हो॥

निरखोरी नवेली सारी, जन्मोत्सव की शोभा भारी॥ मास भादों मुदकारी, तीज शुक्का सुखकारी।

भूमि चहुं दिश हरियारी, चरण गंगा वहे प्यारी॥
नाचत मोर शोर कर बोलें घटा घुमड़ बिजली चमकारी।
ध्वजा पताका सुंदर सोहन मंडप मनहर खूव सजाया।
बांधी वंदन माल सुहावन जिसने देखा सोई हरषाया।
बाजत बीन मृदंग मजीरा जिसने सबका चित चुराया।
गुणी जन गान तान को सुन के सारा रसिक समाज छकाया।
प्रगट भये श्री रंजीता, भया सब सन का चीता।

कहें यह हीर के मीता, भई मन प्रतीता ॥ कुंजो नंदन, आनंद कंदन, सब जग बंदन, पाप निकंदन । सरस माधुरी लख भई वारी॥

॥ पद् ॥

श्री रंजीता हरि के मीता अमरलोक से आये हैं।

कृष्ण अंश भृगुवंश प्रगट हो आचारज कहलाये हैं॥

धन धन जान पिता मुरलीधर धन कुंजो जिन जाये हैं।

धन धन नारी पुर की सारी जिनने गोद खिलाये हैं॥

धन धन दादा प्रागदास जी जक्ष प्रसिद्ध कहाये हैं।

संत रूप हरि भक्ति प्रचारन अपने दरस दिखाये हैं॥

नींद आविद्या में जो सोये जिनको आय जगाये हैं। दे उपदेश दयाल कृपा कर हिर की और लगाये हैं॥ भरतखंड के नर और नारी सब हिर भक्त बनाये हैं। सरस माधुरी दया दृष्टि कर परम धाम पहुँचाये हैं॥

॥ पद् ॥

श्रारती कर एथाम चरगादासं की।

जो इच्छा निज धाम बास की ॥
मुरली सुतश्री कुंजो नंदन प्रागदास के कुल उजास की ॥
शोभन वंश प्रशंस प्रभाकर सम्प्रदाय शुक जिन प्रकाश की ॥
गोर बरण मन हरण श्रनुषम पीत वसन मुख मृदुल हास की ॥
पतितन पावन करन द्यानिधि चरण शरण नित रहो जास की होय सहचरी पिय प्यारी की महिमा श्रनुलित भाग तास की ॥
पावे टहल महल मन मानी निरखे लीला नित्त रास की ॥
श्री ठाकुर बलदेवदास ग्रह सुनि बानी उन हिये हुलास की ॥
तिन उपदेश लगन लहराई दंपित सेवा रहन पास की ॥
सरस माधुरी कहत जोर कर दीजे सेवा चरण खास की ॥
तिन प्रताप श्रन्थास मिले मोहि संपित दंपित के बिलास की ॥

॥ पद् ॥

श्याम चरगादासा धाम पधारे।
मंगशिर बदी सप्तनी दिन बुध हो कर दसवे द्वारे।

संवत श्रठारह सो के ऊपर उंतालीस विचारे। श्ररुणोद्य पहिले तन तिज के स्वामी सहज सिधारे॥ लिये बुलाय लाडली लालन जान प्रान के प्यारे। निज संतन के परम सनेही रखत नहीं छिन न्यारे॥ श्रमरलोक श्रभिराम धास निज श्यामा श्याम निहारे। चरन छुवा नयनन छिव निरखी हिल मिल हित विस्तारे ॥ भर निज अंक रंक के धन ज्यों भेटे अजा पसारे। जो सुख भयो कह्यो निहं जावे रसना कहा उचारे॥ श्रति उपकार कियो करुणा निधि श्रगनित जन निस्तारे। सेवक संत अनंत वनाये कीने भव निधि पारे ॥ भुक्ति मुक्ति गति देंन महा प्रभु पतित उधारन हारे। श्राश्रित जीव जहां लग जग में सबके नित रखवारे ॥ मिलि है टहल महल मन सानी दृढ़ विश्वास हमारे। सरस माधुरी संशय परिहर सोवत पांव पसारे॥

॥ पद् ॥

गये निज धाम हमारे स्वामी।
सबको कर कल्यान कृषा निधि निरमोही निष्कामी॥
दे उपदेश उबारो सब जग पतित उधारन नामी।
श्रविचल बास दियो सबिहन को श्रसरलोक निज धामी॥
भावाधीन भक्त बत्सल प्रभु सब उर अंतरयामी।
सरस माधुरी जोर दोऊ कर हित सो करत नमामी॥

॥ श्रीमत प्रेम मंजरी महत्व पद मंजु छन्द ॥

श्री स्वामिनी श्रभिरामिनी यूथेश्वरी सुकुमारी है। श्रमरलोक से श्राय प्रगट भई प्रेम मंजरी प्यारी है॥

प्रेमहि प्रिये प्रिया प्रीतम को वेदन कह्यो पुकारी है।

मूरित प्रेम जुगल की जीवन होत नहीं छिन न्यारी है॥

प्रेम बिबस श्रवतार लेत हैं युगयुग प्रान श्रधारी है।

प्रेमी जन के रिग्णी कहावें श्याम सुंदर गिरधारी है ॥

प्रेमहि की महिमा को भाषत वेद पुरान पुकारी है।

सोई प्रेम सूरित सन भावन निज स्वामिनी हमारी है॥

प्रथम भाद्र पद् जन्म श्रष्टमी प्रगटन दिन बनवारी है।

भादों सुदी अष्टमी को श्री श्यामा जू अवतारी है ॥

उभय श्रष्टमी बोच तीज तिथि जन्मी जग दुखहारी है।

जुगल लाल की परम लाड़ली रसिकन रसदातारी है॥

नंद गांव बरसाने बिच ज्यों प्रेम सरोवर भारी है।

'त्योंही प्रेम मंजरी जानो सोई हम नैंन निहारी है॥

प्रेम जुगल सोइ प्रेम मंजरी यह निश्चय उरधारी है।

प्रेम इष्ट प्रिया प्रीतम के रिसकन बात विचारी है।।

प्रेम बिवस अनुराग भरे रहें नित प्रत उभय विलारी है।

दोऊ प्रेम श्राधीन दिवस निश ज्यों जल मीन उचारी है॥

जहां प्रेम तहां श्राप जांय चल लीला जग विस्तारी है। प्रेमहि के साधक आराधक प्रेम रत्न व्योपारी है॥ उल्फत इश्क प्रेम कहलावे श्राशिक का हितकारी है। योग ज्ञान वैराग सबन से इसकी पदवी भारी है॥ रित सनेह श्रक प्रण्य राग श्रनुराग रूढ़ उच्चारी है। श्रिकड़ा मोदन सादन उनमाद सुदस पर कारी है॥ श्रमित नाम गुन ग्राम जिन्हों के श्राचारज वपुधारी है। सरस माधुरी तिनके उपर तन मन सों बिलहारी है॥

॥ दोहा ॥

प्रेम मंजरी श्रवतरी, भू मगडल में श्राय। भेजी श्यामा श्याम ने, रिसकन करन सहाय॥ नख शिख मूरत प्रेम की, मिहमा कही न जाय। सरस माधुरी छिब निरख, नैना लिये छकाय॥

॥ पद् ॥

महल ते प्रेम मंजरी श्राई।

करुणा कर किल के जीवन पर दंपित श्राप पठाई॥

प्रगट भई भुगुवंश च्यवन कुल सुन्दर परम सुहाई।

भादों तीज सुदी दिन मंगल घर घर भई बधाई॥

फूले फिरें रिसक रंग भीने रंक मनो निधि पाई।

रस की रीति श्रीति प्रगटावन जन्मी हैं सुखदाई॥

निज परिकर की जान सुख सखी दर्शन दे श्रपनाई।

सरस माधुरी चरन दासि के चरनन पर बलिजाई॥

॥ राग सारंग ॥

जय जय श्याम चरन की दासी। परमारथ हित भूतल प्रगटी श्रति करुणामय श्रानंद रासी ॥ प्रेम मंजरी नाम धाम मं पिय प्यारी की करत ख़वासी। नित नव नेह नई नई रुचि ले सेवत युगवर कुंज विलासी॥ श्री शुक संप्रद्राय प्रगटाई कियो कृतारथ जग अनयासी। पतितन पावन श्रथम उधारन करुणा सिंधु सहज सुख रासी ॥ कितयुग में सतयुग विस्तारो भूल विसुखता सव की नासी। रिसंक शिरोमिणि श्रीर श्रनन्यवर किये सकल हरिपद के वासी॥ कर उपकार पधारे निजपुर जहां विलसत दंपति रस रासी। भीनी रहत जुगल छवि निधि में पुलकित अंग उमंग हुलासी॥ मन विश्वास धार उर दृढता है तुमरो जो इष्ट उपासी। निश्चय मिले जुगल परिकर में पदवी पाय सहचरी खासी ॥ श्री गुरु त्रलि वल्देवी मो सों गुप्त रहस रस रंग प्रकासी। सरस माधुरी जान श्रापनी करो मोहि दासिन की दासी॥

॥ राग सारंग ॥

श्याम चरन दासी जय किहये। जिनको नाम जपत श्रानँद निधि श्रनयासिह श्रिल पदवी लिहये श्री शुक श्रली प्राण प्यारी के नित नव गुन रसनां सों गइये। रिलये श्रास भरोस इन्हि को मृल भरम इत उत निह बहिये॥ श्री शुक सखी चरन दासी को ध्यान भजन उर श्रंतर गहिये। गौर श्याम श्राचारज दोऊ यातें श्रपर और कहा चिहये॥ श्रलभ लाभ यह मिल्यो भाग सों श्रेम पुलिक हिये में हुलसइये। दंपति सुख संपति सर्वोपिर टहल महल मन मानी पइये॥ दियो वताय गुरु श्रलि बलदेवी सार भजन सुख सिंधु समइये। सरस माधुरी नित्य निरंतर चरन शरन इन ही की रहिये॥

॥ राग कालंगड़ा ॥

सव सुख करन श्याम चरन दासी।
तिनकी शरन सुलभकर पइयत प्यारी प्रीतम कुंज विलासी॥
रिसकन की संपित श्री दंपित सरवस धन वृंदावन वासी।
गलवेया दीने रंग भीने नित निरखे नेनन रस रासी॥
श्रंग संग सेवा कर हुलसे रख लिख लालन करें खवासी।
सरस माधुरी सत्य समभ मन निश्चे होय निकुंज निवासी॥

॥ पद् ॥

श्याम चरन दासी विल जाऊँ। ध्यान भक्ष हिय मांहि निरंतर रसना सों नित गुगा गगा गाऊँ॥ नेनन सों निरखों छवि निश दिन युग पद पद्म शीश परसाऊँ। सरस माधुरी शरन कृपा बल श्रचल बास बृंदावन पाऊँ॥

॥ राग बिलावल ॥

श्याम चरन दासी सुख रासी। दृढ़ कर भजे रसिक जन कोई देंहि मिलाय निकुंज विलासी॥ पावे टहल महल मन मानी रहे सदा श्री दम्पति पासी। सरस माधुरी छके युगल छिव कुंज केली निरखे थनयासी॥ ॥ पद् ॥

जय जय जय श्री प्रेम मंजरी श्रविचल प्रेम मया कर दीजे। यथा नाम तुम तथा करों बिल जुगल भाव रस में मन भीजे॥ अंग संग सेवा दम्पति की निशि दिन कर करुणा निधि जीजे। सरस माधुरी शरण रावरी विनय कान देके सुन लीजे ॥

॥ पद् ॥

प्रेम मई धाम श्रमरलोक जहां खास है।

प्रेम सिंधु श्यामा श्याम का वहां विलास है॥ ब्रेम हीं की कुंज महल प्रेम वाग पास है।

प्रेम ही के फूले फूल प्रेम की सुवास है।। प्रेम ही की परिकर श्ररु प्रेम का रनवास है।

प्रेम मंजरी का जहां नित ही निवास है॥ प्रेम ही की नित्य लीला प्रेम का विकास है।

श्रेम ही के हाव भाव श्रेम ही का रास है।। प्रेम ही पृथ्वी जहां प्रेम का त्राकाश है।

प्रेम ही के चंद सूर्य प्रेम का प्रकाश है॥ प्रेम सरस माधुरी का श्रद्भुत मिठास है।

निरिख नेन होत हिये प्रेम का हुलास है।।

प्रगट भई प्रेम मंजरी हेली।

संत रूप श्रवतार धरवो हें दंपति की मन मेली ॥ भादों मास पद्म उजियारी प्रगटी सकल सहेली।

याही हेत भाव दंरशावन जन्मी नवल नवेली ॥ श्राज्ञा प्रिया पीतम की विस्तारन कल केली।

निस्तारन सब जीव जगत के उपजी श्रानंद बेली ॥ नख शिख सुंदर परम मनोहर रूप चाँदनी फैली। सरस माधुरी छकन छकी है सुकी रासि सकेली॥

॥ पद् ॥

बधाई प्रेम मंजरी प्यारी की । गावोरी हिल मिल सब हेली दंपति प्राग श्रधारी की ॥ रस रहस्य प्रगटावन श्राई श्रतिशय प्रिय बिहारी की ।

करो श्रारती प्रेम प्रीत सों परिकर की सरदारी की ॥ निरखो री छवि नयन नवेली श्रलबेली हितकारी की । सरस माधुरी जय जय बोलो यूथेश्वरी हमारी की ॥

॥ पद् ॥

प्रगट भई सखी प्रेम मंजरी संत सभी श्रनुरागे री॥ चरनदासि शुभ नाम नवल तन सुनत रिसक रस पागे री॥ सुकृत उद्य भये जन्मन के विरह विपति दुख भागे री॥ निरखन को छवि छटा छवीली नयना लालच लागे री॥ ह है सुलभ महल को मारग भाग हमारे जागे री॥ संरस माधुरी ढुंज केलि सुख मिले यही वर मांगे री॥

॥ पद् ॥

त्रेम मंजरी दंपति प्यारी, स्वामिनि हो प्रिये श्राप हमारी॥
श्रमरलोक से श्राप पधारी, मंजी तुमको जुगल विहारी॥
श्राचारज हो जग श्रवतारी, करो कृतारथ नर श्ररु नारी॥
जो जन लेवे शरन तुम्हारी, रंग महल सेवा श्रधिकारी॥
श्रष्टजाम सेवा सुख भारी, सहचरी पद पावे सुखकारी॥
जुगल प्रेम मूरत मनहारी, तन मन धन सव तुम पर वारी॥
श्रचल प्रेम दीजे हितकारी, सरस सखी जावे विलहारी॥

॥ पद् ॥

स्वामिनी हमारी, श्रमरलोक से पधारी हैं।
प्रेम मंजरी सुजान जुगल प्रागा प्यारी हैं।
भेजी श्री श्यामा श्याम, प्रगट करन लीला धाम।
नाम रूप श्रति ललाम, सुँदर सुकुमारी हैं।।
श्रचारज वन के श्राप, जीवन के काटैं पाप।

मेटन संताप हेत, मनुज देह धारी है॥ प्रेम भक्ति को प्रचार, करें हरें भुव को भार।

तारें नर नार श्रमित, दया उर श्रपारी है।। इनको जो जपे नाम, प्रेम पुलक श्राठों याम।

ताहि मिलें राधे श्याम, सुज भर अंक वारी है।।

पावे निज धाम बास, दंपति युग चरण पास। निरखे नित रास रहे, छवि में मतवारी है॥ इनकी जो करे उपास, सहचरी बनजावे खास। सरस माधुरी बिलास, बिलसे सुख भारी है॥

॥ सवैया ॥

चर्ण की दासी की शर्ण गही जबतें जो लही सुख सम्पति प्यारी। दम्पति नित्य निकुंज सुधाम की सेवा मिली मुद मंगल कारी। प्रेम बिलास विहार निहारत होतं नहीं छिन एक हू न्यारी। सस रसामृत नयनन पीवत छाई छटा हिय माहि श्रपारी॥

॥ सवैया ॥

चर्गा की दासी की चर्गा उपासन सार को सार विचार गही है। जाके प्रसाद निकुंज सुधाम की सेवा सुहावन नित्य लही है। प्रेम पयोनिधि दंपति में सुरता सम मीन समाय रही है। ससी की माधुरी को रस चाखन मूक समान न जात कही है॥

॥ संत्रेया ॥

चर्मा की दासी सदा सुख रासी निकुंज निवासी सुप्रेम मई है। प्यारी पिया जू की प्राण की बल्लभा नयनन मांहि समाय गई है। रास बिलासी के रंग रंगी नित निरखत केलि निकुंज नुनई है। ससे सलोनी सुहावन सम्पति श्री गुरुदेव दयाल दई है॥

गई निज धाम चरन की दासी।
श्री शुक सखी सिद्धि परिकर में पहुँची प्रेम विलासी॥
भयो समाज सकल कुंजन में सब मन भई हुलासी।
श्री राधा मोहन हित कीनों दी निज रीभि ख़वासी॥
जुगल विहार श्रचल जागी री मिली महा रस रासी।
सरस माधुरी शरण चरण की दंपति इप्र उपासी॥

॥ पद् ॥

चरन की दासि गई निज धाम ।
दंपति श्राज्ञा पाय पधारी प्रेम मंजरी नाम ॥
रीभि मिले श्रित प्रेम प्रीति सों श्री मत श्यामा श्याम ।
सखी बनाय खवासी दीनी रंग महल श्रिमेराम ॥
हाजिर रहत हुजूर हमेशा सुख विलसत निश जाम ।
सरस माधुरी जुगल केलि रस पाई श्रचल इनाम ॥

॥ राग मांड ॥

ओजी रे म्हारा रनजीता प्यारा नीका म्हाने लागो छो गुरुराज॥ गौर वरन मन का हरनजी सर पर लम्बे बाल। भाल तिलक श्री सोहना कोई गल तुलसांरी माल॥ पीत वसन तन सज रह्याजी गुदड़ी श्रित मनहार। वागम्बर पर श्राप विराजो रसिकांरा सरदार॥ धर कर रूप श्राचारज थे तो मुरलीधर घर श्राया।
दादा प्रयाग के परम लाड़ले कुंजो गोद खिलाया॥
श्रमर नगर से श्री हिर श्राये धर कर संत सरूप।
भक्ति प्रचारन कारन जग में कीनो रूप श्रन्प॥
जो जन शरग चरग की श्राये कर मन में विश्वास।
सरस माधुरी दरश करावें दें बृंदावन बास ॥

॥ गजल ॥

तुम्हारा नाम है रनजीत रन के जीत कामिल हो।

श्रगर करदो महर मुभ पर तो मुशिकल सब मेरी हल हो॥

तुम्हारा श्रासरा एक दीद दिलवर का वसीला है।

मयस्सर हो अगर मुभको तो जलवा खास नाजिल हो॥

हो हासिल मुद्दश्रा दिलका जो कोई तुमसे हो वासिल।

अगर हो श्राप से गाफिल वो ग़ाफिल हिर से ग़ाफिल हो॥

मरहमत कर दिया हिर ने तुम्हें श्राचार्य का मनसब।

निगाहे महर हो जिसपर उसे फिर क्या न हासिल हो॥

यही है श्रारजू मेरी रहै सर पर चरन साया।

शवाना रोज दिल मेरा हरी के जप में शागिल हो॥

सरापा जिस्म ये मेरा खताओं से भरा श्रजहद।

अगर करदो नजर रहमत सरस खिदमत के काबिल हो॥

॥ गजल॥

तुम तो श्याम चरन के दास श्री रनजीत कहाने वाले ने

प्रगटे श्राप ग्राम उहरे में, श्रीमत मुरलीधर के घर में। हुये जब पांच वरस की उम्र में शुक्रमुनिद्रशन पाने वाले॥ युगलके तुम श्रति मनमें भाये, जभी तो शुक्सुनि हृदय लगाये। कुंज सेवा में दर्स कराये, श्रचारज पदवी पाने वाले ॥ शरन चरनों की में जो श्रावें, मुरादें श्रपने दिल की पावें। उन्हों की मुशकिल हल हो जावें, तुम हो पतित तराने वाले॥ श्रधम जन लाखों श्रापने तारे, हूवते भव निधि से उद्घारे। मरन जीवन के संकट टारे, श्रमरपुर वास वसाने वाले॥ विनय श्रव मेरी सुनो सरकार, नैया श्रान पड़ी मभधार। नहीं कोई तुम विन खेवन हार, संकट विकट मिटाने वाले ॥ तुम हो दीनन के हितकारी, श्ररजी सुनिये वेग हमारी। मिलादो राधा सरस बिहारी, प्रेम रस पान कराने वाले ॥ स्वामी श्रव मेरी श्रोर निहारो, दिल में कुछ तो द्या विचारो। सरसदर्शन देके दुख टारो, जुगल छवि मांहि छकाने वाले॥

॥ राग भेरवी ॥

शरण तुम्हारे श्री महाराज।
बिरद भरोसे स्वामी तेरे सब विधि तुमको लाज॥
मैं हूँ पतित, पतित पावन तुम कीजे, पूरण काज।
करो पार संसार सिन्धु से बैठा कृपा जहांज॥
स्वारथ को सब जक्त दयानिधि यह, सब भूठा साज।
सत्य सनेही हो तुम प्यारे भक्तन के सरताज॥

नवधा प्रेम परानिज भक्ती दे सत संग समाज। सरस माधुरी टेर पुकारत सुनिये श्रवण श्रवाजः॥

॥ पद् ॥

श्याम चरणदास हो श्राचारज श्रवतार,

श्रन्तरयामी श्रधम उधार ॥

तारण तरण, तुम्हारे चरण, दुख के हरन, मङ्गल करन।

पोशन भरन, मैं हूँ शरन बिनती सुनो उदार ॥

करुणा कृपा श्रगार, भवभीत देहु टार ।

हो इष्ट तुम हमार लीजे प्रभू सँभार ॥

श्रज्ञान हूँ श्रघखान हूँ नादान हूँ हैरान हूँ ।

तुम द्यासिन्धु दीनबन्धु भक्त जन भय हार ॥

बृन्दा बिपिन दो वास प्रीतम प्रिया के पास।

निरखूँ निकुंज रास कहे सरस दास खास।

त्राहिमां त्राहिमां हे दयालु सुन पुकार ॥

॥ पद् ॥

द्यारा प्यारा हमारा रनजीता नैनों का तारा ॥ कुंजो का नंदन है जग बंदन, मुरलीधर प्रान का श्राधारा ॥ प्रागदास का जीवन धन है, शोभन के वंश का उजारा ॥ किल्युग में हरि भिक्त प्रचारन,रूप आचारज धारा ॥ गौर बरन मन हरन महा प्रभू, भक्तों का है रखवारा ॥ रस निकुंज के दान करन को, भूतल श्रान पंधारा ॥ पुरुषोत्तम परधाम निवासी, संत रूप श्रवतारा ॥ करुणा सागर जक्त उजागर, जन निस्तारन हारा ॥ सरस माधुरी दर्शन करके, तन मन धन सब वारा ॥

॥ पद् ॥

सुनलो विनती मेरी तुम श्याम चरन के दास द्याल ॥ करके कृपांकी नजर हुजिये मुक्त पर कृपाल ॥ गुरु ने बतला दिया श्रापको श्राचार्य्य हमें॥

श्रासरा एक हमें श्रापका प्यारे रिछपाल ॥ श्रापके चरणों सिवा श्रौर हमें ठौर नहीं ॥

हैं भरोसे पै कमर वांधे हुवे लीजे सँभाल ॥ दीजे युग प्रेम श्रचल श्राप हमें श्राठो जाम ॥

नाम रसना से रटें होके हमेशा खुशहाल ॥ काम श्ररु कोध हैं मद मोह लोभ भारी रक्रीव ॥

मेट दीजे जी इन्हों का श्रजी श्रव सारा ववाल ॥ दिल से दुनियां की हटा दीजिये श्रव सारी हिवस ॥

चाह चित में हैं करा दीजे श्री कृष्ण विसाल ॥ मैं कर को जोरके करता हूँ चरण में सिजदा ॥

दास की लीजे ख़बर जल्द ही कर दीजे निहाल ॥ ध्यान दम्पति का रहे मन में शबो रोज मेरे ॥

सर्स को दर्श दिखा दीजिये हो दूर मलाल ॥

॥ राग बसंत ॥

हिल मिल संतः महँत मगन मन खेल वसंत मचायो। नाना रंग गुलाल थाल भर श्रद्भुत साज सजायो॥ पिचकारिन रंग बिविध भांति भर उर उतसाह बढायो। श्याम चरण के दास श्राचारज जिन को फाग खिलायो॥ स्वामी रामरूप ले सोंधा श्री गुरु श्रंग लगायो।

चोवा चंदन बूका बंदन वस्त्रन पर छिड़कायो ॥ सहजोबाई हिय हुलसाई अतर सुगंध लगायो ।

नूपीबाई पीत चमेली हार हिये पहिरायों ॥ दासी द्या कटोरी रोरी लेकर हिये सरसायो ।

चुटकी भर भर श्री ग्रह ऊपर लिति रंग बरसायो॥ श्रातमराम अरगजा लेकर श्री ग्रह शीश चढ़ायो।

गुरु छोना ने गोरोचन को तिलक ललाट करायो॥ जोग जीत ले चंवर चाव कर श्री गुरु शीश दुरायो। जुगतानंद करे मोरछल छिब लिखि हिये छकायो॥

श्याम श्रा बड़भागी सुरभर राग बसंतिह गायो।

मुक्तानंद मगन हो मन में मधुर मृद्रा बजायो ॥ रासिक शिरोमाणि राम सखी ने नाचत भाव बतायो ।

नाना गति ले ले अति लोनी श्री गुरुदेव रिभयो॥

श्री डंडोती राम शिष्य ने अबीर गुलाल उड़ायो।

संत सुघर घनश्याम दास ने जय जय शब्द सुनायो ॥

फिकन लगीं मोरी रोरिन की मनहु रंग बादर नभ छायों।

धूंधर भई बहुत मंदिर में रस समुद्र उमगायो॥ सारंगी सुर भरी बाज रही बीन सितार सुहायो।

भांभन कुनक मोचंग मँजीरा चंग सुरंग जमांयो ॥

डफ डोलक की गत श्रांत श्रद्भुत मुरली सुत मन भायो। तरंग रवाब बहु रस की दाता सुन कर मन मगनायो॥ त्रिभुवन को श्रानंद सिमट कर इन्द्र प्रस्थ में श्रायो। जहां बिराज रहे रंजीत ग्रुसाई प्रेम प्रीत कर भाव बतायो॥ संत श्रनंत रहे छक श्रानंद परमानंद प्रगटायो। उज्जवल जुगल निकुंज पुंज रस श्री महाराज छकायो॥ मदन मोहन छिब मन की भावन नयनन माहि समायो। सरस माधुरी सिंधु मीन मन ताके माहिं हुवायो॥

॥ राग बिहाग श्याम कल्यारा ॥

डहरे में बधाई माई छाय रही।

मुरलीधर घर श्रीहरि प्रगटे शोभा श्रात सरसाय रही।

कुंजो माता कौख सिरानी लिख लालन पुलकाय रही।

गुणीजन श्रावें गावें बजावें सभा सकल हरषाय रही।।

बंशावली सुनांवें ढाढी ढाढन नाच रिभाय रही।

जित देखो जित ध्वजा पताका बंदनवार बंधाय रही।।

भादों मास सुदी तिथि त्रितिया श्रद्भुत छिब उपजाय रही।

हरी हरी भूमि चहूँदिश दीखत सरिता उमंग बहाय रही।।

सरस माधुरी रंजीता लिख सुख के सिंधु समाय रही।

॥ राग माँढ ॥

सखीरी श्याम चर्गा के दास प्रगटे आनन्द मंगल रास.॥

शुक्का तीज सुहावन पावन उत्तम भादों मास।
पहर चढ़े दिन प्रकटे प्रभूजी भक्ति करन प्रकाश॥
माता कुंजो कोख सिरानी हिंथ में हर्ष हुलास।

मुरलीधर घर वजत वधाई पूरण प्रेम प्रकाश ॥ शोभन भक्न कियो वर पूरण आये श्री हिर खास । संतरूप आचारज है के मेटे भव भय त्रास ॥ शरण चरण चिल आवें जो जन पावें श्रीवन वास । 'सरस माधुरी''सेव जुगल कर निरखें रास विलास ॥

॥ राग कल्यारा॥

मंगल मूरत मुरली नन्दन, श्री कुंजो सुत सब जग बन्दन। सन्त जनन के सदा सहाई, सुखदाई आनन्द के कन्दन॥ भक्ताचारज भगवत प्यारे, भरम भूल नाशत भव फन्दन। ''सरस माधुरी" के सर्वस्वधन, बेग मिलाय देत दोऊ चन्दन॥

ा। पद् ॥

करत त्रारती सब पुर वासी। कंचन थार संजो घृत बाती जग मग जोति वहुत परकासी॥ बार बार मुख निरखत लालन तन मन की सब पीड़ा नासी। राई नोन उसारत हितसों सरस माधुरी उमंग हुलासी॥

॥ पद् ॥

पुत्र तेरो राजी रहो जिजमान । दिन दिन भाग बढ़ो या सुत को निश पति कला समान ॥ नित प्रति प्रेम भाव प्रगटावें जुगल ध्यान गुलतान । जुग जुग जीवो जग के माहीं तब लग सिस ग्ररु भान ॥ वार न बांको होय लाल को कृपा करें भगवान । सरस माधुरी खुशी रहें यह मेरे जीवन जान ॥

॥ पद् ॥

जुग जुग जीयो कुंवर रनजीत।

वहां रेन दिन वयस लाल की हरिपद में हो प्रति ॥

सूरज सम जग सुजस प्रगट हो उपजे हिये रसरीत ।

चंद कला सम भक्ति उदय हो निश्चय भई प्रतीत ॥

कुंजो मात दुलारे प्यारे कृष्ण चंन्द्र के भीत ।

सरस माधुरी पुरली सुत के गावत मंगल गीत ॥

॥ पद् बरस गांठ॥

बरस गांठ रनजीत लाल की एसे ही नित आवो।
पुर नारी हिल मिल के सारी रंग बधाई गावो॥
नाच गाय नाना गति लेके लालन लाड लड़ावो।

दरशन कर श्री मुरली सुत के अपने नैन सिरावो ॥ प्रेम साहित पलना में ललना लालन भमक भुलावो । किलकन हंसन निहार प्यार कर परमानँद प्रगटावो ॥ अपनो तन मन धन अरपन कर छिब लिख बिल बिल जावो । सरस माधुरी आनँद मंगल अमर लोक पद पावो ॥

॥ पद मलार ॥

मास भादों मन भावन आयो।

जन्मोत्सव रंजीत लाल को उहरे घर घर छायो ॥
नारि नवेली सकल नगर की हिल मिल सो हिल गायो ।
द्वार द्वार पर ध्वजा पताका सुंदर सदन सजायो ॥
पुर वासी सबनी सुखरासी भाग भलो कर पायो ।
जहाँ नर तन धर श्री पुरषोत्तम संतरूप प्रगटायो ॥
परमानंद मगन नर नारी प्रेम श्रंग पुलकायो ।
सरस माधुरी ले निज गोदी लालन कंठ लगायो ॥

॥ वरस गांठ पद राग विलावल ॥

वरस गांठ रंजीत लाल की मुरली घर हरषाये हो।

ब्राह्मण चत्री वैश्य भारगव निज घर न्योत बुलाये हो।

अँग उवटन कर वा न्हवायके कुंवर वस्त्र पहराये हो।

पीत रंग पोशाक विभूषन कंचन अंग सजाये हो।

चोक पूर चंदन चोकी पर शुचि आसन विछवाये हो।

कुंजो नंदन ले गोदी में प्रेम सहित पधराये हो।

कुंभ कलश अस्थापन कर द्विज पुनि संकल्प कराये हो।

धूप दीप नैवेद्य अरप के हिर के भोग धराये हो॥

केसर चंदन लाल भाल पर सुंदर तिलक रचाये हो।

स्वस्ति वचन बोजत भये सबही नारिन मंगल गाये हो॥

दान गुरू दीने विप्रन को आदर सहित जिमाये हो।
दई दत्तना मन प्रसन्न हो किये सवन मन भाये हो॥
भूवा बहिन भतीजी जिनहूको भूपण वस्त्र दिवाये हो।
कुल की रीत करी सब विधि सों तन मन में पुलकाये हो॥
नोछावर कर नवल कुंवर पर नेशिन नेग चुकाये हो।
सरस माधुरी निरख ललन छवि अपने नैन सिराये हो॥

॥ छटी के पद् ॥

॥ राग जंगला ॥

उत्सव छटी त्राज सुखदाई ।

भये दिना छै के छिवराशी मुरली सुत मन हरण महाई ॥

नायन चोक पूर तन पुलिकत चंदन चोकी दई विछाई ।

गोद लिये लालन श्री कुंजो सिहत सनेह दई वैठाई ॥

संध्या समय महा मन भावन आठे तिथि उत्तम मन भाई ।

उमंग रह्यो आनंद सदन में जसोदा दादी हिय हरणाई ॥

घर घर से पुर की सब नारी भूषण वसन अंग सज आई ।

प्रागदास के पहुँच महल में गावत मंगल गीत वधाई ॥

रोली मोली अज्ञत चंदन ऋतु फल श्रीफल थाल भराई ।

धूप दीप नैवेद अरप के अलियन छल देवी पुज वाई ॥

छात आरतो करत सवासान अर्घ वढाय करी मन भाई ।

देत असीस पसार गोद निज चिरंजीवो रंनजीता माई ॥

कुल की बधू प्रेम सों सब मिल बांटत हैं पकवान मिठाई। मेवा मिश्री सों नारिन की मोद सहित ले गोद भराई॥ नोवत बजत द्वार पर नीकी भांभन भनक श्रोर सहनाई। सरस माधुरी लिख लालन छांबे वार दोउ कर लई बलाई॥

॥ इटी पद् गजल ॥

छटी उत्सव का सुंदर दिन ललन रंजीत का आली।
नृत्य कर गावें पुरनारी बजावें प्रेम कर ताली॥
बतावें भाव बहु विधि से करें रस रंग मिल सारी।
ललन की जावें बलिहारी निरख नैनन अदा वाली॥
लिये सुत गोद में बैठी मगन मन मात श्री कुंजो।
पिलावें पय परम हित से भई लख रूप मतवाली॥
च्यवन कुल की नवल नारी करें नोछावरें सारी।

उतारें आरती हिल मिल उछालें फूल भर डाली ॥ सरस सोहन है मन मोहन सलोना छोना मुरलीधर। छटा छिन में छकी अंखियां टलें निहं एक छिन टाली॥

॥ गजल ॥

छटी के दिन सकल नारी कहै हिल मिल बचन सारी। लला रनजीत अप्रोतारी श्री कुंजो ने जाया है॥ जनम से एक दिन पहिले दिये माता को निज दरशन । ख़ुशी है। निरख नट नागर नैन जल प्रेम छाया है॥ हुए पैदा जभी लाला हुआ सब घर में उजयाला। बजे बाजे हैं अनहद धुन अजब आनंद पाया है॥ महक छाई थी महलों में अतर काफूर चंदन की।

भई बिरती मगन मन की महोत्सव शुभ रचाया है।। जनम की कुंडली लिख के मगन हो जोतशी वोला।

यह श्रीर लग्न से सावित हरी नर वन के श्राया है॥ नगर डहरे के नर नारी हैं सुकृती सव धरम धारी।

परम पावन हुआ भृगु कुल सुजस अग में सवाया है॥ सफल सबने जनम माना ललन को अंश हरि जाना। सरस मुख बोल जय जय धुन चरन में चित लगाया है॥

॥ आशीर्वाद पद ॥

॥ राग भैरवी तथा पीलू बरवा ॥

तिहारो कुंजो जुग जुग जीवो लाल।

रनजीता हरि को मीता संतन को प्रतपाल ॥ बढो वयस दिन ही दिन टूनो न्हात खसो नहिं बाल ।

मुरलीधर को मन बांछित फल सदा रहो खुशहाल ॥ पद्धति प्रेम प्रकाश करन को जनमे आन दयाल । सरस माधुरी रस बरषा कर रसिकन करें निहाल॥

॥ पद् ॥

होने तुम्हारे घर में मैया कुंजो नित नित शादियां। पुत्र जनम सम और न आनंद सुनो यशोदा दादियां॥ पुर घर घर से नारी सारी देन बधाई श्रादियां। नाचें गावें भाव बतावें मन में श्रात मगनादियां॥ कुल कुटम्ब की सखी सहेली फिरें प्रेम उद्मादियां। सरस माधुरी हिये हरष निज रंग बधाई गादियां॥

॥ पलना राग मलार ॥

ललन रनजीता पलना भूलें।

श्रीमत कुंजो मात भुलावत भोटा दें श्रनुकूलें ॥ भूल रहे ललना पलना में,

पौढे श्रानँद मूर्ले ॥

मंद हँसन किलकन लखि सुत की मैया सुधि बुधि भूलें ॥ कुल की नारि निरिष शिशु लीला करत केलि कौतूलें । सरस माधुरी देख हगन छबि तन मन में श्रति फूलें ॥

॥ पलना गंजल ॥

पालने भूलें सखीरी श्राज मुरली नंद हैं।

मान लो निश्चय यही तुम खास ये गोविन्द हैं॥ है सरापा नूर की मूरत मनोहर श्रापकी।

च्यवन ऋषि महाराज कुल में प्रगटे पूरन चंद हैं॥ है श्रदा इनकी निराली निरखो श्राली नैंन भर।

रसकी चितवन चित्त चोरे श्ररु हँसे श्रित मंद हैं॥ भक्त शोभन वंश में हिर श्रंश श्राके श्रवतरे। भक्ति जो इनकी करे कट जावें जम के फंद हैं॥ जो भजन इनका करे और ध्यान हिरदे में धरे। चाव से चिंतन करे प्रगटावें परमानंद हैं॥ निज हरी ने धारा नर तन जगत के उद्धार को। शरन में जो श्राये इनकी सब कटें दुख दंद हैं॥ ससी तन को मन को धन को वारो छवि रनजीत पर। श्रुति कहैं परिब्रह्म जो ये कुंजो के फरजंद हैं॥

ः ॥ मंगला आरती दोहा॥

प्रातिह सैया से उठे, श्री रणजीता लाल । कुंजो माता प्यार कर, गोद लिये तत्काल ॥ चिबुक प्रलोवत प्रेम सों, मस्तक फेरत हात । लित कपोलन चूम मुख, मन में श्रित हरवात ॥

॥ राग प्रभाती ॥

प्रात समय श्री रनजीता को कुंजो मात जगावें। उठो तात निज बदन दिखावो लख मम नैंन सिरावें॥ मित्र मंडली बालक श्राये खेलन हेत बुलावें।

दरस करन को खड़े द्वार पर तुरुहें देख हरवार्वे ॥ कुत कुटुरुव के सब नर नारी देख दरस मगनावें।

मोद सिहत ले गोद प्यारकर बहु बिध लाड लड़ावें॥ सुनत वचन मुरली सुत जागे मंद मंद मुसकावें। हरष हृदय हरि सुमरन लागे श्री गुगाज मुव गावें॥ मैया धोय कमल मुख लालन कुंवर कलेउ करावें। सरस माधुरी करत श्रारती जय जय किह बिलजावें॥ ॥ पद भैरवी॥

श्ररी हां रनजीता जागे ॥ मुरली सुत कुंजो के नंदन मन में श्रित श्रनुरागे ॥ माता गोद मुदित लिये लालन, मुख मृदु चूम खिलावत ख्यालन प्रेम प्रति में पागे ॥

सखा मंडली हिलमिल ग्राई, मैया ने लिये भवन बुलाई। मेवा मिसरी कुंवर कलेऊ। हँस हँस करत सुभागे॥ ग्रांगन महल पुलक तन खेलत, सखा कन्ध पर भुज निज मेलत सज श्रंग पियरे वागे॥

सिर चौतनी बार घुंघरारे, नैंन विशाल प्रेम मतवारे। मन्द हँसन कर मनको मोहत निरतत माता श्रागे॥ श्राचारज श्री हरि बन श्राये, च्यवन वंश के भानु कहाये। सरस माधुरी चरण वसे चित बार बार वर मांगे॥

॥ पद परभाती ॥

जागे श्याम चरणदास सन्तन प्रतिपाला।

भक्तन के प्राण प्रिय मुरलीधर लाला॥

श्रीमत शुकमुनि शिष्य परम है कृपाला।

शरणागत रक्तक प्रभू दीन के दयाला॥

दरशन कर मुदित भये वृद्ध तरुण बाला।

जै जै बलिहार बोल निरख छवि निहाला॥

गावें गुगा साधु सकल राग श्राति रसाला । सारंगी श्रक मृदंग ले मिलाय ताला ॥ श्रारती उतार करें स्तुति तत्काला ।

सरस माधुरी के स्वामी सर्वस धन माला ॥

॥ मंगल श्रारती पद् ॥

॥ राग कालंगड़ा ॥

मंगल श्रारती करो रण्जीता।

जो हैं श्री हिर जी के मीता॥ चो मुख चित कर भाव को घृत भर।

श्रद्ध श्रद्ध वार प्रकट करो प्रीता।। नैन नेह जल श्ररगा श्ररपो हरष निरख गुगा गावो गीता॥ पहुँचों जाय परम पद मांहि मन में करिये सत्य प्रतीता॥ सरस माधुरी कृपा गुरुन सों निश्चय शिष्य हो परम पुनीता॥

॥ पद् ॥

श्रीमत रणजीत लाल उठत नित्य प्रातकाल।

श्री गोपाल श्री गोपाल नाम धुनि लगावें ॥ राधेश्याम राधेश्याम श्यामा श्याम श्यामा शयाम ।

श्रति ही श्रभिराम रिसक कह कह हरवावें ॥ हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।

कृष्ण कृष्ण हरे कृष्ण बोलत सुख पावें ॥ मधुसुदन मदन मोहन नंदलाल नटनागर। गिरवरधर श्री गोविन्द गोपीनाथ गावें ॥ गोकुल के चन्द चीर चोर चपल यशोदा नन्द ।
नन्द के किशोर कान्ह बोलत बलिजावें ॥
मुरली के धरन हरन मनके माधव मुकुन्द ।
श्रानँद के कन्दन को हेतकर लड़ावें ॥
नैन मृंद धरें ध्यान करें रूप रस को पान ।
छिब में ग़लतान दरस देखकर छकावें ॥
तात मात मन श्रानन्द निरख के मुखारविन्द ।
सरस माधुरी खरूप लख लख मगनावें ॥
॥ शृङ्गार पद श्रासावरी ॥

कुंजो मैया करन लगी शृंगार।

ले निज गोद मोद सों लालन कर फेरत पुचकार ॥ कुरता टोपी पीत सजाये श्रद्धत श्रति मनहार ।

जगमग गोटा जरी छवि भरि चहुँ दिशि कोर किनार॥ सिर घुंघरारे बार सुहावन बैनी पीठ बनी रुचकार। भाल डिठोना दियो दृष्टि डर राई नोंन उसार॥

कजरा नैंन लगाय नेह कर पहराये गलहार।

कठुला कंठ मांहि धारन कर कियो श्रधिक ही प्यार॥ कानन मोती करा कनक कर कटि कौधनि भुनकार।

पायन में घुंघरू पहराये जिनकी श्रजब बहार ॥ सिख सो नख लों सज सुंदर तन सुख चूम्यो चुचकार ।

ात्य सामाधुरी मगन भई खख बोलत मुख बलिहार ॥

॥सखान को पद्॥

॥ राग विलावल ॥

मुरली नंन्दन हम हिग श्रावो। तरस रहीं अखियां दरशन को चन्द्र वदन निज हमें दिखावो॥ मिलो श्रान प्रिय प्रान हमारे श्रव निहं नैंक विलम्ब लगावो॥ हँस भेटो भुज सरस माधुरी श्रमृत सम मुख बचन सुनावो॥

॥ कलेऊ को पद राग तोड़ी ॥

कलेऊ करत श्री रनजीत।

हँसत हिलमिल वालकन संग, परस्पर श्रति प्रीत ॥ मधुर मांखन श्रौर मिश्री, पात हिल मिल मीत ।

देत लेत सहेत सबको बोल वचन बिनीत॥ बिबिध बिध पकवान श्ररु मिष्टान परम पुनीत।

हरष खात खवात सबको संख्य रस की रीत ॥ नारि पुर की परम सुन्दरि गात मंगल गीत।

सरस को दीनों कृपा कर कुंजो कनिका सीत॥

॥ मैया कुंजो के गाने का पद्॥

॥ राग बिलावल ॥

दूर खेलन जिन जाहु ललारे। बाहर चौक बैठ बालन संग, केलि करों मम प्रागा पियारे॥ चकई भौरा गेंद भुन भुना, जो चिहये लेजिये सारे। मैं हूँ महल भरोखन भांखूं निरखूं बाल बिनोद तुम्हारे॥ सुंन माता के बचन लाड़िंले, बाहर हँस मुसकाय सिधारे। निरिंख छकी छिब सरस माधुरी, रनजीता पर तन मन वारे॥

॥ श्री रनजीत पद ॥

दे माता मोको हरि जप माला। या सम श्रीर खिलोना नाहीं, जपूं निरन्तर नाम ग्रुपाला॥ और खेल मन में नहिं भावे, श्री हरि जप है सबसे श्राला। हरि हरि जप से प्रेम प्रगट है, कटे करम बन्धन ततकाला॥ जनम मरण हरि जप से नाशें, रीभ दरस दें श्री नंदलाला। सरस माधुरी रस सुमिरन में, ओर बात सब जग जंजाला॥



अभ्यान्त्रभाष्याः भाषाः भाषाः

श्री प्रेम मंजरी अवतार लीला।

4444444444

॥ श्री राधा सरसं विहारिगो नमः॥

॥ आरती॥

श्रारती करो राधावर की श्रीवंशीधर की ॥ देखो पृष्ठ २१७

श्री राधिकावर श्याम श्रति श्रिभराम युग सरकार हो। देखो पृष्ट २१८

॥ पद् ॥

जय कुंज विहारिन श्री राधे जै श्रीमत कुंज बिहारी की। जय गीर श्याम श्रीभराम रिसक जय नील पीत पटधारी की। जय शीश चन्द्रका मुकट सजे जय चन्द्र बदन सुखकारी की। जय मेकुटी काम कमान कसी जय नैन बान श्रीनेयारी की।। जय वेसर नाक बुलाक लसे जय मंद्र हसन मनहारी की। जय गोल कपोलन श्रलक छुटी श्रलवेली नागनि कारी की।। जय नख सिख भूषन अंग सजन सुंदर जोरी सुकुमारी की। जय रास विलासी सुख रासी इक श्रान देह दो धारी की।। जय रिसकन की संपति दंपति हिर भक्तन के हितकारी की। जय हुँवर किशोर किशोरी जोरी सरस माधुरी प्यारी की।।

॥ दोहां ॥

श्री प्रियाजी वचन प्रीतम सें-चित्त कहाँ है श्राप को चतुर शिरोमंगि राय ॥ मो सों कुछ श्रंतर नहीं खोल कहो समभाय।

॥ दोहा ॥

श्री लालजी वचन-मेरे मन की वारता तुम सब जानन हार। कहा कहूं में श्रापसों, लीजे समभ विचार॥

॥ दोंहा ॥

श्री प्रियाजी वचन— जान गई गति श्रापकी, जीवन प्रान श्राधार। लेन चहो श्रव श्रवनि में, तुम अंशा अवतार॥

॥ दोहा ॥

सखी वचन-लेंन श्रंश अवतार को, कारन कहो सुनाय। कोन हेत कहां अवतरो, सो कहिये समकाय॥

॥ दोहा ॥

श्री लालजी वचन-

सुनो सखी मम भक्त इक, शोभन जाको नाम।

भयो प्रगट भूतल विषे, भक्ति करी निषकाम ॥ दे दरशन निज भक्त को, मैं दीनो वरदान।

श्रष्टम पीड़ी अंत में, प्रगद्दं तव कुल आन ॥ भिक्त प्रचारूं जक्त में, धर आचारज रूप।

करूँ प्रगट शुक संप्रदा, त्रद्भुत त्रधिक त्रन्य ॥

॥ सोरठा ॥

सखी वचन— भिन्न भिन्न समभाव, लच्चण शोभन भक्त के। हमें सुनन को चाव, चतुर शिरोमणि सांवरे॥

॥ पद् ॥

श्रीकृष्ण वचन- नृत गान करके

शोभन भक्त कहूँ गुन गाई।

सुनो सखी हित चित दे सब ही कथा परम शुचि मो मन भाई भिक्त भगवंत गुरून में मन कर सांची प्रीत लगाई। तन मन धन अरपन कर दीनों शृद्धा अरु विश्वास बढ़ाई। नाम धाम लीला सरूप में निश्चल अपनी लगन लगाई। मगन मानसी सेवा में नित सहचिर भाव करी सिवकाई। हु श्रनन्यता धार हिये में जुगल ध्यान में सुरत समाई। तन जग में मन रंग महल में देह दशा सब ही बिसराई। हा प्रीतम कव मोहि मिलोगे प्रान रहे तुम बिन अकुलाई। प्रात कव मोहि मिलोगे प्रान रहे तुम बिन अकुलाई। प्रात समाधरी उनके कुल में लेहुँ अंश श्रवतारिह जाई। सरस माधरी उनके कुल में लेहुँ अंश श्रवतारिह जाई। सखी बचन-बलिहार ! बलिहार !! प्रीतम प्राग् आधार। श्रापके शोभन भक्त को प्रसंग सुनकर हम

परम प्रसन्न भई । यव अंशा यवतार कोन प्रकार प्रगट करोंगे सो श्री मुख सो बाज़ा करनी चाहिये।

॥ दोहा ॥

श्री कृष्ण:--हम श्रंशी तुम अंश सत्र, सुनो सखी चितलाय। प्रेम मेजरी को श्रमी, लीजे यहां बुलाय॥

सर्खी-हे प्यारे में प्रेम मंजरी जी के पास जाती हूं और श्रभी उनको बुलाकर लाती हूं ॥

श्री कृष्णः-प्यारी सखी तुम जावो और श्रेम मंजरी जी को लावो।

॥ दोहा ॥

श्री लिताजी:-मन भावन हो जुगल की, प्रेम मंजरी वाम । तंग चलो श्रव वेग तुम, याद करत श्री श्याम॥

त्रेम मंजरी:-(हाथ जोड़ कर) हे श्री लिलता जी दासी श्रापक संग चलने को तैयार हैं। पधारिये॥

दोनों श्रीकृष्णसन्मुख जाती हैं।

॥ दोहा ॥

प्रेम मंजरी:-जय जय प्रीतम परम प्रिय, जीवन प्रान श्राधार। जो श्राज्ञा कह दीजिये, निज मुखवचन उचार॥ श्री कृष्णः--

जुगल प्रेम की मूर्ति तुम, प्रेम मंजरी नाम।

वसत निरंतर हम निकट, निज बृन्दावन धाम॥

हम अंशी तुम श्रंश हो, सब शुभ गुन गन श्राम।

तुमको करनो उचित है, खास एक निज काम॥

शोभन भृगुकुल विदित जग, च्यवन ऋषीश्वर वंश।

तामें तुम जा श्रवतरो, हो तुम मेरी श्रंश॥

(ममैवांशो जींवलोंके जीव भूत सनातन) या प्रकार से हम श्रीर तुम एक ही रूप हैं।

॥ दोंहा ॥

कुंजो!सम श्री देवकी, मुरलीधर बसुदेव। तिनके प्रगटो पुत्र ह, समभो मम निज भेव॥ प्रेम मंजरी-प्यारे प्रीतम लाडले, मेरे जीवन प्रान। लेंन श्रंश श्रवतार को, कारन करो बखान॥

श्री कृष्णः-होत धर्म की हानि जब, पाप बढ़त संसार।
तब ही में सखी लेत हों, पृथ्वी पर श्रवतार॥
साधुन की रक्ता करों, पापी डारों मार।
थापूँ रीत सुधर्म की, युग युग माहि विचार॥

॥ राग कालंगड़ा ॥

श्रंशकला अवतार धरूँ में।

जब जब होय धर्म की हानी निज आचारज रूप करूँ में।
अकरम करत जीव संसारी सुकरम उनके हिये भरूँ में।
प्रेमा भाक्ने प्रचारूँ जगमें सकल सूमि को भार हरूँ में।
विश्व चराचर में मैं व्यापक काल कर्म से नांहि डरूँ में।
सरस माधुरी निज भक्तन को कर गहि परिकर मांहि वरूँ में।

प्रेम मंजरी-हे प्राननाथ अभी तो आप श्री कृष्ण भवतार धारण करके भू को भार उतार ही चुके हैं। अव फिर अंश कला अवतार धारन करने की कहा आवश्यकता है सो आज्ञा करें।

श्री कृष्ण-

यवन अवनि में वढ़ गये, कियो अधर्म प्रचार।

हिंसक निंद्क धर्म के, अनगिन दुष्ट अपार ॥

कर्म कथा जगमें चली, धर्म कथा कहुँ नांहि।

ताते सब जिय पर गये, काल चक्र के मांहि॥ वेदन को उलटो अरथ, प्रगट कियो संसार।

मत अनंत प्रगट भये, भूल गये करतार ॥

हे प्रेम मंजरी प्यारी इन कारण सों अंशा अवतार लेने की अत्यंत आवश्यकता है सो अब तुम भूतल में जावो और अंशा अवतार प्रगट कर कलियुग के जीवन को चितावो।

प्रेम मंजरी--

हे प्रान प्यारें! जक्त के जीवन के कल्यागा करन के निमित्त आपने ज्ञान जोग वैराग त्याग प्रगट कर राखे हैं। ये तीनों जीवन को जीवन मुक्क प्राप्त कर रहे हैं। मेरे विचार में तो अंशा अवतार प्रगट करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

॥ दोहा ॥

श्री कृष्ण वचन-

ज्ञान जोग वैराग सब, तीनों पुरुष सरूप। प्रकृति प्रेस भक्ती बिना, करले अपने रूप॥

हे प्रेम मंजरी तुम साचात प्रेम भक्ति की मूर्ति हो ज्ञान जोग वैराग तो तुम्हारे पुत्र हैं तुम इनकी रचा करने को सामर्थ हो तुम्हारी कृपा विना ये तीनों स्वतंत्र जीव के उद्घार करने में समर्थ नहीं हैं।

॥ दोहा ॥

ज्ञान योग वैराग गरा, प्रेम वरावर नांहि।

प्रेम भिक्त वश हम सखी, समभ लेहु मन मांहि ॥ राति स्नेह अरु प्राय पुनि, राग और अनुराग ।

रूढ़ और आधिरूढ़ है, सोदन है बडभाग ॥

मादन उनमादन साहित, ये दस नाम तुम्हार । प्रेम मंजरी तुम सुनो, प्रानन की आधार ॥ जो जन प्रेमा भक्ति को, करें प्रपंच विसार। ऐसें प्रेमी भक्त को, करूं हिये को हार॥

॥ पद काफ़ी हिर प्रिया तिताल ॥

प्रेम मंजरी वचन-

सुनहु विनय मेरी राधावर ।

तुम सम नहिं कोई मोको प्रियवर ॥

जाऊं अव में भू मराडल पर ।

प्रेमा भिवत प्रचारूं घर घर ॥

कुंजो मानु पिता मुरलीधर ।

तिनके जन्म लेहुं सर्वेश्वर ॥

श्रारण लेंहुं में जो नारी नर ।

तिन्हें लीजियो परिकर में वर ॥

सरस माधुरी कहत जोरे कर ।

सीस नवाय नेह जल हम भर ॥

॥ दोहा ॥

श्री लालजी वचन-प्रेम मंजरी जकत में, जाबो जीवन प्रान । शरणागित कर जियन को, करो नाम निज दान॥ खसरूप पर रूप को, सबको दीजे ज्ञान। रस रहस्य समभाइयो, श्रीर मानसी ध्यान॥ मंत्र सुनावो जाहि तुम, जीवन मुक्ता होय । जन्म मरण वाके मिटें, धाम बास लहे सोय ॥

प्रेम मंजरी - ॥ पद विहाग ॥

जुगल लाडले भूल न जाना परम धाम में वेग बुलाना।
रचूं नहीं जंजाल जगत में श्रिण गहे की लाज निभाना॥
॥ अंतरा॥

विरह वियोग वनोरहे निश्वित लगन अगनहिये में प्रगटाना॥
हा हा प्यारी कुंज विहारी ध्यान मानसी में तुम आना॥
राधे श्याम नाम रसना सों नितही जीवन प्रान जपाना॥
रहे चट पटी हगन दरस की पद पंकज मस्तक पर साना॥
सेवा कुंज धाम बृंदावन तहां प्रिया पिय दरस दिखाना॥
रास विलास प्रगट कर अपनो निज छवि अपनी मांहि छकाना॥
वांकी भांकी अजब अदा की दंपित हिये निकुंज बसाना॥
सरस माधुरी की सुधि रखना अन्त नहीं कहीं और ठिकाना॥
श्री प्रियाजी वचन--

हे प्यारी प्रेस मंजरी सेरे निकट आ और हिये से लगजा। (ऐसा कह कर श्री प्रियाजी प्रेम मंजरी को अपनी दोनों मुजाओं में भर कर परम प्यार करती हैं और प्रेम मंजरी के मस्तक पर अपना अभय हस्त घरती हैं। प्यारी जी के गले लग के प्रेस मंजरी रोती है और दोहा रोती हुई वोलती है)।

॥ दोहा ॥

विद्धरन विरह वियोग दुख, श्यामां सह्यो न जाय। हाय हाय कैसी कहां प्रान रहे अकुलाय॥ श्री प्रियाजी--

हे प्रेम संजरी तुमको से अपने चित्त से कभी भी नहीं भुलाऊंगी और निज धास में अपने निकट वेग ही बुलाऊंगी॥ प्रेम संजरी ''जो आज्ञा प्यारी"—

श्री लालजी वचनः-

जो जो वर तुमने चहें, सब हम दीने दान। प्रेम मंजरी वचन सम, सत्य करो परमान॥

प्रेम मंजरी वचन-

जो आज्ञा प्राण प्यारे । ऐसा कह कर हाथ जोर प्रणाम कर जाती है। परदा गिरता है॥

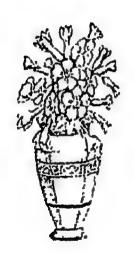
॥ पद् ॥

(अंगना मंगना की चाल में सिखयों के गाने का)

स्वामिनी हमारी अमरलोक से पधारी हैं। प्रेम मंजरी सुजान जुगल प्रान प्यारी हैं॥ ॥ श्रंतरा॥

भेजी श्री श्यामा श्याम, प्रगट करन लीला धाम । नाम रूप अति ललाम सुंदर सुकुमारी है ॥ श्राचारज वनके आप, जीवन के कार्टें पाप।

मेटन संताप त्रिविधि मनुज देह धारी है ॥
प्रेम भिवत को प्रचार. करें हेरें भुव को भार।
तारें नर नारी आमित दया उर अपारी है ॥
इनको जो जप नाम, प्रेम पुलक आठों जाम।
ताहि मिलें राधे श्याम भुज भर श्रंकवारी है ॥
पात्रें निज धाम वास, दंपित युग चरण पास।
निरखें नित्त रास रहें छिव में मतवारी है ॥
इनकी जो करें उपास, सहचरि वन जावें खास।
सरस माधुरी विलास बिलसें सुख भारी है ॥



२१२१२१२१२१२१२१२१२१८

श्री शुकमुनि श्याम चरगादासाचार्य प्रथम मिलन लीला।

॥ श्री राधा सरस विहारिणे नमः॥ श्रीमत श्याम चरणादास शुकाचार्थ्य प्रथम मिलन

॥ मंगला चरण्॥

॥ दोहा ॥

जें जे जे श्री जक्र ग्रुर, वेद्व्यास भगवान।

तासु तनय मुनिराजवर, श्री शुक कृपा निधान ॥ वरनों वाल विनोद कछु, श्री रनजीत द्याल ।

मुरली सुत मंगल करन, कुंजो माता लाल ॥ सम्वत सन्नह सी गिनों, त्रह ऊपर पुनि साठ ।

श्री शोभन की जानिये, पीढी भई जु आठ॥ वर पूरन कीनों होरे, लियो अंश अवतार।

भगटे डहरे ग्राम में, रूप संत को धार ॥

पांच वर्ष की वेस सें, उठें प्रात ही काल।

गावें गुन गोविंद सुख, श्ररु फेरें कर साल ॥

॥ राग कालंगड़ा ऋौर प्रभाती ॥

श्री मत रनजीत लाल, उठत नित्य पातःकाल । श्री गोपाल श्री गोपाल नाम धुनि लगावें ॥

देखो पृष्ट ४७६

कुंजो मेया करन लगी श्रृंगार । देखो एष्ट ४७७

॥ दोहा ॥

मेवा मिश्री विविधि विधि, श्ररू पकवान रसाल ।

करन कलेऊ लाल हित मा लाई भर थाल ॥

श्राय गये ताही समय पुर के बालक बृद ।

कुंजो माता निरख तिन पायो परमानंद ॥

श्रथक २ दोनान में मोदक मेवा दीन ।

करत कलेऊ सखन संग, रनजीता परवीन ॥

॥ पद् भैरवी ॥

कलेऊ करत श्री रनजीत ॥ देखो पृष्ठ ४७⊏

ा दोहा ॥

सीतल जल पुनि पान कर, ले श्रचवन ततकाल। सखन संग खेलन चले, श्री मुरलीधर लाल॥

॥ राग विलावल ॥

श्री कुजो मैया वचन— दूर खेलन जिन जाहु ललारे॥

देखो पृष्ठ ४७८

॥ पद चाल थियेटर ॥

(भरके जाम भरके जाम इसके वजन पर)

महाराज-राधे श्याम श्यामा श्याम यही रटे जावो ॥ याही से मन लावो। वालक बृंद्॥ ज्यों ज्यों जपो प्यारे करके उमंग। प्रेम की भक्ती की वाढे तरंग। कृष्ण के ध्यान में हो जाना ग़लताना छब में छकानां याही में श्रानंद। सतचित घन। नंद नंदन। करिये मनन। धन धन हो हिर कीरतन।

॥ अन्तरा॥

करिये सज्जन। सर्वस धन प्रभु को भजन॥ किये जा ॥राधे॥

रेंन दिनारटो मनको लगाय, बांकी भांकी बसे नैनों में श्राय। सर्स की माधुरी मोहनी मूरति, सदा रहै हिय मांही छाय॥ छवि में छकाय, बलिबलि जाय, तन मन हो। चंद सो वदन। सोभा को सदन। मोहन मदन। वाही को मनन। किये जा॥

॥ दूसरी तरह धुनि थियैटर ॥

सखा गग्-

प्रान प्यारे रनजीत कुमार, नदी पे चलें देखें बहार ॥ हो देखें बहार ॥

हिलमिल के चलें संग, मनमें येही उमंग । प्रगटावें प्रेम रंग, पुलकें हमारे अंग ॥ जीवन प्रान ॥

चुवकी लेकर गोता मारे, नीर उछालेंगे हम यार । पैरेंगे वद होड़ परस्पर करें केलि बहु विधि मनुहार ॥ कूदेंगे उत्पर से इक इक, हँसिक हरदम वारंवार।
जल छींटा छिरकें मन भर के प्रगट करें श्रनुराग श्रपार॥
सुनों कान दिलाजान महरवान॥
सरस के हो सर के सरदार हो सर के सरदार॥
प्राम्य प्यारे॥

॥ पद् ॥

(हिलमिल रूम भूम करो जी सेल के वजन पर)

महाराज-.

हिलमिल चलोरे सखा सब मेरे संग ॥ खेलना कूदना नई प्रकार हो प्यारे प्यारे । मनमानी लासानी लीला श्रपार करेंगे सारे ॥ रंग ॥

पर्म सुजान हो, जीवन प्रान हो, गुन के निधान हो दिल में उमंग । मोहिन मूरित मित्र तुम्हारी, विलहारी छवि जपर वारी ॥ अंग ॥

नंद के लाल के, प्यारे ग्रुपाल के ॥ नाम जपें करें केलि श्रमंग । सरस माधुरी मोहन वांके ॥ श्रलवेले श्रति श्रजब श्रदा के ॥ ढंग ॥

॥ समाजी दोहा ॥

बाहर निकसे भवन के, श्री मुरलीधर नंद । तारा गन सम सखन में, सोहत हैं ज्यों चंद ॥

॥ पद राग लावनी॥

श्री रनजीत द्याल, वाल गोपाल संग निज लीनें। मंडली सनोहर सखन सहित तव गवन नदी तट कीने॥

॥ अन्तरा॥

ब्राह्मग् श्ररु वैश्य पुनीत मित्र मिल सारग मांही जावें। हरि नाम जपें हरपें हिय में हरि गुगा निज मुखसे गार्वे । कर प्रेम परस्पर प्यार सविह हिल मिल के हित सरसावें। हँसि हँसि हरपें हिर रंग रंगे तन मन प्रमुदित पुलकावें ॥ पहुंचे जव नदी किनारे निज निज अंग बस्त्र उतारे। पैठे निरमल जल धार सकल मिल पैरन लगे प्रवीनें ॥१॥ चुवकी लेवें जल मांहि कोई कर भरके नीर उछालें। कोई पार जांय वद होड उलट कर यावें यति हीं उतालें ॥ श्रानंद सिंधु में केलि करि रहे ज्यों हंसन के वाले। कोत्रहल करें श्रनंत लखें जो जन हों मन खुशहाले॥ न्हा कर नदिया तट श्राये निज वसन श्रंग पहराये। कंकर घस के कियो तिलक जपन लगे मुख हरिनाम नवीनें ॥२ ज्यों ग्वालन संग गुपाल सजें त्यों वालन में रनजीता। कहैं हरे राम श्री कृष्ण कृष्ण अगटाय परस्पर प्रीता ॥ पूनों तिथि पावन सरद पहर दिन चढ़ो सु परम पुनीताल एक गुरु वार महा सन हार प्रगट भये तहां इक श्राम श्रितीता ॥ लख वाल बुंद सगनाये मुख संद संद मुसक्रींय । कर कृपा दृष्टि शुकड़ेव मुनी कुंजो सुत हितकरे चीनें

लीला बालन की निरख मुनिश्वर मन मांही हरपाये। सब ही लड़कन दिसि देख हयन मुरली सुत और लगाये॥ भाला कर दे लिये निकट बुला गोदी ले कंध चढ़ाये। वट की छाया तर बैठ गये मुनिवर मन में मगनाये॥ हिये लगा प्यार बहु कीने दो पेड़े कर में दीने। मुख सरस माधुरी वचन कहे किये शिष्य तुम्हें रंग भीने॥ श

॥ राग भैरवी ॥

कहन लगे बचन व्यास के नंदन ॥

कर धर शीश श्रसीसत सत ग्रह सुन शिशु मम चित चंदन ॥

है हो तारन तरन जगत में काटोंगे भव फंदन ।

श्रमित उचार जीव ले जेहो करि हो पाप निकंदन ॥

मंत्र लेई शरण गति है तुम श्रीर करे पद चंदन ।

सरस माधुरी बसे धाम ग्रन गावे जुगल सु छंदन ॥

॥ दोहा ॥

प्रगट करो शुक सम्प्रदा, जग में परम पुनीत।
प्रेमा भक्ति प्रचार कर, दो जनाय रस रीत॥
बादशाह राजा श्रमित, चरण परेंगे श्राय।
सुफल कामना होहि तिन, रहे जक्त जस छाय॥
श्री शुकमुनि के बचन सुन, हरषे मन रनजीत।
उतर गोद ते दण्डवत, करी चरण सह प्रीत॥

बालक जो रनजीत संग, भय खा भागे जाय। प्रागदास जी सों कहाो, सब वृतांत समभाय॥ श्याम वरन इक पुरुष ने, पकर लियो ततकाल। गोदी ले वट छांह में, बैठो उत ही हाल॥

> (यह दोनों दोहे हिलमिल के सखा सब ग्रावोरे पृष्ठ ५०३ के बाद बोले जावें)

॥पद्गा

श्री शुकमुनिराज बचन-(तेरी बंसियां ने मोह लियो श्याम रे। इसके वजन पर)
प्यारे रनजीता तुम मेरे प्रान हो।
तेरी सूर सलोनी लगे प्यारियां हो।
वारी वारी जाऊँ लेऊँ बलिहारियां हो।
बुद्धवान हो॥

श्री कृष्ण के अंश तुम, श्राचारज अवतार।
प्रेम भक्ति विस्तार जग, हिर हो मू को भार।
सुनो कान हो ॥
कुंजो माता लाडिले, में तोहि शिष्य कियो।
जग जीवन निस्तार हो, यह वरदान दियो।
सांची मान हो ॥

सम्प्रदाय संसार में, मेरी प्रगट करो। भगवत धर्म प्रचार के, कलिसल सकल हरो। देवो ज्ञान हो॥ शरण तुम्हारी से सिले, परम पदारथ चार।

रिद्धि सिद्धि नव निष्ठि के, अरे रहें भंडार॥

देवो दान हो॥

जाको मंत्र सुनावोगे, सो पारायण होय।

जनम मरण सिट हरि सिलें, संश्य नांही कोय।

राखो ध्यान हो॥

बादशाह नृप जगत के श्रह अमीर उमराव।

शरण परेंगे आयके, पूजें तुम्हरे पांव।

रस खान हो॥

सरस माधुरी छिंब छटा, हिर में छके रहो। धर्म सनातन छोपनो, हठ कर ताहि गहो। सुनो सुजान हो॥

बालक-

॥ पद् ॥

(पल पल तन मन धन वाहँरी के वजन पर)
हिल मिलके सखा सब ब्रावरे।
रनजीता की बतियां सारी। गोद में ब्रतीत लिये बैठो बट छाया मांही। कुंजो मात सुनावरे ॥ हिल मिल के ॥ सांवरी सूरत प्यारी। सीस जटा बुंघरारी॥
यह सब चिह्न बतावरे॥
लाड प्यार बहु कीने। पेडे कर मांही दीने। लाल प्यारो पुचकारो। सीस निज कर धारो। सरस दरस दियो जनम सफल कियो॥ पल पल ध्यान लगावरे॥

॥ गजल ठेका कोव्वाली ॥

लड़के कहन लगे यों सुन लीजे कुंजो माई।

रनजीत को गया ले अबधूत इक उठाई॥
हम न्हाये नद्दी मांही बेठे तिलक लगाई।

मुनि राज श्याम सुंदर आये अचक वहांई॥
लीना बुलाय सुत तब आये भाग हम यहांई।

तन पै न वस्त्र तिनके कोपीन एक लगाई॥
सुंदर सरूप सोहन सनमुख लखा न जाई।

धुंघरारे वाल सर पर नैनों में आति लुनाई॥
मधुरी सी प्यारी मूरत मुख मंद हँसन छाई।

सुन बाल बचन नर नारी रहे हिराई॥
हे कुन्ण तुम कुपा कर दीजे कुंवर मिलाई॥
पा जाय प्रान जीवन बांटे सरस मिठाई॥

॥ दोहा ॥

बाप ददा आता सकल, श्रहपुर जन ले लार। रनजीता खोजन चले, वट तट नदी किनार॥ देखे श्रावत दूर तें, पुरके बहु नर नार। अंतर ध्यान हुये मुनी शिशु को कर बहु प्यार॥

॥ पीलू बरवा ॥

वट वृत्त समीप सकल मिल वाप ददा श्रातुर चिल श्राये। श्राति प्रसन्न श्रानंद मगन मन रनजीता तहां बैठे पाये॥

श्रचक उठाय लाल गोदी ले नैंन सजल है हृद्य लगाये।
कहन लगे वह कौन पुरुष कहां जिन्हें तुम्है इत ला बैठाये॥
दुख कहा दियो सकल किह दीजे मारे या तुमको उरपाये।
कैसो रूप चिह्न कहा तिनके श्रव वह कहां कवन दिसि धाये॥
कहन लगे मुख बचन लाडले श्याम वरन मुनिवर द्रसाये।
कर मन मोद गोद मोहि लेके श्रमृत सम मुख वचन मुनाये॥
सिर कर फेर मोहि पुचकारा किह हम तुमको शिष्य वनाये।
तारन तरन जगत में है हो मम दिसि देख मंद मुसकाये॥
दो पेड़े कर प्यार दिये मोहि श्रीत सहित प्रभु कंठ लगाये।
मैं द्राडवत करी चरणन में श्रमें हस्त मो सीस धराये॥
सरस माधुरी रूप मनोहर में कर द्रशन नैन इकाये।
तुमको श्रावत देख श्रव हि इत तरुकी श्रोट मुनि जाय छिपाये॥

॥ दोहा ॥

वट के चारों ओर ही, फिर ढूंढे ऋषिराय।
इत उत खोजे दूर लों, कहीं नहीं द्रसाय॥
पुनि गोदीं ले बाल निज, बाप ददा मन मोद।
घर ला दीने तुरत ही कुंजो माता गोद॥
नैन नीर भर प्रेंम सों माता हृद्य लगाय।

प्राण गये मनु देह तें, पुनि घट पहुंचे श्राय ॥ दादी भूवा कुल बधू, पृथक पृथक ले गोद । पुचकारे दी श्राशिका मन में कर बहु मोद ॥

॥ राग भैरवी ॥

जुरे गांवके नर श्ररु नारी रनजीता देखन को श्राये।
भली भई प्रभु कृपा करी श्रित सुत तुम्हार फिर तुमने पाये।
भये सहाय पुन्य पूरब ले हित मय किह मुख बचन सुनाये।
श्री मुरली सुत सुखी रहो नित देत श्रशीश विश्र हरषाये।।
प्रागदास ने श्राधा पेड़ा लालन को निज हाथ पवाये।
किनका सम सु प्रसाद सबन को देकर हियमें हर्ष बढ़ाये।।
बाल श्रवस्था मिले शुकमुनि चरण दास जू को श्रपनाये।
सरस माधुरी मुदित होय मन चरितामृत निज मुख सों गाये।

3) 33 33 33 33 33 33 33 33 BE 46 46 46 46 46 46 46

युग्म दर्शन लीला।



॥ श्री राधा सरस विहारिंगो नमः ॥

श्रीमत वृंदाबन सेवा कुंज श्री युग्म दर्शन लीला।

॥ श्री मत श्याम चरणदास वचनिका ॥

आज का दिन अत्यंत आनंद कारी है श्रीमत बृंदावन धाम की अनुपम शोभा चित के चुरावन हारी है मध्य में श्री सेवा कुंज आनंद पुंज शोभायमान है जता पता सधन हरी भरी फूली हुई पर भोरन की गुंजान है।

॥ दोहा ॥

वृंदावन सबसे बड़ों, यथा दूध में घीव।

सब धर्मन हरि भक्ति ज्यों, यथा पिड़ में जीव ॥

सब तीरथ जगमें बड़े, जिनहूं में है ईश।

उन तीरथ फल कामना, इह सेवन जगदीश ॥

सदा कृष्णा बुज में रहें, मोहि मिलत है नांहि।

लहर महर कबहूं करें, आन गहै मम वांहि॥

आहां मुक्ते श्री शुक मुनिराज महाराज के श्री मुख का मुक्तका वरदान है जिसका मुक्ते पूर्ण रूप से संधान है।

॥ चोपाई ॥

एक समय बृन्दावन जय हो। श्री कृष्ण का दर्शन पय हो॥ श्याम सुंदर।मिलि हैं तहां प्यारे। तोहि।देखावें नित्य बिहारे॥ श्रीजी की कृपा से अब वह अवसर आया है जिसका पूर्ण विश्वास मेरे मन में समाया है तो अब में यहां वैठ कर विनय पद गाऊं॥

॥ पद् सीठना ॥

दुक दर्शन दे हिर प्यारे। विनदेखे मोहि कल न परत यह देह जरतहें व्याकुल प्रान हमारे तेरी मोह मटक और श्रेम लटक हिय अटकी नंद दुलारे। तेरी सुंदर सूरत मोहनी मूरत नेंना आति रतनारे॥ तुमसो को छेला सदा नवेला अलवेला वांकारे। में हूं चरन्दासा तुम सुख रासा आशा पुरवो आरे॥

॥ पद ॥

तुम विन कैसे जीऊँ प्यारे नँद लाल ।

भूख प्यास कुछ लागत नांही तन की सुध न सँभाल ॥
कल न परत पलक अकुलावत छिन छिन छिन वेहाल ।
विरह विथा को रोग बढ़ो है पीर महा विकराल ॥
कहा करूँ कित जाऊँरी सजनी को मेटे जंजाल ।
लटक चलन वांकी ।चितवन की चुभत कलजे भाल ॥
भई ऐसे यह देह दूवरी सूभ परो नस जाल ।
तरफत हूं हिय में दों लागी नैन रोय भये लाल ॥
चरनदास यह सखी तिहारी श्री शुकदेव दयाल ।
आप कुषा कर दरशन दीजे कीजे वेगि निहाल ॥

॥ समाजी-दोहा ॥

श्याम चरण के दास की, विनय सुनी हित मान । ता छिन से वा कुंज में, प्रगष्टे श्यामा श्याम ॥ चरनदास नेनन लखे श्यामल गीर किशोर। उठ सादर चरनन परे, अंक भरे हिर दौर ॥

॥ श्याम चरन दास स्तुति छन्द ॥ । । । ।

जै गौर श्यांम सरूप परम अनूप त्रिभुवन नायकं।

कंदप कोटि लजात लख छवि भक्त जन मन भायक ॥

त्रारत हरन मंगल करन निज सत जनन सहायकं।

महिमां अपार अनंत गुन गन नेति वेद सु गायकं ॥

विधि महेश सुरेश शेशहु चरण चारु सु ध्यायकं।

सेवत सदा आनंद प्रमुदित भजत सन वच कायक ॥

जुगल मूरित मन हरन चित रसिक जनन लुभायकं।

सप्त सुरत उचार अधरत धार बेगा बजायकं ॥

रस तान सुर बंधान कर गो गोपि ग्वाल रिकायकं।

विरहं ताप निवार कर बहु प्यार हृदय लगायकं भी

दीन जन उद्धरन पोषन भरन पाप नसायकं।

अष्ठ सिधि नव निद्धि मुक्ती देत सहज सुभायकं ॥

करुणा निधान सुजान प्रीतम प्रान मृदुल सुभायकं। सरस माधुरी श्रुण भय भय हरण जमासुल दायकं॥

॥ दोहा ॥

रहूं शरण युग चरण की, सेऊं पद अभिराम । रीभ मोहि दीजे यही, श्री मत श्यामा श्याम ॥

॥ दोहा ॥

श्री कृष्ण बचन--

बचन सुनो मम चित लगा, भक्तराज सिरताज। भेजे भाक्ते प्रचार हित, सो नाहें कीने काज॥ परमारथ के कारनें, करने को उपदेश।

भिक्त प्रचारन को दिया, तुम्हें साधु का वेश ॥ जोग ध्यान को छोड़ कर, नौधा भिक्त सँभार। यही करो अस्थापना, यही धारना धार॥

॥ दोहा ॥

श्यामं चरनदासं वचन-

हाय हाय हरि चरण सें, नेंक न कीजे दूर।

सेवा करहुं संग नित, यह मम जीवन मूर ॥
महा त्रास हिये होत है, जुदे करन सुन बैंन।

नुमस् कुछ नाहीं दुरी, सुनो कमल दल नेंन ॥

॥ चौपाई धुनि पीलू वरवा ॥

तुम चंदा मोहे जान चकोरा । मुदित भया कर दरशन तोरा॥
तुम परवत में तुमरा मोरा। खुशी भया ज्यों सुन घन घोरा॥

तुम हो कमल भँवर में तोरा। तुम ठाकुर में तुमरा चेरा॥ खांति बूंद तुम चातक में हूं। तुमको छोड़ कहां अब जे हूं॥ तुम परधी में मृगा तुम्हारो। भावे छोड़ो भावे मारो॥ तुम गंगाजल गहर नवीनां। मोको जानों अपनी मीना॥ तुम माता में छुत हूं बारा। क्यों कर जीऊं जो हूं न्यारा॥ तुम छुरभी में तुमरा बछरा। कैसे मोहि सुहावे निछुरा॥ तुम दीपक मोहे जान पतंगा। तुम पे वार भसम करूं अंगा॥

॥ दोहा ॥

श्री कृष्ण वचन-

धन्य धन्य चरनदास तुम, धन्य तुम्हारी भाव।

काज भक्ति जब कर, चुको बेगहि लेहुं बुलाय ॥

चरनदास वचनिका-

जै जै श्री प्राननाथ आज्ञा अनुसार भक्त को विस्तार अवश्य करना है परन्तु रास विलास दर्शन करने की अत्यंत अभिलाषा लग रही है यह मेरो मनोरथ कृपा कर पूर्ण करिये।

॥ दोहा॥

श्री कृष्ण वचन-

नैना मूद कर ध्यान धर, मेरे जीवन प्रान्।

में भाजा देऊँ तभी, खोलो चत्तु सुजान ॥

॥ समाजी दोहा ॥

चरनदास ताही समय, मूंदे दोऊ नैन ।

खोल कही तव श्री हीरे, तन मन पायो चैन ॥ निज बृंदावन लख परो, गोल चोंतरा खास ।

चौंसठ खम्या सोहना, जहां नित्य रस रास ॥ चरनदास तहां हो गये, नख सिख सखी सरूप। नव किशोर शृंगार तन, अद्भुत आधिक अनूप॥

॥ पद चाल नाटक॥

श्री प्रियाजी बचन सिवयों से-

सखी आवी हमारे पास सकल मिल रास करो। हो रास करो॥

लिता विशाखा संग। बीना वजा सृदंग। निरतो नवेले ढंग। प्रगटावा प्रेम रंग॥ प्यारी प्रान॥

सवही मंडल गोल बनाओ। गावो सरगम सुंदर तान।
सोरठ और विहाग सोहनी सप्त सुरन सुरभर सुखदान।
ता ता थेई थेई बोल भली विधि हस्तक भेद रचो रसखांन।
पदंन्यास मृदुहास सहित कर भुकुटी विलास हरष हित मान
सुनो कान, हो सुजान, रस निधान, सरस रस रंग ढरो॥
सखी बचन-

जै जै श्री जुगल सरकार प्रागाधार आपकी आज्ञा अनुसार रास विलास अभी आरंभ करती हैं॥

सांगीत करे पीछे श्याम चरन दासी सखी का सिखयों सिहत नृत्त गान

॥ पद् ॥ .

कृष्णचन्द्र कमल नैंन नंद् के हो नंद्ना।

॥ ग्रंतरा॥

गोकुल में अवतरे, श्याम रूप छवि धरे। यशोदा दुलारे प्यारे, आनंद के कंदना॥

नटवर छवि कर शृंगार, मोर मुकट शीश धार । रास करत मनको हरत, रसिकन चित चंदना ॥ श्री राधे सखिन साथ, नृत्तत श्री प्राननाथ।

हिल मिल सब गहै हाथ, मुख से हँसत मंदना ॥

ता ता थेई थेई उचार, लेत चपल गति अपार । बांकी चितवानि निहार, डारें प्रेम फंदना ॥

सुर समृह चढ़ विमान, निरख हरष वारें प्रान । जै जै मुख कहें बखान, करें सरस बंदना ॥

॥ दूसरा पद चाल नाटक ॥

॥ चरनदास वचन सिखयों सिहत ॥

राधे श्याम श्यामां श्याम आपको प्रनाम । प्यारी प्रीतम प्रभु गुन धाम ॥ ॥ अन्तरा॥

संकट हरन । मंगल करन । तारन तरन । पोषन भरन । सुन्दर चरन तुम्हार ॥

व्रज में लियो अवतार । भूमी का हरन भार । खामी हो तुम हमार । वेड़ा करोरो पार ॥

अज्ञान हूं। अनजान हूं। अघ खान हूं। नादान हूं। तुम दीन बन्धु। दीनानाथ। प्रान के आधार। मेरे हो आप प्रान। मनमें तुम्हारा ध्यान। दर्शन दिया हैं दान। सेवक सरस पिछान॥

हे दयाल हे कृपाल पूरे किये मन के काम । प्यारी श्रीतम गुन धाम ॥

॥ श्री श्याम चरनदास सखी पद गजल ॥ फरजंद नंदज का दिल वीच भावंदा ।

बर पाय खूब नूपुर सुन्दर सुहांवदा॥

.॥ श्रन्तरा॥

वह सावला सलोना महबूब यार मन।

आहिस्ता लटक चाल मटक मेरे आंवदा ॥

टीका संदत्त का खेंच के माथे पे अदा से।

वर सर विराजे श्रफ़सरे हीरे जड़ावदा ॥

कुंडल भलकते हैं दर हर दो गोश में।

आवाज बांसुरी की शीरी बजावंदा॥

नीमा जरीका का गल में कटि काछनी बनी। पीरे दुपट्टे वाला बीड़े चबावन्दा॥ करता है नृत्तनादिर घुंघरू की भनक से।

करता है नृत्तनादिर बुंघरू की सनक से। ता ता थेई थेई गति लगांवदा ॥

नैनों की त्रान तान के अबरू कमान से। पलकों के प्रेम तीर कलजे चुभावंदा॥

घायल किया है मेरे तई इसके इश्क नें। शुकदेव चरनदास के हिय में समावंदाः॥

॥ पद राग सोरठ॥

रास में रंग आज बरसे, सलोनी सुंदर अवि दरसे॥
नागरि नवल केल पिय प्यारी, घन दामिनी दुति।तिन पर वारी

निरतत बोलत मुख ताथया। जोरे कर करसे॥ बीन मृदंग बजावत नारी, सारंगी सरगम सुखकारी। ताल तमूरा की गति न्यारी। आनंद आति दरसे॥

चहूं श्रोर नाचत सहचारी, लै सुरताल मिली इक सारी।

छुम छुम छनन बजत घूंघरः। गावत मिल स्वर से ॥ नाचत भाव बतावत प्यारी, रीभ रहे पिय सरस विहारी।

बोलत मुख जैजे बिलहारी। अंग श्रंग परसे॥ सरद चांदनी रैन उजारी, भूषन वसन दमक चमकारी। सरस माधुरी लाल बिहारी। लिपट लगें गरसे॥

॥ सबैया ॥

चरनदास सुनो त्रिय वात यही जग जीवन को तुम जाय चितावों । उपदेश करो अज्ञान हरो अरु मेम की भक्ति को रंग लगावो । भव सिंधु से तार के आनिन को पर धाम हमारे में वेग पठावो । करके उपकार यही अव ही फिर नित्य निकुंज हमारी में आवो ॥

॥ दोहा ॥

चरनदास वचन-

आज्ञा श्री हिर हिय धरी, भक्ती करूं प्रचार । विनय करूं पैया परूं, सुनो जुगल सरकार ॥

॥ पद्॥

तर्ज (हमारी सुध राखियो हम लीनी शरन तुम्हारी) हमारी सुधि राखियो राधा सरस विहारी॥

भक्ति प्रचार करूं जग मांही उपदेसूं नर नारी।

जिनको कुपा कर अपनेयो जीवन प्रान अधारी॥ प्रेम भक्ति जो करें तुम्हारी धार भाव सहचारी।

उन्हें वसैयों कुंज महल में कर सेवा अधिकारी ॥ संत्र सुनाऊं में जिन जिनको तुमरो प्रीतम प्यारी।

तिनको तुम दर्शन निज दीजो करके कृपा अपारी॥ परम धाम में वेग बुलैयो विनवत वारंवारी।

सरस माधुरी चरन शरन रख करोन पल छिन न्यारी॥

श्री कृष्ण वचनिका-

प्यारे चरनदास जो तुमने विनय करी उसही श्रनुसार तुम्हारे सब मनो वांछित सिद्ध होंगे श्रब तुम नेत्र मूंदो हम श्राज्ञा देवें तब खोलो।

॥ समाजी दोहा ॥

चरनदास ताही समय मूंद लिये निज नैन। खोलत ही निरखन लगे, वंसी वट सुख देंने।। साधु रूप श्रापन लखे, हरि बिछुरन सुध श्राय।

भई मूरछा विरह वस, गिरे धरन मुरेमाय ॥

॥ शुक प्रगटन समाजी दोहा ॥

श्री शुक मुनि ताही समय, प्रगट भये प्रभु श्रान । चरनदास गोदी उठा, बोले कृपा निधान ॥

श्री शुक वचनिका-

ठोडी के हाथ लगाकर । प्यारे चरनदास चेत करो, धीरज धरो, नेत्र खोलो, मुख सेबोलो।

॥ समाजी दोहा ॥

ग्रुरु वचनामृत श्रवन सुन, जागे चरनिहदास । निरख नैन चरनन परे, रोकर भये उदास ॥

चरनदास वचिनका— व्यानकाल कराइये श्री ग्रह कृपा निधान । विहें तो तन तज जायगो तातकाल मम प्रान ॥

more and the second of the sec

विरह दसा शिष्य देख के, धरो शीश निज हाथ । दर्शन कर प्रीतम प्रिया, श्रति ही हुवे सनाथ॥

॥ पद् ॥

चरनदास वचन-

लाल लाडिली में लखें बन्सी वट की छांह हेली।
दोऊ खड़े पांव हँसेरी श्रौर डारे गल वेंया हेली॥
मोर मुकट मांथे दियेरी सुंदर नैंन विशाल हेली।
पीतांवर पट सोहनोरी श्रौर फूलन के हार हेली॥
गुरु शुकदेव बताईयारी जब हम लिये पिछान हेली।
चरनदास तिनकी भईरी लगो रहे वही ध्यान हेली॥

॥ समाजी दोहा ॥

जुगल दरस कर छवि छके, चरनदास सुख मान । गुरु सिर कर लीनो उठा, हुवे हरि श्रन्तर ध्यान ॥



44444444444

श्री राम सखी जी की लीला।

ションションションションション

॥ श्री राधा सरस विहारिगो नंमः॥

॥ श्री जुगल सरकार की स्तुति ॥

जय जय राधा सरस विहारी, श्री श्रीतम प्यारी। छैल छवीली जोरी, सुन्दर सुकुमारी॥ श्री श्रीतम प्यारी॥१॥

गौर श्याम छ विधाम रिसकवर मूरत मतवारी। दीने दोऊ गल वैंया घन दामिनि वारी॥ श्री प्रीतम प्यारी॥३॥

सीस चिन्द्रका लटक मुकुट की मन हरने हारी। नील पीत पट सोहत बनमाला धारी॥ श्री श्रीतम प्यारी॥३॥

नख शिख भूषण रतन जटित हैं श्रित श्रानँद कारी। पायल घुंघरू पग में बन माला धारी॥ श्री श्रीतम प्यारी॥४॥

मंद हसन मन मोहन सब की, कर मुरली धारी। श्यामा के कर कमल बिराजे, चितवन श्रनयारी॥ श्री श्रीतम प्यारी।।।।।

रास बिलासी प्रेम प्रकाशी, रिसकन रिभवारी।
रङ्ग रंगीले रिसया, मदन मान हारी॥
श्री प्रीतम प्यारी॥६॥

दंपति दोऊ सिखन की सम्पति, बृंदावन चारी। सरस माधुरी शरण चरण की, विल विल विलहारी॥ श्री प्रीतम प्यारी॥७॥

॥ पद् ॥

राधे रानी रंगीली सरकार तुम्हारी महिमा श्रपार॥

॥ अन्तरा॥

प्यारी दया निधान, तुम सम न कोई श्रान। दीजे जी प्रेम दान, विनती सलोनी मान॥ शोभा खान॥ रूप उजारी, भोरी भारी, प्रान प्यारी वेटी वृषभान। श्रति सुकुमारी, मैं बिलहारी, चरण शरण विन गति निहं श्रान सेऊँ मैं पद कमल स्वामिनि, रहूं कुंज रस में गलतान। धर ध्यान, सुनकान, महरबान, सरस की हो प्राण श्रधार॥

् हो प्राग् अधार ॥

॥ पद् ॥

श्री ठाकुरजी बचन–

मम प्रान। मम प्रान। मम प्रान प्यारी। तुम पर वारी, रास रचो श्री श्यामा। मम प्रान।

॥ श्रन्तरा॥

हो रासेश्वरी सुकुमारी, जीवन धन सदा हमारी। मुख छिब पर मैं बिलहारी, मधुरी बोलन मनहारी॥

॥ चलन ॥

नाचत हैं वनमें मोरा, सुन सुन के घन की घोरा।
कोयल है करती शोरा, गुंजत हैं भोंरी भोंरा॥
हो सरस माधुरी की तुम स्वामिनि रूप राशि गुण धामा॥
सम प्राण॥

॥ देाहा ॥

श्री ठाकुरजी बचन— रस रूपा रस मंजरी, मेरी जीवन प्रान । कहूं प्यार करके बचन, सुनो श्रवण हितमान ॥

॥ सवैया ॥

9

रस मंजरी प्यारी हमारी तुम्ही, बिल भारत भूमिमें जा प्रगटावो प्रेम की मंजरी पहिले गईं, तिनकी सिवकाई करो सुख पावो॥ रास बिलास रचो सजनी, पुनि प्रेम श्रक्ष भक्ति को रंगलावो। सरस रसामृत पान करो, पुनि जग जीवन को पान करावो॥

2

कित कीर्तन के निहं श्रान समान, करे जो कोई मम प्रान को प्यारो कीर्तन सों में होउं प्रसन्न, येही निश्चय मन मांहि विचारों॥ कीर्तन होय जहां चिल जाऊँ, करूँ उनसे हित हेत श्रपारो। सरस माधुरी भांकी दिखाय, रहं तिनसों निहं नेकहु न्यारो॥ श्री राम सखी वचन--

प्राण के प्यारे हो नाथ हमारे, तुम्हारे पदाम्बुज में शिरनाऊँ। श्राज्ञा तुम्हारी लई उर धारके भृतल में श्रव जा प्रगटाऊँ॥ प्रेम की मंजरी शर्ण गहूं शुचि, रास विलास रचूं हुलसाऊँ। सरस बनाजग जीवन को, तुम्हरे निजधाम तिन्हें पहुंचाऊँ॥

॥ दोंहा ॥

दासी की सुधि राखियो, त्रिय त्रीतम घन श्याम । याद करूँ तव दरस दे, ले श्रइयो निज धाम ॥

॥ पद् ॥

श्री ठाकुरजी वचन--

रस मंजरी प्यारी सुनाऊँ तुम्हें। मेरे मन की जो वातें वताऊँ तुम्हें तुम याद करो मैं वहां श्राऊँ। निज श्रपने दरस को दिखाऊँ तुम्हें श्रावो श्रावो प्यारी हमारे निकट। हित करके हिये से लागाऊँ तुम्हें मेरे सरस बचन हैं प्रतीत करो। सँग धाम में श्रपने ले श्राऊँ तुम्हें

॥ दोहा ॥

समाजी बचन--

जो त्राज्ञा कर कह गई, रस मंजरी सुख रास। प्रगटी दिल्ली शहर में, जहां श्याम चरनदास॥

॥ दूसरा प्रकर्ण ॥

॥ दौहा ॥

समाजी बचन--

शुभ दिल्ली स्थान में, राजें श्री महाराज। होत रहत श्रानंद मय, नित सतसंग समाज॥ संग लिये निज पुत्र को, शिष्य करावन हेत। सतगुरु शरण पुनीत शिष्य, श्रायो प्रेम समेत॥

॥ सवैया छन्द ॥

सतगुरु शरगा कायस्थ बचन--

यह वालक भेट करूँ हित सों, ग्रुरुदेव द्यानिधि दीचा दीजे। ग्रहस्थाश्रम साधन योग निहं, प्रभु संत बनाय श्रनुग्रह कीजे॥ हरि सेवा करैनित ही चित दे, मन याको निरंतर प्रेम में भीजे। सरस सलोनी करे हरि भक्ति को, जक्त के मांहि यही यश लीजे॥

॥ सवैया छन्द ॥

श्री श्याम चरगादासजी बचन--

त्रिय सेवक सतगुरु शर्शा सुनो, तुमसों हम बात कहत समभाई।
तव पुत्र को शिष्य बना करके, गुरु मंत्र श्रभी हम देंय सुनाई॥
सेवक शिष्य हमारे सभी, तिनकी तिय श्राये होंय शर्गाई।
हिर भिक्त करें रस रास रचें, यह सभी विधी हमरे मन भाई।

श्री महाराज बचन--

प्यारे सतगुरु शरण तुमने जो अपने पुत्र को हमारे भेट करके दीजा देने की आर्थना करी वह हमें अत्यंत प्रिय मालूम हुई। अब हम अंदर मन्दिर में जाकर विधि पूर्वक मंत्र उपदेश करते हैं और इनका नाम राम सखी रखकर नृत्त गान की तालीम दिला कर श्री राधे श्याम की परम प्रियबनाकर सखी भावना में मग्न कर देते हैं तुम प्रसन्न रहो।

॥ तीसरा प्रकर्ण ॥

॥ समाजी दोहा॥

राम सखी सिखयन सिहित, करत वारतालाप। श्री कृष्ण के मिलन हित, कर रही पश्चाताप॥

राम सखी-

मेरी प्यारी सिखयो अबतो श्री कृष्ण प्राण प्यारे के दरशनों को मेरे प्राण अकुलाते हैं। कैसी करूँ धीर कैसे धरूं। तुम हिल मिल के प्राणनाथ के दरशन देने के निमित्त प्रार्थना पद गावो और मुभे सुना कर मेरी धीरज वंधाओ।

सखियां--

वित्तहारी श्री राम सखी प्यारी। श्रव हम विनय का पद गाती हैं तुमको सुनाती हैं तुम सुनो। राम सखी--

श्ररी सिखयो तुम प्यारे के ग्रगावाद गावो में सुनती हूं। ॥ सखी पद गाती हैं॥

॥ दुमरी ॥

मिलोजी आन रसंखान मोहनवा ॥
तरस रही तुम्हरे दरशन को दिखलादो छिब श्याम सोहनवा ॥
लोकलाज कुल कान त्यागके लगी फिरत तेरे गोहनवा ।
सरस माधुरी रिसक शिरोमिश विरह विपित के तुमही खोवनवा॥
राम सखी--

प्यारी सिखयो जो पद तुमने सुभे गाकर सुनाया यह मेरे मनको श्रत्यंत भाया श्रव मैं एक पद तुमको गाकर सुनाती हूं तुम श्रवण करो।

सखी--हां प्यारी राम सखीजी त्राप गाइये हम सुनती हैं। राम सखी--ं

सुनो बिनती मेरी घर ध्यान मोहन कान थोड़ीसी। दिखादो सांवरी सूरत अजी दिलजान थोड़ीसी॥ तुम्हारी याद करती हूं न जीती हूं न मरती हूं।

जिलावो मुक्तको आ जानी करो मुसकान थोड़ीसी ॥ न मेरे घर पै आते हो न तुम मुक्तको वुलाते हो ।

तजो दिलसे अजी दिलवर निद्धरता वान थोड़ीसी ॥ लगाई प्रीति क्यों हम से छुड़ाते क्यों नहीं गम से ।

निभाया कीजिये कुछ तो पिया पहिचान थोड़ीसी॥ हमेशा रहते थे हमदम मुहब्बत क्यों करी अब कम।

न भूलो रस्म मिलने की मेरी लो मान थोड़ीसी॥ श्रदा से देखलो जानी मधुर मुख वोलिये वानी।

मेरी सुध लीजिय प्यारे अजी अव आन थोड़ीसी॥ सरस यह माधुरी दासी अधर अमृत की है प्यासी। करो मन कामना पूरण अजी रसखान थोड़ीसी॥

प्यारी सिखयो मुक्तको अनुभव हुआ है कि इस आसीज सुदी १५ की रात्रि को श्री कृष्ण रसराशी खास दासी को अपने नटवर रूप का दरशन करावेंगे और अपने संग ही लेजावेंगे।

॥ दोहा ॥

श्री सतग्रह दरबार में, एक सखी जाओ धाय। विनती मोर सुनाय के, लावो प्रमुहिं लिवाय॥ जाऊँगी निज धाम में, श्यामं सुंदर के संग। परमानंद प्रगद हुद्यो, पुलाकित हैं सब अंग॥ समाजी बचन-

जो त्राज्ञा कहकर गई, सखी गुरुन दरबार। शीश नवा कर जोर के, विनय करी उच्चार॥

सखी-जय जय श्री महाराज जी, विनय सुनो चितलाय। राम सखी को कृपा कर, निज द्रश्नन दो जाय॥ विरह व्यथा छाई महा, रही श्राधिक श्रकुलाय। बिन द्रश्न श्री कृष्ण कें, सुध बुध गई भुलाय॥

श्री महाराज-

संग चलें तेरे सखी, राम सखी के पास । धीरज दे बहु भांति से, करें विरह दुखनास ॥

समाजी—आये श्री महाराज जी, राम सखी के धाम । उठ साद्र सनमुख खरी, करी चरण परनाम ॥

॥ पद् राग सारंग ॥

राम सखी-

अरज सुनो श्री ग्रह चितलाई। बिन हिर दरशन चैन नहीं है विरह व्यथा तन मन में छाई॥ भूख प्यास व्यापत नहीं तनमें निशि की निद्रा सकल गंवाई। हाय हरी रसना रट लागी श्याम सुंदर सों देहु मिलाई॥ तलफत प्रागा पिया बिन देखे पीर वियोग सही नहीं जाई। सरस माधुरी छिब मोहन की राम सखी को देहु दिखाई॥

॥ पद् राग सोरठ ॥

श्री महाराज-राम सखी तुम परम सयानी।
धीरज घरो करो हिर भक्ती उपदेशो जग भूले प्रानी॥
शिष्य सेवक जिनकी जो नारी तिनहुन तुम कह गुरुकर मानी।
तुम जावो श्रव धाम श्याम तंग सत संगत में हो विड हानी॥
कन्छु दिन श्रीर रहो या जगमें मानो यही हमारी वानी।
चरनदास कहें करो कीरतन काले में प्रेम मिक्त सुखदानी॥
राम सखी-श्रंतरयामी श्राप हो, सो श्रनाथ के नाथ।
उचित होय सो कीजिये, लजा तुम्हरे हाथ॥

श्री महाराज-

जावों सुंदर श्याम संग, अमरलोक निज धाम। दंपति की सेवा करो, हित सों आठों जाम॥

समाजी--लगन हिये की जानके, आरत आधिक पिछान। शिर पर फेरो हाथ निज, दियो प्रसादी पान॥ रहियो सुख आनंद में, यो कहि श्री महाराज। मन्दिर पहुंचे आय निज, जहां सन संग समाज॥

॥ चौथा प्रकर्ण ॥

राम सखी--प्यारी मेरी सब सखी, करो झंग श्रृंगार । वसतर पहिरो सोहने, सूष्या विविधि प्रकार ॥ आश्विन शुक्का सुखमई, पूनों परम पुनीत । आवो गावो हे सखी, हिल मिल गोपी गीत ॥

॥ पद् ॥

अहो नवल लाल पिय विनय सुन लीजिये। बास बुन्दा विपिन टहल श्री कुंज की, सोहिनी आदि सोहिं कृपाकर दीजिये॥

श्रीर कछु ना चहों मुक्ति वैकुराठ लों,

परी भव जलिंध में पार पावत नहीं,

धुनत शिरनाथ विल द्या दुक कीजिये॥ राम सखी शरण पे दृष्टि करुणा करो, भई अति विकल सव गयो वल छीजिये॥

समाजी-सखी संग तजके तभी, राम सखी सुकुमार।
मान्दिर से बाहिर निकस, बन को भई तयार॥
पकर लई बैंया गही, और आजिन ततकाल।
भीतर लाई भवन में, सब ही संग की बाल॥

ा। राग कालंगड़ा ॥

राम सखी--बुजराज बिहारी ग्राइये। मैं व्याकुल तुम्हरे बिन प्रीतम निज छाबे छैल दिखाइये॥ धीरज रह्यों नेक निहं जिय में दे निज दरस जिवाइये।
राम सखी दासी चरनन की श्याम संग ले जाइये॥
समाजी-राम सखी को ता समय, कोठे में वैठाय।
जुड़ किवाड़ सांकल दई, ताला दियों लगाय॥
प्रगट भये ताही समय, कुंज विहारी लाल।
भक्तन के मन भावने, प्रेमिन के प्रतपाल॥
कोठे के पट खुल गये, भीतर पहुंचे आन।
राम सखी निज संग ले, बोले कुपा निधान॥

॥ राग कान्हरा ॥

श्री कृष्णसुनो राम सखी सुखदानी ।

मूरित प्रेम प्राण् धन मेरी, यह निश्चय कर जानी ॥

मिज बृन्दाबन से चिल श्रायो, श्रारत बचन सुनत उठधायो।

रास रंग मोहि नाहिं सुहायो, सत्य समक्त मम बानी ॥

गोपिन कीसी प्रीत तुम्हारी, मैंने निज उर अन्तरधारी ।

प्राण् बह्नमा हो तुम प्यारी, मेरे अति मन मानी ॥

प्रेमिन को मोहि ऋणिया चीनो, मैं निज सर्वस उनको दीनो ।

रहों सदा उनके आधीनो, यह प्रसिद्ध नहिं छानी ॥

प्रेमिन से जीवन है मेरो, उनके चरण कमल को चेरो ।

सरस माधुरी हेत घनेरो, वार पिऊँ नित पानी ॥

॥ दोहा ॥

राम सखी सह वपु चलो, निज वृन्दावन धाम ।

रास रंग आनंद रस, बिलसो आठों याम ॥
॥ समाजी दोहा ॥

सखी सकल सनमुख खड़ी, कर जोरे शिरनाय। छकी निरित्व छिंब कृष्ण की, श्रानँद उर न समाय॥ राम सखी निज संग ले, श्री कृष्ण रस खान। सब सिवयन के देखते, भये जो श्रेतरध्यान॥ (सिवयों का हिलमिल के गाना और श्रानंद मनाना)

॥ यजल ॥

परम आनंद का दिन यह, महा आनंदकारी है। श्रीमत श्याम सुंदर संग, सखी राम सिधारी है॥ जहां योगी नहीं जावें, पता ज्ञानी नहीं पावें।

वहां पर रास मंडल में, रमी जाके वह प्यारी है ॥ श्री सतग्रुरु हुवे साई, मिले श्री कृष्णजी श्राई।

महा दरशन की निधि पाई, सखी बड़ भाग वारी है॥ हजारों जीव निस्तारे, चरण के दास सतगुरु ने।

जगत में सब जगह जिनकी, है छाई महिमा भारी है।।
किया काले में प्रगट सतयुग, प्रचारा प्रेम भक्ती को।
भजन भारत में विस्तारा, भई कीरत अपारी है।।
निरस जो जन थे संसारी, बनाया सर्स सबही को।
उन्ही रनजीत लालन को, सखी लजा हमारी है।।

फुटकर पद।

いろうりょう ションションションションと

॥ श्री राधा सरस विहारिगो नमः॥

॥ पद् ॥

(भात समय व संध्या समय व राज भोग समय गायबे को) नमो नमो जय श्री शुकदेव, चरणदास जय श्री गुरुदेव॥ नमो नमो वृन्दाबन धाम, सेवा कुंज नमो श्राभराम । नित्य बिहार जहां ऋछिं जाम,बिलसत हैं श्री श्यामा श्याम॥ श्री शुक सखी नमी चरन दासी, सेवत सेवा कुंज विलासी॥ नित निरखत दंपति रस रासी, जुगल राधिका श्याम उपासी॥ नमो नमो जय जमुना प्यारी, दरश परस अचवन अघहारी। रस रूपा रस की दातारी, परा मिक्तदा कुष्ण पिथारी ॥ नमो नमो राविल बलिहारी, जहां अगटी श्री राधे प्यारी। नमा नमो गोकुल सुखकारी, प्रगट भये जहां सरस बिहारी॥ नमों नमो जय श्री बरसाना, रासिक जनन को ठौर ठिकाना । नंद याम सुंदर मन माना, गोपी ग्वाल बसै जहां नाना ॥ नमो नमो जय बन संकेत, जासों अधिक जुगल को हेत। प्रेम सरोवर परम निकेत, नहावें प्रेम जुगल रस देत ॥ नमो काम बन पूरन काम, नित क्रीड़त जहां श्यामा श्याम। विमल कुंड आदिक शुभ ठाम, करें संत सुख सों। विश्राम ॥ नमो नमो गोवर्धन गिरिवर, सुभग तरहटी नाना सरवर। लतां कुंज अगनित जित तरुवर, लीला लिलत करत जहां गिरधर नमो नमो जय मानसी गंगा, नहाये मिले जुगल रस रंगा। कुसुम सरोवर उठत तरंगा, निरख नयन मन होत उमंगा ॥ नमो राधिका कुंड सुह।वन, कृष्ण कुंड संतन मन भावन। त्रेमानंद हिथे सरसावन, रस निकुंज लीला द्रशावन ॥ प्रणमो वृज मंडल चौरासी, वन उपवन सवही सुखरासी। बुज रज रासिक सदा रस रासी, नसो नमो जय वृज के वासी॥ नमो समस्त संत चरणदासी, रसिक शिरोंमणि प्रेम विलासी। भजनानंदी हिये हुलासी, पराभक्ति जग माहि प्रकासी ॥ प्रेम सहित इनके गुन गावे, जग वंधन तिनको छुट जावे। चौरासी जम दंड नसावे, अमरलोक निज धाम वसावें॥ जो हित चित सों पढ़े पढ़ावे, अनमोदन कर हिये हरपावे। हुलस हुलस तन मन पुलकावे, प्यारी त्रीतम के मन भावे॥ नित उठ जो जन ध्यान लगाने, कुंज महल सहचरि पद पाने। श्री सतगुरु बलदेव बतावे । सरस माधुरी बलि वलि जावे॥

॥ छप्पें ॥

श्रीमत शुकमुनि के रटें कटें कमें जग जाल। श्याम चरण के दास भज भय छूटे ततकाल॥

भय छूटे ततकाल लाडली लाल निहारे।

छके रूप को निरख विश्व सुख सकल विसारे॥ रहे सदा जवलीन रूप के सिंधु अगाधा।

सरस माधुरी मगन मीन मन तज भव बाधा।।

॥ मांभा ॥

महा भाव रस राज रूप शुक चरनदास प्रगटाये हैं। जुगल नाम दे दान जक्ष के जीव अनेक चिताये हैं॥ पात्र अपात्र विचार न रंचक हिर रस सकल छकाये हैं। सरस माधुरी आचारज जग महाप्रभु कहिलाये हैं॥

॥ सोरठ ॥

कहो मन श्री शुक मुनि श्राम् ।
श्याम चरण के दास दयानिधि हैं दुख के हरणम् ॥
स्वामी राम रूप रस दाता श्रानंद के करणम ।
रामकृपाल कृपा के सागर सब सुख विस्तरणम् ॥
विहारीदास निज रस निकुंज के हैं पोषण भरणम् ।
ठाकुरदास दीन के रचक निज जन निस्तरणम् ॥
श्री सतगुरु वल्देवदास प्रभु श्रथमन उद्धरणम् ।
सरस माधुरी श्राणागत के हैं तारण तरणम् ॥

॥ दोहा ॥

(श्री रास लीला के श्रारंभ में श्रलापचारी के धुनि।)
श्रीमत महा प्रभो शुकमुनि राज रिसकाधिराज वर गाइये।
श्रीमत श्याम चरणदासाचार्य चरण कमल उर ध्याइये॥
श्रीमत स्वामी रामरूप गुरुभक्तानंद भूप मनाइये।
श्रीमत गुरु वलदेवदास करुणा रास दुलराइये॥

इनकी कृपा निकुंज महल की सेवा संपति पाइये। सरस माधुरी महा मधुर रस पीकर प्रेम छकाइये॥

॥ राग कल्यागा व काफी ॥

शुकमुनि चरनदास विलहारी। कियो भजन रस सुगम कृपाकर दरशाये श्री कुंज विहारी॥ मुदित भये भज चरन लड़ेती हिये में भलकी प्रेम छटारी। उमड़ी घटा नयन जल धारा सरस माधुरी रस श्रिधकारी॥

॥ दोहा ॥

श्री शुक्रमुनि मंगल करन, मनमें करो भ्रतीत।
श्रष्ट सिद्ध नव निद्ध के, दाता श्री रनजीत॥
श्र्याम चरन के दास प्रभु, श्राचारज शिरमौर।
सरस माधुरी विश्व में, ज्याप रहे सब ठौर॥
श्री स्वामी महाराज जीं, रामरूप रसखान।

चरनदास गुरु लाङ्ले, सर्वस जीवन प्रान ॥ श्रीमत रामकृपालजी, महाराज गुगावंत ।

युन निधान गलतान हरि, मनके हरन महंत ॥ सेवत श्यामा श्यामा श्याम नित, संत विहारी दास । श्रीमत नवल निकुंज में, जहां नित्त रस रास ॥

श्रीमत ठाकुरदास मभु, दादा गुरु शिरमोर।

सरस माधुरी चरन में, नमन करत कर जोर ॥

श्रीमत सतगुरु कृपानिधि, श्री बलदेव जु दास । -सरस माधुरी हिये में, निश्चि दिन करत निवास ॥

॥ दोहा ॥

विधन हरन सुख के करन, श्री शुकदेव दयाल। श्याम चरन के दास प्रभु, सदा रहें प्रतिपाल॥ वंदन कर सतगुरु चरन, श्री वलदेव जु दास। सब विधि मङ्गल के करन, पूरन करता श्रास॥

॥ दोहा ॥

भली करें भगवान गुक, भय चिता तज चित्त । सुमर श्याम चरनदास को, सुन मेरे मन मित्त ॥ श्रद्धां श्ररु विश्वास दृढ, हृदय धारिये नित्त । सरस शरण रक्तक गुरू, करिये तिनसों हित्त ॥

॥ दोहा ॥

सुख देवें दुख सब हरें, श्री शुकदेव दयाल।

श्रह्म रूप व्यापक सकल, वेद्व्यास के लाल।

श्रयाम चरन के दास की, चरण शरण ले श्राय।

शरणागत वत्सल प्रभू, दंपति देहिं मिलाय।

छांड सकल छल चतुरता, दृढ़ घर उर विश्वास।

सरस माधुरी ग्रह कृपा, मिले धाम में बास।

निश्रय बिन निरफल सकल, जोग जज्ञ तप दान।

संशय जिनके चित्त में, सरस न हो कल्यान॥

॥ दोहा ॥

जय जय जय श्री शुकमुनी, श्याम चरन के दास।
श्राश्रित जन रक्ता करणा, श्रानँद मङ्गल रास ॥
श्रीमत स्वामिनी राधिका, सरस विहारी लाल।
मङ्गल मूरति मन हरन, निज भक्तन प्रतिपाल॥

॥ पद् ॥

नमो शुक श्याम चरन के दास ।
दंपित इष्ट मिष्ट उज्वल रस उन्नत श्रिधंक श्रनन्य उपास ॥
सरस विहार सार निगमागम गायो श्रद्धुत रास विलास ।
कीनों प्रगट प्रेम को मारग परा भिक्त को कियो प्रकास ॥
भीने रहत युगल इवि निधि में लीन मीन ज्यों और न श्रास ।
सेवा सुख पर्यंक पुलक तन तत् पर टहल महल की खास ॥
निरखत रहत रंक के धन ज्यों तजत न पल छिन तिनको पास ।
लिये रिकाय रिसक चूड़ामणि युग्म चंद्र करुणा की रास ॥
श्राश्रित जन जितने जग मांही दीनों निज बृंदावन वास ।
परिकर निकर निरंतर निश दिन सिंचित कृपा दृष्टि श्रनयास ॥
लीला लिलत निकुंज पुंज रस श्रनुदिन श्रानँद सिन्धु हुलास ।
सरस माधुरी शरन हिये की पूरन करन सकल श्रमिलास ॥

॥ दोहा ॥

श्राचारज भूतल प्रगट, श्री शुकमुनि चरनदास । कुंज महल में सखी वपु निरखत रास विलास ॥ श्रष्ट याम सेवा करें, षट ऋतु वारह सास । मगन रहें लिख छवि युगल, दंपित खास खवास ॥ ' मिले टहल रंग महल की, निश्चय दृढ़ विश्वास । सरस माधुरी शरन के ये दोउ इष्ट उपास ॥

॥ राग कालंगड़ा व श्याम कल्यागा ॥

जयश्री शुकदेव चरण शरणम् ।श्री चरनदास भव भय हरनम् ॥ स्वामी राम रूप रसदाता। राम कृपाल कृपा करनम् ॥ विहारीदास द्या के सागर। ठाकुरदास तारन तरनम् ॥ श्री चलदेव दीन दुख भंजन। सरस माधुरी उद्धरनम् ॥

॥ राग विहाग ॥

श्री शुक्रमुनि करो चरण को चेरो। श्याम चरन के दास दयानिधि लखो न श्रवगुण मेरो॥ काटो कर्म कलेश दास के भव बन्धन उरमेरो।

लेहु लगाय शरण श्रपनी में जासों होय नवेरो ॥ सेवहुँ संतत युगल विहारी वृन्दा बिपिन बसेरो ।

निरखों केलि कुंज दंपित की रहों निरंतर नेरो ॥ यह श्रिभलाषा पुरवहु जन की दृष्टि श्रनुग्रह हेरो । सरस माधुरी मन को स्वामी ओर श्रापनी फेरो ॥

॥ राग ॥

श्री शुकमुनि मोकों निजकरं जानों। रयाम चरनके दास ख़ास बिन भूल श्रीर नहिं मानों॥ शरण गहे की लाज राज को यह निश्चय उर श्रानों। शरणागित पालन प्रण तुमरो लोक प्रसिद्ध वखानों॥ श्रोर ठोर की त्याग भर्मना तुमरे ही हाथ विकानों। सरस माधुरी चरण कमल तज नाहिन श्रान ठिकानों॥

॥ दौहा ॥

महा प्रभो श्री शुक सुनी, श्याम चरन के दास। प्रणमो तिनके पद कमल, श्रानंद मंगल रास॥

स्वामी रामहि रूप जु. स्वार्मा राम कृपाल ।

विहारिदास पद वंदि के, पुनि पुनि होंहु निहाल॥ श्रीमत ठाकुर दास जू, परम गुरू शिर मोर।

तिनके पद वंदन करों, दोउ कर संपुट जोर ॥

श्री सतगुर करुणा यतन, श्री वलदेव जु दास।

सरस माधुरी पद्म पद, वन्दित सहित हुलास ॥

श्राचारज निज संप्रदा, श्रनगिन संत महंत।

सरस साधुरी करत हैं, वन्दन वार श्रनंत ॥

॥ दोहा ॥

महा प्रभो मन के हरन, नंगल करन कृपाल । वन्दो वेद्ट्यास सुत, श्री शुकदेव द्याल ॥

श्रमय करन भवं भय हरत, श्याम चरन के दास।

श्राचारज शिर सोर प्रभु, श्रानंद निधि सुख रास ॥ समस्थ सव विधि क्रपानिधि, स्वामी रामहिरूप। परो प्रेम प्रीतम प्रिया, रसिक शिरोमणि भूप॥ रंगे रहत श्रनुराग में, स्वामी राम कृपाल । जो जो जन श्राये शरण, हरि धन किये निहाल ॥ सेवत दंपति महल में, स्वामि विहारी दास । जगल विहार निकंज रस. वांटत सहित हलास ॥

जुगल विहार निकुंज रस, वांटत सहित हुलास ॥ मगन मानसी ध्यान में, निरखत जुगल विलास । दाता प्रेमा भक्ति के, जै श्री ठाकुर दास ॥

रहत छुके रस रास में, पंगे निकुंज विलास।

सरस माधुरी सतग्ररू, श्री वलदेव जु दास ॥ श्री गुरु को सुमिरन भजन, धरूँ हृदय नित ध्यान।

मनसा वाचा करम कर, श्री गुरु श्रनुसंधान ॥ एक भरोसो एक वल, एक श्रास विश्वास ।

सरस माधुरी दें मिला, गुरु दंपति श्रनयास ॥

॥ सवैया ॥

श्री शुकमुनि के परम प्रिय शिष्य चरनदास गुन गन नित गइये॥ तिनकी कृपा निकुंज महल की सेवा सुख सर्वोपरि पइये॥ उज्ज्वल रस उन्नति श्रात श्रद्भुत निरिख केलि दंपति हुलसङ्ये॥ सरस माधुरी रस श्राचारज चरन शरन इन ही की श्रद्धये॥

॥ राग सारंग ॥

श्याम चरनदासी जय कहिये। जिनको नाम जपत आनँद निधि अनयास अलि पदवी लहिये श्री शुक श्रली प्रान प्यारी के नित नव ग्रन रसना सों गइये। रिखये आस भरोस इन्हीं को भूल भरम इत उत निहं विहये॥ श्री शुक सखी चरन दासी को ध्यान भजन उर श्रन्तर गहिये। गीर श्याम श्राचारज दोऊ यातें श्रपर श्रीर कहा चिहये॥ श्रालभ लाभ यह मिल्यो भाग सों प्रेम पुलिक हियमें हुलसइये। दंपति सुख संपित सर्वोपिर टहल महल मन मानी पइये॥ दियो बता ग्रक श्राल बलदेवी सार भजन सुखि सिंधु समइये। सरस माधुरी नित्य निरंतर चरन शरन इनहीं की रिहये॥

॥ राग सारंग, विहाग ॥

मो मन जुगल श्रली दढ़ श्रासा।

श्री शुक सखी श्याम चरनदासी पद पंकज में वासा ॥ इनको सुमरन भजन भावना नाम जपूँ प्रति स्वांसा।

करत सहाय सकल विधि येही रहा न कोई सांसा ॥ शरनागति प्रतिपाल दयानिधि भूल शूल भूम नासा।

संकट हरन करन मुद मंगल मेटन भव भय त्रासा॥ प्रेम परा पद में पहुंचावन दुरशावन रस रासा।

कुंज महल सेवा दंपित की संपित दें श्रनयास ॥ श्री वलदेवी द्या कृपा वल भयो श्रचल विश्वासा । सरस माधुरी विरद् भरोसे नित् श्रानंद हुलासा ॥

॥ राग सोरठ, विहाग ॥

मोहे शुक खामिनी की श्रास।

श्याम चरनदासी द्यानिधि उभय इष्ट उपास ॥ श्याम गौर सरूप जिनको जुगल अंग प्रकास।

प्रिया प्रीतम सखी वपु दोउ श्रात सुमंगल रास ॥ है जु भेदा भेद को सिद्धांत निगम सुभास।

प्रगट रिसकन कों जनायो धन्य करुणा रासं ॥ कुंज रस की पुंज में जहां होत रास विलास। सरस रस की माधुरी को दीजिये जहां बास॥

॥ राग सोरठ ॥

मेरी मन भावन शुक चरन श्राली री। तिनकी हैं जीवन धन भान लली री॥

॥ भ्रन्तरा॥

दंपित को सेवत दोऊ भांति भली री।

निरिष्व नैन खिलत मनों कमल कली री॥

बृंदावन विहरत नित छैल छली री।

रहत सदा संग संग कुंज गली री॥

बिलसत हैं रस विलास रास थली री।

सरस माधरी उमंग रंग रली री॥

॥ राग विहाग॥

जय शुक सखी श्याम चरनदासी नित रसना यह नाम कहो।
श्रुति सिद्धांत सार निगमागम परम भजन हिय हरष गहो॥
टहल महल की जो चित चाहत यातें अपर न साध्य श्रहो।
निस्संदेह द्यानिधि दंपित यही भजन विधि सिद्धि लहो॥
कहें ग्रुरु श्रिलि बलदेवी जू निश दिन चितत चरन रहो।
सरस माधुरी परम मंत्र यह सुमरि सकल भव ताप दहो॥

॥ राग विहाग ॥

रावरो मोहि भरोसो भारी। श्री शुक सखी श्याम चरनदासी श्रास तिहारी धारी॥ मेरे पूज्य प्रान धन दोऊ इष्ट मिष्ट सुखकारी।

सब विधि करन सहाय हमारी प्रेम दान दातारी ॥ प्रगट करी शुकदेव संप्रदा परा भक्ति विस्तारी।

धर निज हाथ सनाथ कियो जग अभय किये नर नारी॥ लिये उवार पतित छाया कर कीने भव निधि पारी।

दै निज नाम दान दंपित को किये धाम श्रिधिकारी॥ जिन जिन शरन लई चरनन की प्रीति रीति उर धारी।

पायो अचल बास बृंदावन जहां विहरत पिय प्यारी॥ बलदेवी ग्रह श्रली मयाकर तुम चरनन में डारी। शरन गहे की लाज कृपा निधि सरहा माधुरी वारी॥

॥ यांक॥

जय शुक सखी श्याम चरनदासी तुम पद पंकज ध्याऊँ। रास रिसक दंपित सुख संपित तुम कृपा तें पाऊँ॥ ये उत्कंठा मन सें मेरे रस की साँक बनाऊँ। सरस माधुरी।नित्त श्याम शुन हिये हुलस के गाऊँ॥

॥ वंदना पद् ॥

नमो नमो जय शुक अलि प्यारी।

श्याम चरणदासी सुखरासी रासविलासी प्राण अधारी॥

नित्य निकुंज धाम बृन्दावन उज्ज्वल रस लीला विस्तारी।

सेज सुदेस सुखद सुंदर पर बिलसावन नित रसिक बिहारी॥

निरखत नवल विहार हरष हिय नयनन छाई प्रेम खुमारी।

श्री दंपित संपित सुख लूटत तन मन प्राण करत बिलहारी॥

नेह युगल निधि लीन मीन मन एकहु पल छिन होत न न्यारी।

सरस माधुरी दान देंन को प्रगट भई भूतल सुकुमारी॥

॥ दोहा॥

"जय जय जय श्री शुक सखी सुखदा हित की रूप। अहलदानि कलबेनिका आनंदा जु अनूप॥

रस पुंजा रस रूपिनी प्रेस प्रभा अभिरास । अष्टम प्रमुदा नाम सुख तिनको कोटि प्रनाम"॥ जयित चरनदासी सखी गंधर्य ग्राम । प्रमोदनी चूड़ामगी मधुर सुरा वर वाम ॥ सहजानंदिन स्वामिनी गुगा प्रकाशिका नाम । जुक्नानंदिन प्रमुद मंगला जन मन पूरन काम ॥ नाम अष्ट जो जन जपे लहे जुगल अनुराग । सरस माधुरी महल सुख अविचल मिले सुहाग ॥

॥ राग विहास ॥

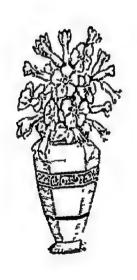
प्रगटें हैं सिख श्री शुकदेव ॥
सहचिर रूप महल के मांही भाविक जन जानत यह भेव ॥
गइये हरष बधाई इनकी प्रीति सिहत पद पंकज सेव ।
तन मन धन करिये न्योछावर दोउ कर जोर बलैयां लेव ॥
नैंन निहार ध्यान हिय धरिये रख दह सेव करन की टेव ।
सरस माधुरी मूरित सुंदर श्याम वरन सों करिये हेव ॥

' ॥ राग कान्हरा॥

सखी सुन लगत बधाई प्यारी।
श्री वेदव्यास यह शुकमुनि प्रगटे खयं कृष्ण अवतारी॥
सुंदर श्याम सरूप सुहावन, चंद्र वदन छिव मदन लजावन।
वय किशोर चित चोर सलोने, मृदु मुसकन पर वारी॥
चित्र बंदभी हरष बजाये, निरखन लालन मुख मिल धाये देव इंदभी हरष बजाये, नचत अप्सरा नारी॥
दसों दिशा जय जय धुनि छाई, जन्म लियो रिसकन के राई।
सरस माधुरी नव निकुंज रस कृषा करें सुखकारी॥

॥ राग कन्हरा॥

प्रगटे शुकमुनी सयानी।
श्री वेंद्व्यास भगवान प्रान धन प्रेम भक्ति के दानी॥
सुंद्र श्याम सलोने द्रसन, निराख सरूप सबही भये परसन।
रिसकन के चित को आकरसनं, मृदु मुसकन सुख खानी॥
किल कलेश सब जग को हिरि हैं, रस निकुंज की वरषा किर हैं।
अनिगन जीवन को निस्तिर हैं, यह निश्चय हम जानी॥
रंग महल मारग द्रसावन, प्रेम परा पद में पहुंचावन।
या कारन इनको भयो आवन, सरस माधुरी बानी॥



ショションションションションション

पुर नारी पाठ।



॥ श्री राधा सरस विहारियो नमः॥

॥ पुर नारियों के गाने के पद् ॥

॥ दोहा नवीन ॥

जुगल लाल की लाडिली, आति ही जीवन प्रान ।
प्रगट भई भृगुवंश में, प्रेम मंजरी आन ॥
रिसक जनन को करेंगी, रस निकुंज को दान।
रस आचारज रूप धर, प्रेम करावें पान ॥

॥ समाजी दोहा ॥

जन्म लाल रनजीत सुन, सब डहरे की नार।
पुलक प्रेम सों सकल मिल, कियो अंग शृंगार॥
कुरता टोपी पीत रंग, भूषन बिविधि प्रकार।

कंचन थारन सज चली, प्रागदास द्रबार ॥ मंगल समय विचार मन, हरष हृदय में आन ।

करन लगी हिलामिल अली, आनँद मंगल गान ॥ रंग बधाई रस भरी, गावत सुन्दर गीत ।

हँस मुसकावत मन मुदित, करत परस्पर प्रीत ॥ चाव भरी चित चटपटी, मन में ऋति ही मोद । सरस माधुरी प्रेम सों, सिख जन करें विनोद ॥

॥ राग बधाई कहरवा ॥

चलों हिल मिल दरशन काज जनम रनजीत लियो । कुंजो कूंख कृष्ण नर तन धर,

भक्ति प्रचारन काज दरशन आन दियो॥ भये मनोरथ पूरन सारे,

मुरलीधर मन मुदित महा हुलसात हियो॥ चाब चावसों लेकर चलिये,

सज कर कंचन थाल विधाता शुभ दिवस कियो॥ सरस साधुरी महा महोत्सव,

लख लोचन मुख लाल चरन कर प्रेम छियो ॥

॥ पद् ॥

॥ राग भेरवी ॥

पुर नारी हिल मिल के सारी मुरलीधर घर आई हैं। जन्म होन रनजीत लला सुन फुंड फुंड उठ घाई हैं। निल शिख सज शृंगार सलोनी तन मन में मगनाई हैं। कंचन थाल करन में घर के कुरता टोपी लाई हैं। खेल खिलोना सीना चांदी मेवा बिनिधि मँगाई हैं। तिल चांवरी बताशे ऋतु फल लाई गात बधाई हैं। रंभा शची शारदा सी सब वय किशोर समुदाई हैं। नवल नवेली आति अलबेली चंचल मृदु मुसिकाई हैं।

प्रागदास के पहुंच महल में उत्तव लख पुलकाई हैं। सरस माधुरी लाल दरस हित ललना अति ललचाई हैं॥

॥ बधाई चाल नाटक ॥

लीजे माता जी कुंजो बधाई री॥

॥ अन्तरा॥

पैदा हुवा आपके रनजीत लाल है,

सुंद्र सलोना आति ही इसका जमाल है।

प्यारा है ये दुलारा जैसा गोपाल है,

छाबे देखता है जोई होता निहाल है॥ याकी भांकी हमारे मन भाई री॥

डहरे में शादियांनें घर घर में बजर है,

सोहन पताका तोरन हर तर्फ़ सज रहै।

शोकत को देख देव और भूप लज रहै,

होकर आधीन हाथ जोर गर्ब तज रहे ॥ जन्म उत्सव की कीरत है छाई री ॥

नारी नगर की गाती हैं सब मंगलीक गान,

हिल मिल के मन सुदित हो बांटें मिठाई पान।

रतनों को कर निछावर देती हैं कोई दान,

चिरजीवो मुरली नंदन मुख कर रहीं बखान ॥ नांचें आंगन में सारी मगनाई री॥ आये हैं अमरलोक से आचार्य रूप धार, श्री कृष्ण अंश मक्री जगमें करन प्रचार। जो आवें शरन इनकी जिनका हो वेड़ा पार, पोंहचेंगे जा परम पद निरखेंगे नित विहार॥ सरस माधुरी रहे ह्वां सदाई री॥

॥ बधाई राग जंगला ॥

गावोरी श्राली हिल मिल श्राज वधाई।
जो फल दुरलम सुर मुनियन को सो पायो श्री कुंजो माई॥
कुष्ण कला मुरलीधर जू के प्रगट भये श्री सतग्रह श्राई।
जुथ श्रनेकन नारि नवेली घर घरतें उठ उठ के धाई॥
जन्मोत्सव डहरे में छायो छिन ताकी कुछ कही न जाई।
प्रागदास पुलकत भये मन में रंकन मनों नवों निधि पाई॥
जसोदा दादी प्रेम मगन मन लालन दोउ कर लेत बलाई।
सरस माधुरी दरस परस कर परमानंद हिये न समाई॥

॥ गजल ॥

बधाई छाई डहरे में हुवा कुंजो के लाला है।
प्रगट भये कुट्ण नर तन धर करें जग को निहाला है॥
निहारा जिसने रनजीता समाया रूपनैनों में।
जगत के बालकों से इसका कुछ रंग ढंग निराला है॥

सहस्रों संत सुन शोभा हुवे शामिल महोत्सव में। दरस कर परस चरनो को कहें ये जग उजाला है॥ बजे बाजे बिविध सुन्दर नफ़ीरी नौबतें गाजें।

गुनीजन गान सुन उस दम हुत्रा त्रानन्द दुबाला है।। कोई त्रा बोल मुख जै जै करें कर जोर के त्रस्तुत। सरस सोहन मदन सोहन लला क्या भोला भाला है॥

॥ वधाई सारंग ॥

श्री कुंजो सुंदर सुत जायो ।
जाकी जोति जगत में जगमग वेद भेद जिसको निह पायो ॥
शोभन भक्त करन पूरन वर श्री हिर सुत जिनके प्रगटायो ।
श्राचारज हो जीव उवारे यह निश्चय हमरे मन श्रायो ॥
जग में भक्ति प्रचारें प्यारे फैले तिनको सुजस सवायो ।
सुर नर नृप पूजें पंग इनके हमरे मन मांहीं श्रात भायो ॥
भादों मास सुदी तिथि त्रितिया बार सु मंगलवार सुहायो ।
सरस माधुरी जन्म महोत्सव डहरे सब घर घर में छायो ॥

॥ चौथी धुन नाटक की वधाई॥

दरशन हमें कराय कुंजो मैया दरशन हमें कराय। तुम्हारे सुत हिर प्रगटे श्राय कुंजो मैया दर्शन हमें कराय॥ एक तो ये हैं भक्ताचारज दूजे रिसकन राय। तीजे जग के जीव उधारे पार न कोई पाय॥ पंच बरस की वयस होय जब शुक्रमुनि दरस दिखाय। ले निज गोद मोद सिर कर धर पेङादेंहि पवाय ॥ प्रगट करें शुक संस्प्रदाय को भगवत धर्म चलाय। तारन तरन होहिंगे स्वामी संतन सदा सहाय॥ शरण त्राय जो चरण कमल की ताहि लेहि त्रपनाय। मंत्र सुनाय मिटाय तापत्रय देवें युगल मिलाय॥ वैष्णव धर्म सनातन ताको जग में दें फैलाय। प्रेम भक्ति को डंका स्वामी दस दिस देंहि बजाय॥ कलियुग में सतयुग कर देवें भय भ्रम सकल मिटाय। घर घर नौधा भक्ति करें नर तन मन सुरत लगाय॥ ज्ञान योग वैराग भक्ति की नौका लेंहि बनाय। पतितन को ता मांहिं चढ़ा कर हरिपुर दें पहुंचाय ॥ गुण अनंत वरगो नहिं जावें कहें कहां लगगाय। सरस माधुरी जोर दोउ कर चरनन शीश नवाय॥'

॥ पद चाल नाटक॥

नाचोरी नारी मिल सारी बजाश्रो गाओ दे दे कर तारी।
लेवो कुंजो हुँ की विलिहारी ॥बजाश्रो०॥
है सूरत रनजीता की प्यारी ॥ बजाओ०॥
याकी सुंदर है सोहनी छटारी ॥ बजाओ०॥
प्यारेलाल की छबीली छिब भारी ॥बजाश्रो०॥

याकी मोहनी है सूरत सहारी ॥ बजाओ० ॥ याकी अखियां श्रनोखी कजरारी ॥ बजाओ०॥ डहरे की भूमि सुखकारी हरियारी वहारी को धारो ध्यान सर्स चंमन। गुले गुलशन है।

सलोने मंदर श्रतिसुंदर छाई है घटा कारी। बजाओ गाबो हे दे कर तारी।

॥ पुरानी चाल का पद् ॥ ॥ श्रन्तरा ॥

रनजीतलला लगे प्यारा री नैंनों का है तारा। कुंजो का बारा है भोरा भारा, ऐसा न और निहारा री॥ नेंनों०॥ सुंदर सोहन,विश्व विमोहन,है त्रिभुवन उजियारा री॥ नें०॥ मुरली का नंदन,हें जग बंदन,तापर तन मन वारा री॥ नें०॥ श्राचारज सिरमौर,जगत गुरु, रिसकन प्रांन श्रधारा री॥ नें०॥ सर्वस धन है संत जनों का है निज इष्ट हमारा री॥ नें०॥ प्रेम भक्ति,जग में विस्तारन, लियो है श्रान श्रवतारा री॥ नें०॥ स्वयम् कला निधि कृष्णा कुंवरनें, श्रद्भुत नर तन धारा री॥नें०॥ माधुरी मूरत मन में बसी है ध्यान टरत नहिं टारा री॥ नें०॥ सोवत जागत, सुरत लगी है, बिसरत नाहिं बिसारा री ॥ नै०॥ सोवत जागत सुरत लगाई है विसरत ऊहि विसारा री॥ नें०॥ देवेंगे वास महल बृंदावन यह निश्चय उरधारारी॥ नें०॥ परि कर में पोंहचावें प्रांन धन जुगल मिलावन हारा री॥नें०॥ सरस माधुरी सोंपें सेवा, सदा करें प्रति पारा री॥ नेंगी

स वधाई ॥

श्री श्राचारज श्रवतः प्रमु पतित उधारन हार । डहरे में प्रगटे श्रधंम उधारन श्री रनजीत कुमार॥

॥ श्रंतरा ॥

श्राये हैं हरि श्राप धाम से रूप संत को धार।

श्री कुंजो माता के गर्भ से प्रगटे कृष्ण मुरार ॥

श्री शोभन जी को वर पूरन कियो प्राप करतार।

श्री मुरलीधर के सुत होके श्राये श्रवनि मभार॥

प्रेम भक्ति बिस्तार करेंगे हिर हैं भू को भार।

सुमरन भजन करेंगे सारे संसारी नर नार ॥

चरन शरन में जो जन श्रावें जिनको लेंहिं उवार।

पहुँचावें पर धाम श्रमरपुर जहां युगल सरकार ॥

जन्म मरन जम दंड नरक दुख संक्रट मेटन हार।

सुख संपत के दाता खामी संतन के सरदार ॥

श्रष्ट सिद्धि नव निद्धि सदां ही सेवत सतग्ररु द्वार ।

चार पदारथ देंन द्यानिधि श्रेसे परम उदार॥

कलियुग में सतयुग बिस्तारें करें हरि धर्म प्रचार।

ישיינים

सरस माधुरी जै जै बानी निज मख करत उचार ग

